गरुड़ पुराण भाषा टीका

बम्बई वाडी में छपा

टीकाकार—पं० हरिचन्द्र शास्त्री

प्रकाशक—
हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा।

मूल्य ३) रुपया

॥ अथ गरुड़ पुराणस्य सरला टीका लिख्यते ॥

५५-६

श्री कृष्णाय नमः । नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तम । देवी सरस्वतीं चैव ततो जय मुदीरयेत् ॥ १ ॥
... श्री गोकुलाधीशं तथा श्री रमणेश्वरम् । क्रियते सरला टीका हरिश्चन्द्रे ण शास्त्रिणा ॥ १ ॥

...द्व्यास जी गरुड़ पुराण की रचना करनेसे पहिले ग्रन्थकी निर्विघ्न समाप्ति के लिए मङ्गलाचरण में भगवान ... वृत्तरूप कहकर स्तुति करते हैं-कि भगवान मधुसूदन मधुनाम दैत्यके शत्रु श्री कृष्ण ब्रह्माआदि देवताओंसे भी ...ो प्राप्त होते हैं वे पादप हैं पाओं से जल पीने वाले पोधे (वृत्त) के समान सारे संसार की पालना करते हैं ... वृत्त का मूल धर्म है इसी के द्वारा वह वृत्त दृढ़ बंधा हुआ है पवन आदि कोई शक्ति इसे हिला नहीं सकती । ...त्त के तने हैं । पुराण इसकी शाखाएँ हैं ज्ञान, तप द्रव्यमय यज्ञादि इसके पुष्प हैं इस प्रकार के वृत्त के

...द्रमूलो वेदस्कन्धः पुराणशाखाढ्यः । क्रतुकुसुमो मोक्षफलो मधुसूदन पादपो जयति ॥१॥

...क्षेत्रे ऋषयः शौनकादयः ॥ सत्रं स्वर्गाय लोकाय सहस्रसममासत॥२॥त एकदातुमुनयः

...ो मोक्ष रूप फल की प्राप्ति हो जाती है । अतः मोक्षही इसकेफल हैं ॥१॥ अब कथा के आरम्भ में सूत ...ाद में कहते हैं कि नि मिष क्षेत्र नैमिषारण्यमें अठासी हजार शौनकआदि ऋषियों ने स्वर्गलोक की प्राप्ति के ...वर्ष का नियम लेकर यज्ञकरना आरम्भ किया था ॥२॥ एक समयकी वात है कि-प्रातःकाल के सुहावने समय

में वे समस्त ऋषिजन पवित्र अग्नि होत्रकर चुकेतो वहां आये हुए श्री सूतजी महाराजका मान आदिके द्वारापरम सत्कार किया और उन्हें उत्तम आसनदेकर बिठाया, फिर आदरके साथउनसे पूछनेलगे ॥३॥ ऋषि बोले—हे सूतजी! आपने सुख देने वाले देवताओंके अर्चि (प्रकाश मय) मार्ग कातो भली भांति वर्णन करदिया है अब कृपा करके यममार्ग का भी वर्णन

प्रातर्हुत हुताग्नयः। सत्कृतं सूतमासीनं पप्रच्छु रिदमादरात् ॥३॥ ऋषयः ऊचुः। कथितो भवता सम्यक् देवमार्गः सुखप्रदः ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामि यममार्गम् भयप्रदम् ॥४॥ तथा संसार दुःखनित-त्वक्लेशत्त्रयसाधनम् ॥ एहिकामुष्मिकान् क्लेशान् यथावद्वक्तु मर्हसि ॥५॥ सूत उवाच॥ शृणुध्वंभोविव क्ष्यामि यममार्ग सुदुर्गमम् ॥ सुखदं पुण्यशीलानांपापिनां दुःखदायकम् ॥६॥ यथा श्रीविष्णुना प्रोक्त

कीजिये, वह अत्यन्त भय देने वाला है उसे भी हम लोग अब सुनना चाहते हैं ॥४॥ संसार के दुःख, तथा उन दुःखों के नाश करने के उपाय साधनभी कहिए। और दूसरा यहभी कहिए कि जीव इस लोकमें किस प्रकारसे दुःख भोगते हैं। और परलोकमें जाकर किस प्रकारसे दुःख पाते हैं। यथार्थ तथा इन सबका वर्णन कीजिये ॥ ५ ॥ श्री सूतजी बोले—कि हे ऋषि महात्माओ! अत्यन्त दुर्गम यम का मार्ग कहता हूँ सुनिए। वह यम मार्ग पुण्यात्मा पुरुषोंके लियेतो सुख दाय क है और पापात्माओं के लिये अत्यन्त दुःख दायक है इसी प्रकार का प्रश्न श्री विष्णु भगवानसे विनतानन्दन गरुड़ ने भीकिया

पापात्माओं के लिये अत्यन्त दुःख दायक है इसी प्रकार का प्रश्न श्री विष्णु भगवानसे विनतानन्दन गरुड़ ने भी किया

था। उसे जिस प्रकारसे श्री भगवान ने कहा था उसी प्रकार में भी तुम्हारे सन्देहों को दूर करने के लिये कहता हूँ। सुनिये! एक समय की बात है—गुरुस्वरूप श्रीहरि भगवान वैकुण्ठ में सुख पूर्वक विराजमान थे, उनके पास अत्यन्त नम्रताके साथ श्री गरुड़देव पहुँचे और हाथ जोड़कर पूछने लगे ॥८॥ गरुड़ बोले हे भगवान्! आपने विधि विधान पूर्वक भक्ति मार्ग का

वैनतेयाय पृच्छते ॥ तथैव कथयिष्यामि संदेहच्छेदनाय वः ॥७॥ कदाचित् सुखमासीनं वैकुण्ठे श्रीहरिं गुरुम् ॥ विनयावनतो भूत्वा पप्रच्छ विनतासुतः ॥८॥ गरुड़ उवाच ॥ भक्तिमार्गो बहुविधिःकथितो भवता मम ॥ तथा च कथिता देव भक्तानाँ गतिरुत्तमा ॥६॥ अधुना श्रोतुमिच्छामि यममार्ग भयङ्करम् त्वद्भक्ति विमुखानांच तत्रैव गमन श्रुतम्॥ १०॥ सुगमं भगवन्नाम जिह्वाच वशवर्तिनी ।तथापि नरकयांति धिग्धिगस्तु नराधमान् ॥११॥ अतोमे भगवन् ब्रूहिपापिनां यागतिर्भवेत् ॥ यममार्गस्य दुःखानि यथा-

वर्णन तो कर दिया है, और हे देव! भक्तजनों की उत्तम प्रकार की परमगति भी सुनादी ॥६॥ अब मैं महा भयानकयम मार्ग सुनना चाहता हूँ। जिस मार्ग पर आपकी भक्ति से विमुख जीवों का गमन होता है ऐसा सुनने में आया है ॥१०॥ हे प्रभो! आपका नाम लेना अत्यन्त सुगम है और नाम लेने वाली वाणी भी तो अपने ही आधीन है फिर भी यम मार्ग से निवृत्त कराने वाले आपके नाम को जो नराधम नहीं लेते और नरकमें पड़तेहैं ऐसे पुरुषों को कोटिशः धिक्कार है ॥११॥

इसी कारण हे भगवान ! जो पापियोंकी गतिहोती है और यममार्ग में जाते हुए पापात्माओंको जिस प्रकार से दुख उठाने पड़ते हैं और जो २ दुःख होते हैं सब कृपा करके सुनाइये ॥१२॥ श्री भगवान् बोले—हे पक्षिराज ! सुनिये मैं तुम्हें यम मार्ग में पापात्माओंका जिसप्रकार गमन होता है जैसा वे दुःख उठाते हैं जैसा वे नरक पाते हैं वह सब सुनाता हूँ । यह कोई साधारण सी बात नहीं सुनने वालों को अत्यन्त भयहोता है ॥ १३॥ हे पक्षीराज ! पुरुष दया धर्म एवं वर्णाश्रम धर्म से

तेप्राप्नुवंतिवै ॥ १२ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ वक्ष्येऽहं शृणुपक्षीन्द्र यममार्गंच येन ये । नरकेपापिनोयांति शृण्वतामपि भीतिदम् ॥ १३ ॥ ये हि पापरतास्तार्क्ष्य दयाधर्म विवर्जित :॥ दुष्टसङ्गाश्चसच्छास्त्रसत्संगतिपराङ्मुखाः ॥१४॥ आत्म संभाविताःस्तब्धा धनमानमदान्विताः आसुरं भावमापन्ना दैवीसंपद्विवर्जिताः ॥१५॥ अनेकचित्त विभ्रांता मोहजालासमावृताः॥ प्रसक्ताः कामभोगेषु पतंतिनरकेऽशुचौ ॥

रहित होकर सदा पाप करते हैं । और दुष्ट पुरुषों का संग करते हैं । श्रेष्ठ शास्त्र जो वेद पुराण हैं उनकी आज्ञाओं से सदा बिमुख रहते हैं ॥१४॥ अपने आपको माननीय बड़ा समझ कर अकड़े रहते हैं धन मान के मद में चूर २ होकर अभिमान करते हैं काम क्रोध लोभ आदि में पड़कर असुर भाव में प्राप्त हुए देवी सम्पत्ति से दूर हटे रहते हैं ॥ १५ ॥ पराई स्त्रियों में एवं पराये धन लूटनेमें विक्षिप्त होकर अनेकों प्रकारके उपाय सोचते रहते है । स्त्री पुत्र कलत्र आदिकी

मोहममता में पड़े रहते हैं। काम भोग के सिवा जिन्हें अन्य कुछ सुझता ही नहीं ऐसे पापात्मा बहुत अपवित्र नरक में पड़ते हैं ॥१६॥ और जो पुरुष ज्ञानवान होकर सदा इन दुष्कर्मोंसे बचे रहते हैं। वे परम गतिको प्राप्त होते हैं। पापात्मा मनुष्य इस लोक में भी अनेकों दुख भोगते हैं, और अन्त में यम यातना पाते हैं ॥१७॥ पापी पुरुषों को इस लोक में जिस प्रकार दुख प्राप्त होते हैं उसे ध्यान देकर गरुड़जी सुनिये। और फिर दुःख भोग भोग कर जब मृत्यु पाते हैं और जिस

॥१६॥ये नरा ज्ञानशीलाश्च ते यांति परमां गतिम्॥ पापशीला नरा यांति दुःखेन यमयातनाम् ।१७। पापिनासौहिकं दुःखं यथा भवति तच्छृणु ॥ ततस्ते मरणं प्राप्य यथा गच्छन्ति यातनाम् ॥१८॥सुकृतं दुष्कृतं वापि भुक्त्वापूर्वं यथार्जितम ॥ कर्मयोगात्तदा तस्यकश्चिद्व्याधिः प्रवर्तते ॥१६॥आधिव्याधिसमायुक्तं जीविताशासमुत्सुकम्॥ कालोबलीयान्हिवदज्ञातः प्रतिपद्यते ॥२०॥ तत्राप्यजात निर्वेदो

प्रकार यमयातना पाते हैं उसे भी मैं सुनाता हूँ ॥१८॥ दस श्लोकोंमें इस लोक के दुःख वर्णन करते हुए भगवान् कहते हैं-कि अच्छे अथवा बुरे जो भी कर्म जिस जीव ने पहिले जन्म में किए हैं उन्हीं के अनुसार बाल्यावस्था तरुणावस्था में सुख दुःख भोग कर अन्य वृद्धावस्था में कर्म योग के कारण उस जीवको कोई न कोई व्याधि (बीमारी) उत्पन्न होजाती है ॥ १६ ॥ उस व्याधि द्वारा आधि (मानसिक पीडाभी) साथ उत्पन्न होजाती है इसी कारण महान दुःख उठाता है, फिर

भी जीते रहने की आशा उसे उत्साह दिया करती है किन्तु काल ऐसा बली है जोकि बगैर जतलाये मूषक पर सर्पके झपट्टे की भांति उस जीवको दबोच ही लेता है ॥२०॥ ऐसी अवस्था में भी उसे किसी प्रकार का फिरभी घर गृहस्थसे वैराग्य नहीं होता, जिनकी वह पालना करता रहा है उन्हीं से पाला जाता हुआ बुढ़ापे एवं बीमारी से कुरूप होकर भी मृत्युके मुख में पड़कर भी ॥ २१ ॥ घरमें पाले हुए श्वान के समान छोटे से रोटीके टुकड़े के लालचमें उसी घरमें रहने की आशा लिये

म्रियमाणः स्वयंभूतैः ॥ जरयोपात्तवैरूप्यो मरणाभिमुखो गृहे ॥ २१ ॥ आस्तेवमत्योपन्यस्तं गृहपाल इवाहरन् ॥ आमयाव्यप्रदीप्त ।ग्निरल्पाहारो ऽल्पचेष्टितः॥२२॥ वायुनोत्क्रमतोत्तार :कफसंरुद्धनाडिकः कासश्वासकृतायासः कंठे घुरघुरायते ॥२३॥ शयानःपरिशोचद्भिः परिवीतः स्वबंधुभिः॥ वाच्यमानोऽपि नब्रूते कालपाशवशंगतः॥ २४ ॥ एवं कुटुम्बभरणे व्यापृतात्मा जितेन्द्रिय ॥ म्रियते रुदतां स्वानांगुरु

हुए अपमान से भी वहां पड़ा रहना चाहता है। चाहे श्वान की तरह फैंका हुआ रोटीका टुकड़ा बीमारियों के कारण उसे पचता भी नहीं, खाना पीना चलना फिरना सब कुछ कम भी होगया है।२२। वायु (बादी) के दवा लेने पर आंखें भी खुली रह गई हैं, कफ के बढ़ जाने के कारण नाडियें सब बन्द हो चुकी हैं। कास श्वास चलनेके परिश्रम से कण्ठ में घुर घुर का शब्द होने लग गया है।२३। शोक संयुक्त बन्धु बान्धवों से घिरा हुआ काल पाश के वश में पड़कर उन बन्धुओं के कुछ बोलने पर एवं कुछ पूछने पर बोल भी नहीं सकता।२४। समस्त आयु जिसने अपने कुटुम्ब के पालन में

खोदी है। काम वासनाओंमें सदा लिपाय मान रहा है। कभी भी अपनी इन्द्रियोंको नहीं, जीता ऐसा पुरुष मरते समय सौ वृश्चिकों के काटने जैसी वेदना (दुःख) को भोगता हुआ मूर्छित होकर अपने भाई बान्धवोंके रुदन करते २ प्राणों का त्याग करता है ॥२५॥ वह मृत्यु का समय हे गरुड़! ऐसा विलक्षण होता है कि दृष्टि दैवी हो जाती है इसीसे सबका सब जगत एक स्वरूप होकर दिखाई देने लग जाता है, मुँह से कुछ बोला भी नहीं जा सकता ॥ २६॥ उस समय सब इन्द्रियां नाश

वेदनया स्तधी ॥२५॥ तस्मिन तत्क्षणे तार्क्ष्य दैवी दृष्टिर्न प्रजायते ॥ एकीभूत जगत्सर्वं किंचिद्वक्तु मीहते ॥२६॥ बिकलेन्द्रिय संघाते चैतन्ये जडतां गते ॥ प्रचलति ततः प्राणाः याम्यैर्निकटवर्तिभिः ॥२७॥ स्वस्थानोच्चलितें श्वासे कल्पाख्यो ह्यातुरक्षणः ॥ शतवृश्चिकदंष्ट्रस्य या पीडा साऽनुभूयते

॥२८॥ फेन मुदगिरते सोऽथ मुखलालकुलं भवेत् ॥ अधोद्वारेण इच्छन्ति पापिनां प्राणवायवः ॥२९॥

को प्राप्त होजाती हैं, चेतना (होश) जाती रहती है, ऐसे समय में यमदूतों के समीप आने पर प्राण निकल जाते हैं ॥२७॥ पापात्माके प्राण बहुत दुःख दे देकर निकलते हैं एक क्षण जितना समयभी उनके लिए कल्पके बराबर गुजरता दिखाईदेता है, सौ वृश्चिकों के काटे जितनी पीड़ाको वह पापी मृत्यु समय में अनुभव करता है ॥२८॥ मृत्यु काल में मुँह पर झाग ही झाग फैल जाते हैं-लार निकलने लग जाती है, इसी प्रकार से पापी के प्राणवायु अधोद्वार से निकलते हैं ॥२९॥ वहां

उस समय दो यमराज केदूत बड़े भयानक क्रोध से लाल लाल बड़ी २ आंखें निकाले हाथमें यमपाश (बांधने कोरस्सी) और मारने को दण्ड लिये बड़े २ तीखे नुकीले दांतों से कट २ शब्द करते हुये ॥३०॥ लम्बे २ बहुत ऊँचे उठे बालों वाले, काक पक्षियों की भांति अत्यन्त काले कुरूप टेड़े मेढ़े मुँह वाले, हाथों पैरों के बड़े नुकीले नाखून बढ़ाकर उन्हींको ही आयुध रूप दिखा कर डराते हुए ऐसे महा भयानक दो यमदत आजाते हैं उन्हें देखकर वह पापात्मा हृदय में

यमदूतौ तदा प्राप्तौ भीमौ सरभसेक्षणौ ॥ पाशदण्डधरौ नग्नौ दन्तैः कटकटायतौ ॥३०॥ऊर्ध्वकेशौ काककृष्णौ वक्रतुण्डौनखायुधौ ॥ सदृष्ट्वा त्रस्तहृदयः शकृन्मूत्रं विमुंचित ।३१- अंगुष्ठमात्रःपुरुषो हाहाकुर्वन् कलेवरात् ॥ तदैव गृह्यते दूतैर्याम्यैः पश्यन् स्वकंगृहम् ॥३२॥ यातनादेहमावृत्य पाशैर्बध्वा

अत्यन्त डर जाता है । डरके मारे एक दम विष्ठा और पेशाव करने लग जाता है ॥३१॥ उस समय अंगूठे जितना जीवहा हा का शब्द करता हुआ शरीर से ज्यों ही निकलता है झट ही उसे वे दोनों यमदूत पकड़ लेते हैं यद्यपिवह अपने पुत्रएवं बान्धवो की ओरभी इस महान दुःखसे छुटकारा दिलानेके लिये सतृष्ण देखताभीहै किन्तु कोईभी उसे नटी छुड़ासकता ।३२॥ इसी प्रकार इस लोक के दुःखों का वर्णन करके अब उन पापात्माओं के परलोक काभी दुःख वर्णन करते हैं-तबउस पापी ज़ीव को यमयातना भोगने केयोग्य शरीर मिल जाता है, उसमें प्रवेश करतेही झट यमदूत उसेगले से बलपूर्वक बांध लेते हैं । हाथ में पाशलेकर लम्बा रास्ता चलपड़ते हैं दण्ड द्वारा उसे पीटते हुए राजपुरुषों (सिपाहियों) की भांति ले

चलते हैं ॥३०॥ मार्ग में उसके थकने जाने कीचिन्ता नहीं प्रत्युत वे दूत उसे खूब पीटते हुए फिर २ नरकों को बड़े २ तीव्र दारुण दुःखोंका वर्णन करतेहुए घसीटते हुए लिये चलते हैं ॥३३॥ यमदूत कहते हैं-अरे पापी दुष्टात्मन ! चलचल शीघ्र चल हम तुम्हें यमालय लियेजा रहे हैं वहां तुझे कुम्भीपाक आदि नरकोंमें ले जाकर पटकेंगे देर मत कर ॥३४॥इसी प्रकार यमदूतों के कठोर वचन एवं अपने भाई बान्धवोंके रुदन सुनकर वह पापात्मा वहुत ऊंची आवाजसे हाहा करता

गलेबलात्॥ नयतो दीर्घमध्वानं दण्डं ॥ज भटा यथा ॥३३॥तस्यैव नीयमानस्य दूताः संतर्जयन्ति च॥ प्रवदंति भयं तीव्रं नरकाणां पुनः पुनः ॥३४॥ शीघ्रं प्रचल दुष्टात्मन् याब्यसि त्वं यमालयम्॥कुम्भीपाकादि नरकांस्त्वां नयावोऽद्य माचिरम्॥३५॥एवं बाचस्तदा शृण्वन् बंधूनां रुदितं तथा उच्चैर्हाहेति विलपंस्ताडयते यमकिंकरैः ॥३६॥तयोर्निर्भिन्नहृदयस्तर्जनैर्जातवेपथुः॥ पथिश्वभिर्दंश्यमानआर्तोऽघ स्वमनुस्मरन् ॥३७॥ क्षुतृट्परीतोर्कदवानलानिलैः संतप्यमानः पथितप्तवालुके ॥ कृच्छ्रेण पृष्ठेकशया

हुआ विलापकरता है और ऊपरयमदूतों कीताड़ना होती है ॥३५॥ ऐसे यमराज, के दूतों का वचनसुनकेऔर बंधुजनों के रुदन सुनके ऊंचे स्वर से विलाप करते हैं तब तिनको यमदूत ताड़ना देते हैं ॥३६॥ वे दोनों यमदूत गजबकी ताड़नाएवं तर्जना करतेहैं । जिससे उस पापात्माका हृदयकट जाताहै खूब कांपताहै रास्तेमें बड़े २ कुत्तेभी आकर काटतेहैं औरमांस

समान गरम हुई बालू जहां कहां पड़ी हुई पैरों को दग्ध करती जाती है । अत्यन्त कष्ट पाकर चलता है । पीठ पर चाबुक पड़ते हैं । मार्ग में न विश्राम लेने को स्थान है, न कोई जल का स्थान दिखाई देता है ।।३८।। कदम २ पर गिर पड़ता है, और कदम २ पर मूर्छित हो जाता है फिर खड़ा होता है, इसी प्रकार उस पापी जीव को फिर अन्धकार मय मार्ग से यमलोक को लिये जाते हैं ।।३९।। इसी प्रकार ९९००० हजार योजन का रास्ता तय कर के उस पापी जीव को तीन अथवा

च ताडितश्चलत्यशक्तोपि निराश्रमोदके ।।३८।। तत्र पतन श्रांतो मूर्छितः पुनरुत्थितः ।।पथा पापीयसा नीतस्तमसा यमसादनम् ।३९। त्रिभिर्मुहूर्तैर्द्वाभ्यां वा नीयते तत्र मानवः।। प्रदर्शयंति दूतास्तु घोरा नरक यातनाः ।।४०।। मुहूर्त्तमात्रात्त्वरितं यमं वीक्ष्य भयं पुमान् ।। यमाज्ञया समं दूतैः पुनरायाति खेचरः ।४१। आगम्य वासना बंधोदेहमिच्छन् यमानुगैः धृतः पाशेन रुदति क्षुत्तृड्भ्यां परिपीडतः ।४२। भुंक्तेपिंडं सुतैर्दत्तं दानं चातुरकालिकम् ।। तथापि नास्तिकस्तार्क्ष्य तृप्तिं याति

दो मुहूर्तों में वे यमदूत यमलोक में खींच ले जाते हैं, वहां पहुंच करके दूत अत्यन्त घोर नरक यातनायें दिखाते हैं ।।४०।। तब वह पापात्मा पुरुष-बहुत भयानक यम एवं यमयातना को देखकर यमराज की आज्ञा से यमदूतों द्वारा आकाश मार्गसे फिर मुहूर्त मार्ग से तत्काल अपने घर लौट आता है ।।४१।। घर की वासनाएं उसे जकड़े रहती है उन्हीं में बंधा हुआ वहजीव

अपने घर आकर फिर शरीर में प्रवेश करना चाहते हैं, किन्तु यमदूत उसे पाशों से बांध लेते हैं कहीं हिलने नहीं देते अपनी इस बेबसी को देखकर रोता है और भूख प्यास से बहुत दुखी होता है ॥४२॥ पुत्र आदि सम्बन्धी उसे पिंड दान करते हैं और अन्त समय में दान भी देते हैं किंतु यह सब उस पापात्मा की तृप्ति नहीं करा सकते ॥४३॥ अन्त समय का दान, वर्ष भर के पिण्ड, श्राद्ध जलांजलियें, यह सबकुछ पापात्मा जीवों को तृप्ति नहीं करा सकते । इसीलिये हे गरुड़ वेपिण्ड दानादि न पाकर पापी भूख से व्याकुल होकर यम लोक को चले जाते हैं ॥४४॥ और जो पिण्ड दानादि से तृप्ति नहीं पासकते

न पातकी ॥४३॥ पापिनां नोपतिष्ठंति दानं श्राद्धं जलांजलि ॥ अतः क्षुधाकुला यांति पिंड दान भुजोषिते ॥४३॥ भवंति प्रेतरूपास्ते पिंडदानविवर्जिताः आकल्पं निर्जनारण्ये भ्रमंति बहु दुखिता ॥४५॥ नाभुक्तं क्षीयते कर्म्म कल्पकोटिशतैरपि ॥ अभुक्त्वा यातनां जंतुर्मानुष्यं लभते नहि ॥४६॥ दद्यात्सुतः अतो पिंडान् दिनेषु दशसु द्विज ॥ प्रत्यहं ते विभज्यंते चतुर्भागैः खगोत्तम

क्रिया मरने के अनन्तर जिनके लिये पुत्र सम्बन्धी पिण्डदान अन्नदान कुछ भी नहीं करते ऐसे पापात्मा जीव मरकरप्रेत रूप हो जाते हैं। और एक कल्प समय तक अत्यन्त दुःख पोते हुए निर्जन बन में भ्रमण करते हैं ॥४५ ।करोड़ों कल्प जितना समय क्यों न गुजर जाय किंतु भोगे बिना कर्मों का नाश होता ही नहीं । मनुष्य जन्म तो पापी जीवों को यम

घट जाते हैं और तीसराभाग यमदूतों काहोता है। चौथा भाग जो कुछ भी होता है वह प्रेम को प्राप्त होता है ॥४८॥ नौ दिन पर्यन्त पिंडदान करते रहनेसे प्रेम के लियेपिंडज शरीर बनता है दशवे दिनके बाद पिंडदानसे उसपिंडज शरीरमें

॥४७॥ भागद्वयंतु देहस्यपुष्टिदं भूतपंचके तृतीयं यमदूतानांचतुर्थे सोपि जीवति॥४८॥अहोरात्रैश्च नवभिःप्रेतःपिंडमवाप्नुयात् ॥ जंतुर्निष्पन्नदेहस्य दशमेवल माप्नुयात् ॥४६॥ दग्धे देहेपुनर्देहः पिंडेरुपद्यते खग ॥हस्तमात्र पुमान् येन पंथि भुक्ते शुभाशुभम् ॥५०॥ प्रथमेहनियः पिंडस्तेन मूर्धा प्रजायते। ग्रीवा स्कंधौ द्वितीयेह्नि तृतीयात्हृदयं भवेत् ॥५१चतुर्थेन १वेत्पृष्ठं पंचमान्नाभिरेव च ॥ षष्ठेन चकटीगुह्य

चलने फिरने का बल प्राप्त होता है ॥४६॥ हैगरुड़ जी! यहसमय लीजियेकि पहलाजो शरीर था वह तो अग्निमेंभस्महो गया। फिर पुत्रादिबन्धुओं द्वारा दियेहुए पिंडों से पिंडज शरीर की उत्पत्ति होती है। यह शरीर एकहस्त प्रमाणहोता है इसी ही शरीर के द्वारा वह जीव यमलोक के शुभ अशुभ फलों को भोगता है ॥५०॥ पहिले दिन केपिंडसे पिंडज शरीर का सिर एवं मस्तक बनता है। दूसरेदिन के पिंडसे ग्रीवा एवं स्कन्ध बनते। तीसरे से हृदय तैयार होता है ॥५१॥ चौथे

पिण्ड से पृष्टभाग होता है । पांचवेसे नाभि, होती है । छटेसे कटि और गुह्यहोता है सातवें पिण्डसे जंघा उत्पन्न होती है ॥५२॥ आठवें दिन के पिंड दान सेजानु होते हैं ॥ नवमसे पांव तैयार होते हैं । दशम दिनके पिंड दान से क्षु धातृषा उत्पन्न होती है ॥५३॥ इस प्रकार पिंडज देह को पाकरभूख प्यास युक्त वह प्रेत एकादशाह तथा द्वादशाह इन दो दिनोंके

सप्तमात्सक्थिनी भवेत् ॥५२॥ जानुपीढौ तथा द्वाभ्यांदशमेऽन्हि क्षुधा तृषा ॥५३॥पिंडजं देहमाश्रित्य क्षुधाविष्टस्तृषार्दितः ॥ एकादशं द्वादशं च प्रेतोभुङ्क्ते दिन द्वयम् ।५४॥त्रयोदशेऽहनि प्रेतो यंत्रितोयम किंकरैः ॥ तस्मिन्मार्गे व्रजत्येको गृहीत इव मर्कटः ॥५५॥ षडशीति सहस्राणि योजनानां प्रमाणतः॥ यममार्गस्य विस्तारोविना वैतरणी खग॥५६॥अहन्यहनि वै प्रेतो योजनानां शत द्वयम् ॥ चत्वारिंशत्तथा सप्त दिवा रात्रेण गच्छति ॥५७॥ अतीत्य क्रमशो मार्गे पुराणीमानि षोडशः ॥ प्रयातिधर्मराजस्य भवनं पातकी जनः ॥५८॥ सोम्यं सौरिपुरं मगेंद्रभवर्वशैं लागमो क्रौंचं क्रूरपुरं विचित्र

पिंडों को भोगता है ॥५४॥ इसके अनन्तर वह प्रेत तेरहवे दिन बंधे हुए बन्दर की भांति यमदूतोंसे यन्त्रित अकेलाही यम मार्गसे यमलोक में जाता है ॥५५॥ हे गरुड़ ! अब यमलोक के मार्गका प्रमाण सुनिए यम मार्ग वैतरणी नदीकोछोड़कर छयासी हजार योजनका है ॥५६॥ दोसौ योजन के हिसाब से प्रतिदिनवह प्रेत उस मार्गपर चलता है इसीप्रकार ४७ दिनमें यमलोक पहुँचता है ॥५७॥ मार्गमें १६ पुरियें लांघकरवह पातकी जधर्मराजकेभवनमें जाता है ॥५८॥ क्रमशःसोलह पुरियोंके

नाम ये हैं–१ सौम्य, २ सौरिपुर, ३ नगेन्द्रभवन, ४ गन्धर्व, शैलागम, क्रौंचपुर, ७ क्रूरपुर, ८ विचित्रभवन, ९ बव्हापद १० दुःखद ११ नानाकन्दपुर, १२ सुतप्तभवन १३ रौद्र, १४ १५ पयोवर्षण, शीताढ्य १६बहुभीति इन्हीं सोलहपुरोंकेलांघने पर यमपुरी आती है ॥५९॥ मार्ग में वह पापात्मा यमदूतों द्वारा यमपाशों से बंधा हा हा कार करता रोने लगताहै अपने घर को छोड़ इसी प्रकार रोते यमपुरी में पहुँचता है ।६०।

॥ इति श्री गरुड़ पुराणे शास्त्रि हरिश्चन्द्रकृतायां सरला टीकायां प्रथमोऽध्यायः ॥

भवनं बव्हापदंदःखदम्॥नानाक्रंदनपुरसुतप्तभवनं रौद्रंपयो वर्षण शीताढयं बहुभीतिधर्मभवनं याम्यंपुरं चाग्रतः॥५९॥याम्यपाशधृतः पापीहाहेति प्ररुदन् पथि ॥ स्वगृहं तु परित्यज्यपुरंयाम्यमनुव्रजेत् ॥६०॥ इतिश्री सारोद्धारे गरुणपुराणे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ गरुण उवाच ॥ कीदृशो यमलोकस्य पंथाभवति दुःखदः ॥ यत्र यांति यथा पापास्तन्मे कथय केशव ॥१॥ श्रीभगवानुवाच ॥ यमलोकस्य महादुःखप्रदंते कथायाम्यहम् ॥ ममभक्तोपि तच्छ्रुत्वा त्वं भविष्यसि कंपितः ॥२॥ वृक्षच्छायानतत्रास्ति यत्र विश्रमते

प्रथम अध्याय में इस लोक एवं परलोक के दुख संक्षेप से सुनकर श्रीगरुड़जी अब उन्हें विस्तार पूर्वक सुननेकी इच्छाकरके कहते हैं कि हेभगवान ! यमलोकका मार्ग किस प्रकार दुःखदायी होता है ? जिसपर पापीचलकर यमलोक पहुँचते हैं ॥१॥ श्री भगवान बोले-यमगरुड लोकका मार्ग अत्यन्त दुःखदायी है मैं तुझेसुनाताहूँ । यद्यपि तू मेरा भक्त है सुनकरकांपउठेगा ॥२॥

यममार्ग ऐसा कठोर है जिसमें मनुष्यके विश्राम करनेका स्थल किसीवृक्षकी छायासी नहीं है न वहांप्राणोंकेपोषणार्थ

श्री भगवान बोले-यमगरुड लोकका मार्ग अत्यंत दुःखदायी है मैं तुझेसुनाताहूं । यद्यपि तू मेरा भक्त है सुनकरकांपउठेगा ।।२।।

यममार्ग ऐसा कठोर है जिसमें मनुष्यके विश्राम करनेका स्थल, किसीवृक्षकी छायाभी नहीं है न वहांप्राणोंकेपोषणार्थ कुछ अन्न ही है ।३। इस मार्ग में कहीं भी जल नहीं दिखाईदेता, जिससे प्यास बुझाई जा सके, और बारहोंसूर्यइसमार्गमें प्रलय कालके समान वहां तपते हैं ।४। शीतल वायु द्वारा पापात्मा अत्यन्त पीड़ित हो जाता है । मार्ग पर कांटे भी खूब बिछे रहते हैं पापी बिंध जाता है कहीं २ महा विषधारी सर्प भी आकर उसको लपेट लेते हैं ।५। फिर कहीं कहीं उस

नरः यस्मिन्मार्गे न चान्नाद्यं येन प्राणान् समुद्धरेत् ॥३॥ नजलं दृश्यते क्वापि तृषितोऽतीव यः पिवेत् ॥ तप्यते द्वादशादित्यः प्रलयांते यथा खग ॥४॥तस्मिन् गच्छति पापात्मा शीतवातेन पीड़ित ॥ कंटकैर्विध्यतेक्वाचित्सर्पैर्महाविषैः ॥५॥ सिंहैर्व्याघ्रैः श्वभिर्घोरैर्भक्ष्यतेक्वापि पापकृत् । वृश्चिकैर्दश्यते क्वापिक्वचिद्दह्यतिवह्निना॥६॥ततःक्वचिन्महाघोरमसिपत्रवनं महत् ॥योजनानां सहस्रे द्वे विस्तरायामातः स्मृतम्॥७॥काकोलूकवटगृध्रसरघादंशसंकुलम्॥ सदावाग्निवतत्पत्रैश्छिन्नभिन्नः प्रजायते ॥८॥ क्वचि-

को बड़े बड़े सिंह व्याघ्र, और श्वान भी आकर उसके मांस की बोटियें निकाल लेते हैं । और कहीं २ बड़े २ बृश्चिककाट जाते हैं, कहीं कहीं तो बनमें भड़कतीहुई दावाग्निउसेजलाती है ॥६॥ उस मार्ग में आगे चलकर कहीं महाघोरएवं अत्यंत बीहड़ बन है जिसका कोई ओर छोर दिखाई नहीं देता । वह दो हजार योजन लम्बा चौड़ा है । असिपत्र बनके पत्ते तलवार की भांति पैने हैं ॥७॥ उस बनमें बड़ी २ चोंचों वाले काक, उलूक, बट, गीध आदि भयानक पक्षी बडी २

दंशों वाली मधु मक्खियें उड़ती, यह सब पापात्मा को काटती हैं, और उस वनकी अग्नि द्वारा जलाया जाता, तथा तलवार के से पत्तों द्वारा वह प्रेत छिन्न भिन्न भी हो जाता है॥८ कहीं २ अन्धकूप में गिर पड़ता है। पांशों द्वारा यमदूत उसे निकाल लेते हैं कहीं२ तो बहुत ऊँचे पर्वतों पर चढ़ कर फिर नीचे गिरता है। और कहीं२ तीक्ष्ण शस्त्रों पर, तथा कहीं शंकुओं पर भी चलना पड़ता है॥९॥ अन्ध महा भयानक नरक में कहीं फिसल पड़ताहै। कहीं पानी में गिर पड़ता है।

त्पतत्यंधकूपे विकटात्पर्वतात्क्वचित्। गच्छते क्षुरधारासु शंकूनामुपरि क्वचित् ॥९॥ स्खलत्यंधेतमस्युग्रे जले निपतति क्वचित्। क्वचित्पंके जलौकाढये क्वचित् संतप्तकर्दमे ॥१०॥ संतप्तवालुकाकीर्णेध्मा ताताम्रमये क्वचित्। क्वचिदङ्गारराशौच महाधूमाकुले क्वचित् ॥११॥ क्वचिदङ्गारवृष्टिश्च शिलावृष्टिः सवज्रका॥रक्तवृष्टिः शस्त्रवृष्टिःक्वचिदुष्णां बुवर्षणम् ॥१२॥ क्षारकर्दमवृष्टिश्चमहानिम्नानिचक्वसित्

जलौकाओं भरे हुए कीचड़ में भी जा गिरता है तथा कहीं खूब उबले हुए संतप्त कर्दमं कीचड में भी गिर पड़ता है ॥१०॥ कहीं तपे हुए रेतीले मैदान में पड़ जाता और कहीं आग के शोले ताम्र नामक नरक में गिर जाता, और कहीं अङ्गारों के ढेर पर, तथा धूम्र व्याप्त अग्नि पर गिर पड़ता है ॥११॥ कहीं २ अङ्गार बरसते हैं, तो कहीं ओले से वज्र शिला पत्थर बरसते हैं। तो कहीं खून बरसता है। कहींहथियारों की वर्षा होने लगती है, तथा कहीं गरम २ पानी बरस पड़ता है ॥१२॥ कभी २ क्षार भस्म कीचड़ की वर्षा होती है। कहीं

बहुत नीचे गर्त में वह पापात्मा पड़जाता है तो कहीं उसे बहुत ऊँचे स्थानपर चढ़ना पड़ता है और कहीं गुफाओंमेंप्रवेश करना पड़ता है ॥१३॥ गुफाओं में घना अन्धकार है बीच में ऐसी २ शिलाएं आजाती हैं जिनपर चढ़ना उसका कठिन हो जाता है और कहीं २ पीव रुधिर एवं विष्ठा से भरेहुए तालावआते हैं ॥४१॥ इस प्रकार चलते २ उस मार्गकेमध्य में अत्यन्त उग्र दुःखदायी जिसका वृत्तसुन दिल कांपउठता है ऐसीएक नदीकानाम हे गरुड वैतरणीहै, उसेदेखनेपरअत्यन्त

।वप्रप्ररोहणं क्वापि कंदरेषु प्रवेशनम् ॥११॥ गाढांधकारस्तारितदुः खारोहा शिला क्वचित् ॥ पूय शोणित पूर्णाश्च विष्टापूर्णाहृदा क्वचित् ॥१४॥ मार्गमध्यवहात्युग्रा घोरा वैतरणी नदी । साहृष्टा दुःखदाकिंवा यस्या वार्ता भयावहा ॥१५॥ शतयोजन विस्तीर्णा पूयशोणित वाहिनी । अस्थिवृन्द तटा दुर्गा मांस शोणित कर्दमा ॥१६॥ अगाधा दुस्तरापापैः केशशैवालदुर्गमा । महाग्राहसमाकीर्णा घोरपक्षिशतैर्वृता ।१७। आगतं पापिन दृष्ट्वाज्जाला धूमसमाकुला । कथ्यते सा नदी तार्क्ष्य कटा-

दुःख होता है ॥५१॥ अब वैतरणीका बर्णन करते हैं सौ योजन विस्तार वाली है, उसमेंपीव एवं रुधिरबहता है हड्डियों के ढेरों के ढेर लगे हुए तट हैं। मांस तथा रुधिर का तटों के पास कीचड़ है ॥१६॥ बहत ही गहरा। है जिसे पापी पार नहीं कर सकते। उसके मध्य में बालों के शेवाल भी आते हैं, उनमें पापात्मा और भी फसजाते हैं इसी कारण उनकेलिये दुर्गम हो जाती है और बड़े २ ग्राह मगर भरेहुए हैं तथा सैकड़ों घोरपक्षी जिनके चारों ओर चक्कर काटते रहते हैं ॥१७॥

पापी के वहां पहुँचते ही वह नदी और भी उग्ररूप धारण करलेती है। बड़े शोले उठते दिखाई देने लगजाते हैं हे गरुड़
कढ़ाई के भीतर अग्नि से संतप्त घी के समान वह ज्वाला युक्त होजाती है। इसे वैतरणी कहते हैं ॥२८॥ यह वैतरणीसूची
की भांति मुख वाले कीड़ों से खूब भरी हुई और बिजली जैसी चोंच वाले बड़े २ गीध एवं काक पक्षियोंसे वेष्टित है ॥१०॥
उस नदी में, शिशुमार, मगर, जलौका, बड़े२ मच्छ एवं कछुए आदि अनेकों जलजीव मुँह खोले फिरा करते हैं ॥२०॥

हांतघृ॑त यथा ॥ १८ ॥ कृमिभिः संकुला घोरैः समंततः । वज्रतुंडैर्महागृध्रैर्वायसैः परि-
वारिता ।१६। शिशुमारैश्च मकरैर्जलौकामत्स्यकच्छपैः । अन्यैर्जलस्थजीवैश्चपूरिता मांसभेदकैः
।२०। पतितास्तत्र वाहे चक्रंदति बहु पापिनः । हां भ्रातः पुत्र तातेति प्रलपंति पुनः पुनः ॥
। २१ । क्षुधितास्तृषिताः पिबंति किल शोणितम् । सासरिद्रुधिरापूरं वहंती फेनिलंवहु । २२ ।
महाघोराति गर्जन्ता दुर्निरीक्ष्या भयावहा । तस्या दर्शन मात्रेण पापाःस्युर्गतचेतनाः।२३।बहुवृश्चिक

उसके प्रवाहमें जोंही पापी जीवपड़ते हैं त्योंही हा हाकार करके एकसाथ चिल्लाउठते हैं। हाभ्रातः! हापुत्र! हा पिता!
इस प्रकार के दीनता पूर्ण वचन बोलते हैं ॥२१॥ भूख प्यास भी साथमें उन पापियों को अत्यन्त व्याकुल करती है। बहुत से
झाग के साथ रुधिर के पूर से पूरित उस नदी के रुधिर को ही पीते हैं ॥२२॥ वह नदी अत्यन्त विकराल है खूब गर्जना
करती रहती है। अतीव भयप्रद होनेके कारण उसका देखनाभी अत्यन्त कठिन होता है वे पापी उसे देखते ही तत्क्षण मूर्छित

हो जाते हैं ॥२३॥ उसके भीतर बड़े २ वृश्चिक एवं काले सर्प पापात्माओं को चारों ओर से आकर घेरतेहैं उन पापियों की रक्षा करने वाला कोई दिखाई नहीं देता ॥२४॥ उस नदीके भीतर सैकड़ों हजारों आवर्त चक्कर लगाते रहते हैं वेपापी पाताल में चले जाते हैं क्षणपर्यन्त वहा रह कर फिर ऊपर आते हैं ॥२५॥ हे पक्षिराज ऐसी नदी पापियों के लिए ही निर्मित की गई है। जिसका पार दिखाई नहीं देता। वह बहुत दुखदायक है यह वैतरणी नदी का वर्णन किया है ॥२६॥

संकीर्णा सेविता कृष्णपन्नगैः तन्मध्ये पतितानां च त्राता कोपि न विद्यते ॥२४॥ आवर्त्तशतसाहस्रैः पाताले यांति पापिनः ॥ क्षणं तिष्ठन्ति पाताले क्षणादुपरिवर्तिनः ।२५। पापिनां पतनायैव निर्मिता सा नदी खग ॥ न पारं दृश्यते तस्या दुस्तरा बहुदुःखदा ।२६। एवं बहुविधेक्लेशे यममार्गेतिदुः-खदे ॥ क्रोशंतश्चदुखितायांति पापिनः ॥ २७ ॥ पाशेन यंत्रिताःकेचित्कृष्यमाणास्तथाँकुशै ॥ शस्त्राग्रैः पृष्टतः प्रोतैर्नीयमानाश्च पापिनः ॥२८॥ नासाग्र पाशकृष्टाश्च कर्णपाशैस्तथापरे कालपाशैः

इसी प्रकार अत्यन्त दुखदायी नाना प्रकार के क्लेशदायक यह मार्ग पर चिल्लाते रोते अत्यन्त दुखित होकर पापी चलते हैं ॥२७॥ कई एक पाशों से बंधे अंकुशों द्वारा खैंच २ कर चलाये हुए एवं पीठों पर तीखे शस्त्रों के बींध देने पर चलाये गये चल पड़ते हैं ॥२८॥ कितनेई पापियों की नाक को नाथकर रस्सियों के द्वारा खैंचकर किहीं के कानों में रस्सी

बांध कर यमदूतलिये जाते हैं, तथा काल पाशों के और बड़े२ काक पक्षियों द्वारा खिचा हुआ चल रहा होता है ॥२९॥ कई एक पापी तो ग्रीवा, भुजा, पांव तथा पृष्ठ में जंजीरों से बंधे हुए खींचे जारहे हैं। एवं कई सिर पर लोहेका भार उठाये मार्ग पर चल रहे हैं ॥३०॥ बहुत पापियों को यमदूत मुग्दरों से इतना पीटते हैं कि मुखों से रुधिर निकलने लगजाता है उसी रुधिर को वे फिर भक्षण करते हैं ।३१। इसी प्रकार इन दुखों को पाकर वे पापी अपने किये करमों को सोचते हैं।

कृष्यमाणाः काकैः कृष्यास्तथापरे ॥२९॥ ग्रीवाबाहुषु पादेषु बद्धाः पृष्टे च शृंखलैः ॥ अयोभारंचयं केचिद्वहन्तः पथि यांति ते ।३०। यमदूतैर्महाघोरैस्ताड्यमानाश्च मुदगरैः वमन्तो रुधिरं वक्त्रात्तदेवाश्नंति ते पुनिः ।३१। शोचंतः स्वानि कर्माणि ग्लानि गच्छन्ति जंतवः ॥ अतीव दुःख सपन्नाः। प्रयांति यम मंदिरम् ।३२। तथापि स ब्रजन्मार्गे पुत्रपौत्र इति ब्रूवन ॥ हाहेति प्ररुदन्नित्यमनुतप्यति मंदधीः ॥३३॥ महता पुण्ययोगेन मानुषं जन्मलभ्यते। तमाप्य न कृतो धर्म्मः कीदृशं हि

उन्हें अधिकग्लानि होतीहै तथा रोते, चिल्लाते, दुःखउठाते यमलोक पहुँचते हैं ।३२। इतने दुखी होने पर भीयम मार्ग में हा पुत्र हा पौत्र। इत्यादि वचन बोलते हैं। वे मन्द बुद्धि अपने किये पर पश्चातापभी करते हैं ।३३। कहते हैं कि देखो बड़े भारी पुण्यों के योग से हमें अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य जन्मप्राप्त हुआ उसे पाकर व्यर्थ खो डाला, कोई धर्म नहीं किया

॥३४॥मनुष्य शरीरही मुक्तिका साधनहोता है। ऐसाउत्तम जन्म पाकरनकुछ दान, नअग्नि में होम न तप और नदेवताओं की पूजा हीकी। विधि एवं श्रद्धाके साथ किसी तीर्थपर भी नहीं पहुँचे, नकिसी साधुसन्त ब्राह्मणकी सेवाकी। इसलिये हे जीव! अब अपने किये कर्मों को भोग तुम्हारा निस्तारहो तो कैसे हो! कोई भी शुभ कर्मनहीं हुआ।३५। अरे मैंने ब्राह्मण देवताओंकी कभी पूजानहीं कीन पतित पावनी श्री गङ्गाजल पान किया, न सत्पुरुषों की कभीसेवाकी, न महात्माओं

मया कृतम् ।३४। मया न दत्तं हुतं हुताशने तपो न तप्तं त्रिदशा न पूजिताः॥ न तीर्थ सेवा सहिताः विधानतो देहिन क्वचिन्निस्तरस्य कृतम् ।३५॥ न पूजिता विप्रगणाः सुरापगा न चाश्रियाः सत्पुरुषाः न सेविताः। परोपकारा न कृता कदाचन देहिन् क्वचित् निस्तरस्य त्वया कृतम् ।३६। जलाशयो नैवकृतोहि निर्जले मनुष्यहेतोः पशुपक्षिहेतवे। गोविप्रवृत्यर्थमकारिनाणवापि देहिन् क्वचिन्नस्तरस्य त्वया कृतम् ॥३७॥ न नित्यदानं न गवान्हिकं वेद शास्त्रार्थ

का कभीआश्रय पकड़ा। कोईपरोपकार भी तो नहीं किया, हे देहाभिमाननिन् अबतू अपने कियेकर्मों को भोग।३६। आये गये मनुष्यों एवं पशु पक्षियों के लियेजल रहित परकोई तालाव वापीअथवा कुँआ आदि कुछ भी नहींलगवाया, गौ ब्राह्मणकी आजीविका के लिये कुछ थोड़ा सा भी धन खर्च नहींकिया इसलिए हे जीवात्मन! अबतू अपने किये करमों को भोग।३७। नित्य का यथा शक्ति अन्न दान भी नहीं किया, और गौ की एकदिन की तृप्ति को चारा घास

कुछ भी दान नहीं दिया दैनिक कार्यों में स्थान, सन्ध्या जप, हवन, स्वाध्याय, देव पूजन वैश्वबलि आदि कुछ भी नहीं किया और न वेदशास्त्रोंके यथार्थ बचनोंका पालनकिया है। कोई भी पुराणशास्त्र नहीं सुना और न वेदशास्त्रजानने वाले ब्रह्मण की पूजा की इससे हे जीवात्मन् अपने किये कर्मों को भोग ॥३८॥ स्त्रीका देहपाकर मैंने अपने पतिकीआज्ञा का पालन नहीं किया न उसे कभी मधुर बचन कहे पति व्रत्य धर्म की पालना भी नहीं की। यथायोग्य गुरुओंके उचित अपने

स्यवचः प्रमाणितम् ॥ श्रुतं पुराणं नच पूजितोज्ञो देहिन् क्वचिन्नस्तस्य त्वया कृतम् । ३८ ॥ भर्तुर्मया नैव कृतंहितंवचः पति व्रतंनैव कदापि पालितम् ॥ न गौरवं क्वापि कृतं गुरूचितंदेहिन् क्वचिन्नस्तस्य त्वया कृतम् ॥३९॥ न धर्म बुद्धया पतिरेव सेवितो वह्निप्रवेशोन कृतो मृते पतौ ॥ वैधव्यमासाद्य तपो न सेवितं देहिन् क्वचिन्नस्तस्य त्वया कृतम् ॥४०॥ मासोपवासैर्न विशोषितं मया चांद्रायणैर्वा नियमैः सविस्तरैः नारी शरीरं बहु दुःख भाजनं लब्धं मया पूर्वकृतैर्विकर्मभिः ॥

पति का गौरव मान किंवा गुरुओं का सत्कार कभी नहीं किया इसकारण जीवात्मन् अब अपने किए कर्म भोगो ॥ ३९ ॥ अपना धर्म समझकर पति की सेवा नहीं की। पति के परलोक सिधार जाने पर अग्नि प्रवेश (सतीहोना) नहीं किया। विधवा पन पाकर तप नहीं किया इसी कारण हे जीव अब किये करमों को भोग ॥४०॥ एक महीने के उपवास से व्रतके

मिथ्या को पाकर तप नहीं किया इसी कारण हे जीव अब किये करमों को भोग ।४०।। एक महीने के उपवास से व्रतके

द्वारा अथवा विस्तार पूर्वक पूरे नियमों से चान्द्रायण व्रतके द्वारा अपने शरीर को निर्मल बनाने की चेष्टा नहींकी स्त्रीका
शरीर बहुत दुःखों कापात्र होता है, यहपूर्व जन्मके विक्रमों से ही प्राप्तहोता है ऐसा स्त्री का शरीर प्राप्त करकेअपनेसुधार
के लिए कुछ भी कर्म मैंने नहीं किया ।।४१।। इस प्रकार गरुड़ जी वह प्रेतात्मा अपने पूर्व शरीर से किए दुष्कर्मों
को स्मरण कर पश्चाताप करता है हाथ मल २ कर कहता है वैसा मनुष्य का शरीर- अबमुझे मिलने का नहीं ऐसा

।४१। एवं विलप्य बहुशो संस्मरन् पूर्वदैहिकम् ।। मानुषत्वं ममकुत इति क्रोशन् बिसर्पति ।४२। दशसप्त
दिवान्येको वायुवेगेन गच्छति । अष्टदश दिने ताद्यप्रेत सौम्यपुरं ब्रजेत् । ४३ । तस्मिन् पुरे
रम्ये प्रेतानां च गणो महान् ।। पुष्पभद्रा नदी यत्र न्यग्रोधः पुरदर्शनः ।४४। पुरे तत्र स विश्रामं
प्राप्यते यमकिंकरैः । दारा पुत्रादिकं सौख्यं, स्मरते तत्र दुःखितः ।४५। धनानि भृत्यमात्राणिसर्वं
शोचति वै यदा ।। तदा प्रेतास्तु तत्रत्याः किंकराश्चेदमब्रुवन् । ४६ । क्व धन क्व सुता जायाक्व

चिल्लाता चीखना चलता रहता है ।।४२। तब सत्रह दिन पर्यन्त वायु वेग के द्वारा अकेला चलकर वह प्रेतात्माअठारहवें
दिन हे गरुड़ सोम्यपुर में पहुँचता है ।।४३।। उस सुन्दर सोम्यर में बहुत से प्रेत रहते हैं और वहां पुष्प भद्रा नदी है।
पुरदर्शन न्यग्रोध नाम वहां का राजा है ।।४४।। पुर में पहुँचकर यमदूत थोड़ाविश्राम कराते हैं वह प्रेतात्मा-अपनेस्त्री पुत्र
आदि बान्धवों का सुख स्मरण करके दुःखी होता है ।।४५।। वहां सम्बन्धी, धन नौकर चाकरआदिका सुख स्मरण करके

जब भी गहरी चिंता में पड़ता है, तब उसे वहां के रहने वाले यमदूत इकट्ठे होकर कहते हैं ॥४६॥ हे प्रेत! तुझे स्त्री पुत्र- धन, बांधव, मित्र याद आ रहे हैं। कोई भी किसी का नहीं। अपने कर्म ही साथ चलते हैं उन्हें स्वयं भोगता हुआ अब यमपुर के मार्ग को पूरा कर ॥४७॥ हे परलोक जाने वाले पथिक तुम यमराज के तथा यम के दूतों के बल को नहीं जानते। कि यमराज दण्ड देंगे क्षमा करना जानते ही नहीं। वहां पहुँचना तुम्हारे लिये निश्चित है। इस लोक का मार्ग

सुहृत्क च बाँधवाः ॥ स्वकर्मोपार्जितं भोक्ता मूढ़ याहि चिरं पथि ।४७। जानासि शंबल-बलं बलमध्वगानां नो शंबलाय यतसे परलोकपाथं ॥ गंतव्यमस्ति तव निश्चितमेव तेन मार्गेण तन्न भवति क्रयविक्रयोपि ॥४८॥ अबलाख्यातमार्गोयंनैव मर्त्य श्रुतस्त्वया ॥ पुराणसंभव वाक्यं किंद्विजेभ्यो भ्योपि न श्रुतम् ॥४९॥ एवमुक्तस्ततो दूतैस्ताडयमानश्च मदगरैः। निपतन्नुत्पतन्धावन्पाशैराकृष्यते बलात् ।५०। तत्र दत्तं सुतैः पौत्रे स्नेहाद्वा कृपयाथवा। मासिकं पिंडमश्नाति ततः सौरिपुरं व्रजेत्

क्रय विक्रय कुछ भी नहीं ॥४८॥ अरे प्रेतमृत्यु लोक में यह यम मार्ग तो प्रसिद्ध है बालक से लेकर बूढ़े तक सब जानते हैं। क्या ब्राह्मणों से पुराणों की कथा में इस मार्ग का नाम भी नहीं सुना ।४९। ऐसे बचन सुना २ कर यमदूत उसे मुग्दरों द्वारा पीटते हैं, अब गिरते भागते रोते हुए उसको वे बल पूर्वक खेंचते हैं ।५०। इस पुर में कुछ सुस्ताने प्रेत के बेटे, पोते

स्नेह से मासिक पिण्डको यदि दान करते हैं तो उसे पाता है उसके अनन्तर सौरिपुर जाता है ।५१। उस सौरिपुर का काल रूप धारण किए हुए जङ्गम नामी राजा है, ज्यों ही उसे देखता है तो भय से कांप उठता है कुछ वहां भी सुस्ताने की इच्छा करता है ।५२। उस पुर में पहुँचने पर प्रेत को पुत्र पौत्र आदि सम्बन्धी कुछ भी त्रैपाक्षिक पिण्डदान करते हैं, उसी अन्न संयुक्त जल को ग्रहण करता है। उसके अनन्तर वहां से चल पड़ता है ।५३। तब अत्यन्त शीघ्रता के साथ

॥५१॥ तत्र नाम्नास्ति राजावै जँगमः कालरुपधृक् ॥ तं दृष्ट्वा भयभीतोसौ विश्रामे कुरुते मतिम् ॥ ५२ ॥ उदकं चान्नसंयुक्तं भुंक्ते तत्र पुरे गतः त्रैपाक्षिके वै यदत्तं सतत्पुरमति क्रमेत् ॥ ५३ ॥ ततो नगेन्द्रभवनं प्रेतो याति त्वरान्वितः । वनानि तत्र रौद्राणि दृष्ट्वा क्रंदति दुःखितः । ५४ । निर्घृणैःकृष्यमाणस्तुः रुदते च पुनःपुनः । मास द्वयावसाने तुतत्पुरं व्यथितो व्रजेत् ।५५। भुक्त्वा पिंड जलं वस्त्रं दत्तंयद्बांधवै रह कृष्यमाणः पुनः पाशैर्नीयतेऽग्रे च किंकरैः ॥ ५६ ॥ मासे तृतीये

वह प्रेत नगेन्द्रभवन में पहुँचता है वहां बड़े २ बिकट बन हैं उन्हें देखकर वह प्रेत चिल्ला उठता है अत्यन्त दुःखी हो कर रो उठता है ।५४। वहां बड़ी निर्दयता के साथ यमदूत उसे बांधकर खूब खींचते हैं रोता है फिर चिल्लाता है इसी प्रकार दो महीनों के गुजर जाने पर बहुत दुखी होता हुआ उस पुर में प्रवेश करता है ।५५। वहां बान्धवों द्वारा पिण्ड जल, वस्त्र आदि को प्राप्त करके फिर आगे के लिए यमदूत उसे कस लेते हैं फिर उन्हीं पाशों द्वारा खींच २ कर आगे ले

चलते हैं ।।५६।। फिर तीसरे महीने वह गन्धर्वपुर पहुँचता है । वहां उसे त्रैमासिक पिण्ड प्राप्त होता है । उसे भोग कर आगे के लिए चल पड़ता है ।५७। चौथे महीने शैलागमपुर पहुँच जाता है । वहां पहुँचने पर प्रेत उस पर ऊपर से खूब पत्थरों की वर्षा होती है ।।५८।। वहां उसे चतुर्थ मासिक पिंड प्राप्त होता है । उसे भोगकर कुछ सुखी होता है । तब वह प्रेत पांचवें महीने क्रौंचपुर में जाता है ।।५९।। तब वहां बान्धवों के हाथों से दिया हुआ पांच मासिक पिंडको प्राप्तकर

संप्राप्ते प्राप्य गन्धर्वपत्तनम् ।। तृतीयमासिकं पिंडं भुक्त्वा तत्रप्रसर्पति । ५७ । शैलागमं चतुर्थे च मासि प्राप्नोति वै पुरम् । पाषाणास्तत्र वर्षन्ति प्रेतस्योपरि भरिशः ।५८। चतुर्थे मासिकं पिंडं भुक्त्वा किंचित्सुखी भवेत् ।। ततो याति पुरं प्रेतः क्रौंच मासेथ पंचमे ।५९। हस्तदत्तं तदा भुक्ते प्रेतः क्रौंचपुरे स्थितः यत्पांचमासिकं पिंडं भुक्त्वा क्रूरपुरं व्रजेत् ।६०। सार्द्धकैः पंचभिर्मासैन्यूनं षाण्मासिकं भवेत् ।। तत्र दत्तेन पिंडेन घटनाप्यायितः स्थितः ।। ६१ ।। मुहुर्तार्द्धं तु लिश्रभ्य कंपमानः

भोगता है । उसके अनन्तर क्रूरपुर के लिए चल पड़ता है ।।६०। तब उस प्रेत का साढ़े पांच माससे कुछकमषण्मासिक होता है । उसको छमासी नामसे कहा जाता है । उसी छमासी में बान्धवों द्वारा दान किए हुए घट सहित पिंडको पाकर वह प्रेत कुछ तृप्त होता है ।६१। छमासी के दिन घट दानसे उसप्रेत को आधा मुहूर्त (१ घड़ी) जितना विश्राम भी मिलता है उसे पाकर फिर से यमदूतों द्वारा चलने के लिए तर्जित होता है । अर्थात् सताया जाता है । कांपता हुआ अत्यंतदुखी होकर उस पुर से चल पड़ता है ।६२। फिर चित्र भवन नामकपुर में पहुँचता है। चित्र भवनपुर वहीं है जहां पर यमराज के छोटे

उसे पाकर फिर से यमदूतों द्वारा चलने के लिए तर्जित होता है। अर्थात् सताया जाता है। कांपता हुआ अत्यंत दुखी होकर उस पुर से चल पड़ता है।६२। फिर चित्र भवन नामक पुर में पहुंचता है। चित्र भवनपुर वहीं है जहां पर यमराज के छोटे भाई विचित्र नाम के राजा राज्य कर रहे हैं।६३। वे विचित्र राजा बड़े मोटे शरीर वाले हैं, उन्हें देखते ही डरकर प्रेत भागने लग जाता है। तब उसके सामने नदी के पार पहुंचाने वाले कैवर्त (मल्लाह) आकर यह कहते हैं ॥६४॥ मल्लाह सर्वप्रथम उसे वैतरणी नदी का अर्थ समझाकर कहते हैं कि हे प्रेत! यह वैतरणी नदी है, अर्थात् वितरण करना वेदादि शास्त्र

सुदुःखिता ॥ तत्पुरं तु परित्यज्य तर्जितो यमकिंकरैः ॥ प्रयाति चित्रभवनं विचित्रो नाम पार्थिवः। यमस्यैवानुजो भ्राता यत्र राज्यं प्रशास्ति हि ।६३। तं विलोक्य महाकायं यदा भीतः पलायते। तदा संमुखआगत्य कैवर्त्ता इदमब्रुवन् ।६४। वयं ते तर्त्तुकामाय महावैतरणी नदीम्। नावमादाय संप्राप्ता यदि ते पुण्यमीदृशम् ।६५। दानं वितरणं प्रोक्तं मुनिभिस्तत्वदर्शिभिः। इयं सा तीर्यते यस्मात्तस्माद्वैतरणी स्मृता ॥ ६६ ॥ यदि त्वया प्रदत्ता गौस्तदा नौरुपसर्पति। नान्यथेति वचस्तेषाँ

वेत्ता मुनियों के कथन से दान करना उसी दान के प्रभाव से ही यह वैतरणी नदी पार की जा सकती है इसीलिए इसका नाम वैतरणी है।६५। मल्लाह कहते हैं कि हम तुम्हें इसके पार पहुंचा देने को नाव लाये हैं। यदि तुम में कुछ दान करने का पुण्य हो तो इसी नाव के द्वारा हम तुम्हें पार पहुँचा दें।६६। यह समझलो! यह नाव उसी के पास जाती है जिसने गौ दान किया हो। गौदान करने के बिना अन्य किसी के पास जाती भी नहीं। इसे सत्य समझो। मल्लाहों की बातें

सुनकर गौदान न करने के कारण रो उठता है। दैव! हा दैव! पुकारने लग जाता है ॥६७॥ तब उस प्रेत को देख कर नदी आग पर चढ़ाये हुए तेल की भांति उबलने लग जाती है। प्रेत भी उस नदी को देखकर चिल्ला उठता है उस पापात्मा ने मनुष्य जन्म पाकर दान तो कुछ किया नहीं इसी कारण उस वैतरणी में डूब जाता है ॥६८॥ तब यमदूत आकाश चारी होकर मछलियां फँसाने वाले माहीगीरों की भांति उस प्रेत के मुँह में कांटा चुभोकर मछलियों की भांति

श्रुत्वा हा दैव भाषते ॥६७॥ तं दृष्ट्वा क्वथ्यते सातु तां दृष्ट्वा सोतिक्रन्दते। अदत्तदानः पापात्मा तस्यामेव निमज्जति ॥ ६८ ॥ तन्मुखे कंटकं दत्वा दूतैराकाशसंस्थितैः। बडिशेन यथा मत्स्यतथा पारं प्रणीयते ॥ ६९ ॥ षाण्मासिकं च यत्पिंडं तत्र भुक्त्वा प्रसर्पति। मार्गेस विलपन्याति बुभुक्षोः पीडितो ह्यलम् ॥ ७० ॥ सप्तमे मासि संप्राप्ते पुरं बह्वापदं व्रजेत्। तत्र भुक्ते प्रदत्तं यत् सप्तमे मासि पुत्रकैः ॥७१॥ तत्पुरं तुव्यतिक्रम्य दुखदं पूरंगच्छति ॥ महद्दुःखमवाप्नोते खेगच्छन् खेचरेश्वरः ॥७२॥

खींच कर पार फेंकते हैं ॥६९॥ वहां उसे छः मासिक पिण्ड की फिर प्राप्ति होती है उसे भक्षण कर आगे को चलता है। छै मासिक पिण्ड उसे तृप्ति नहीं कर सकता। भूख प्यास से व्याकुल हो, रास्ते में रोता चिल्लाता चलता है ॥७०॥ उस पुर से होकर, सातवें माह के लगने पर बव्हापदपुर में पहुँचता है। वहां पुत्र पौत्रादि प्रदत्त सातवें महीने के पिण्ड दान को भोगता है ॥७१॥ उस पुर से चल, दुःखदपुरमें जाता है। पक्षियोंकी भांति आकाश मार्ग से चलता हुआ बहुत दुख उठाता है ॥७२॥

आठवें महीने के दानपिण्ड को वहां भक्षण कर आगे चलता है। तब नवम महीने की समाप्ति में नाना क्रन्दगण

आठवें महीने के दानपिण्ड को वहां भक्षण कर आगे चलता है। तब नवम महीने की समाप्ति में नाना क्रन्दपुर में पहुँचता है ॥७३॥ नानाक्रन्दपुर में प्रेत अनेकों प्रकार के चिल्ला २ कर डराते हुए जीवों को देख कर स्वयं शून्य हृदय होता है और दुखित होकर स्वयं चिल्ला उठता है ॥७४॥ उसपुर को छोड़कर यमदूतों द्वारा धकेला हुआ दशवें महीने कष्टके साथ सुतप्त भवनमेंजाताहै, ॥७५॥ उसपुरमें पिण्डदान जलको भोगकर ग्यारहवें महीने की समाप्तिमें रौद्रपुर में

मास्यष्टमे प्रदत्तंयस्पिंडं भुक्त्वा प्रसर्पति। नवमे मासि संपूर्णेनानाक्रन्दपुरं व्रजेत्।७३। नानाक्रन्दगणान् दृष्ट्वा क्रन्दमानान् सुदारुणान्। स्वयंच शून्यहृदयः समाक्रन्दति दुःखितः।७४। विहाय तत्पुरं प्रेतस्तर्जितो यमकिंकरैः सुतप्तभवनं गच्छेद्दशमे मासि कृच्छ्रतः।७५। पिंडदानं जलं तत्र भुक्त्वापि न सुखी भवेत्॥ मासि चैकादशे पूर्णेपुरंरौद्रं स गच्छति॥७६॥ दशैकमासिकं तत्र भुक्ते दत्त सुतादिभिः॥ सार्द्धं चैकादशेमासि पयोवर्षणगच्छति॥७७॥ मेघास्तत्र प्रवर्षन्तिप्रेतानां दुःखदा-

जाता है ॥७६॥ उसपुर में पुत्र पौत्रादिक प्रदत्त ग्यारहवें महीने के पिंड को भोगता है फिर साढ़े ग्यारह महीने पयोवर्षण पुर में पहुँचता है ॥७७। वहां प्रेतों को दुखदाई मेघ खूब बरसते हैं। उसपुर में प्रेत दुखी होकर न्यूनाधिक पिण्ड को भोगता है ॥७८॥ वर्ष (साल) के गुजर जाने पर शीताढय नामक नगर में पहुँचता है, उस पुर का नाम इसलिए

शीताढ्य हैं कि वहां बर्फ से भी सौ गुणा (शीत) पड़ता है ॥७९। वहां उस प्रेतको जाड़ा दुखी करता, भूख भी व्याकुल करती है। तब वह दशों दिशाओंमें इधर उधर देखता है कि कोई मेरा बन्धु इस समय में काम आने वाला कहीं है जो मेरे इन दुखों को हटाने का प्रयत्न करे।८०। तब यमदूत उससे कहते हैं कि हे प्रेत! तुम में ऐसे पुण्य कहांकि जिससे इनदुखों की निवृत्ति हो। तब वहां बारहवें मांस के पिंड को भोग कर कुछ धैर्य पाता है ॥८१॥ पूरे वर्ष के हो जानेपरयमपुरके

यकाः न्यूनाधिकं च यच्छ्राद्धं तत्र भुंक्ते स दुःखितः ॥७७॥ संपूर्णे तुततो वर्षे शीताढ्यं नगरं ब्रजेत् ॥ हिमाच्छद गुणं तत्र महाशीतं पतत्यपि ॥७९॥ शीतार्त्तः क्षुधितः सोऽपि वीक्ष्यतेऽपि दिशो दश ॥ तिष्ठते बाँधवः कोपि यो मे दुःखं व्यपोहति ॥ ८० ॥ किंकरास्ते वदंत्यत्र क्व ते पुण्यं हिताद्दृशम् ॥ भुक्त्वा च वार्षिकं पिंडं धैर्यमालंवते पुनः ॥ ८१ ॥ ततः संवत्सरस्यांते प्रत्यासन्ने यमालयेबहुभीतिपुरे गत्वा हस्तमात्रं समुत्सृजेत् ॥८२॥ अंगुष्ठमात्रो वायुश्च कर्मभोगाय खेचर ॥ यातनादेह मासाद्य सहयाम्यै प्रयाति च ॥८३॥ और्ध्वदेहिकदानानि यैर्न दत्तानि कश्यप ॥ एवं कष्टेन ते यांति

निकट बहुभीतिपुर में पहुंचता है। तब पिंडोंद्वारा निर्माण हुए २ एक साथ प्रमाण उसपहिले शरीर को वहां पहुंच कर वह प्रेत उसे छोड़ देता है।८२। हे गरुड़! तब अंगुष्ठ प्रमाण वह वायुमय प्रेत जीव कर्म भोगने के लिए यमयातना के शरीर में आजाता है। शरीर धारी प्रेत को यमदूत पकड़ कर ले चलते हैं ॥८३॥ हे कश्यपनन्दन गरुड़! जिन लोगों ने अन्त

होने के पहिलेपरलोक सुधार के लिए कुछ भी दान नहीं किया...

होने के पहिलेपरलोक सुधार के लिए कुछ भी दान नहीं किया। उन्हेंकष्ट भोगने पड़ते, तथा दृढ़ बन्धनपाकर यमदूतों द्वारा यमलोक में जाते हैं।८४। यमराज जो धर्मराज हैं उसपुर के ४ दरवाजे हैं। उनमें दक्षिण की ओरके दरवाजे का मार्ग हे गरुड़! भगवानकहते हैं किमैंने तुम्हें सुनाया है।८५। औरसाथ में यह भी सुना दिया है कि जिस प्रकारकष्ट से महा घोर भूख प्यास थकानसे पीड़ितहो प्रेतात्मा दक्षिण द्वार से यमपुर पहुँचते हैं, और क्या सुनना चाहते हो ॥८६॥

इति श्री गरुड़पुराणे सारोद्धारे शस्त्रि हरिश्चन्द्र कृतायांसरल टीकायांयममार्ग निरूपणोनाम द्वितीयोऽध्यायः २॥

गृहीता दृढ बंधनैः। ८४। धर्मराज पुरे संति चतुर्द्वाराणि खेचर ॥ तत्रायं दक्षिणद्वार मार्गस्ते परिकीर्तितः। ८५। अस्मिन् पथि महाघोरे क्षुतृषा श्रमपीड़िताः यथा यांति तथा प्रोक्तं किं भूयः श्रोतुमिच्छति। ८६। इति श्री गरुड़ पुराणे सारोद्धारे यममार्गनिरूपणो नाम द्वतियोऽध्यायः ॥२॥

गरुड़उवाच। यममार्गं मातक्रम्य गत्वा पापी यमालये। कीदृशीं यातनांभुक्ते तन्मेकथय केशव। १। श्रीभगवानुवाच ॥ आद्यंतं च प्रवक्ष्यामि शृणुष्व विनतात्मज। कथ्यमानेपि नरकेत्वंभविष्यसि

गरुड़ बोले–हे भगवान! यम मार्ग पार कर पापात्मा जब यमालय पहुँचता है तो उसे कैसी यातना भोगती पड़ती है हे केशव! यह कृपा करके मुझे सुनाइये ॥१॥ श्री भगवान बोले–हे गरुड़! पहिले मैं तुझे नरकों के दुःख सुनाता हूँ सुन

कि जब मैं नरकोंका वर्णन करने लगूंगा, तू भी कांप उठेगा।२। उस बहुभीति पुरके आगे ४४ योजन के विस्तारवाला धर्मराज का पुर है।३। उसमें सदा हाहाकार शब्दहोते देखकर पातकी चिल्ला उठते हैं। उनका चिल्लाना रोना सुन कर यमराज के दूत।४। उस पुरी में जाकर यमराज के द्वारपालोंसे कहते हैं कि हम एक पापी लाये हैं वहां धर्मध्वजके द्वारपाल सर्वदा उपस्थित रहते हैं।५। वेही चित्र गुप्त के पास पहुंच कर उस पापी के शुभ अशुभ सर्व प्रकार के कर्म

कंपितः ॥२॥ चत्वारिंशद्योजनानि चतुर्युक्तानिकाश्यप ॥ बहुभीतिपुरादग्रे धर्मराजपुरं महत् ॥ ३ ॥ हाहाकारसमायुक्तं दृष्ट्वा क्रंदंति पातकी। तत्क्रंदितंसमाकर्ण्य यमस्य पुरचारिणः। ४। गत्वा-चतत्रतेसर्वेप्रतीहारं वदंति हि॥ धर्मध्वज प्रतीहारस्तत्र तिष्ठति सर्वदा।५। सगत्वा चित्रगुप्ताय ब्रूते तस्य शुभाशुभम्॥ ततस्तं चित्रगुप्तोपि धर्मराजंन्य वेदयत्।६। नास्तिका येनरास्ताक्ष्र्य महा पापरताः सदा॥ तांश्चसर्वान् यथायोग्यं सर्वजानाति।७। तथापि चित्रगुप्ताय तेषां पपं संपृच्छति॥ चित्रगुप्तोपि सर्वज्ञः श्रवणान परिपृच्छति।८। श्रवणाब्रह्मणः पुत्राः स्वर्भूपातालचारिणः

कह सुनाते हैं। फिर चित्र गुप्त धर्मराज को जाकर कहते हैं॥६॥ हे गरुड़! जो मनुष्य महापाप करने वाले नास्तिक हैं उन्हें यथोचित रूपेण धर्मराज को भली भांति जानते हैं।७। फिर भी वे धर्मराज पापियोंके विषय में चित्र गुप्त से पूछते हैं चित्र गुप्त भी सर्वज्ञ होते हुए भी पूछते हैं॥८॥ ये श्रवण ब्रह्माजी के पुत्र हैं ये ही देवता स्वर्ग पृथ्वी पाताल आदि

त्रिलोक में सर्वदा विचरते रहते हैं और दूरसे श्रवण करनेकी देखलेनेकी भी शक्ति रखते हैं अतः इनका नाम श्रवण है ।९। उनकी स्त्रियां इसी प्रकारशक्ति वाली हैं । इनका नाम भी श्रवणी है ये सब स्त्रीगत सर्व प्रकार के चरित्र भली भांति जानती है ॥१०॥ प्रत्यक्षता वा परोक्ष में शुभ अशुभ जो कुछ कर्म मनुष्य करते हैं उन सबको श्रवण एवं श्रवणों की पत्नियां चित्रगुप्त के प्रति आकर कहदेती हैं ।११। ये ही पति पत्नियां धर्मराज के चार (जासूस) हैं । ये ही मनुष्यों के मन वाणी एवं शरीर

दूरश्रवण विज्ञानाद्दूरश्रवणचक्षुषः ॥९॥ तेषां पत्न्यस्तथाभूताः श्रवण्यः पृथगाह्वयाः स्त्रीणां विचेष्टितं सर्वतो विजानंति तत्वतः ॥१०॥ नरैः प्रच्छन्न प्रत्यक्षं यत्प्रोक्तं चकृतं च यत । सर्वमावेदयंत्येवचित्र गुप्ताय ते चराः । ११ । चारास्ते धर्मराजस्य मनुष्याणाँ शुभाशुभम् । मनोवाक्कायजं कर्मश्रवणाः जानंतितत्वतः ॥ १२ ॥ एवं तेषां शक्तिरस्ति मर्त्यामर्त्याधिकारणम् ॥ कथयन्तिनृणां कर्मश्रवणाः सत्यवादिनः ॥१३॥ व्रतैर्दानैश्च सत्योक्त्य यस्तोषयति तान्नरः । भवंति तस्यते सौम्याः स्वर्गमोक्ष प्रदायिनः ॥१४॥ पापिनाँ पापकर्माणि ज्ञात्वा ते सत्यवादिनः । धर्मराजपुरः प्रोक्ताः जायंते

द्वारा किये गये शुभ अशुभ सब प्रकारके कर्मों को जानते हैं ।१२। मनुष्य तथा देवताओं पर पूरा अधिकार रखने वाले उन ब्रह्माजी के पुत्र श्रवण एवं उनकी स्त्रियों को पूरी शक्ति है कि वे हत्यादी मनुयों के बुरे भले कर्म जाकर चित्र गुप्त को सुनावें ॥१३॥ व्रत धारण करने, एवं सत्यव्रत के पालन से जो मनुष्य—इन्हें सन्तुष्ट करता है तो श्रवण उस

पर प्रसन्न होकर स्वर्गमोक्ष ही प्राप्त कराते हैं ।१४। यही सत्यवादी श्रवण पापियोंके पापकर्म जानकर धर्मराजको कहते हैं और उनको दण्ड दिलाते हैं ।१५। हे गरुड़ ! सूर्य १, चन्द्रमा २, वायु३, अग्नि ४, आकाश ५, पृथ्वी ६, जल ७, अन्तरात्मा ८, मन९, दिन १०, रात्रि ११, प्रातःसन्ध्या १२, सायं सन्ध्या १३, धर्म १४ ये सब मनुष्यके शुभ अशुभ सब कर्मों को जानते हैं और धर्मराज के यहां साक्षीभरते हैं ।१६। धर्मराज, चित्र गुप्त श्रवण, तथा सूर्य आदि यह सबमिल

दुःख दायिनः ।१५। आदित्यचन्द्रावनिलोनलश्च द्यौर्भूमिरापोहृदयं मनश्च । अहश्च रात्रिश्च उभे च संध्ये धर्मश्च जानाति नरस्य वृत्तम् ।१६। धर्मराजचित्रगुप्तः श्रवण भास्करादयः । कायस्थं तत्र पश्यन्ति पापं पुण्यं च सर्वशः ।१७। एवं सुनिश्चयं कृत्वा पापिनां पातकेयमः ॥ आहूय तान्निजं रूपं दर्शयत्यपि भीषणम् ।१८। पापिष्ठाते प्रपश्यन्ति यमरूपं भयङ्करम् ॥ दण्ड-हस्तं महाकायं महिषोपरि संस्थितम् । १९ । प्रलयांबुदनिर्घोषं कज्जलाचलसन्निभम् । विद्युत्प्रभायुधै

कर मनुष्यों के शरीर में स्थितपुण्य पाप इनदोनों को चारोंतरफ से देखते हैं ।१७। इसी प्रकार भली भांति जाँच करके यमराज उन पापियों को अपने सन्मुख बुलाते हैं फिर अपना भयानक रूप उन्हें दिखाते हैं ।१८। पापात्मा यमराज के भयानक रूप को देखते हैं । यमराज बड़े महिष पर बैठे हुए, बड़े शरीर वाले हैं हाथ में दण्ड लिये हैं ।१९। प्रलय काल के बादलों की गर्जना की भांति बोलते, कज्जलगिर के समान कांति वाले, ३२ भुजाधारी हैं । हरहाथ में बिजली की

चमक जैसे शस्त्र धारण कर रहे हैं ॥२०॥ विस्तार जनका तीन योजन तक फैला हुआ है वापी समान बड़े २ लालनेत्र बड़े दांत एवं विकराल ठाड़े हैं। भयानक मुख है। बड़ी दीर्घ नासिका है ऐसा यमराज का स्वरूप है ॥२१॥ चित्रगुप्तका स्वरूप भी भयानक है। औरसाथ में सब प्रकार के ज्वररोग एवं मृत्यु आदि चित्रगुप्त के पास खड़े हुए हैं। इनके अतिरिक्त

भीमैः द्वात्रिंशद्भुजसंयुतम् ॥२०॥ योजनतत्रविस्तारं वापीतुल्यविलोचनम् दंष्ट्राकरालवदनं रक्ताक्षं दीर्घ नाशिकम् ॥२१॥ मृत्युज्वरादिभिर्युक्तश्चित्र गुप्तोपि भीषणः ॥ सर्वेदूताश्च गर्जन्ति यमतुल्या स्तदंतिके ॥२२॥ तं दृष्ट्वा भयभीतस्तु हाहेति वदति खलः ॥ अदत्तदानः पापात्मा कंपते क्रंदते पुनः ॥२३॥ ततो वदति तान् सर्वान् क्रन्दमानांश्च पापिनः ॥ शोचंतः स्वानि कर्माणि चित्रगुप्तो- यमाज्ञया ॥२४॥ भोभो पापी दुराचरी अहङ्कार प्रदूशिताः ॥ किमर्थमर्जितं पापंयुष्माभिः रविवेकिभि।

यमराज के समान भया नकरूपमय तुल्य सारे यमदूत भी पास ठहरे गर्ज रहेहैं ॥२२॥ इन सबको देखकर पापी-भयसे कांप उठता है और हाहाकार करनेलगता है। मनुष्य जन्म पाकरदान आदि कुछ न करने परवह पापात्मा कांपकर चिल्लाने लगता है ॥२३॥ तब चित्रगुप्त चिल्लाते चीखते कांपते अपने कर्मों का शोक करते हुए उन सब पापियों को यमराज की आज्ञा सुना कर कहते हैं ॥२४॥ चित्र गुप्त कहते हैं-अरे दुराचारी पापियो। तुमने अहंकारमें आकर कुछ भी विचार नहीं किया

दुष्ट स्वभाव होकर पापरूप धन इकट्ठा करने में लगे रहे। यह सब क्यों किया।२५। अरे पापियो! पाप करने वाले लोगों की संगत में पड़ कर काम तथा क्रोध आदि से उत्पन्न कर्म किया जाय वह पाप है, और महादुःखके देने वाला है ऐसा जानबूझ कर भी अरे मूर्खों! तुमने क्यों किया ?।२६। फिर तुमने प्रसन्नता से पाप किये हैं। अब जैसे तुम्हारे कर्म हैं वैसे उनके फल हैं इन्हें भी भोगो इन यातनाओं से अपना मुँह फेर क्यों रहे हो ? ॥२७॥ जो पाप तुम लोगोंने किये

॥२५॥ कामक्रोधाद्यदुत्पन्नं संगमेन पापिनाम् ॥ तत्पापं दुःखदं मूढाः किमर्थं चरितं जना ॥२६॥ कृतवंतः पुरा यूयं पापान्य तिहर्षिताः तथैवयातना भोग्याः किमिदानीं पराङ्मुखाः ॥२७॥ कृतानि यानि पापानि युष्माभिः सुवहून्यपि ॥ तानि पापानि दुःखस्य कारणं न वयंजनाः।२८। मूर्खेपि पंडिते वापि दरिद्रे वा श्रियान्विते। सबले निर्बले वापि समवर्ती यमः स्मृत।२९। चित्रगुप्तस्येति वाक्यंश्रुत्वा ते पापिनस्तदा ॥ शोचतः स्वानि कर्माणितूष्णीं तिष्ठंति निश्चलाः।३०॥ धर्मरा-जोपितान्दृष्ट्वा चौरवन्निश्चलान्स्थितान् ॥ आज्ञापयति पापानां शास्ति चैमयथोचिताम् ॥ ३१ ॥

हैं वही, पाप तुम्हारे दुःखों का कारण है। हम तुम्हारे दुःखों का कारण नहीं हैं।२८। यह समझलो मूर्ख हो, पण्डित, निर्धन धनी, बलवान, तथा निर्बल हो, यमराज तो सब के लिये समदृष्टि माने जाते हैं।२९। चित्र गुप्त के इस प्रकार के वचन सुन, पापी लोग अपने २ करमों का बिचार करते हुए निश्चल होके चुपचाप ठहर जाते हैं।३०। धर्मराज भी सबको चोर

की भांति चुपचाप निश्चल होके ठहरा हुआ देख कर उन के पापों के अनुसार दण्ड देने की आज्ञा करते हैं ॥३१॥ तब वहां

की भांति चुपचाप निश्चल होके ठहरा हुआ देख कर उन के पापों के अनुसार दण्ड देने की आज्ञा करते हैं ॥३१॥ तब वहां ठहरे हुए यमदूत निर्दय होकर उन्हें खूब पीटते हैं और कहते हैं कि पापियो ! अत्यन्त महाघोर नरकोंमें चलो ।३२। यम की आज्ञा मानने वाले प्रचण्ड चण्डक आदि यमदूत उन सब पापियों को एक ही पांस में बांधकर नरकों की ओर लेचलते हैं ।३३। नरकों के पास एक बड़ा शाल्मली का वृक्ष है जिससे जलती हुई अग्नि के समान बड़े २ शोले निकल रहे हैं ।

ततस्ते निर्दया दूतास्ताडयित्वा वदन्ति च ॥ गच्छपापिन् महाघोरान्नरकानति भीषणान् ॥३२॥ यमाज्ञाकारिणो दूताः प्रचंडचंडकादयः ॥ एकपाशेन तान्बध्वा नयंति नरकान् प्रति ॥३३॥ तत्र वृक्षो महानेको ज्वलदग्निसमप्रभाः ॥ पंचयोजनविस्तीर्ण एक योजनमुच्छ्रितः ॥३४॥ तदवृक्षे शृंखलैर्बध्वाऽधोमुखं ताडयंति ते ॥ रुदंदि ज्वलितास्तत्रतेषां त्राता न विद्यते ॥३५॥ तस्मिन्वै शाल्मलीवृक्षे लंबंतेऽनेक पापिनः क्षुत्पिपासा परिश्रांता यमदूतैश्च ताडिताः ॥३६॥ क्षमध्वं भोपराधं मे कृतां

वह ५ योजन (बीस कोस) तक फैला हुआ है, और १ योजन ऊँचा है ॥३४॥ सबसे पहिले उस वृक्षमें जंजीरों से बांधदेते हैं मुख नीचे लटकाकर, पीटना आरम्भ करते हैं । एक तो अग्नि भय से वे पापी जलते रहते, दूसरे यमदूतों के चाबुक पडते हैं । तब वे खूब रोते हैं । बचाने वाला वहां होता ही नहीं ॥३५॥ उस शाल्मली वृक्षपर अनेकों पापी लटकते रहते, हैं भूख प्यास खूब सताती, तथा यमदूत भी खूब ताड़ना करते हैं । ३६। तब वे पापी दोनों हाथ जोड़ २ कर यमदूतों की प्रार्थना

करते हैं दूसरा कोई भी आश्रय दिखाई नहीं देता। बड़ी नम्रता के साथ कहते हैं कि हमारे अपराध क्षमा कीजिए ॥३७॥ ज्यों २ प्रार्थना करते हैं त्यों २ यमदूतों की ताडना बढ़ती जाती है। लोहे के डण्डे, मुगदर, तोमर, कुन्त, गदाएं मूसलइत्यादि प्रकार के आयुधों से उन्हें पीटते हैं ॥३८॥ इसी ताडना को पाकर वे निश्चेष्ट हो जाते हैं कुछ भी होश नहीं रहता। उन्हें इस प्रकार से मूर्छित देख कर यमदूत कहते हैं ।३६। हे दुष्कर्म कर्ता पापियो! तुमने मनुष्य जन्म पाकर दुष्ट कर्म क्यों किये? अत स्वाद भी भोगो। तुम से यह भी न हो सका अतीव सुलभ मिलने वाला जल किसी प्यासे को पिलादें और

जलिपुटा इति ॥ विज्ञापयंति तान्दूतान्यापिष्ठास्ते निराश्रयाः ।३७॥ पुनः पुनश्च नैदूतैर्हन्यंते लोहयष्टिभिः ॥ मुगदरैस्तोमरैः कुंतैर्गदाभिर्मुशलैर्भृशम् ॥३८॥ ताड़िताश्चैव निश्चेष्टा मूर्छिताश्च भवंति ते ॥ तथा निश्चेष्टितान् दृष्ट्वा किंकरास्ते वदंतिहि ॥३६॥ भो भो पपाः दुराचाराः किमर्थम् दुष्टचेष्टितम् ॥ सुलभानि नदत्तानिजलान्यन्नन्मपि कश्चित् ॥४०॥ ग्रासार्द्धमपि नोदत्तं न श्वान्-वायसोर्बलिम् ॥ नमस्कृता नातिथयो न कृतं पितृतर्पणम् ॥४१॥ यमस्य चित्रगुप्तस्य न कृतं ध्यान-

किसी भूखे को अन्न ही खिलादें ४०। और तो और रोटी के ग्रास का आधा टुकड़ा भी कुत्ते को नहीं डाल सके न काक पक्षियों की बलि दी। आये हुए अतिथियों को नमस्कार मात्र भी नहीं की, उन्हें भोजन देना तो दूर रहा अपने पितरों का तर्पण तक नहीं किया ॥४१॥ धर्मराज का एवं चित्र गुप्त का उत्तम जो ध्यान है उसे भी तुमने नहीं किया इन दोनोंदेव-

ताओं के मन्त्र का जपन भी नहीं किया। इस ध्यान, अर्पन् से तो यमयातना नहीं मिलती ॥४२। न कोई तीर्थ किया, न देवताओं की पूजा की गृहस्थाश्रम में रहकर इतने अभिमान में आगये कि अन्तकार (अपने खाने से पहले भगवान् के नाम पर दान किया हुआ कुछ थोड़ा सा अन्न का भाग) तक नहीं निकाल सके ॥४३॥ साधु महात्मा पुरुषों की सेवा नहीं की इन्ही कारणों से अपने पापों का फल भोगो। क्यों कि तुम धर्म रहित हो अतः पीटे जा रहे हो ।४४। यमदूत कहते हैं कि

मुत्तमम् ॥ न जप्तश्च तयोर्मंत्रो न भवेद्यम यातना ।४२। नापि किंचित् कृतं तीर्थं पूजिता नैव देवताः ॥ गृहस्थाश्रमस्थितेनापि हंतकारोपि नोद्धृतः ।४३। शुश्रूषिताश्च नो सन्तोः भुंक्ष्व पापफलं स्वकम् ॥ यतस्त्वं धर्महीनोसि ततः सताड्यते भृशम् ॥४४॥ क्षमापरधं कुरुते भगवान् हरिरीश्वरः ॥ वयं तु सापराधानां दंडदा हि तदाज्ञया ॥४५॥ एवमुक्त्वा च ते दूता निर्दयताडयंति तान् ॥ ज्वलदङ्गारसदृशाः पतिताँस्ताडनाधः ॥४६॥ पतनात्तस्य पत्रैश्च गात्रच्छेदो भवेत्ततः ॥ तानधः पतितान्

तुम्हारे अपराध हम लोग क्षमा नहीं कर सकते क्षमा करने वाले तो सबके ईश्वर भगवान श्री हरि ही हैं। हम तो उन्हीं की आज्ञा से अपराधियों को दण्ड देने वाले हैं।४५। इसी प्रकार कह कर अत्यन्त निर्दयता के साथ यमदूत उन्हें ताड़ते हैं। ताड़ना से जलते हुए अङ्गारों के समान वे नीचे गिर पड़ते हैं।४६। उन पापियों के नीचे गिरने पर ऊपर से उसशाल्मली

वृक्ष के पत्ते भी उन पर गिर पडते हैं पत्रों द्वारा उनके अङ्ग प्रत्यंगों का छेदन होने लगता है। उनछिन्न भिन्न अङ्गोंका मांस कुत्ते भक्षण करने लगते हैं। तब वे रोते हैं॥४७ जब वे मुँह फाड़ २ कर रोते हैं तो यमदूत उनके मुँह में रेतीभर देते हैं। रस्सियों से बांधकर कई यमदूत मुग्दरों से पीटने लगते हैं ॥४८॥ कई एक यमदूत लकड़ी की भांति पापी को क्रकच के द्वारा बीच में से दो करके चीर डालते हैं। कितने एक यमदूत नारकी को पृथ्वी पर पटक कर कुल्हाड़े से

श्वानो भक्षयन्ति रुदंतिते ।४७। रुदंतस्ते ततो दूतेमुखमापूर्य रेणुभिः। निबध्यविविधैःपाशैर्हन्यन्ते केपि मुग्दरैः ।४८। पापिनः केपि भिद्यंते क्रकचैः काष्ठवद् द्विधा ॥ क्षिप्त्वाचान्ये धरा पृष्ठे कुठारैःखंडशः कृताः । ४९ । अर्द्ध खात्वावटे केचित् भिद्यंते मूर्ध्निसायकैः। अपरेयन्त्रमध्यस्थाः पीड्यंतेचेक्षुदंडवत् ।५०। केचित् प्रज्वलमानैस्तुसांगारैः पूरितो भृशम्। उल्मकैर्वेष्टयित्वा चध्मायन्ते लोहपिंडवत् ।५१।

टुकड़े २ करने लगते हैं। यह यातना सहकरभी शरीर टुकड़े २ होकर भी जुड़ जाता है वह पापात्मा इन्हीं यातनाओं को भोगनेके लिए मरता नहीं ।४९। कई एक यमदूत पृथ्वी को खुदवा, गड़े २ नारकी को आधाकटि तक गाड़ देते हैं फिर धनुष उठा कर पैने २ बाणों द्वारा उसके सिर को बीध डालते, ईख जैसे बेलन में पीड़न किया जाता है उसी प्रकार यन्त्र में डालकर उसका निष्पीडन करने लगते हैं ॥५०॥ कई तो बडी २ लकडियां लेके पापी को चारों तरफ घेर लेते हैं फिर लोहे के पिंड की भांति उसे भी तपाकर लाल करते हैं ॥ ५१॥ कई तो अग्नि कुण्ड में तपे हुए घी में और दूसरे तेल में पापियों को फेंक देते हैं। फिर इसप्रकार उन्हें सेक २ तलते हैं ...

फेंक देते हैं। फिर इसप्रकार उन्हें सेक २ तलते हैं जैसे कि हलवाई कढ़ाई में बड़े तल रहा हो ।५२। कितनेतो पापियों को मदोन्मत्त हाथियों के आगे पटक देते हैं। और कई पापियों के हाथ पैर बांधके औंधा मुख पटक देते हैं ।५३। कई कुओं में पटकदेते हैं। कई पहाड़ों से गिरा देते, कीड़ों के कुण्डों में पटक कर उन्हें कीड़ों से छिदवाते हैं ।५४। कितनेयम दूत तो बिजली के समान चोंच वाले काक पत्ती एवं मांस खोर गीध पत्ती, इनके आगेफेंक देते हैं। वे पत्ती इनके मस्तकोंमें

केचित् घृतमये पाके तैलपाके तथापरे ॥ कटाहक्षिप्तवटावत् प्रक्षिप्यन्ते यतस्ततः ॥५२॥ केचिन्मत्तगजे न्द्राणांक्षिप्यंते पुरतः पथि ॥ वध्वा हस्तौ च पादौ च क्रियन्ते केप्यधो मुखाः ॥५३॥ क्षिप्यंते केपि कूपेषु पात्यंते केऽपि पर्वतात् ॥ निमग्नाः क्रिमिकुंडेषु तुद्यंते क्रिमिभिः परे ॥५४॥ वज्रतुंडैर्महाकाकैः-गृध्रैरामिषः गृध्नुभिः निष्कृष्यन्ते शिरोदेशे नेत्रे वास्ये च चंचुभिः ॥५५॥ ऋणाँ वै प्रार्थयंत्यन्ये देहि देहि धनं मम ॥ यमलोके मया दृष्टा धनं मे भक्षितं त्वया ।५६। एवं विवदमानानां पापिनाँ नर

आंखों में चोंच मार २ कर मांस की बोटियां खींच लेते हैं ।५५। कई नारकी तो आपस में लैन दैनका झगड़ा भी करने लग जाते हैं अर्थात् तुमने मुझसे इतना धन कर्ज में लिया था तब से दिखाई नहीं दिया। इस लोकमें मैंने तुझेदेखा है अब तो मेरा ऋण चुका दे ॥५६॥ नरकालय में इस प्रकार लैन देनका झगड़ा करने वालोंको यमदूत खूब निर्णय करते हैं कर्ज

देने वाले के उत्तम २ अङ्गों से मांसके टुकड़े काट काट कर लेने वाले को देते हैं ।५७। इसी प्रकार यमदूत उन नारकीयों की ताड़ना करके फिर वहां से खींच करके तामिश्र आदि घोर नरकों में डाल देते हैं ।५८। उस शाल्मली वृक्ष के निकट हे गरुड़ ! बहुत से दुःखों से युक्त नरक है । उन नरकों में पड़ने से बड़ा भारी दुःख प्राप्त होता है बहु दुःख वाणी द्वारा वर्णन

कालये । छित्वा संबंशकैर्दूता माँसखंडान् ददंयि च ।५७। एवं संतज्य तान् दूताः संकृष्य यमशासनात् । तामिश्रादिषु घोरेषु क्षिप्यंते नरकेषु च । ५८ । नरका दुःखबहुलास्तत्र वृक्षसमीपतः । तेष्वस्ति यन्महद्दुःखं तद्वाचा मगयगाचरम् । ५६ । चतुरशीतिलक्षाणि नरकाःसंति खेचर । तेषां मध्ये घोरतमा घोरयास्त्वेकविंशतिः । ६० । तामिश्रो लोहशंकुश्च महारौरव शाल्मली । रौरव कुड्मलः कालसूत्रकः पूतिमृत्तिकः । ६१ । संघातोलोहितोदश्च सविषः संप्रतापनः । महानरयकोलो संजीवन महापथौ । ६२ । अवीचिरंधतामिश्रः कुंभीपाकस्तथैवचः । संप्रतापननामैकस्तपनस्त्वेकविं-

नहीं किया जा सकता ।।५६।। हे गरुड़ ! ८४ लाख नरक हैं उनमें भयानक मुख्य २, २१ नरक हैं ।६०। उन २१ नरकों के नाम यह हैं । तामिश्र १ लोहशंकु २, महारौरव ३, शाल्मली ४, रौरव ५, कुड्मल ६, काल सूत्रक ७, पूति मृत्तिक ८।६१ संघात ६, लोहितोद १०, सविष ११, संप्रतापन १२, महानिरय १३, काकोल १४, संजीवन १५ महापथ १६, ।६२।

अवीचि १७ अंधतामिश्र १८ कुम्भीपाक १६, संप्रतापन २७, तपन २१, ये इक्कीस नरक मुख्य हैं ॥६३॥ ये नरक अत्यन्त पीड़ा देने वाले हैं इन सबके अनेकों भेद कल्पना किए जाते हैं। इन नरकों द्वारा नारकियों को नाना प्रकार कर्मों का फल भोगना पड़ता है और अनेकों यमदूत इनको यातनाएं देने के लिए अधिष्ठाता बन रहे हैं ॥ ४॥ इन्हीं में पापी धर्मरहित मूढ़ पड़कर कल्पों तक नरक यातनाएं भोगते हैं ॥६५॥ इनमें तामिश्र, अन्यतामिश्र, रौरव आदि नरकों में विषय वासना के

शनिः ॥६३॥ नानापीडामयाः सर्वे नानाभेदैः प्रकल्पिताः॥ नानापाकविपाकश्च किंकरोद्यैरधिष्ठिताः ॥६४॥ एतेषु पतितामूढ़ाः पापिष्ठा धर्मवर्जिताः ।। यत्र भुंजंति कल्पांते तास्ता नरकयातनाः ।६५। यास्तामिस्त्रांधतामिश्रा रौरवाद्यश्च यातना भुक्तरो वा नारी वा मिथः संगेन निर्मिताः ।६६। एवं कुटुम्बं विभ्राण उदरंभर एव च ॥ बिसर्ज्येहोभयं प्रेत्य भुंक्ते तत्फलमीदृशम् ॥६७॥ एकः प्रपद्यते ध्यांतः हित्वेदे कलेवरम् ॥ कुशलेतरपाथेयो भूतद्रोहेण यत्कृतम् ॥६८॥ दैवेनासादितं यस्तु शंबलं

सुख भोगने के लिए जो स्त्री पुरुष परस्पर संग करते हैं वेही पड़ते हैं। केवल संतान की अभिलाषा से ऋतु कालाभिगामी नहीं पड़ते।६६। जो मनुष्य ईश्वर के निमित्त कुछ दान न कर अपने कुटुम्ब की पालना में लगा रहता है, अपना ही पेट भरना जानता है वह कुटुम्ब तथा शरीर को छोड़ कर इसी प्रकार के नरकों में पडता और फल पाता है ॥ ६७॥ जो मनुष्य प्राणियों के साथ वैर कर अपने शरीर की पालना में तत्पर रहता, वह जब अपने शरीर को छोड़ता है तो उसके पल्ले

यममार्ग का केवल पाप बन्धा रहता, और वह अकेला इसी प्रकार के नरकों में पड़ता है ।६८। जो अशुभ कर्म करके अपने कुटम्ब की पालन करता है, उन्हीं कर्मों द्वारा (प्रारब्ध बनता है, उसी प्रारब्ध से प्राप्त कराये गये फल को नरक में स्वयं प्राप्त करता है जैसे धन के चुराये जाने पर जीव दुखी होता है, तैसे यह भी नरक में दुखी होता है ।६९। अधर्म

निरयेपुमान् । भुंक्ते कुटुम्बपोषस्य हृतप्रव्यइवातुरः ।६९। केवलेनह्यधर्मेण कुटुम्बभरणोत्सुकः ।। याति जीवोधतामिस्रं चरमंतमसः पदम् ।।७०।। अधस्तान्नरलोकस्य यावतीर्यातनादयः । क्रमशःसम-नुक्रम्य पुनरत्राव्रजेच्छुचिः ।।७१।। इति श्री गरुड़पुराणे सारो० भगवत् गरुड़ सम्वादे तृतीयोऽध्यायः।३।

गरुड़ उवाच । कैर्गच्छंतिमहामार्गे वैतरिण्यां पतन्तिकैः । कैः पापैर्नरकंयांति तन्मे कथय केशव ।१। श्रीभगवानुवाच । सदैवाकर्मनिरताः शुभ कर्मपराङ्मुखाः । नरकान्नारकंयाँति दुःखाद्दुःखं

करके जो कुटुम्ब का पालन करता है वह अन्तिम नरक जो अंधतामिस्र है उसी में पड़ता ।।७०।। इसी प्रकार हे गरुड़ नरलोक के नीचे जितने भी यातना आदि नरक हैं उन्हें क्रम पूर्वक भोग कर पापों से रहित एवं शुद्ध हो फिर वह इस लोक में मनुष्य जन्म लेकर आता है ।।७१।।

इति श्री गरुड़ पुराणे सारोद्धारेशास्त्रि हरिश्चन्द्र कृतायां सरला टीकायां तृतीयोऽध्यायः ।।३।।

इस प्रकार नरक यातनाओं का वर्णन सुनकर गरुड़ फिर पूछते हैं कि हे केशव ! किन पाप कर्मों से जीव यम मार्ग

मैं जाता, तथा वैतरणी नदी में पड़ता, तथा किन पापों से नरक में जाता है कृपा करके यह मुझे विस्तार पूर्वक सुनाइये ।१।

में जाता, तथा वैतरणी नदी में पडता, तथा किन पापों से नरक में जाता है कृपा करके यह मुझे विस्तार पूर्वक सुनाइये ।१। श्री भगवान बोले-कि हे गरुड़ ! जो पुरुष सर्वदा पापा करमों में फंसे रहते, और शुभ करमों की निन्दाकर, उनसेविरुद्ध होकर चलते हैं । वे ही पापी लोग एक नरक से निकल कर दूसरे नरक में पडते हैं, एवं एक दुःख से निवृत्त हो, दूसरा दुख भोगते हैं तथा एक भय से छूट, दूसरे नरक में पडते हैं ॥२॥ हे गरुड़ ! हम पहिले कह आते हैं कि धर्मराज की पुरी जाने को

भयाद्भयम् । २।। धर्मराजपुरेयांतित्रिभिर्द्वारैस्तुधार्मिकाः ।। पापास्तुदक्षिणद्वारमार्गेणैवव्रजंतियत् ।।३।। अस्मिन्नेवमहादुःखेमार्गेवैतरणीनदी ।। तत्रयेपापिनोयांतितानहंकथयामिते ।।४।। ब्रह्मघ्नाश्चसुरापाश्च गोघ्ना वा बालघातकाः ।। स्त्रीघाती गर्भपाती च ये च प्रच्छन्नपापिनः ।।५।। ये हरंति गुरोर्द्रव्यं

चार दरवाजे हैं उन चारों में पूर्व पश्चिम उत्तर की ओर के तीनदरवाजों में से तो धर्मात्मा पुरुष जाते हैं । शेष के दक्षिणी द्वार से पापी पुरुषों का गमन होता है ॥ इसी दक्षिणी द्वार से यमपुर जाने में अत्यन्त दुःख दायी यम मार्ग है । उसी में वैतरणी नदी आती है । उसे लांघकर जाना पड़ता है । और महान घोर दुःख उठाना पड़ता है । अब उसमें जिस प्रकार के पापी पडते, उन्हें आठ श्लोकों में गिन कर सुनाता हूँ ॥४॥ ब्राह्मण की हत्या करने वाले, शराब पीने वाले, गोहत्या करने वाले वाले हत्यारे स्त्री की हत्या करने वाले, गर्भपात कराने वाले, (स्त्री हो या पुरुष कोई भी हो) और जो छुपकर पाप करने वाले विश्वास घाती इस प्रकार के दक्षिणी द्वार वैतरणी में पड़ते हैं ।५। और जो गुरु का धन खाने वाले हों एवं देवता

सम्बन्धी धन खा जांय और ब्रह्मणों का धन हरण करलें स्त्रियों का धन हरलें अथवा पीछे न दें, बच्चों का धन हरलें इस प्रकार के पुरुष वैतरणी में पड़ते हैं ।६। और जो ऋणलेकर वापिस न दें, एवं किसी की रक्खी हुई अमानत पचा जाय, उसे लौटाकर न दे, विश्वास दिलाकर धोखा दे, अन्नमें जहर मिलाकर किसी को मार डाले इस प्रकार के पापी वैतरणी में पड़ते हैं ॥७॥ जो पुरुष दूसरों के दोष ग्रहण कर उसकी निन्दा में लगा रहे, अपने गुणों की स्तुति करे,, गुणवान पुरुषों से

देवद्रव्यं द्विजस्य वा । स्त्रीद्रव्यहारिणो ये च बालद्रव्यहराश्च ये ।६। ये ऋण न प्रयच्छंति ये वैन्यासापहारकाः । निश्वास घातका येच सविषान्नेन मारकाः ।७। दोषग्राही गुणश्लाघी गुणवत्सु च मस्तराः । नीचानुरागिणो मूढ़ाः सत्सङ्गतिपराङ्मुखाः ।८। तीर्थसज्जनसत्कर्मगुरुदेवनिंदकाः । पुराणवेदमीमांसान्याय वेदांतदूषकाः ।६। हर्षिताः दुःखितं दृष्ट्वा हर्षिते दुःखदायकाः । दुष्टवाक्यस्य

ईर्षा रखें नीच पुरुषों से प्रेम करें तथा श्रेष्ठ पुरुषों से विमुख रहे, ऐसे पापी वैतरणी में पडते हैं ।८। तीरथों की सज्जन पुरुषों, श्रेष्ठ करमों, गुरुकी देवताओं की, निन्दा करें, पुराण वेद मीमांसा, न्याय, एव वेदान्त शास्त्र आदिकी तर्कवितर्कता करकर के निन्दा करे, ऐसे वैतरणी में पडते हैं ।६। दूसरों को दुःखी देख प्रसन्न होते हैं एवं दूसरे को प्रसन्न देख

कर कर के निन्दा करे, ऐसे वैतरणी में पडते हैं।६। दूसरों को दुःखी देख प्रसन्न होते हैं एवं दूसरे को प्रसन्न देख

कर दुःखी होते हैं, सदा मुँह से गाली गलौज करते हैं। चित्त में सदा दुष्टता रखते हैं ऐसे ही वैतरणी में पड़ते हैं।१०। जो अपनी भलाई की बातें नहीं सुनते, एवं शास्त्रों के बचन भी नहीं सुनते, अभिमान में ऐंठ कर न नम्र होते हैं। स्वयं आप को पंडित मानें, ऐसे ही मूर्ख वैतरणी में पड़ते हैं।११। इसी प्रकार अनेकों प्रकार के पाप कर्म कर्ता धर्म रहित हुए दिन रात रोते २ यम मार्ग में जाते यमदूतों द्वारा वैतरणी में डाले जाते हैं॥१२॥ और पापी जिन्हें यमदूत ताड़ता करते, फिर वे वैतरणी में पड़ते हैं। हे गरुड़! अब उनको भी कहता हूँ।१३। जो माता पिता, गुरुदेव, एवं आचार्य का

वक्तारो दुष्टचित्ताश्च ये सदा ॥ १०॥ न शृण्वंति हितंवाक्यं शास्त्रवार्ता कदापि न ॥ आत्मसंभाविता स्तब्धाः मूढाः पंडितमानिनः। ११ एतेचान्येचबहवःपापिष्ठाधर्मवर्जिताः ॥ गच्छंतेयममार्गे हि रोदमानादिवानिशम् ॥१२॥ यमदूतैस्ताड्यमाना यांति वैतरणीं प्रति ॥ तस्यांपतं तियेपापास्तानहं कथयामिते ॥१३॥ मातरंयेऽवमन्यंते पितरं गुरुदेव च ॥ आचार्य च पि पूज्यं च तस्यां मज्जन्ति ते नराः ॥१४॥ पतिव्रतां साधुशीलां कुलीनां विनयान्वितम् ॥ स्त्रियंत्यजन्ति ये द्वेषात् वैतरण्यां पतंतिते १५।

तथा प्रतिष्ठित पूजनीय पुरुष का अपमान करते, वे वैतरणी में पड़ते हैं,।१४। जो पुरुष पतिव्रता, श्रेष्ठ कुल से उत्पन्न हुई स्त्री द्वेष से छोडता है इसी प्रकार के सुशील पण्डित, धर्मात्मा, पति को द्वेष से स्त्री छोडती है तो ऐसे पापी वैतरणी में पडते हैं॥१५॥ श्रेष्ठ पुरुषों के सहस्रों गुणों को देख, जो द्वेष करते, उनमें दोष ही दोष आरोपण करते रहते हैं

सदा उनकी निंदा करनेमें लगे रहते हैं ऐसे ही पुरुष वैतरणी में पड़ते हैं ॥१६॥ जो ब्राह्मण को जितने प्रमाण के दानकी प्रतिज्ञा करके फिर देते समय दान नहीं देते, और जो अपने घर बुला कर ब्राह्मण को दान पात्र नहीं समझता और नहीं देता ऐसे दोनों ही वैतरणीमें पड़ते हैं, कभी निकलते ही नहीं ।१७। और जो ब्राह्मण को दान करके फिर वह दान हर लेता है दान करके पश्चाताप करता, विदान ब्राह्मण से कर्म काण्ड जप, आदि कराकर दक्षिणा नहीं देता, या पूरी दक्षिणा

सत्पुरुषगुणेष्वेवदोषानारोपयन्तिये ॥ निन्दन्ति तान्सदा द्वेषात् वैतरण्याँ पतन्ति ते ॥१६॥ ब्राह्मणाय प्रतिश्रुत्ययाथार्थं न ददाति यः ॥ आहूय नास्ति यो ब्रूयात्तयोर्वासश्च संततम् ॥१७। स्वयं दत्तापहर्त्ता च दानं दत्वानुतापकः ॥ परवृत्तिहरश्चैवदाने दत्ते निवारकः ॥१८॥ यज्ञविध्वंसकश्चैव कथाभंगकर श्च यः ॥ क्षेत्रसीमाहरश्चैव यश्चगोचरकर्षकः ॥१६॥ ब्राह्मणोरसविक्रेता यदि स्याद्द पत्नी-

नहीं देता, दूसरे को भी दान देनेसे रोक लेता है और जो आजीविका मिल रही हो उसे जाकर निवारणकर। देता है। ऐसा पापी वैतरणी में पड़ता है ।।१८।। यज्ञों में विघ्न डालकर उन्हें विध्वंस कर, तथा भगवान कथा भगवत कथा होरही वहां जाकरउसे भंग कर देते हैं, गोचर पृथ्वी को अपनी बनाकर उसमें खेती बो देते हैं ऐसे पापी वैतरणी में पड़ते हैं ।।१६।

यदि ब्राह्मण घी, तेल गुड़ खांड़, दूध आदि रस पदार्थ का व्यौपार करें, और शूद्रा स्त्री को घर में रक्खे, वेदोक्त यज्ञों के अतिरिक्त अपने पेट के लिए पशु मार २ कर मांस खानेलगे, तैसा ब्राह्मण वैतरणी में पड़ता है ॥ २०॥ और जो ब्राह्मणत्वसेभ्रष्ट हो अर्थात् सन्ध्या बन्दन, सेवा पूजा आदि नहीं करता, मांस खाता, मद्य पीता, किसी की भी आज्ञा पर न चल कर सत्शास्त्र आदि ग्रन्थों का अध्ययन न करे ऐसा पापी वैतरणी में पड़ता है ॥२१॥ और शूद्र होकर वेदपढ़े कपिला गौ का दुग्ध पान करे,

पतिः ॥ वेदोक्तयज्ञादन्यत्र स्वात्मार्थं पशुमारकः ॥२०॥ ब्रह्मकर्मपरिभ्रष्टो मांसभोक्ता च मद्यपः उच्छृं खल स्वभावो यः शास्त्राध्ययनवर्जितः ॥२१॥वेदाक्षरं पठेत् शूद्रःकापिलं यः पिवेत् ॥ धारयेत् ब्रह्मसूत्रं च भवेद्वा ब्रह्मणीपतिः ॥२२॥ राजभार्याभिलाषी च परदारापहारकः ॥ कन्यायां कामुकश्चैव सतीनां दूषकश्च यः ॥२३॥ एते चान्ये च वहवो निषिद्धाचरणोत्सुकाः ॥ विहितत्यागिनो मूढा वैतरिण्यां पतंतिते ॥२४॥ सर्व मार्गमतिक्रम्य यांति पापा यमालये ॥ पुनर्यमाज्ञयागत्य दूतास्तस्यां क्षिपन्ति

(यज्ञोपवीत) पहनले और ब्राह्मणी के साथ विवाह करले ऐसा वैतरणी में पड़ता है ॥२२॥ और जो राजा की स्त्री कीअभिलाषा करे, पर स्त्री का हरणकरे और कुँवारी कन्याका सत्त भङ्गकरे, एवंसती स्त्रियों के सतीत्व को दूषितकरे ऐसा पापी वैतरणी में पड़ता है ॥२३॥ बहुत से वेद शास्त्रों से निसद्ध आचरण करने वाले शास्त्र विधि को छोड़ कर मन माने कर्म करने वाले मूढ़ परुष वैतरणी में पड़ते हैं ॥२४॥ इस प्रकार के पापी ही यम मार्ग को लांघ कर यमपुर जाते हैं फिर यमराज की आज्ञात सेयमदू

उन्हें वैतरणी में पटक देते हैं ॥२५॥ हे गरुड़! सब नरकों में मुख्यतः २१ नरक हैं, उनमें भी दुख देनेवाली वैतरणी नदी मुख्य है। इसीलिये पूर्वोक्त पापियों को इसी में पटकते हैं ॥२६॥ जिन पुरुषों ने कृष्णागौका दान नहीं किया, और न जिनकी और्ध्य देनिक [परलोक सुधार ने वाली] क्रियाएँ हुई हैं, ऐसे जीव वैतरणी में अनेकों प्रकार के दुःख भोगपीछे वैतरणी के तीर पर शाल्मली वृक्ष के नीचे आते, तथा यातनाएँ भोगते हैं [इति तृतीयेन सम्बन्धः] ॥२७॥ जो झूठ की

तान् ।२५। ये वै धुरन्धरा सर्वे धौरेयाणां खगाधिपः ॥ अतस्तस्यांप्रक्षिपंति वैतरण्यां च पापिनः । २६। कृष्णा गौर्यदि नो दत्ता नौर्ध्वदेहक्रियाः कृताः । तस्यांभुक्त्वा महद्दुःखंयांतिवृक्षं तटोद्भवम् ।२७। कूटसाक्ष्यप्रदातारः कूटधर्मपरायणाःछलेनार्जनसंसक्ताश्चौर्यवृत्या च जीवनः ।२८। छेदयंत्यनिवृक्षांश्च वनारामविभंजकाः ॥ व्रतं तीर्थं परित्यज्य विधवाशीलनाशकाः ।२९। भर्तारंदूषयेन्नारी परं मनसि-

साक्षी देते हैं। वेद विरुद्ध धर्म जो कूट धर्म है उसे धारण करते हैं, एवं कपट द्वारा धन जोड़ते हैं चोरी करके आजीविका करते हैं ॥२०॥ जो बड़े २ मोटे वृक्षों को काट डालते हैं, बहुत से फलों वाले वनों को एवं बहुत फूलों वाले बगीचों को उजाड़ देते हैं। कोई भी व्रत नहीं करते, न किसी तीर्थपर जाते हैं। विधान स्त्रियों के सतीत्वको नाश करते हैं ।२९॥ कोई स्त्री भी अपने पति को नपुसकता का दोष देकर पर पुरुष को अपना लेती है ऐसी स्त्रियां तथा उपरोक्त पापी शाल्मली वृक्षके

नीचे यातनाएँ भोगते हैं ॥३०॥ ताड़नाएँ पाकर जो पापी गिर जाते हैं; उन्हें पकड़ यमदूत नरकों में डाल देते

नीचे यातनाएँ भोगते हैं ॥३०॥ ताड़नाएँ पाकर जो पापी गिर जाते हैं: उन्हें पकड़ यतदूत नरकों में डाल देते उन्हीं पापियोंको हे गरुड़ ! मैंसुनाता हूँ ।३१। वेद एवं जगतके कर्ता ईश्वर को नहीं मानते ऐसे नास्तिक लोग और परम्परा से चली आई धर्म मर्यादा को ताड़ने वाले और अपने लिये धनका खर्चन करने वाले कदर्य पुरुष एवं विषयवासना रखने वाले धर्म का झूठा दम्भ दिखाने वाले, किसी के उपकार को नाश करने वाले कृतघ्न ये पापी नरक में जाते हैं ॥३२॥ कूए,

धारयेत् ॥ इत्याद्याः शाल्मली वृक्षे भुंजते वहुताडनम् ॥३०॥ ताडनात्पतितान्दूताः क्षिपतिनरकेषुतान्॥ हतंतितेषुयेपापस्तानहं कथयामिते ॥३१। नास्तिकाभिन्नमर्यादाः कदर्या विषयात्मिकाः॥दांभिकाश्चकृतघ्नाश्चते वै नरकगामिनः।३२।कूपानांचतडागानां वापीनांदेवसद्मनाम्॥प्रजागृहाणभेत्ता स्तेवैनरकगामिनः ।३३। विसृज्याश्नंति ये दाराञ्छिशून्भृत्यांस्तथा गुरून् ॥उत्सृज्यपितृदेवेज्यास्ते वै नरकगामिनः ।३४। शंकुभिः सेतुभिः काष्ठैः पाषाणैः कंटकैस्तथा ॥ ये मार्गमुपरुंधंति ते वै नरकगामिनः।३५।

तालाब, बावड़ियें, देवमन्दिर, लोगो के घर, इत्यादि तोड़ने वाले नरक में जाते हैं ।३३। जो अपनी स्त्री, बच्चे, नौकर, एवं माता पिता आदि गुरुजनों को किसी बहाने से कहीं भेजकर अकेले मिष्टान्न खाते हैं, एवं पितृ यज्ञ, वैश्य देवादि बलियें नकरके तथा भगवान को नैवेद्य अर्पण करने बिना वैसेही भोजन करते हैं नरकगामी होते हैं ।३४। जो कोई लोहे की कीलों से मर्यादा मार्ग के मध्य में पुल बांध देनेसे एवं लकड़ियां पत्थर तथा कांटे बिछा देनेसे मार्ग बन्द करते हैं ऐसे पुरुष नरकों में

पड़ते हैं ।।३५।। जो विष्णु, शिव, सूर्य, गणेश आदि देवताओं की तथा माता पिता, विद्यागुरु आदि श्रेष्ठपुरुषों की पूजासत्कारनहीं करते ऐसे ही पुरुष नरकगामी होते हैं ।३६। जो ब्राह्मण होकर दासी से दुष्ट सङ्ग करते, या शूद्रा स्त्री से सन्तति उत्पन्न करते हैं वे ब्राह्मणत्व से गिर चुके हैं उन्हें ब्राह्मण समझना भूल है ।३७। इस प्रकार के पर स्त्री लम्पट अधमब्राह्मण कभी नमस्कार के योग्य नहीं एवं उनकी पूजा सत्कार करना पाप है, ऐसे ही ब्राह्मणाधम निश्चय ही नरक गामी होते हैं ।३८। जो

हरि हर सूर्य गणेशादीन् सद्गुरून् हितभाषिणः ।। विदुषो ये न पूजन्ति ते नरानरकगामिनः ।।३६।। आरोप्य दासीशयने विप्रो गच्छेदधोगतिम् ।। प्रजामुत्पद्य शूद्रायाँ ब्राह्मण्डादेव हीयते ।।३७।। ननम-स्कारयोग्याहितैकदापिद्विजोऽधमाः। नपूज्या :सति ये मूढास्तेवैनरकगामिनः ।३८। ब्राह्मणानांचकलहं गोयुद्धकलहप्रियाः । नवर्जंत्यनुमोदं ते वैनरकगामिनः ।३९। अनन्तशरणस्त्रीऋतुकालव्यतिक्रमम् येप्रवर्जन्तिविद्वेषात्ते वैनरकगामिनः ।।४०।। येपिगच्छन्तिकामांधानरानारीं रजस्वलाम् ।। पर्वस्वप्सुदिवा-

परस्पर लड़ते हुए ब्राह्मणों को, गौओंको देखकर नहीं रोकते प्रसन्न होते हैं लड़ते की सहायता करते हैं ऐसे ही पुरुष निश्चय ही नरक गामी होते हैं ।३९। जो पतिव्रतायें अपने पति को छोड़कर अन्य की शरण में नहीं जाती उन्हें ऋतु काल में द्वेषकेकारण पति होकर भी ऋतु दान नहीं करते ऐसे पुरुष नरक गामी होते हैं ।४०। जो कामान्ध होकर रजस्वलास्त्री से गमन करते एकादशी आदि किसी पर्वका भी विचार नहीं करते पानी में, दिन के समय में श्राद्ध पक्ष में स्त्री गमनकरते हैं वेनरक गामी होते हैं ।४१।

… पानी में, दिन के समय में श्राद्ध पक्ष में स्त्री गमनकरते हैं वे नरक गामी होते हैं ।४१।

जो पुरुष अपने शरीर की विष्टा मूत्र आदि अग्नि में, जलमें, वगीचे में मार्ग में गौशाला में फैंकते हैं वा करते हैं वे नरकों में जाते हैं ॥४२॥ धनुषवाण तलवार आदि प्राणनाशक शस्त्रों के बनाने, तथा बेचने वाले नरकों में जाते हैं ॥४३॥ वैश्य होकर चर्म बेचें जूते आदि का ब्यौपारकरे, एवं स्त्रियाँ केशोंका शृङ्गार करके यौवन बेचें, व्यभिचार करें और विष बेचने वाले ये सब नरक में जाते हैं ॥४४॥ अनाथों पर जो दया नहीं करते श्रेष्ठ पुरुषों से सदा द्वेष भाव रखते अपराध न होने पर भी दण्ड

श्राद्धे तेवै नरकगामिनः ॥४१॥ येशारीरं मलंवन्हौप्रक्षिपंतिजलेपि च ॥ आरामेपथिगोष्ठे वातेवैनरक गामिनः ॥४२॥ शस्त्राणां ये च कर्तारः शराणाँ धनुषा तथा ॥ विक्रेतारश्चयेतेषां तेवैनरकगामिनः ॥४३॥ चर्मविक्रयणोवैश्याः केशविक्रयिकाः स्त्रियः ॥ विषविक्रयिणः सर्वेतेवैनरकगामिनः ॥४४॥अनाथं नानुकंपंतियेसतांद्वेषकारिकाः ॥ बिनापराधं दंडंति तेवैनरकगामिनः ॥४५॥ आशायासमानुप्राप्ता-न्ब्राह्मणानर्थिनोगृहे॥नभोजयंतिपाकेपितेवैनरकगामिनः ॥४६॥ सर्वभूतेष्वविश्वस्तास्तस्थातेषुविनिर्दयाः सर्वभूतेषुजिह्मा येतेवैनरकगामिनः ॥४७। नियमान्समुपादायये चाश्च दजितेंद्रियाः ॥ विप्लापयंतितान्भू

देते हैं ऐसे पुरुष नरक गामी होते हैं ॥४५॥ भोजन की आशा रखकर घर में आये हुए ब्राह्मण को धनाड्य होते हुए भोजन नहीं कराते वे धनवान नरक गामी होते हैं ॥४६॥ जो प्राणिमात्र में विश्वास नहीं करते निर्दय होकर सब प्राणियों में व्यवहार कपटका करते हैं ऐसे मनुष्य नरकगामी होते हैं ॥४७॥ और जों पुरुष व्रत तप आदिका नियम लेकर भी अजितेन्द्रिय होकर

फिर उन नियमों को तोड़ डालते हैं, ऐसे अधम नरक गामी होते हैं।४८। मोक्ष दिलाने वाले गुरुका जो सत्कार नहीं करते एवं पुराणों की कथा सुनाने वाले विद्वान का जो आदर नहीं करते ऐसे पुरुष नरक गामीं होते हैं ॥४९। मित्रों के साथ जो द्रोह करते हैं, एवं एक दूसरे की बनी हुई प्रीति को अपनी चतुराई से जाकर तोड़ डालते हैं तथा किसी की कीहुई आशा को भंग कर डालते हैं, ऐसे ही पापी नरकों में जाते हैं ॥५०॥ और जो कहीं विवाह में जाकर, देव मंदिर में तीर्थों में जाकर

यस्तेवैनरकगामिनः ।४८। अध्यात्मविद्यादातारंनैवमन्यतियेगुरुमम् । तथापुराणवक्तारंतेवैनरकगामिनः ।४९। मित्रद्रोहकरायेच प्रीतिच्छेदकराश्चये ॥ आशाछेदकरायेचतेवैनरकगामिनः ।५०।विवाहंदेवयात्रांचतीर्थसान्विलुंपति ।।सवसेन्नरकेघोरेतस्मान्नायाता पुनः ॥५१॥ अग्निदद्यान्महा पापीगृहेग्रामेतथावने ॥ सनीत्तोयमदूतैश्चवन्हिकुंडेषुपच्यते ॥५२॥ अग्निनदग्धगात्रोसौयदाछायांप्र ॥ नीयतेतदादूतैरसि पत्रवनांतरे ।५३। खड्गतीक्ष्णैश्चतत्पत्रैगात्रच्छेदोयदाभवेत् ॥ तदोचुः शीतलच्छा-

अपने साथ में आये हुए साथियों को लूट लेते हैं अथवा वहां से चुरा लेते हैं ऐसा पुरुष घोर नरक में पड़ता है उससे निकलना भी कठिन हो जाता है।५१। किसी घर, गांव तथा वन में जो नराधम आग लगा देते हैं उन महा पापियों को मृत्यु के अनन्तर ले जाकर यमदूत अग्नि कुण्डों में पकाते हैं।५२॥ जब महा पापियों का सारा शरीर जल जाता है तो वे प्रेत यमदूतों से छाया की याचना करते हैं तब यमदूत तलवार के पत्तों वाले वनमें ले जाते हैं ॥५३॥ वे पत्ते तलवार

की भांति बड़े तीक्ष्ण होते हैं उन्हों पर उन प्रेतों को डालते हैं, पत्तों से ...

की भांति बड़े तीक्ष्ण होते हैं उन्हों पर उन प्रेतों को डालते हैं, पत्तों से अङ्ग कटने लगते हैं तो यमदूत कहते हैं किपापियोअब आरामका सुख लूटो ।५४। प्यासे होकर वे प्रेत यदि पानी मांगते हैं तो उन्हें यमदूत बहुत गरम करके तेल आगे धर देते हैं ।।५५।।और कहते हैं कि लो इसे पीलो, और खा लो । तब पीते ही उनकी अंतड़ियां जल जाती हैं । तबगिर पड़ते हैं ।५ । दुःख भोग२कर जब किसी प्रकार उठते हैं तो दीनों की भांति बहुत बिलापकरते हैं । किन्तु विवश होकर श्वांस भरते हुएकुछ

यांसुखनिद्रांकुरुस्वभोः । ५४ । पानीयं पातुमिच्छन्वैतृषार्तो यदि याचते । पान र्थं तैलमत्युष्णं तदा दूतै प्रदीयते ।५५। पीयतां भुज्यतां पानमन्नमूचुस्तदेति ते । पीतमात्रेण तेनैवदग्धांत्रा निपतंति ते ।।५६।। कथंचित्पुनरुत्थाय प्रलंपति सुदीनवत् :विवशा उच्छ्वसंतश्च ते वक्तुमपि नाशकम् ।५७। युशस्तार्क्ष्य वातनाः पापिनां स्मृताः ।किमेतैर्विस्तरात्प्रोक्तैः सर्वशास्त्रे चभाषिते ।५८। एवं नै क्लिश्यमानास्ते नरा नार्यः सहस्रशः । पच्यंते नरकेघोरे यावदाभूतसंप्लवम् ।५६ । तस्यात्तर्यं

बोल भी नहीं सकते ।५७। इसी प्रकार गरुड़ जी ! पापियों को नरक यातनाएं बहुत हैं । विस्तार पूर्वक वर्णन की क्या आवश्यकता है सबकी सब शास्त्रों में कहदीगई हैं ।५८। इसी प्रकार क्लेशों को प्राप्त होते हुए शहस्रों स्त्रीयां और पुरुष जबतक महाप्रलय नहीं होतीं तबतक नरकों में पड़कर दुःख भोगते हैं ।।५६।। वे सब पापी ब्रह्मजी के अंतिमदिन तक दुःख भोगते रहते हैं । जब महा प्रलय में त्रिलोकीका नाश हो जाता है तब उन नारकीयों का भी नाश होता है । जब फिर से सृष्टि

की उत्पत्ति होती है तो उननारकीयों की भी पापों का अक्षय फल भोगकर उसी नरक में ही उतपत्ति हो जाती है। यमराज की आज्ञा पाकर फिरवेपापी जी पृथ्वी पर आकर स्थावर आदि योनियों में जन्म लेते हैं ॥६०॥ स्थावर योनि उसे कहते हैं कि-वृक्ष, गुल्म (झड़ियां) लता बल्लीए', तिनके एव पर्वत ये न चल फिर सकने वाली स्थावर योनि है। यह योनि महा मोह अज्ञान रूप तमोगुण से संयुक्त है ॥६५॥ इसी प्रकार उपरोक्तवृक्ष आदिस्थावर योनि मेंवे नारकीय क्रमानुसार जन्मएवं मृत्य

फलं भुक्त्वा तत्रैवोत्पद्यते पुनः ॥ यमाज्ञयामहीं प्राप्य भवंति स्थावरादयः ॥६०॥ वृक्षगुल्मलतावल्ली गिरयश्च तृणानि च ॥ स्थावरा इति विख्याता महामोहसमावृताः ॥६१॥ कीटाश्च पशवश्चैव पक्षिणश्च जलेचराः ॥ चतुराशीतिलक्षेपु कथिता देवयोनयः ॥६२॥ एताः सर्वाः परिभ्रम्य ततो यांति मनुष्यताम् ॥ मानुषोऽपिश्वपाकेषुजायंतेनरकागताः तत्रापिपाप चिन्हैस्तेभवंतिबहुदुःखिताः ॥६३॥ गलत्कुष्ठाश्चजन्मांधा महारोगसमाकुलाः ॥ भवंत्येवं नरानार्यः पापचिन्होपलक्षिताः ॥ ६४॥ इति

पाकर फिर देव निर्मित कीड़े, पशुपक्षी, आदि भूचर, नभचर तथा मछली मगर आदि चौरासी लाख योनियों में जन्म लेते और मरते हैं ॥६२॥ इन सब चौरासी लाख योनियों में घूमकर फिर कहीं मनुष्य योनि में वे जीव आते हैं। नरकों से फिर आये हुए उनके पापों के प्रभाव से फिर भी मनुष्य योनि में चण्डाल आदि नीच कुल में उनका जन्म होता है।६३ नीच योनियों में भी पापों के प्रभाव से कई एक तो (कोढ़ी) हो जाते हैं एवं जन्म से अन्धे हो जाते

जन्म होता है।६३ नीच योनियों में भी पापों के प्रभाव से कई एक तो (कोढ़ी) हो जाते हैं एवं जन्म से अन्धे हो जाते

हैं, तथकई एक बड़े २ राज रोगों में फंसे रहते हैं। यह पापों के चिन्ह ही दिखाई देते हैं ॥६४॥

इति श्री गरुड़ पुराणे सारोद्धारे शास्त्रि हरिश्चद्र कृतायां सरला टीकायां नरक प्रद पाप निरूपणं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

गरुड़ फिर प्रश्न पूछते हैं कि हे भगवान! जिन पापों से जो २ चिन्ह हो जाते हैं और जिस २ योनि में नरकीय जीव जाते हैं वेकृपा करके मुझसे कहिये ॥१॥श्री भगवान कहते हैं कि हे गरुड़! नरक से आये हुये नारकीय पापी जिन पापोंके

श्री गरुड़पुराणे सारोद्धारे नरकप्रदपापचिन्ह निरूपणोनाम चतुर्थोऽध्यायाः ॥ ४ ॥ गरुड़ उवाच येन येन च पापेन यद्यच्चिन्हं प्रजायते ॥ यां यां योनिं च गच्छन्ति तन्मे कथय केशव ॥ १ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ यैः पापैर्यांति यां योनिपापिनोनरकागताः ॥ येन पापेन यच्चिन्ह जायते मम तच्छृणु ॥२॥ ब्रह्महा क्षयरोगीस्यात्गोघ्नःस्वात्कुब्जको जडः ॥ कन्याघाती भवेत्कुष्ठी त्रयश्चांडाल योनिषाः३।

द्वारा जिसयोनि में जाते हैं एवं जिसपाप से उन्हें जिस प्रकार का चिन्ह होता है वह मुझसे सुनो ॥ २ ॥ यद्यपि नरकसे आयेहुए पापियों का चाण्डाल जाति में जन्म होता है, उसमें फिर भी ब्रह्म हत्या करने वाला पापीक्षयरोगी होता है गो हत्या करनेवाला पापी कुबड़ा एवं जड़ होता है। कन्या बेचने वाला कुष्ट रोगी, ये चाण्डाल योनि में जन्म पाकर इन रोगों से मुक्त नहीं होते हैं ॥३॥ स्त्री के मारने वाला और गर्भ पात कराने वाला ये दोनों भील जाति में उत्पन्न होकर सारी आयु रोगी रहते हैं। आगम्य स्त्री से गमन करने वाला न पुंसक होता है एवं गुरु की स्त्री से गमन करने वाला दुश्चर्मा होता है। अर्थात् उसके

ऊपर की खाल हाथी के चमड़े की भांति अत्यन्त घृणित काली एवं बदबूदार होती है ॥४॥ मांसखाने वाले के अङ्ग अत्यन्त लाल होते हैं । शरीर के दांत काले होते हैं । न खानेके योग्य वस्तु को लोभ के मारे खाजाने वाला ब्राम्हण जलोदररोगी बड़े पेट वाला होता है ।५। दूसरों को न देकर स्वयं अकेला ही मिष्ठान्न खा जाता है वह गलगुण रोगी होता है । एवं श्राद्ध में जो अशुद्ध अपवित्र अन्न देता है वह चित्रकुष्ठी होता है ॥६॥ अभिमान में आकर जो गुरुका अपमान करता है उसे मिरगी

स्त्रीघाती गर्भपाती च पुलिंदो रोगवान्भवेत् । अगम्यागम नार्षंढो दुश्चर्मा गुरुतल्पगः ।४। माँस भोक्ता तिरक्तांगः श्यावदंतस्तुमद्यः ॥अभक्ष्यभक्ष्यको लौल्यात्ब्राह्मणः स्यान्महोदरः ॥५॥ अदत्वामिष्टम-श्नाद्धि स भवेद्गलगंडव न् ।श्राद्धेन्नमशुचिंदत्वा चित्रकुष्ठी प्रजायते ।६। गुरोर्गर्वेणावम नदपस्मारी भवेन्नरः ॥निंदको वेद शास्त्राणां पांडुरोगीभवेन्ध्रुवम् ।७। कूटसाक्षी भवेन्मूकः काणः स्य त्पंक्तिभेदकः ॥ अनोष्ठः स्याद्विवाहघ्नो जन्मांध पुस्तकं हरत् ॥८॥ गो ब्रह्मण पदाघातात्खंजः पंगुश्च

का रोग होता है । वेद शास्त्रों की निंदा करने वाला निश्चय से पांडु (पीलिया रोगी होता है ॥७॥ झूँटी गवाही देते वाला गूँगा होता है । पंक्ति भेद करने वाला काना होता है । किसी के विवाह में विघ्न डाल ने वाले का होटकटा हुआ होताहै । पुस्तक चुराने वाला जन्मांध होता है ॥८॥ गौ एवं ब्राम्हण को एक पैर से मारने वाला एक पैरसे लंगड़ा और दोनोंपैरसे मारने वाला दोनों पेरों से लंगड़ा होजाता है । असत्यवादी की वाणी गद् २ होजाती है । और उस असत्य को सुनने वाला बहरा

हो जाता है।६। विष देने वाला मूर्खएवं पागल हो जाता है। किसी के घर यादि में आग कगाने वाला खल्वाट (सिर में गंजा) होला है। मांस बेचने वाला दुर्भग (कुरूप दुर्भाग्य) होता है। मांस भक्षक रोगी होता है।११॥ रत्नों का चोर नीच कुलमें तैदा होता है। सोनेके चोर के नाखून खराब होते हैं धातु मात्रा का चोर निर्धन रहता है॥१२॥ अन्न का चोर मूसक बनता है धान्य का चोर शलभ (टिड्डी) का जन्म पाता है। जल चुराने वाला चातक [पपीहा] होता है। यिष का चोर

जायते ॥ गद्गदोनृतवादीस्यात्तच्छ्रोता बधिरो भवेत् ।६॥ गरदः स्याज्जडोन्मत्तः खल्वाटोऽग्नि प्रदायकः ॥ दुर्भगः पल विक्रेता रोगवापन्रमांसभुक ॥ १०॥ हीनजातौ प्रजायेत् रत्नानामपहारकः॥ कुनखी स्वर्णहर्ताः स्याद्धातुमात्रहरोऽधन ।११। अन्नहर्ता भवेदाखुःशलभो धान्यहारकः ॥ चातको जलहर्तास्याद्विषहर्ता च वृश्चिकः। १२ ॥ शाकंपत्र शिखिंहत्वा गंधाश्छुंदरी शुभान् ॥ मधुदंशः पलं गृद्धो लवणं च पिपीलिका ॥ १३ ॥ तांबूलंफलपुष्पादिहर्तास्याद्वानरो वने ॥ उपातृणकार्पासह-

बिच्छू का जन्म पाता है॥ १२ ॥ शाक पत्रों का चोर मोर पक्षी होता है सुन्दर गंध वाली वस्तुओं का अप हर्ता छछूँदरी का जन्म पाता हैं। मधु का चोर मधु मक्षिका होता है। मांस चुराने वाला गीध और नमक चुराने वाला पिपीलिका जन्म पाता है॥१३॥ ताम्बूल पष्प फल आदि चराने वाला बन में बानर होता, जता तिनके लकड़ी कपास चुराने वाला मेष

योनि में जन्म लेता है ॥१४ जो भयानक कर्म अर्थात् हिंसा वृत्ति से आजीविका करने वाला हो मार्ग में आनेवालों को लूटता हो, जिसे शिकार खेलने का व्यसन हो ऐसे पापी कसाई के घर बकरे का जन्म पाते हैं ॥१५॥ जो विषखा कर आत्मघातकरता वह पर्वत पर काला सांप होता है जो निरंकुश होकर किसी की आज्ञा नहीं मानता वह निर्जन वनमें हाथी होता है । १६। जो ब्राह्मण वैश्य देव वलिये नहीं करते जातिकुजाति का विचार न करें भक्ष्य खा लेते हैं वे निर्जन बनमें व्याघ्र होते हैं ।१७।

तास्यान्मेषयोनिषु ॥ १४ ॥यश्चरौद्रोपजी बीचमार्गेसार्थान्विलुपति ॥ मृगयाव्यसनीयस्तुछागः स्याद्वधिक गृहे ॥ १५ ॥ योमृतोविषप नेनकृष्णसर्पोभवेद्गिरौ ॥ निरंकुश स्वभाव स्यात्कुंजरो निर्जने वने ॥१६॥ वैश्वदेवमकर्त्तारः सर्वभक्ष्यश्चये द्विजाः ॥अपरीक्षितभोक्तारोव्याघ्राः स्युर्निर्जने वने ॥१७॥ गायत्री नस्मरेद्यस्तुयोनसंध्यामुपासते ॥ अंतर्दुष्टोवहिः साधुः सभवेत्ब्राह्मणोवकः ॥ १८ ॥ अयाज्ययाजकोविप्रः संभवेद्ग्रामसूकरः ॥ खरोवैबहुयाजित्वात्काकोनिर्मन्त्र भोजनात् ॥ १९ ॥ पात्रे विद्याम-

जो ब्राह्मण गयात्री संध्या नहीं करते मनमें दुष्टता रखकर बाहिर साधुता दिखाते हैं ऐसे ब्राह्मण बगले काजन्म पाते हैं ।१८। यज्ञ करने के अधिकार न रखते वालों से जो यज्ञ कराते हैं वे सूकर होते हैं एव दक्षिणा के लोभी नीचे पुरुषों से यज्ञ करालेते हैं वे गधे का जन्म पाते तथा निमंत्रण दिए बिना किसी के घर भोजन कर लेते हैं बिना बुलाये खा आते हैं वे कौआ होते हैं ।१९।। जो ब्राह्मण सुपात्र को विद्यादान नहीं करता वह बैल होता है । और जो शिष्य हो गुरुकी सेवा नहीं करता वह

पशु होता है ॥२०॥ जो गुरु को हूं तू करके बोले, बाद विवाद करके ब्राह्मण को जीतले ऐसा मनुष्य जहां जल भी न मिलता

हैं ।१६।। जो ब्राह्मण सुपात्र को विद्यादान नहीं करता वह बैल होता है। और जो शिष्य हो गुरुकी सेवा नहीं करता वह

पशु होता है ।।२०।। जो गुरु को हूं तू करके बोले, वाद विवाद करके ब्राह्मण को जीतले ऐसा मनुष्य जहां जल भी न मिलता हो ऐसे बन में ब्रह्मराक्षस होता है २१। प्रतिज्ञा कर जो ब्राह्मण को दान नहीं देता वह सियार होता है । श्रेष्ठपुरुषों का सत्कार नहीं करता वह अग्नि मुख फेत्कार होता है ।।२२।। जो मित्र द्रोही हो वह पर्वत पर गीध होता है और जोवस्तुके बेचने में ठगी करे वह उल्लू होता है । वर्णाश्रम की निंदा करने वाला वनमें कबूतर होता है ।।२३।। जो किसी की आशाभङ्ग

दाता चवलिवर्दो भवेद्द्विजः ।। गुरुसेवामकर्ताच शिष्यः स्यादगोखरः पशुः ।। २० ।। गुरुं हुंकृत्यतु कृत्य विप्रं निर्जित्यवादतः ।। अरण्ये निर्जले देशे जायते ब्रह्मराक्षसः ।। २१ ।। प्रतिश्रुतं द्विजेदानमदत्वा जंबुको भवेत् ।। सतामसत्कारकरः फेत्कारोग्निमुखो भवेत् ।। २२ ।। मित्रध्रुग्गिरि गृध्रः स्यादुलूकः क्रयवंचनात् ।। वर्णाश्रमपरिवादात्कपोतो जायते बने ।। २३ ।। आशाच्छेदकरो यस्तुस्नेहच्छेदकरस्तुयः।। यो द्वेषात्स्त्रीपरित्यागी चक्रवाकश्चिरं भवेत् ।। २४ ।। मातृ पितृ गुरुद्वेषी भगिनी भ्रातृ वै कृत ।। गर्भे-योनौविनष्टः स्याद्यावद्योनिसस्त्रशः श्वश्रूंगालिप्रदानारीनित्यं कलहकारिणी ।। साजलौकाचयूकास्या

करें किन्हीं दो व्यक्तियों के बने प्रेम को छिन्न भिन्नकरे किसी द्वेषके कारण स्त्री का परित्याग करे, इस प्रकार के मनुष्यदूसरे जन्म में चकवे पक्षी होते हैं ।२४। जो माता, पिता, गुरुजनों से द्वेष, भाई बहनों से शत्रुता रखने वाला व्यक्ति जन्मपर्यन्त गर्भ में मृत्यु को प्राप्त होता है ।२५। जो स्त्री अपनी सासुको गालितां देने वाली नित्यही कलहकरने वाली वह दूसरे जन्म में

जलों का, एवं जो पतिको अप्रिय वचन बोलती है वह जूँ होती है ॥२६॥ जो अपने पति को छोड़ पर पुरुषों से प्रेमकरती है, वह बल्गुली का जन्म पा वृक्षों में लटकती गृह गोधा तथा मुख रहित सर्पिणी होती है ॥२७॥ जो अपने गोत्रकाघात करता है, या अपने गोत्र की स्त्री का संग करता है वह तरक्षु एवं शल्लक का जन्मले रीछों की योनिमें पड़ता है ॥ २८ ॥ जो तपस्वी की स्त्री से संग करता है वह कामी रेतीवाले मारवाड़ में पिशाच बनता है । जोछोटी लड़की के साथव्यभिचारकरता है

द्भर्तारंभर्त्सयेच्चया ॥ २६ ॥ स्वपतिं च परित्यज्य परपुंसानुवर्तिनी ॥ बल्गुलीगृहगोधास्याद्द्विमुखीवा- थसर्पिणी ।२७। यः स्वगोत्रोपघाती च स्वगोत्रस्त्रीनिषेवणात् ॥ तरक्षुःशल्लकोभूत्वाऋक्षयोनिषु- जायते ॥ २८ ॥ तापसीगमनात्कामीभवेन्मरुपिशाचकः ॥ अप्राप्तयौवनासंगाद्भवेदजगजरोवने ।२९। गुरुदाराभिलाषी च कृकलासोभवेन्नरः ॥ राज्ञीगत्वाभवेदुष्ट्रः मित्रपत्नीं च गर्दभः । ३० । गुदगोवि- ड्वराहः स्याद्वृषः स्याद्वृषलीपतिः ॥ महाकामी भवेद्यस्तुस्यादश्वः कामलंपटः ॥ ३० ॥ मृत

वह वन में अजगर होता है ॥२६॥ जो गुरुकी स्त्री से बुरी नीयत से अभिलाषा रखता है वह कुम्भकिरड़ा होता है राजा की स्त्री से व्यभिचार करे वे ऊँट होते हैं, मित्र पत्नीसे संग करने वाले गर्दभ होते हैं ॥३०॥ गुदा द्वारा मैथुन करने वाला भएडशूर होता है । शूद्रा स्त्री से व्यभिचार करने वाला बैल होता है जोकामी हो वह लम्पट दूसरे जन्म में घोड़ा होता है।३१।

...होता है । शूद्रा स्त्री से व्यभिचार करने वाला दल होता है जो कामी हो वह लम्पट दूसरे जन्म में घोड़ा होता है।३१।

जो मृतकके एकादशाह का भोजन करता है वह कुत्ता होता है । सारे गांव के यज्ञ पूजन का ठेका लेने वाला दूसरे को आचार्य न होने देने वाला ब्राह्मण देवलक कहा जाता है, मरे पीछे मुर्गे की योनि लेता है ॥ ३२ ॥ देवलक का लक्षण भगवान कहते हैं कि हे गरुड़ ! जो अधम व्र्म्हण धनार्थ देवताओं का पूजन करते हैं वही देवलक कहाते हैं वह पितृ कार्यहव्य श्राद्धादि भोजन के योग्य नहीं ॥३३ ॥ वे महापापी पापों के फलस्वरूपघोर दारुण नरको में पहुँच कर अपने कर्मों का फल भोगफिरमृतलोकमें

स्यैकादशाहंतुभुंजानः श्वाविजायते ॥ लभेद्देवलकोविप्रोयोनिंकुक्कुटसंज्ञकम् ॥३२॥ द्रव्यर्थदेवता पूजां यः करोति द्विजाधमः ॥ सवैदेवलकोनामहव्यकव्येषुगर्हितः ॥ ३३ ॥ महापातकजान्घोरान्नर-कान्प्राप्य दारुणान् ॥ कर्मक्षयेप्रजायंते महापातकिन स्त्विह ॥ ३४ ॥ खरोष्ट्रमहिषीणां हिब्रह्महायोनि-मृच्छति ॥ वृक श्वानशृगालानां सुरापायांतियोनिषु ॥ ३५ ॥ कृमि कीटपतं गत्वंस्वर्णस्तेयीसमाप्नुयात् तृणगुल्मलतात्वंचक्रमशोगुरुतल्पगा : ॥ ३६ ॥ परस्ययोषितंहृत्वान्यासापहरणेनच ॥ ब्रह्मस्वहरणाच्चैव

आ जन्म लेते हैं ब्रह्म हत्या करने वाले पापों का फल नरक भोगकर फिर इस लोक में खर आदि पशुयोनि में जन्म लेते हैं । मदिरा पीने वाले भेड़िया, श्वान एवं सियार योनि में जाते हैं ॥ ३५ ॥ सोने के चुराने वाला कृमिकीट पतंग आदि योनियों में पड़ता है । गुरुस्त्री गामी तृण, गुल्म लताओं में जन्म लेता है ।।३६।। दूसरे की स्त्रीं को हरण करके घर मेंडाललेते

है जो दूसरे की अमानत खाते हैं तथा ब्राह्मण का दान हर लेते हैं ऐसे पापी ब्रह्म राक्षस होजाते हैं ।३७। ब्राह्मण का धन लेना बुरा है । प्रेम से ब्राह्मण के धनको उपभोग करने वाले की सात कुलें नष्ट हो जाती हैं । जो बलपूर्वक चोरी करके ब्राह्मण के धन का उपभोग करता है उसकी चंद्रमा एवं तारामण्डल तक कुलको नाश होता रहता है ।। ३८।। यहसमझिये कि लोहे का चूरा पत्थर का चूरा एवं विष ऐसी चीजों को तो मनुष्य पचा सकता है किंतु ब्राह्मण के धनको तीनों लोकों में कोई

जायते ब्रह्मराक्षसः ।। ३७ ।। ब्रह्मस्वंप्रणद्धुक्तं दहत्यासप्तमंकुलम् ।। बलात्कारेण चौर्येणदहत्याचंद्र-तारकम् ।। ३८ ।। लोहचूर्णाश्मचूर्णंचविषंचजरयेन्नरः ।। ब्रह्मस्वंत्रिषुलोकेषुकः पुमान् जरयिष्यति ।। ३९ ।। ब्रह्मस्वसरसपुष्टानिवाहनानि वलादि च ।। युद्ध कालेविशीर्यं तेसैकताः सेतवोयथा । ४० ।। देवद्रव्योपभोगेन ब्रह्मस्वहरणेन च ।। कुलान्य कुलतांयांतिब्राह्मणातिक्रमेणच ।।४१।। स्वमाश्रितं परि

नहीं पचा सकता ।३९। देखिये किसी राजा ने ब्राह्मणों के धनके द्वारा घोड़े, हाथी सेनायें लीहों वह सबयुद्ध में इस प्रकारनष्ट हो जाती हैं जैसे बादलों के बरसने पर बालू से तैयार की गई पुलकी रेती गिर जाती है ।४०। देव द्रव्य के खा जाने से एवं ब्राह्मण के धन हरण कर खाने से वेद पाठी ब्राह्मण के अनादर करने से कुल नाश होता है ।४१। ब्राह्मण का अतिक्रमण कैसा होता है भगवान् कहते हैं कि वेद शास्त्र आदि ब्रह्म विद्याके जानने वाले विद्वान ब्राह्मणों छोड़कर किसी

अतिक्रमण कैसा होता है भगवान् कहते हैं कि वेद शास्त्र आदि ब्रह्म विद्याके जानने वाले विद्वान ब्राह्मणों छोड़कर किसी

दूसरे ब्राह्मण को बुलाकर जो मनुष्य दान दे देता है यही उस ब्रह्मण का निरादर है ॥४२। अपने पड़ौसमें वेद विद्या न जानने वाला कोई मूर्ख, जातिका ब्राह्मण रहता हो तो उसको छोडकर दूर रहने वाले विद्वान को बुलाकर दान दे देना यह ब्राह्मण अतिक्रमण का दोष नहीं, यह तो वेद विद्या का सत्कार है। दृष्टान्त में जैसे प्रज्वलित अग्नि में होम करने से पुण्य है नकि भस्म में हवन करने से विद्वान सुपात्रको श्रद्धासेदान देना हितकारी है, परन्तु मूर्ख कुपात्र को दान नहीं देना चाहिये ॥४३। इस प्रकार

त्यज्य वेदशास्त्र परायणम। अन्यस्मैद्दीयतेदानं कथ्यतेयमतिक्रमः ।४२। ब्राह्मणातिक्रमोनास्ति विप्रे-वेदविवर्जिते। ज्वलंतमग्निमुत्सृज्यनहिभस्मनिहूयते ॥ ४३ ॥ अतिक्रमेकृतेताद्दर्य भुक्त्वाचनरकान्क्र-मात् ॥ जन्माँधः सन्दरिद्रः स्यान्यदाताकिंतुयाचकः ।४४। स्वदत्तांपरदत्तांवायोहरेच्चवसुंधराम्॥ षष्टि-वर्षसहस्राणि विष्ठायांजायते कृमिः ।४५। स्वयमेवचयोदत्वास्वयमेवोपकर्षति सपापीनरकंयातियावदा-

हे गरुड़जी! जो सुपात्र निरादर करता है तो मूर्खों को दिया हुआ दान भी बेकार है ऐसा पुरुष नरक गामी होता है। यह नरक यातनाओं को भोगकर जन्म से अन्धा होता है, साथ में दरिद्र होकर दाता नहीं रहता याचक होजाता है ॥४४॥ जो परुष ब्राह्मण से अपना दान या किसी दूसरे का दान, की हुई पृथ्वी को ब्राह्मण से छीनलेता है वह साठ हजार वर्ष विष्टा में क्रीड़ा होकर जन्मता मरता रहता है ॥४५। जो पुरुष स्वयं ही पृथ्वी तथा अन्य वस्तु ब्राह्मण के प्रति दान कर आपछीन

लेता है वह पापी महा प्रलय काल पर्यन्त नरको में पड़ा रहता है ।।४६।। आजीविका चलाने वाली पृथ्वी किसी ब्राह्मण कोदान में देकर उसकी यत्न पूर्वक पालना करनी चाहिए, वह पृथ्वी उस ब्राह्मण अन्कोन देने वाली वनी रहे ऐसा प्रबन्ध करतेरहना चाहिए। जो उल्टा उससे छीन लेता है। वह कुत्तेका जन्म पाता है इसपर भी लगड़ा होता है।४७।जिससे कि ब्राह्मण की आजीविका बँध जाय ऐसी वस्तुके दान से लाख गौओं के दान का फल प्राप्त होता है। ब्राह्मण की आजीविकाछीनलेनेसे

भूतसंप्लवम् ।।४६।। दत्वावृत्ति भूमिदानं यत्नतः परिपालयेत् ।। नरक्षतिहरेद्यस्तुसपंगुःश्यादभिजायते।४७। विप्रस्यबृत्तिकरणेलक्षधेनुफलभवेत् ।। विप्रस्य बृत्तिहरणान्मर्कटःश्वा कपिर्भवेत् ।। ४८ ।। एवमादीनि-योनयश्चखगेश्वर ।। स्वकर्म विहित लोकेदृश्यंतेऽत्रशरीरिणाम् ।। ४९ ।। एवंदुष्कर्मकर्त्तारोभुक्त्वानिर-यथातनाम् ।। जायते पापशेषेणप्रोक्तास्त्वेतासुयोनिषु ।। ५० ।। ततोजन्मसहस्त्रेषुप्राप्यतिर्यकशरीरताम्।।

लंगूर, वानर एवं कुत्ते की योनि मिलती है।४८। श्री भगवान कहते हैं कि हे गरुड़ ! अपने २ कर्मों के अनुसार नरकों में दारुण यातना भोगकर फिर पृथ्वी पर जन्म लेने वाले इस प्रकारके निकृष्ट योनियों में जन्म लेते हैं ।।४९।। दुष्टनारकीय निरय यातनाएँ भोग २ कर पूर्वोक्त योनियों में जन्म लेते हैं। इन्हीं चिन्हों और योनियों को देख नारकीय जीव पहिचाने जाते हैं। अन्ध पंगु कुष्ठ आदि चिन्ह कृमि, कीट श्वान आदि योनियां तथा क्षय, अपस्मार, मृगी आदि राजरोगपापियों की निशानी हैं ।।५०।। हजारों जन्म तक गधा, ऊँट बैल आदि तिर्यक योनियों में शरीरों को प्राप्त कर दुःखों को पाते हैं

।।५१।। ये पशु योनियों से छूट, पक्षियों की योनियोंमें पडते हैं । उन योनियों में वर्षा, जाडा धूप आदि के दुःखभोगनेपरमनुष्य का जन्म पांते हैं । ५२ । इसी प्रकार स्त्री के प्रसग से यह जीव गर्भ में आता है फिर गर्भ से लेकर मृत्यु पर्यन्त कष्ट उठाता भरता जन्मता रहता है ।।५३।। हे गरुड ! स्वेदज उद्भिज अण्डज इसी प्रकार जरायुज इन चारों प्रकार की योनियोंवाले भूत प्राणियों के भीतर बार २ जन्म मृत्यु रूप ससार चक्र चल रहा है।। ५४ ।। जैसे कूए में से पानी लाने के लिए रहटऊपर

दुःखानिभारवहनोद्भवादीनिलभंतिते ।। ५१ ।। पक्षिदुःखततोभुक्त्वावृष्टिशीतपोद्भवम् ।। मानुषं लभ-
तेपश्चात्समीभूते शुभाशुभे ।। ५२ ।। स्त्रीपुंसंप्रसंगेन भूत्वा गर्भेक्रमादसौ ।। गर्भादिमरणांतंचप्राप्यदुःखं
म्रियेत्पुनः ।। ५३ ।। समुत्पत्तेर्विनाशश्च जायते कैर्वदेहिनाम् ।। एवं प्रवर्तितंचक्रं भूतग्रामे चतुर्विधे ।४।
घटीयंत्रंयथामर्त्याभ्रमंति मम मायया ।। भूमौ कदाचिन्नरके कर्मपाशमावृता ।। ५५ ।। अदत्तदाना-
च्चभवेद्दरिद्रो दरिद्रभावाच्चकरोति पापम् ।। पापप्रभवान्नरकेप्रयातिपुनर्दरिद्रः पुनरेवपापी ।।५६।।अ-

नीचे आता जाता रहता है वैसे हे गरुड़ ! यह मरणशील प्राणी मेरी माया से कभी पृथ्वी पर, कभी नरकों में अपनेकर्मपाश में बँधे हुए आते रहते हैं ।। ५५ ।। पृथ्वी में आकर दान न करने से दूसरे जन्म में दरिद्र होते हैं । दरिद्रता के कारण पाप करने लगते हैं । पापों के प्रभाव से नरको में पहुंच जाते हैं ।। ५६ ।। अपने किये शुभ अशुभ फल अवश्य भोगने पडते हैं ।

करोड़ों कल्पों के गुजर ने पर भी फल भोगे बिना कर्मों का नाश नहीं होता ।५७।

इति श्री गरुड़ पुराण सरोद्धारे शास्त्रि हरिश्चन्द्र कृतायां सरल टीकायां पाप चिन्ह निरूपणो नाम पचमोऽध्यायः ।५।

गरुड़ बोले केशव ! नरक से आया हुआ जीव माया के गर्भ में कैसे जन्म लेता है एवं गर्भ आदि दुःखों को कैसे भोगता है। यह कृपाकरके कहें ।।१। भगवान बोले हे गरुड़ ! स्त्री पुरुष के प्रसंग द्वारा स्त्री का रज पुरुष का वीर्य यह दोनों जब इकट्ठे

वश्यमेव भोक्तव्य कृतंकर्म शुभाशुभम् ।। नाभुक्तं चीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ।।५७।। इति श्री गरुड़पुराणे सारो द्धारे पापचिन्ह निरूपणो नाम पंचमोऽध्यायः । ५ । गरुड़ उवाच ।। कथमुत्पद्यते-यातुर्जठरेनरकागतः ।। गर्भादिदुःखंयद्भुङ्क्ते तन्मेकथय केशव ।। १ ।। विष्णुरुवाच ।। स्त्रीपुंसोस्तुप्रसं-गेननिरुद्धे शुक्रशोणिते । यथायंजायतेमर्त्यस्तथावक्ष्याम्यहंतवः । २ । ऋतुमध्येहिपापानांदेहोत्पत्तिः प्रजायते । इन्द्रस्य ब्रह्महत्यास्तियास्मिंस्तस्मिंदिनत्रये ।। ३ ।। प्रथमेहनिचाण्डाली द्वितीयेब्रह्मघातिनी।।

होकर गर्भाशय में बन्द हो जाते हैं तब यह मरने वाला प्राणी उत्पन्न होता है वह तुम्हें सुनाताहूं ।२। ॠतु स्नानके चौथे दिनके पहले ही कामांध हो, यदि स्त्री पुरुष का प्रसंग हो, तो ऐसे समय के भीतर पापियों की उत्पत्ति होती है स्त्रियों की ॠतु इन्द्रकी ब्रह्म हत्या है। स्त्री तीन दिन अपवित्र रहती है चौथे दिन स्नान के बाद शुद्ध होती है ।।३।। पहले दिन स्त्री चाण्डालनी दूसरे दिन ब्रह्म घातिनी और तीसरे दिन धोबिन तुल्य है। इन तीनों दिनों के प्रसंग से नरक से आये हुए

प्राणीउत्पन्न होते हैं ।४। गर्भ में आने का ...

प्राणीउत्पन्न होते हैं।४। गर्भ में आने का प्रकरण कहते हैं कि ईश्वर की प्रेरणासे अपने कर्मवश हो, यह जीव वीर्य की बिन्दुओं में आश्रय पा यह स्त्री के उदर में जाता है ॥५। एक ही रात्री में यह वीर्य के मिलने से कलल सुफेद लालआग जैसा होता है फिर पंचरात्रिसे बुलबुला जैसा होता है। दस दिनके अन्तरवही बुद २ बेरके फल जैसा होजाता है। उसके बाद यह अण्डाकार होजाता है।७। पहले महीने सिर दूसरे महीने भुजा आदि अङ्गहोते हैं तीसरे महीने में नाखून, रोम हड्डियां चर्मलिंग आदि

तृतीयेरजकीह्यतानरकागतमातरः ।४। कर्मणादैवनेत्रेणजंतुर्देहोषपत्तये ॥ स्त्रियांः प्रविष्टउदरंपुंसोरेतः कणाश्रयाः ।५। कललंत्वेकरात्रेणपंचरात्रेबुद्बुदम् ॥ दशाहेनतुकर्कंधू पेश्यंडंवाततः परम् ॥ ६ ॥ मासेनतुशिरोद्वाभ्यांबाह्वंगाद्यंगविग्रहः । नखलोमास्थिचर्माणिलिंगच्छिद्रोद्भवस्त्रिभिः ॥ ७ ॥ चतुर्भिर्धातवः सप्तपंचभिःक्षुत्तृडुद्भवः ॥ षड्भिर्जरायुणावीत कुक्षौभ्राम्यतिदक्षिणे ॥ ८ ॥ मातुर्जग्धान्नपानाद्यैरेधद्धातुरसंमते ॥ शेते विण्मूत्रयोर्गर्ते सजंतुर्जंतुसंभवे ॥९॥ कृमिभिःक्षतसर्वाङ्ग सौकुमार्यात्प्रतिक्षणाम्

छिद्र हो जाते हैं।८। चौथे महीने त्वचा मांस, रुधिर, मेदा, मज्जा, अस्तिआदि इनसात धातुओं की उत्पत्ति होती, पांचवेमांस में भूख प्यास लगने लगती है। छटे महीने जेर से लिपटा हुआ दांई कुक्षिकी ओर यह घूमने लगता है ॥ ८ ॥ ऐसे माता से भुक्तअन्नआदि से वढ़ता कीटों से परिपूर्ण दुर्गन्धदार माता के उदर गर्त में सोता है ॥९॥ माता के पेट में कीट आदि जंतु भूखे

लगातार उसके कोमल अंगों का काटते हैं इसीसे क्षत होकर बार २ मूर्छाको प्राप्त होता है ।।१०।। कड़वी, तीक्ष्ण, गर्मनमकीन रूखीकसैली एवं कठोर वस्तु जब कभी माता खालेती है तो उनके स्पर्श होने से तब सारे अङ्गोंमें उसेवेदना होती है, जरायुसेकसाहुआ आंतों के द्वारा आवृत हुआ है ।।११।। नीचेसिरकिये ऊपर की ओर पांवकिये टूटीपीठ वाला हो, सिर को दोनों जानुओंसे मिला गोलसा हुआ पींजरे में कैद हुए पक्षी की भांति वह दुःखित रहता है ।११।। सैकड़ों जन्मों के प्रभाव से ही ईश्वर के नाम की

मूर्च्छामाप्नोत्युक्लेशस्तत्रत्यैःक्षुधितैर्मुहः ।।१०।। कटुतीक्ष्णोष्णलवणरूक्षाम्लादिभिरुल्वणैः ।। मातृभुक्तैरुपस्पृष्टः सर्वांगोत्थितवेदनः उल्वेनसंवृतस्तस्मिन्नन्त्रैश्चवहिरावृतः ।११। आस्तेकृत्वाशिरः कुक्षौ भग्नपृष्ठशिरोधरः । अकल्पः स्वांगचेष्टायांशकुन्त इवपंजरे ।।१२।। तत्रलब्धस्मृतिर्दैवात्कर्मजन्मशतोद्भवम् ।। स्मरन्दीर्घमनुच्छ्वासंशर्मांकिंनामविंदते ।१३। नाथमानऋषिर्भीतः सप्तवध्रि कृतांजलिः ।। स्तुवीतुक्लीवयावाचायेनोदरेस्थापितः ।।१४। आरभ्यसप्तमांन्मासाल्लब्धवोपिवेपितः ।। नैकत्रास्तेसू-

स्मृतिजग उठती है । पुन्य उदय हुआ तो गर्भमें ईश्वर का स्मरण करता है और साथ में दुःख के मारे लम्बे श्वांस भी लेता है ।।१३।। फिर वह जीव सप्तधातुओं से बँधा, पशुकी भांति भयभीत हो, हाथ जोड़कर ऋषियों जैसे जिस ईश्वर ने उसे गर्भ में धारणकिया था, ईश्वर की दीन वाणी द्वारा स्तुति करने लगा ।१४। सातवें मास के लगते ही गर्भ में आये हुये जन्तुको ज्ञान होता है, तथादुःखों को देखकर कांप उठता है । गर्भ में एक जगह टिक नहीं सकता वह विष्ठामें उत्पन्न कीटकी

जन्तुको ज्ञान होता है, तथादुःखी को देखकर कांप उठता है । गर्भ में एक जगह टिक नहीं सकता वह विष्ठामें उत्पन्न कीटकी

भांति उदरमें इधर उधर फिरता है ॥१५॥ इसी ज्ञान के कारण सांसारिक दुःखों को देख वैराग्य युक्त हो ईश्वर की स्तुति करता है जीव कहता है—कि हे प्रभो ! आप लक्ष्मी नाथ जगतके आधार हैं एवं सब पापों का नाश करते हैं, अपनी शरण में आये हुये दीनों की रक्षा करते हैं । घट २ में व्यापक विष्णु भगवान ! मैं आपकी शरण हूँ ॥१६॥हे भगवान ! यह माया जिसके द्वारा मैं मोहित होकर अपने शरीर, पुत्र,कलत्र, आदि में ममताकरके अभिमान करता रहा हूँ इसी से जन्म मरण में

तिवातविष्ठाभूरिवसोदरः ।१५। जीव उवाच ॥ श्रीपति जगदाधारमशुभक्षयकारकम् ॥ ब्रजामिशरणं विष्णुं शरणागतवत्सलम् ।१६। त्वन्माया मोहितोदेहे तथापुत्रकलत्रके ॥ अहंममाभिमानेनगतोऽहंनाथसंसृतिम् ॥१७॥ कृतंपरिजदस्यार्थं मयाकर्म शुभाशुभम् ॥ एकाकीतेन दग्धोऽहं गतास्तेफलभोगिनः ।१८। यदियोन्याः प्रमुच्येऽहंतत्स्मरिस्येपदंतव ॥ तमुपायंकरिष्यामियेनमुक्तिंब्रजाम्यहम् ।१९।विण्मूत्रकूपेपतितो दग्धोऽहंजठराग्निना । इच्छन्नितोविवसितुं कदानिष्कास्यतेबहि ।२०। येनेदृशंमेविज्ञानंदत्तंदीनदया

पड़ाहूँ ॥१७॥ मैंने अभिमान में आकर अपने कुटम्ब के पालन में शभ अशुभ कर्म किये हैं वे तो खा पीकर चलेगये, अब अकेला मैं उनका फल पाता हुआ जल रहा हूँ ॥१७॥ यदि दयालो ! मैं इस योनि से एक बार छूट जाऊँ तो यह अवश्य है कि आपके चरणारविन्दोंका स्मरण करूँगा । जिससे मेरी मुक्ति होजाय ॥१६॥ हे प्रभो ! मैं मलमूत्र के कुए में पड़करजठराग्निसे दग्ध हो रहा हूँ । मैं निकलना चाहता हूँ अब बाहिर निकालो ॥२०॥ आपने ही तो मुझे इस प्रकार ज्ञान दिया है ।

मैं आपकी शरण हूं अब दया कीजिये मेरा फिर जन्म मरण न हो ।२१। हे प्रभो ! आपकी कृपा से यह भी ज्ञान हो रहा है कि मेरे बाहर निकलने पर फिर मुझे संसार चिपट जायगा, फिर पाप कर्मों में प्रवृत्त हो जाऊँगा । अतः अबतो मैं गर्भ से भी निकलना नहीं चाहता ॥२२ । दीनबन्धु ! चाहे यहां गर्भ में भारी दुःख में भी पड़ा हूँ परन्तु उसका विचार नहीं आपके चरणों के आश्रय से अब अपना अवश्य उद्धार करूँगा यह गर्भ में ईश्वर की स्तुति करता है ॥२३॥ श्री भगवान् लुना ॥ तमेवशरणं यामिपुनर्मेमाऽस्तुसंसृतिः ॥२१॥ नचनिर्गन्तुमिच्छामिवहिर्गर्भात्कदाचन ॥ यत्र यातस्यमेपापकर्मणादुर्गतिर्भवेत् ॥२२॥ तस्मादत्र महद्दुःखस्थितोपिविगतक्लमः ॥ ऊद्धरिष्यामिसंसाग-दात्मानंतेपदाश्रयः ॥२३॥ श्रीभगवानुवाच ॥ एवंकृतमगतिगार्भेदशमास्यः स्तुवन्नृषिः ॥ सद्यःक्षिपत्यवा-चीनप्रसूत्यैसूतिमारुतः॥ २४ ॥ तेनावसृष्टःसहसाकृत्वाऽवाक्शिरआतुरः॥विनिष्क्रामतिकृच्छ्रेणनिरुच्छ्-वासोहतस्मृतिः ॥ २६ ॥पतितोभुविविण्मूत्रेविष्ठाभूरिवचेष्ठते ।रोरूयतिगतेज्ञाने विपरीतांगतिंगतः ।२६।

कहते हैं-हेगरुड़ ! यह जीव दसवेंमासतक ईश्वर की स्तुति करता रहता है किंतु नीचे मुखवाले जीवको प्रसूतिपवन झटगर्भ से बाहिर गिरा देता है ।२४। अधो मुख जीव प्रसूति पवन के द्वारा कष्ट से झटपट बाहिर आता है किंतु श्वास एवं पूर्वोक्त ज्ञान स्मृति भी सब जाती रहती है ॥२५॥ गर्भ से बाहर हो विष्ठा कीटकी भांति ज्ञानके नष्ट होजाने पर विपरीत गतिको प्राप्त हुआ जीव उआं २ कर रोता है, तब उसे सम्बन्धी कहते हैं कि बालक का जन्म हुआ है ॥ २६ ॥ गर्भ में रुग्णा-वस्था में श्मशान में एवं पुराण कथा सुनते समय जिस प्रकारका मनुष्यको वैराग्य होजाता है । यदि वही ज्ञान पड़ा के लिए

वस्था में श्मशान में एवं पुराण कथा सुनते समय जिस प्रकारका मनुष्यको वैराग्य होजाता है। यदि वही ज्ञान सदा के लिए रहे तो फिर कौन पुरुष संसार बन्धनसे मुक्तन होजाय ॥२७॥ अपने कर्म भोगों से जीव गर्भ से बाहिर आता है तभी ही विष्णु की माया जीव को मोहित कर लेती है ॥२८॥ तब वह पुरुष माया से मोहित होकर कुछबोल नहीं सकता बचपन के दुःखपराधीन होकर भोगता है।२९। बचपन में दुःख का मुख्य कारण यही है कि मातापिता बालक की इच्छा जाननहीं सकते। दुःख

गर्भेव्याधौ श्मशानेच पुराणेयामतिर्भवेत्। सायदिस्थिरतांयातिकोनमुच्येतबंधनात्।२७। यदागर्भाद्बहिर्यातिकर्मभोगादनंतरम् ॥ तदैववैष्णवीमायामोहयत्येवपुरुषम्।२८। सतदामाययास्पृष्टोनकिंचिद्वदतेऽवशः॥ शैशवादिभवंदुखं पराधीनतयाश्नुते। २९। परच्छंदंनविदुषपुष्यमाणोजनेनसः॥ अनभिप्रेतमापन्नः प्रत्याख्यातुमनीश्वरः ॥ ३० ॥ शायितोऽशुचिपर्यंके जंतुस्वेदजदूषिते ॥ नेशः कंडूयने गात्राणामासनोत्थानचेष्टने।३१। तुदंत्यामत्वचंदंशामशकामत्कुणादयः। रुदंतंविगतज्ञानंकृमयः

एवं भूख में बालक बोल तो सकता नहीं रोनें लगता है रोना सुनकर माता-पिता औषधि दूध आदि दे देते हैं। इसीप्रकारयह पलता रहता है ॥३०॥ खटमल मच्छर आदिसे दूषितखटिया पर सुला देने पर दुःखी होता है न अपने अङ्गोंको खुजलासकता न उठबैठ सकता है ॥३१॥ कीड़े जिस प्रकार कीड़ों को काटते हैं उसी प्रकार ज्ञान रहित असमर्थ एवं रोते हुए बालकका नये

एवं कोमल चमड़े पर खटमल मच्छरादि काट २ कर दुःख देते हैं ॥३२॥ इसी प्रकार बालक अवस्थाभोग पांचवें वर्ष से पौगण्ड अवस्था में आता है उसमें भी विद्या अध्ययन आदिमें गुरुजनों की मार पीटके दुःख भोगने पड़ते हैं फिर आसुरीसम्पत्ति प्राप्त कराने वाली यौवन अवस्था में आता है ।।३३ । इस अवस्था में नीचसङ्गति पाकर दुष्टकर्मकरता हैं दुर्व्यसनोंमें आसक्त हो शास्त्र तथा सत्पुरुषों के साथ द्वेष भाव रखकर कामी बन जाता है ॥३४॥ जब वह प्रभुकी मायारूप स्त्री कोदेखता है तो

क्रमिकंयथा ॥३२॥ इत्येवं शैशवं भुक्त्वा दुखं पौगण्डमेवच ॥ ततोयौवनमासाद्ययातिसंपदमासुरीम् ॥३३॥ तदादुर्व्यसनासक्तो नीचसङ्गपरायणः । शास्त्र-सत्पुरुषाणां च द्वेष्टास्यात्कामलंपटः ॥ ३४ ॥ दृष्ट्वास्त्रियं देवमायांतद्भावैरजितेन्द्रियः । प्रलोभितः पतत्यंधेतमस्यग्ननौपतंगवत् ।३५।कुरङ्गमातङ्ग पतंगभृङ्गमीनाहताः पंचभिरेवपंच। एकः प्रमादीसकथनहन्ययः यसेवतेपंचभिरेवंपंचः ।३६।अलब्धाभीप्सितोज्ञानाद्धवेमन्युः शुचार्पितः ॥ सहदेहेनमात्रेणवर्द्धमानेनमन्युना ॥३७॥ करोतिविग्रहंकामी

उसे ज्ञात नहीं रहता कटाक्षों से अजितेन्द्रिय होकर आग में पतगा की भांति स्त्रीके महामोह में पड़ता है ।३५। तब यह कर्ण, त्वचा नेत्र, जिह्वा, घ्राण आदि पांचों इन्द्रियों के शब्द स्पर्श, रूप, रस गन्ध, इन पांचों विषयों को भोगनेमेंखूबलम्पट हो जाता है ॥३६॥ जवानी में मनोकामना यदि सिद्ध नहीं होती तो उसे क्रोध उत्पन्न हो जाता है । अब जिस २ प्रकार से शरीर बढ़ता है इसी प्रकार क्रोध भी बढ़ता है ।।३७॥ क्रोध में मूर्छित होकर वह कामी स्वार्थ सिद्धकेलिए हस्तियोंके साथ जैसे दूसरे हस्ती लड़ते हैं । वैसेही अधिकबलवान कामियों के साथ लड़कर मृत्यु पाता है ।८। इसी प्रकार हे गरुड़ ! अत्यन्त दुर्लभा

शरीर बढ़ता है उसी प्रकार क्रोध भी बढ़ता है ।।३७।। क्रोध में मूर्छित होकर वह कामी स्वार्थ सिद्धकेलिए हस्तियोंके साथ जैसे

दूसरे हस्ती लड़ते हैं । वैसेही अधिकबलवान कामियों के साथ लड़कर मृत्यु पाता है ।३८। इसी प्रकार हे गरुड़ ! अत्यन्त दुर्लभा मिलने वाला मनुष्य जन्म पाकर भी विषय शक्तिमें व्यर्थनाशकर देता है । इससे बढ़ कर कौन पाप है ।३९। अन्य योनियों सेमनुष्य योनि अतीव दुर्लभ है । और उसमें भी ब्राह्मणतामिलनी अत्यन्त कठिन है । उसका कुछ विचार नहीं करता । भक्तिसेहीन हो हाथ में आये हुये अमृत को गिरा देता है ।।४०। सो चलते २ वृद्धावस्था में प्राप्त हो, रोगों से घिरता है, दुःखी होते २

कामिष्वंताथचात्मनः ।।बलाधिकैःसहान्यैर्तैगजैरन्यैर्गजोयथा।।३८। एवंयोविषयासक्त्यानरत्वमतिदुर्लभम् बृथानाशयतेमूढस्तस्मात्पापतरोहिकः ।। ३९ ।। जातीशतेषुलभतेभुविमानुषत्वं तत्रापि दुर्लभतरंखलु भो द्विजत्वम् ।। यस्तन्नपालयतिलालयतीन्द्रियाणितस्यामृतक्षरतिहस्तगतं प्रमादात् ।४०। ततस्तांवृद्धतां- प्राप्य महाव्याधिसमाकुलः ।। मृत्युंप्राप्यमहद्दुःखं नरकंयाति पूर्ववत् ।४१। एवं गतागतैः कर्मपाशै- र्बद्धाश्चपापिनः ।। कदापिनविरज्यते ममामायाविमोहिताः।४२। इतितेकथितातार्क्ष्यपापिनांनरकीगतिः।

मृत्यु को प्राप्त हो, दुःखदायी नरकों को प्राप्त होता है ।४१। श्री भगवान कहते हैं कि ऐसे आवागमन के चक्रमें फंसाने वाले कर्मपाशों से बंधे हुये वे पापी मुझ ईश्वर की माया से मोहित होकर विषयों से कभी भी वैराग्य नहीं पाता ।४२। हे गरुड़ यह मैंने तुम्हें अन्त्येष्टि आदि अन्तकाल के संस्कारों से होने पापियों की गति सुनादी है । अब कहिये और क्या सुनना

चाहते हैं। ॥४३॥

इति श्री गरुड़ पुराणेसारोद्धारे शास्त्रि हरिश्चन्द्र कृतायां सरलाटीकायां पापिजन्मादि दुःखनिरूपणोनाम षष्टोऽध्याय ॥६॥

सूतजी बोले। जब श्री भगवान के मुखसे गरुड़जी ने नरकों का वर्णन सुना तो पीपल के पत्ते की भांति कांपने लगा। तबलोगों के उपकारके लिये श्री गरुड़ जी ने श्री भगवान से पूँछा ॥१॥ गरुड़ बोले-मनुष्य प्रमादसे अथवा बुद्धि द्वारा सोच

अन्त्येष्टिकर्महीनानां किंभूयः श्रोतुमिच्छसि ॥४३॥ इति श्री गरुड़पुराणे सारोद्धारे पापजन्मादि दुःख निरूपणो नाम षष्ठोऽध्यायः।६। सूत उवाच ॥ इति श्रुत्वातुगरुड़ः कंपतोश्वत्थ पत्रवत् ॥ जनानामुपकारार्थं पुनः पप्रच्छ केशवम्।१।गरुड़ उवाच।कृत्वापापानिमनुजाःप्रमादाद्बुद्धितोपिवा।नयांतिय तनांयाभ्यां। केनोपायेनअथ्यताम्॥ २ ॥संसारार्णवमग्नानांनराणांदीनचेतसाम् पापोपहतबुद्धीनांविषयोपहतात्मानाम्।३। उद्धारार्थं वादिस्वामिन्पुराणार्थविनिश्चयत्। उपायंयेनमनुजा सदगतिंयांतिमाधव।४।

करपाप भी कर बैठे तो कृपा करके कोई ऐसा उपाय बताइये जिससे उनकी यमयातना से मुक्ति हो। २॥ पाप करते रहने से जिनकी बुद्धिनष्ट हो चुकी है, इन्द्रियों के वशीभूत होकर आत्मा जिनकी विषय वासनाओं में लिप्त है, संसार समुद्र में डूब रहे हैं, ऐसे पुरुषों के ॥३॥ उद्धार के लिये हे स्वामिन्! पुराण आदि शास्त्रों से निश्चित कोई उपाय बताइये जिससे वे मनुष्य सदगति को प्राप्त हो ॥४॥ श्री भगवान बोले हे गरुड़! तुमने मनुष्यों की भलाई के लिये बहुत ही उत्तम प्रश्न किया है।

अब सुनो मैं तुम्हें भलीभांति कहता हूं।५। जिसप्रकार की दुर्गति मैंने कही हैं वे तो पुत्र हीन पापी मनुष्यों की। जो

अब सुनो मैं तुम्हें भलीभांति कहता हूं ।५। जिसप्रकार की दुर्गति मैंने कही है वे तो पुत्र हीन पापी मनुष्यों की । जो पुत्रवान धर्मात्मा पुरुष हैं वे कभी भी इन दुर्गतियों में नहीं पड़ते ॥६॥ हां यदि कर्मानुसार घरमें पुत्र नहीं हुआ तो पहिले वह किसी न किसी प्रकार से पुत्र प्राप्ति का उपाय करे ॥७॥ घरमें श्रद्धा पूर्वक हरिवंश पुराण श्रवण करे, और साथ में शतचण्डी का पाठ भी हो, एवं श्री शिव शंकर की आराधना भी करे, इन्हीं उपायों से बुद्धिमान पुत्र प्राप्त करे ।८। पुत्र कोई साधारण

श्रीभगवानुवाच ॥ साधुपृष्टंत्वयाताक्ष्यमनुष्याणांहितायवै ॥शृणुश्वावहितोभूत्वा सर्वंतेकथयाम्यहम् ।५। दुर्गतिः कथितापूर्वमपुत्राणांचपापिनाम् ॥ पुत्रिणाधार्मिकाणातुनकदाचित्खगेश्वर ।६।पुत्रजन्मावरोधः स्याद्यदिकेनापि कर्मणा ॥ तदाकेनाप्युपायेनपुत्रोत्पत्तिंप्रसाधयेत् ॥७॥हरिवंशकथांश्रुत्वा शतचंडीविधानतः ॥ भक्त्या श्री शिवमाराध्यपुत्र मुत्पादयेत्सुधीः ॥८॥ पुन्नाम्नोनरकाद्यस्मात्पितरंत्रायतेसुतः ॥ तस्मा त्पुत्रइतिप्रोक्तः स्वयमेवस्वयंभुवा ॥९॥ ऐकोपिपुत्रोधर्मात्मासर्वंतारयते कुलम्। पुत्रेणलोकांजयते श्रुतिरेषासनातनी ॥१०॥ इतिवेदैरपिप्रोक्तं पुत्रमहात्म्यमुत्तमम् ॥ तस्मात्पुत्रमुखंदृष्ट्वामुच्यतेपैतृका-

वस्तु नहीं इसका अर्थ करते हुए साक्षात् ब्रह्मा कहते हैं कि जो पुनामी नरक से पिता की रक्षा करे एवं वैतरणी आदिनरकों से उद्धार करे उसे पुत्र कहते हैं ऐसे पुत्र से पिता नरकमें नहीं जाते ॥९॥ एक भी यदि धर्मात्मा पुत्र होजाय तो सारे कुल का उद्धार होता है। पुत्र के द्वारा स्वर्ग आदि लोक जीत लेता है । यह अनादि काल की श्रुति है ॥१०॥ पुत्रमुख को देखकर

पितृ सम्बन्धी ऋण से मुक्त होजाता है। इसी प्रकार वेदादि शास्त्रों ने पुत्र का महात्म्य वर्णन किया है ।।११।
जन्म तो और भी उत्तम है इससे देव, पितृ एवं मनुष्य इन तीनों को ऋणों से मुक्ति होजाती है फिर यमलोक को उल्लंघनकर
अपने पुत्र प्रपौत्र द्वारा सीधा स्वर्ग को जाता है ।१२। जिस स्त्री पुरुषों, का विवाह अपने वर्ण में वेदोक्त विधि पूर्वक
होता है ऐसी पत्नियों का नाम शास्त्र ब्राह्मोढाकहते हैं, इन्हीं के द्वाराउत्पन्न पुत्र स्वर्ग में पहुँचाते हैं और रखेलीस्त्री से पैदा

हणात् ।। ११ ।। पौत्रस्यस्पर्शनान्मर्त्योमुच्यतेचऋणत्रयात् ।। लोकानत्येतिदिवः प्राप्तिःप्रपौत्रप्रपौत्रकैः
।।१२।। ब्राह्मोढ़ापुत्रोनयतिसंग्रहीतस्त्वधोनयेत् ।। एवंज्ञात्वा खगश्रेष्ठहीनजातिसुतांस्त्यजेत् ।।१३।।सव-
र्णेभ्यः सवर्णासुयेपुत्रा और साःखग ।। तएव श्राद्धदानेन पितॄणां स्वर्गहेतवः ।।१४।।श्राद्धेनपुत्रदत्तेनर-
वर्तातोतिकिमुच्यते ।। प्रेतोपिपरदत्तेनगतःस्वर्गमथोशृणु ।। १५।। अत्रैवोदाहरिष्येहमितिहासंपुरातनम्।

हुए पुत्र तो नीचे नरकों में गिरादेते हैं इसी कारण हे गरुड़ ! हीन जाति स्त्रीसे उत्पन्नपुत्र श्राद्धादि कार्यों में त्याज्य हैं ।१३।
सवर्ण स्त्री के साथ वेदोक्त विवाह करना उत्तम है, इसी स्त्री से उत्पन्न पुत्र श्राद्धदान आदि से पितरों को स्वर्ग में पहुँचातेहैं।
१४। पितर तो पुत्रों द्वारा किये गये श्राद्ध विधानों से स्वर्ग में जाते हैं इसमें आश्चर्य करने की कोई बात ही नहीं यदिसवर्णस्त्री
से उत्पन्न कोई भी पिण्ड आदि देता है तो उसका भी उद्धारहो जाता है। हे गरुड़ ! यहाँ मैं तुम्हें एक आख्यान भीसुनाताहूँ।१।

यह एक प्राचीन इतिहास है जिस में और्ध्वदैहिक क्रिया का महात्म्य सूचित होता है ।१६। त्रेता युग में महाबलवान धर्मात्मा बभ्रु वाहननामका एक राजा हुआ है । वह महोदयपुरका राजा था ।१७। बड़ा सुशील आचार दया दाक्षिण्यादि गुणों से संयुक्त साधु सज्जनों का सत्कार करने वालायज्ञ दान आदि द्वारा ब्राह्मणों को पूजने वाला था १८। प्रजा को पुत्रवत् पालने वाला, क्षत्री धर्म परायण गुणी एवं परम नीतिज्ञथा ।१९। वह एक समय अपनी सेनाको साथलेकर शिकार

और्ध्वदेहिकदानस्यपरमहात्म्यसूचकम् ॥१६॥ पुरात्रेतायुगेतार्क्ष्यराजासीद्बभ्रु वाहनः । महोदयेपुरेरम्ये-धर्मनिष्ठोमहाबलः ॥१७॥ यज्वादानपतिः श्रीमान्ब्रह्मण्यः साधुवत्सलः ॥ शीलाचारगुणोपेतोदयादाक्षिण्यसंयुतः ॥१८॥ पालयामासधर्मेणप्राजाः पुत्रानिवौरसान् । क्षत्रधर्मतोनित्य सदण्ड्यान्दंडयन्नृपः ।१९। सकदाचिन्महाबाहुः ससैन्योमृगयांगतः ॥ वनं विवेशगहनं नानावृक्षसमन्वितम् ।२०॥ नाना मृगगण कीर्णं नानापक्षिनिनादितम् ॥ वनमध्ये तदाराजामृगंदूरादपश्यत ॥२१॥तेनविद्धोमृगोतीव्र-बाणेनसुदृढेनच॥बाणमादायतं तस्यगानेऽदर्शनमेयिवान् ॥२२॥ कक्षैर्वारुधिरार्द्रैश्चसराजानुजगामतम् ॥

खेलनेके लिये घने वन में पहुँचा ।२०। उसवन में मृगगण विचरण कररहे थे । पक्षिवृन्द सुन्दर मधुर कलकूजन से वन की शोभा बढ़ारहे थे । तब दूरसे ही राजा ने एक मृग को देख कर ।२१। उसीका ही लक्ष्य कर राजा ने बाण छोड़ा मृग विधतो गया, किंतु मरा नहीं । बाण को भी साथ ले वह मृग वहां से भागकर कहीं छुप गया ।२२। मृग के रुधिर के छींटे

कहीं २ दिखाई दे रहे थे, राजाने उन्हीं का अनुसरण कर घोड़ा दौड़ाया भागते २ किसी दूसरे बनमें प्रवेश किया ।२३।घोड़ा दौड़ाते २ राजा थक गया था भूख और प्यास से परेशान था तब दूरसे एक तालाब देखा । वहां पहुँते ही घोड़े के साथ उस तालाब में कूद पड़ा ।२४। सरोवर में कमल खिलरहेथे उनकी सुगन्ध चारों ओर फैलरही थी । बड़ा स्वादु शीतलजल था । राजाने रुचि पूर्वक जल पिया, थकान जातीरही । तब घोड़े के साथ राजा बाहर आया ।।२५।। राजा ने सामने एक अत्यत

ततोमृगप्रसगेनवनमन्यद्विवेशसः ।२३। क्षुत्क्षामकंठोनृपतिःश्रमसंतापमूर्छितः ।। जलाशयंसमासद्य साश्वएवव्यगाहत ।।२४।। पपौतदुदकंशीतं पद्मगंधादिवासितम् ।। ततोवतीर्यसलिलाद्विश्रमो वभ्रुवाहनः ।२५। ददर्शन्यग्रोधतरूं शीतच्छायं मनोहरम् । महाविटपविस्तीर्णपक्षि संघनिनादितम् ।। २६ ।। बनस्यतस्यसर्वस्यमहाकेतुमिवस्थितम् । मूलंतस्यसमासाद्यनिषसादमहीपतिः ।२७।अथप्रेतंददर्शासौक्षुतृड्भ्याव्याकुलेन्द्रियम् । उत्कचंमलिनंकुब्जंनिर्मांसंभीमदर्शनत् ।।२८।। तंदृष्ट्वाविकृतं घोरंविस्मितोवभ्रु

मनोहर शीतल छायावाला, बड़ीर डालियोंसे अत्यन्त विस्तृत एकवट वृक्ष देखा । जिसपर पक्षीगण गुंजन कररहे थे ।२६। वह वृक्ष उस बनकी ध्वजा था । वहां पहुँच कर राजा आराम से बैठगया ।।२७।। थोड़ी देर के बाद राजाने वहां एक प्रेत देखा, वह अत्यन्त भयानक रूपथा । ऊँचे उठे हुए सिरके बालों वाला मलिन एवं कुचील कुबड़ा मांस रहित था । भूखप्यास से जिसकी इन्द्रयां अत्यन्त व्याकुल थीं ।।२८।। इस प्रकार भयानक प्रेत को देखकर राजा आश्चर्य में पड़गया । और वह प्रेतउसघोर

वन में राजा को देखकर।२६। प्रसन्न चित्त होकर राजा के पास पहुँचा तब हे पक्षिराज ! वह प्रेत बोला।३०।हे राजन् ! मैं आपके दर्शन से प्रेत योनि से मुक्तहुआ हूँ । इसी कारण महाबाहो ! मैं अतीव धन्य हूँ ।३१। राजाबोलाकि हे प्रेत ! कौन से पाप कर्म से इस अमङ्गल भयानक दर्शन, प्रेत रूप को तूने प्राप्त किया है ॥३२ हे ! प्रेत होने का कारण मुझे सुना।

वाहनः । प्रेतोपिदृष्ट्वातं घोरामटवीमागतंनृपम् ।२६। समुत्सुकमनोभूत्वातस्यांतिकमुपागतः ॥ अब्रवीत्सतदा तार्क्ष्यप्रेतराजोनृपंवचः ॥३०॥ प्रेतभावोमयात्यक्तः प्राप्तोस्मि परमांगतिम् । त्वत्संयोगान्महाबाहोजातोधन्यतरोस्म्यहम् ॥३१॥ राजोवाच । कृष्णवर्णकरालास्य प्रेतत्वंघोरदर्शनम् । केनकर्मविपाकेनप्राप्तं ते बह्वमंगलम् ॥३२॥ प्रेतत्वकारणं तातब्रूहि सर्वमशेषतः कोसि वं केनदानेन प्रेतत्वंते विनश्यति ।३३। प्रेत उवाच ॥ कथयामिनृपश्रेष्ठ सर्वमेवादितस्तव ॥ प्रेतत्व कारणंश्रुत्वा दयांकर्तु त्वमर्हसि।३४। वैदशंनामनगरं सर्वसंपत्समन्वितम्। नानाजनपदाकीर्णं नानारत्नसमाकुलम् ॥३५॥

और यह भी कह कि तू कौन है ? किस दानसे तेरा यह प्रेतत्व नष्ट होगा ॥३३। प्रेतबोला-हे राजन ! मैं अपनी प्रेत योनि का कारण सुनाता हूं आप अत्यन्त दयालु हैं सुनिये।३४। इसी आर्यावर्तमें धन दौलत से भरपूर नाना-प्रकार के रत्नों के व्यौपार का केन्द्र एवं लक्ष्मी का निवास, वैदश नाम का बड़ा भारी नगर है ॥३५। राज भवन देव मन्दिर एवं ऊँचे २

महल अटटालिकाओं से महल शोभाय मान हैं। धर्मका वहां निवास है तैसे धार्मिक नगर में मेरा घर था और वहां सर्वदा देवार्चनमें लगा रहता ।३६। सुदेव नाम करके प्रसिद्ध मैं वैश्य वर्ण था। हव्य काव्य पदार्थों से देवता तथा पितरों को मैं तृप्त करता था ॥३७॥ अनेकों प्रकारके दानों द्वारा मैंने ब्राह्मणों कोभी तृप्तकिया था। दीन, अन्ध,पंगु, कृपण आदिमनुष्यों

हर्म्यप्रासादशोभाढ्यं नानाधर्मसमन्वितम् ॥ तत्राहंन्यवसंस्तात देवार्चनरतःसदा ॥३६॥ वैश्योजात्या सदेवोहंनाम्ना विदितअस्तुतेः ॥ हव्येनतर्पितादेवाः कव्येनपितरस्तथा ॥ ३६ ॥ विविधैर्दानयोगैश्चविप्राः संतर्पितामया ॥ दीनाँधकृपेणभ्यश्च दत्तमन्नमनेकधा ॥ ३७ ॥ तत्सर्वंनिष्फलंराजन्ममदैवा दुपागतम् यथामेनिष्फलंजातसुकृतंतद्वदामिते ॥३६॥ ममेवसंततिर्नास्तिनसुहृन्नचबांधवः । नचमित्रं हमेयादृक्यः कुर्यादौर्ध्वदेहिकम् ।४०। यस्यनस्यान्महाश्राद्धं मासिकषोडशम् ॥ प्रेतत्वंसुस्थिरं तस्यदत्तैःश्राद्धशतैरपि

कोभी अन्न देता था ॥३८॥ यह सब मेरे सुकृत कर्म हे राजन्! दैवयोग से निष्फल हो गये हैं। इसका कारणसुनिये ॥ ३६ ॥ सब कुछ होते हुए भी घरमें सन्तान नहीं थी न कोई मित्रथा न बन्धु जो और्ध्वदैहिक क्रिया मरे पीछे करे ।४०। हे महाराज मृत्यु के अनन्तर १२ दिनों तक प्रेत क्रिया तेरहीं तथा धर्मशांति श्राद्ध आदि जिनके नहीं होते। अनन्तर सैकड़ों श्राद्ध करने

परभी उनका कुछ नहीं होता। उसका प्रेत होजाना निश्चितही है ॥४१॥ अब कृपा करके महाराज! मेरी और्ध्वदैहिक क्रिया आपही करे तब मेरा उद्धारहोगा। आप राजा हैं। सारे वर्णोंका राजा बन्धु है।४२। हे राजेन्द्र! मैं आपको मणिदेता हूं। इसीके द्वारा मेरी और्ध्व दैहिकक्रिया करके मेरा उद्धार करें जिससे मेरी प्रेत योनि छूटे सद्गति प्राप्त हो।४३। यदि आप मेरा प्रिय करना चाहते हैं तो यही करें ॥४४। भूख प्यास के संकटसे छुडायें। यह योनि मेरे लिये असह्य है।४४।

।४१। त्वमौर्ध्वदैहिकंकृत्वामामुद्धरमहीपते । वर्णानांचसर्वेषां राजाबंधुरिहोच्यते । ४२। मांत्वं-तारयराजेन्द्रमणिरत्नं ददामि ते । यथामेसद्गतिर्भूयात्प्रेतयोनिश्च गच्छति ॥४३॥ यथाकार्यंत्वयावीर-ममचेदिच्छसिप्रियम् ॥ क्षुधातृषादिभिर्दुःखैः प्रेतत्वं दुसहमम । ४४ । स्वादूदकंफलंचास्तिवनेस्मिन् शीतलंशिवम् नप्राप्नोमिक्षुधार्तोऽहंतृषार्तोनजलंक्वचित् ।४५। यदिमेहिभवेद्राजन्विधिर्नारायणेमहान् तदग्रेवेदमन्त्रैश्चक्रियासर्वौर्ध्वदेहिकी । ४६ । तदानश्यतिमेनूनं प्रेतत्वंनात्रसंशयः ॥ वेदमंत्रास्तपोदा।

देखिये! इस वनमें कैसा शीतल एवं स्वादुसुखकारक जल है और अनेकों मधुर फल भी विद्यमानहैं। किन्तु भाग्य हीनमुझ भूखे प्यासे को प्राप्त नहीं होसकते।४५। यदि आप मेरे लिये नारायण बलि करें अन्तर वेद मंत्रों से और्ध्वदैहिकक्रिया करें तो मेराकल्याणहै। ४६। तभी मेरी निश्चियसे प्रेत योनिछूटेगी, इसमें संशय नहीं। क्योंकि वेद मन्त्र, तप दान, सब

प्राणियों में दयाभाव ।।४७।। श्रेष्ठ शास्त्रों का श्रवण, विष्णु भगवान का पूजन, सज्जन पुरुषों की संगति, ये सब प्रेत योनि के विनाश का कारण है ऐसा मैंने सुना है ।।४८।। विष्णु पूजा ही प्रेत योनि से मुक्ति कराती है। मैं अब विष्णु पूजा [नारायण बलि] का विधान कहता हूं। ५ गुँजाहो तो १ माशाहोता है इसी प्रकार १६ माशा हो तो १ सुवर्णहोता है इसी सुवर्ण को दुगना कियाजायतो ३२ माशा हुए इतना वजनसोनान्याय संचित हो उससे नारायण की मूर्ति बनवाये ।।४९।।

न दयासर्वत्रजंतुषु ।४७। सच्छास्त्रश्रवणंविष्णोः पूजासज्जनसंगितः। प्रेतयोनिविनाशाय भवंतीति-मयाश्रुतम् ।४८। अतोवक्ष्यामिते विष्णुपूजां प्रेतत्वनाशिनीम्।। सुवर्णद्वयमानीयसुवर्णं न्यायसंचितम् तस्यनारायणस्यैकां प्रतिमाँभूयकल्पयेत् ।।४९।। पीतवस्त्रयुगच्छन्नांसर्वाभरणभूषिताम् ।।स्नापितांविवि-धैस्तोयैरधिवास्ययजेत्ततः ।५०। पूर्वेतुश्रीधरंन्यस्येद्दक्षिणेमधुसूदनम्। पश्चिमेवामनं देवमुत्तरेचगदाधरम् ।५१। मध्येपितामहंचैवतथादेवंमहेश्वरम्। पूजयेच्चविधानेनगंधपुष्पादिभिः पृथक् ।५२। ततः

उस मूर्ति को पीताम्बर पहिना कर दूसरा पीत वस्त्र ओढ़ावे। फिर आभूषणों से भूषितकरे तीर्थों के जलसे पुरुषसूक्त आदि मन्त्रों तथा नारायणस्तोत्रों से अभिषेक करावे उसके अनन्तर सिंहासन पर पधार कर षोडशोपचार पूजन करे ।५०। नारायण प्रतिमाके पूर्व दिशा में श्रीधर का, दक्षिणमें मधुसूदन का, पश्चिम में वामनदेवका, उत्तर में गदाधरभगवान का पूजन करे ।५१। मध्य में ब्रह्मा तथा (शिव) की गंध पुष्प आदि से पृथक २ पूजा करे ।।५२।। अनन्तर सब की प्रदक्षिणा करे। फिर हवन कर

के देवताओं की तृप्त करे। इसके अनन्तर घृत दधि, एवं दूध से विश्वेदेवा देवताओं का तर्पण करे ॥५३॥ उसके अनन्तर यजमान स्नान करे बड़ी नम्रता से एकाग्र चित्त हो भगवाननरायण के आगे और्ध्व देहिक क्रिया आरम्भ करे।॥५४॥ मन में क्रोध लोभ न हो विधिपूर्वक क्रिया आरम्भ करे तब श्राद्ध पूर्ण करे और वैसे ही वृषोत्सर्ग कर्मकरे ।५५। तदन्तर १३ पद का दान दे एवं शय्यादान दे फिर प्रेत के लिए घट का भी दान दे ॥५६॥ राजा बोला हे प्रेत ! प्रेत घट किस

प्रदक्षिणांकृत्वा वह्निसंतर्प्यदेवताः ॥ घृतेनदध्ना क्षीरेणविश्वेदेवांश्चतर्पयेत् ॥५३॥ ततःस्नातोविनीतात्मा-यजमानः समाहितः ॥ नारायणाग्रेविधिवत्स्वांक्रियामौर्ध्वदेहिकीम् ॥५४॥ आरभेत्यथाशास्त्रं क्रोधलोभविवर्जितः ॥ कुर्याच्छ्राद्धानि सर्वाणिवृषस्योत्सर्जनं तथा ॥५५॥ ततः पदानि विप्रेभ्योदद्याच्चैवत्रयोदश। शय्यादानं प्रदत्वाचघटंप्रेतस्यनिर्वपेत् ॥ ५६ ॥ राजोवाच ॥ कथंप्रेतघटंकुर्याद्दद्यात्केनविधानतः। ब्रूहिसर्वानुकंपार्थंघटंप्रेतविमुक्तिदम् ॥५७॥ प्रेतोवाच ॥ साधुपृष्टंमहाराजकथयामिनिबोधते ॥ प्रेतत्वंनभवेद्येनदानेनसुदृढ़ेनच।५८। दानंप्रेतघटंनामसर्वाशुभ विनाशनम्। दुर्लभं सर्वलोकानां दुर्गति

प्रकार दान करे। यही तो मुक्ति दिलाता है। इसकी पूरी विधि कहो ॥५७॥ प्रेत बोला–हे राजन् ! सुनिये जिस सुदृढ़ दान द्वारा प्रेतत्व का नाश हो जाता है उसे सुनाता हूँ ॥५८॥ यह प्रेत घट उत्तम दान है सब प्रकार के पाप दुर्गति आदिका

चयकारक है। यह सबसे होना कठिन है ॥५६॥ शुद्ध सोने का एक घड़ा दूध एवं घृत से पूर्ण करके उस पर वरुण यमकुवेर आदि लोकपाल तथा ब्रह्मा विष्णु, महादेव का नाम लिखे। फिर घड़े को प्रणाम करके ब्राह्मणको दानदे इसके देने पर फिर किसी प्रकार के दान की आवश्यकता नहीं।६०। घटके मध्यमें ब्रह्मा विष्णु की स्थापना करे उसके कण्ठ पर चारों दिशाओं

चयकारकम् ॥५६॥ संतप्तहाटकमयंतुघटंविधायब्रह्मेशकेशवयुतंसहलोकपालैः॥क्षीराज्यपूर्णविवरंप्रणिपत्य-भक्त्याविप्रायदेहितवदानशतैःकिमन्यैः।६०।ब्रह्मामध्ये तथाविष्णुःशंकरःशंकरोऽव्ययः॥प्राच्यादिषुचतत्कंठेलोकपालान्क्रमेणतु॥६१॥संपूज्य विधिवद्राजन्धूपैःकुसुमचंदनैः॥ ततोदुग्धाज्यसहितंघटंदेयंहिरण्मयम् ॥६२॥ सर्वदानाधिकं चैतन्महापातकनाशनम् । कर्त्तव्यंश्रद्धयाराजन्प्रेतत्वविनिवृत्तये।६३।श्रीभगवानुवाच ॥ एवंसंजल्पतस्तस्यप्रेतेनसहकाश्यप ॥ सैनाजगामानुपदंहस्त्यश्वरथसंकुला ॥६४॥ ततोबले-

में इन्द्र वरुड़ यमकुवेर चार लोकपाल स्थापित करे।६१। हे राजन्! तब धूप दीप चन्दन पुष्प नैवेद्यादि से पूजन कर वह स्वर्ण घट दूध घृत में परिपूर्ण दान करे।६२। बड़े २ ब्रह्म इत्यादि पापों के नाश करने वाला है। यह उत्तम दान है प्रेतत्व की निवृत्ति के लिये श्रद्धा पूर्वक इसका दान अवश्य करना। ६३। श्रीभगवान बोले हे गरुड़! इसी प्रकार राजा एवं प्रेत की बात चीत हो रही थीं कि इतने में हस्ति अश्व रथ आदि राजाकी चतुरंगिनी सेना भी वहाँ आगई।६२। तब प्रेत ने राजा को

महा मणि देवी और श्राद्ध आदि के विधान की प्रार्थना एवं नमस्कार कर के वह प्रेत अदृश्य हो गया ॥६५॥ हे गरुड़ ! वह राजा भी अपने पुरको चल पड़ा। पहुँचकर तब प्रेत के कहे हुये वचनों को ॥६६॥ हे गरुड़ पूर्ण किया। तब और्ध्व दैहिक क्रिया आदि के विधान से एवं पुण्य प्रताप से वह मुक्त हो कर स्वर्ग लोक में गया ॥६७॥ भगवान बोले देखो

समायातेदत्वाराज्ञेमहामणिम ॥ नमस्कृत्यपुनः प्रार्थ्यप्रेतोऽदर्शनमेयिवान् ॥६५॥ तस्माद्वनाद्विनिष्क्रम्यराजापिस्वपुरंययौयतःस्वपुरंसमासाद्यतत्सर्वं प्रेतभाषिम॥६६ ।चकारविधिवत्पक्षिन्नौर्ध्वदेहिकजंविधिम । तस्यपुण्यप्रदानेनप्रेतोमुक्तोदिवंययौ । ६७ । श्राद्धेनपरदत्तेनगतःप्रेतोपिसद्गतिम । किंपुनःपुत्रदत्तेन पितायातीतिचाद्भुतम।६८। इतिहासमिमंपुण्यंशृणोतिश्रावयेच्चयः।नतौप्रेतत्वमायातःपापाचारयुतावपि । ६९ । इति श्री गरुड़पुराणे सारोद्धारे बभ्रुबाहनप्रेतसंस्कारोनाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

एक प्रेतने दूसरे के हाथ द्वारा किये गये श्राद्ध से सदगति पाई । पुत्र द्वारा किये गये श्राद्ध से पिता फिर क्यों न सदगति कोप्राप्त हो ॥६८॥ और जो इस पुण्य इतिहास को सुनता एवं सुनाता है ये दोनों पापाचारी भी हों किन्तु प्रेत योनि नहीं पाते ॥६९॥ इति श्री गरुड़ पुराणे सारोद्धारे शास्त्रिहरिश्चन्द्र कृतायांसरलाटीकायां बभ्रु बाहन प्रेत संस्कारो नाम सप्तमोऽध्यायः।७

यह श्रवणकर गरुड़ बोलाकि हे प्रभो ! पुण्यात्माकीअन्त समयकी सबक्रियाएँ एवं अन्त कालिक दानादि पुत्र कर्तव्य पूरे विधानके साथ मुझे सुनाइये ॥१॥ श्रीभगवान बोले तुमने उत्तम प्रश्न किया । यह मनुष्यों का हितकर प्रश्न हैअबसुनअन्त समय का कर्तव्य में कहता हूं ॥२॥ पुरुष जब वृद्ध हो फिर देखै कि शरीर का कोई रोग भी लगा है, एवं घर के

गरुड़ उवाच ॥ आमुष्मिकीं क्रिया सर्वांवदसुकृतिनांमम ॥ कर्तव्यासायथापुत्रैस्तथाचकथयप्रभो ॥१॥ भगवानुवाच साधुपृष्टंत्वयातार्क्ष्यमानुषाणांहितायवै ॥ धार्मिकाहं चयत्कृत्यंतत्सर्वंकथयामिते ।२। सुकृतीवार्धकेदृष्ट्वाशरीरंव्याधिसंयुतम्॥प्रतिकूलान्गृहांश्चैवप्राणघोषस्यच श्रुतिम् ॥३॥तदास्वमरणंज्ञात्वा निर्भयं स्यादतंद्रितः ॥ अज्ञातज्ञातपानां प्रायश्चितं समाचरेत् ॥ ४ ॥ यदास्यादातुरःकालस्तदास्नानंसमारभेत् ॥ पूजनं कारयेद्विष्णोःशालिग्रामस्वरूपिणः। ५॥अर्चयेद्गंधपुष्पैश्चकुंकुमैस्तुलसीदलैः॥॥

स्त्री पुत्रआदि सबके सब मनमानी करते हैं कोई भी आज्ञा नहीं पालता कानों में अंगुली देने से भीतरका प्राण घोष शब्द भी सुनने में नहीं आता तब वह समझले कि अब मेरी छः महीनों में मृत्य होगी ।।३।। इस प्रकार अपनी मृत्यु समझ कर निर्भय हो रहे फिर वे समझे पापों का प्रायश्चित्त करे ।४। इस प्रकार करते २ जब अन्त समय निकट हो तो स्नान करके श्री शालिग्राम विष्णु का पूजनकरे ।५। चन्दनतिलक गन्ध, पुष्प, कुंकुम, तुलसीदल, धूप,दीप नैवेद्य एवं मिष्ठान्नादि

बहुत से मोदकों द्वारापूजन करे ।।६। ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर उन्हें भोजनकरावे । और आप आचमन...

बहुत से मोदकों द्वारापूजन करे ॥६। ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर उन्हें भोजनकरावे । और आप अष्ठाक्षर मन्त्र तथा द्वादशाक्षर मन्त्र (ओ३म् नमो भगवते वासुदेवाय) इनका जप करे ।७। विष्णु एवं शिवके नाम आप भी स्मरण करे औरोंसे भी सुने । कानों में पड़ा हुआ हरि का नाम पापों को हर लेता है ।८। मृत्यु गामी के पास बान्धवों को शोक करना तथा रोना नहीं चाहिये । श्री भगवान कहते हैं कि मेरे पवित्र नामों का बार २ स्मरण करावें तथा भगवान स्वरूप का ध्यानकरावें ।६।

धूपैर्दीपैश्चनैवेद्यैर्बहुभिर्मोदकादिभिः॥६। दत्वाचदक्षिणांविप्रान्नैवेद्यादेवभोजयेत्।अष्टाक्षरंजपेन्मंत्रंद्वादशाक्षरमेवच ।७। संस्मरेच्छृणुयाच्चैवविष्णोर्नामशिवस्यच । हरेर्नामहरेत्पापंनृणांश्रवणगोचरम् ॥८॥ रोगिणोंतिकमासाद्यशोचनीयोनबांधवैः । स्मरणीयपवित्रंमेनामधेयंचमुहुर्मुहुः ॥६। मत्स्यः कूर्मोवराहश्चनारसिंहवामनः रामोरामश्चकृष्णश्चबुद्धः कल्कीतथैवच ॥ १० ॥ एतानिदशनामानि कर्तव्यानिसदाबुधैः ॥ समीपेरोगिणांब्रूयुर्बांधवास्तेप्रकीर्तिताः ॥ ११ ॥ कृष्णेतिमंगलनामयस्यवाचि

भगवान के अवतारों के नाम जैसे मत्स्य, नृसिंह, वामन, परशराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्की ।१०। यह भगवान के दश नाम बन्धु अन्तिम समय वाले को बार २ सुनायें वस सच्चे बन्धु हैं ॥११॥ श्रीकृष्ण, यह नाम जिसकी वाणी पर

है-उसके करोड़ों ब्रह्महत्यादि महापाप शीघ्र ही जलकर भस्म हो जाते हैं। १२। देखिये मरते समय पुत्र नाम नारायण पुकारने वाले अजामिल जैसे पापी का उद्धार होगया, और जो श्रद्धा से भगवान का नाम ग्रहण करें उनके उद्धार में क्या सन्देह है ॥१३॥ पापी यदि भूल से भी हरि का नाम लें तो उसके भी पाप नष्ट होते हैं जैसे कोई अग्नि को भूलकर स्पर्श

प्रवर्तते। तस्यभस्मीभवंत्याशुमहापातककोटयः ॥१२॥ म्रियमाणोहरेर्नामगृणन्पुत्रोपचारितम्। अजामिलोप्यनाद्धामकिंपुनःश्रद्धायागृणन् ।१३। हरिर्हरतिपापानि दुष्टचित्तैरपिस्मृतः॥ अनिच्छयापिसंस्पृष्टोदहत्येवहिपावकः ॥१४॥ हरेर्नाम्नश्चताशक्तःपापनिर्हरणेद्विज ॥ तावत्कर्तुंसमर्थोनपातकंपातकीजन!।१५। किंकरेभ्योयमः प्राहानयध्वंनास्तिकं जनम्। नैवानयतभोदूताहरिनामस्मरन्नरम्।१६। अच्युतं केशवं राम नारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवंहरिम्॥ श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकी

करता है तो उसे अग्नि जला देती है। उसी प्रकार भगवान के नाम द्वारा समस्त पाप भस्म होजाते हैं। १४। उतनी पाप करने की शक्ति नहीं जितनी कि भगवन्नाम में है भला वह कहांतक पाप करता रहेगा। एकबार भगवन्नामसे सबपापनष्ट होते हैं हे गरुड़! ॥१५॥ यम ने भी अपने दूतों को यह कह रक्खा है कि मेरे पास ऐसे नास्तिक पापियों को लाया करो ऐसे पुरुष को मत लाओ जिसने हरि नाम स्मरण किया हो ॥१६॥ स्मरण करने के लिये नाम—अच्युत, केशव राम नरायण

कृष्ण, दामोदर, वासुदेव, श्री हरि, श्रीधर, माधव, गोपी, वल्लभ, सीता पति आदि हैं ।१७। यह कहते हैं कि जो पुरुष इननामों का स्मरण करते, हैं जैसे कि हे कमल नयन ! वासुदेव, विष्णो धरनी धर अच्युत, इस प्रकारसे पुकार ने वालेपाप रहितपुरुषों को मेरे पास मत लाया करो ॥१८॥ दूतो मेरे यहां तो भगवच्चरणारविंद विमुख असत संसार की तृष्णावाले भगवन्नामन

न यकं रामचन्द्र भजे ॥१७॥ कमलनयनवासुदेवविष्णोधरणिधराच्युतशंखचक्रपाणे ॥ भवशरणमितीरयंतियेवैत्यजभटदूरतरेणतानपापान् ॥१८॥ तानानयध्वमसतोविमुखान्मुकुन्दपादारविन्दमकरंदरसादजस्रम् ॥ निष्किंचनैः परमहंसकुलैरसङ्गैर्जुष्टाद् गृहेनिरयवर्त्मनिबद्धतृष्णान् ॥१९॥ जिव्हानवक्तिभगवद्गुणनामधेयं चेतश्चनस्मरतितच्चरणारविंदम् ॥ कृष्णायनोनमतियच्छिरएकदापितानानयध्वमसतोकृतविष्णुकृत्यान् ॥२०॥ तस्मासंकीर्तनं विष्णोर्जगन्मंगलमंहसाम् ॥ महतामपिपक्षीन्द्रवद्ध्यैकतांक निष्कृतिमि

लेने वाले पापी पुरुषों को लाया करो ॥१९॥ और जिनकी जिव्हा नाम नहीं उच्चारण करती जिनके चित्त में नामका कभी स्मरण नहीं हुआ । और जिनका सिर एक बार भी भगवान के चरण कमलों में नहीं झुका ऐसे पापियों को यमलोक में लाया करो ॥२०॥ इस प्रकार के यमराज के वचन सुनकर श्री भगवान गरुड़ के प्रति कहते हैं कि हे गरुड़ ! ब्रह्म हत्यादिक

बड़े २ पापों के विध्वंस करने वाला यही नाम संकीर्तन उत्तम प्रायश्चित है ॥२१॥ हे पक्षिराज ! हरि विमुख पापियों के लिए और सब प्रायश्चित उसका उद्धार नहीं कर सकते मद्य से भरे हुए घड़े को गङ्गा आदि नदियां कभी पवित्र नहीं करती ।२२। नाम के उच्चारण करने वाले पुरुषों के सब पाप नष्ट हो जाते हैं वे तो स्वप्न में भी नरक यम एवं यमदूतों को देखते

।२१। प्रायश्चित्तानिजीर्णानिनारायणपराङ्मुखम् । ननिष्पुनंतिदुर्बुद्धिंसुराकुंभपिवापगाः । २२ । कृष्णनाम्नाननरकंपश्यंतिगतकिल्बिषाः । यमश्चतद्भटाश्चैवस्वप्नेपिनकदाचन । २३ । मांसास्थिरक्तवत्कायोवैतरिण्यांपतेन्नरः। योऽतेदद्यात्द्विजेभ्यश्चनं दनं दनगामिति ।२४।अतः स्मरेन्महाविष्णोर्नामपापौघनाशनम् ॥ गीतासहस्रनामानिपठेद्वाशृणुयादपि । २५ । एकादशीव्रतंगीतांगंगांबुतुलसीदलम् । विष्णोः पादांबुनामानिमरणेमुक्तिदानिच ।२६। ततः संकल्पयेदन्नं सघृतंचसकांचनम् । सवत्साधेनवो-

नहीं ।२३। और जिन्होंने अंत समय ब्राह्मणों को गौदान की एवं ब्राह्मणों की वाणी से लिए गये श्री कृष्ण का नामही सुन पाया ऐसे पुरुष मांस अस्थि रक्त से पूर्ण वैतरणी नदी में नहीं पड़ते अर्थात् कर्म भोग रूप शरीर में आते ही नहीं ॥२४॥ अतएव पापों को नाश करने वाले विष्णु के नाम का स्मरण करना उत्तम है । श्री विष्णु सहस्रनाम का एवं श्री गीता जी का पाठ करना चाहिए, अथवा सुनना चाहिए ॥२५॥ मरणकाल में एकादशी श्री गीताजी, श्रीगङ्गाजी, तुलसी दल, श्री विष्णु भगवान के चरणात इत्यादि के नाम भी मुक्ति देने वाले हैं ॥२६॥ इस प्रकार नाम का महात्म्य कह कर अब दान का

कहते हैं वह मृत्यु को प्राप्त होने वाला पुरुष वेद पुराण शास्त्र आदि वक्ता ब्राह्मण को घृतके सहित अन्नका संकल्प करे और स्वर्ण दक्षिणा देवे फिर उसी वेदपाठी श्रोत्रिय ब्राह्मण को सवत्सा गौदान करे ।२७। हे पक्षिराज ! अन्तकाल में जो कुछ भी अपने हाथों दान करते हैं, अथवा मरणासन्न माता पिताके हाथ से पुत्रदान का संकल्पकराकर पीछे देने का

देयाः श्रोत्रियायद्विजायते ॥२७॥ अंतेजनोयद्ददातिस्वल्पं वायदिबहु ॥ तदक्षयंभवेत्तार्क्ष्यंयत्पुत्रश्चानु-मोदते ॥२८॥ अंतकालेतुसत्पुत्रः सर्वदानानिदापयेत् ॥ यत्तदर्थंसुतालोकेप्रार्थ्यंतेधर्मकोविदैः । २९ । भूमिष्ठं पितरं दृष्ट्वा अर्धोन्मीलितलोचनम् । पुत्रैस्तृष्णा नकर्तव्यातद्धनेपूर्वसंचिते । ३० । सतद्दा-तिसत्पुत्रोयावज्जीवत्यसौचिरम् । अतिवाहस्तुतन्मार्गोदुःखंनलभतेयतः ।३१। आतुरेचोपरागेचद्वयंदा-

अनुमोदन करते हैं वह दान अनन्त गुणा अक्षय हो जाता है ॥२८। अन्त समय में पुत्र माता पिता से फल,फूल पुस्तक धन धान्य गौ दूध आदिका यथा शक्ति दान करावे । इसी लिए तो धर्मज्ञ इस लोक में पुत्र प्राप्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।२९ भूमि पर सुला दिये गये एवं आधेखुले नेत्रों वाले मरणासन्न पिताको देखकर पुत्रको पिता के कमाये हुए धन की तृष्णा नहीं करनी चाहिए यथेष्ठ दान करावे ॥३०॥ इसी प्रकार सत्पुत्र पिता की जीविता अवस्था में दान करता है वही अंतकाल का दान उसके पिता को परलोक सुख तूर्णक यममार्ग से पार कराता है ॥३१॥ अन्नदान, तथा सूर्य चन्द्र के

ग्रहणका दान ये दो प्रकार के दान विशेष हैं इसी कारण तिल आदि आठों वस्तुओं के दान अवश्य होने चाहिये ॥ ३२ ॥ आठ वस्तुओं के नाम-तिल, लोह, सोना, कपास नमक सप्तधान्य, भूमि, गौ ये एक २ करके आठों दान पवित्र करने वाले हैं ॥३३॥ अन्त समय में कराये गए ये आठों वस्तुओं के दान महापापों के नाश करने वाले अब इनका श्रेष्ठ फल सुनिये

न विशिष्यते ॥ अतोवश्यंप्रदातव्यमष्टदानं तिलादिकम् ॥३२॥ तिलालोहंहिरण्यं च कार्पासोलवणं तथा ॥ सप्तधान्यंक्षितिर्गावएकैकंपावनंस्मृतम् ॥३३॥ एतदष्टमहादानं महापातकनाशनम् ॥अन्तकाले प्रदातव्यं शृणुतास्यचसत्फलम् ॥३४॥ ममस्वेदसमुद्भूताः पवित्रास्त्रिविधास्तिलाः ॥ असुरादानवादैत्याः स्तृप्यंति तिलदानतः ॥३५॥ तिलाःश्वेतास्तथाकृष्णादानेनकपिलास्तिला ॥संहरंतित्रिधापापवाङ्मनः कायसंचितम् ॥३६॥ लोहदानं चदातव्यंभूमियुक्ते नपाणिना ॥ यमसीमांनचाप्नोतिनगच्छत्यस्यवर्त्मनि

॥३४॥ श्रीभगवान कहते हैं कि तीनों प्रकारके तिल मेरे पसीनेसे उत्पन्न हुये हैं । तिलोके दान से असुरदानव दैत्य तृप्त हो जाते हैं ।३५ सफेद काले पीत तीनों रंगों के तिल दान से शरीर मन वाणी द्वारा संचित तीनों प्रकारके पाप नष्ट हो जाते हैं ॥ ३६ ।। पृथ्वी पर हाथ रख कर लोहे के दान के प्रभाव से यमपुर की सीमा तथा यम लोक मार्ग को नहीं जाता

॥३७॥ हे गरुड़ ! पापियों को दण्ड देनेके लिये कुठार, मूसल, दण्ड, खड्ग एवं छुरिकाये यहसब शस्त्रयमके हाथमें रहतेहैं ॥३८॥ यम के इन आयुधों के सन्तोष के लिये लोह दान करना चाहिए ॥ ३९ ॥ और दान से ऊरण, शामसूत्र, शुण्डमार्क, उदुम्बर, शेषं बल महादन्त इन नामों वाले यमदूत भी प्रसन्न होते हैं ॥४०॥ हे गरुड़ ! एक उत्तम दान जो

॥३७। कुठारोमुसलोदंडः खड्गश्चछुरिकातथा ॥ शस्त्राणियमहस्तेचनिग्रहेपापकर्मणाम् ॥ ३८ ॥ यमायुधनांसतुष्टयै दानमेतदुदाहृतम् ॥ तस्माद्द्याल्लोहदानं यमलोकेसुखावहम् ॥३८॥ ऊरणःशामसूत्र-श्चशुंडामर्कोप्युं दुंबरः ॥ शेषंबलोमहादंतालोहदानात्सुखप्रदाः ॥४०॥ शृणुनार्द्यपरंगुह्यं दानांदान-मुत्तमम् ॥ दत्तेनतेनतुष्यंतिभूर्भुवः स्वर्गवासिनः ।४१। ब्रह्माद्याऋषयोदेवाधर्मराजसभासदाः ॥ स्वर्णदानेनसंतुष्टाभवंतिवरदायकाः ॥४२॥ तस्माद्देयंस्वर्णदानं प्रेतोद्धरणहेतवे ॥ नयातियमलोकंसस्वर्गंतितातगच्छति ॥४३॥ चिरंवसेत्सत्यकेलोतगोराजाभवेदिह॥रूपवान्धार्मिकोवाग्मीश्रीमानतुलविक्रमः

विशेष एवं परम गोपनीय है जिसके करने से पृथ्वी, पाताल, एवं स्वर्गके रहने वाले सभी सन्तुष्ट होते हैं । सो सुन ॥ ४१ ॥ ब्रह्मा से लेकर सभी देवता ऋषि एवं धर्मराज की सभा के सभासद् इसी दान से संतुष्ट होते । और वरदेते हैं । यह उत्तम दान स्वर्णदान है । ॥४२॥ प्रेतके उद्धार के लिये अवश्य ही स्वर्ण दान करना चाहिये जिससे वह स्वर्गलोक को प्राप्त होवे । ४३ ।

इसी स्वर्ण दान से चिरकाल तक वह सत्यलोक में रहता है। फिर पृथ्वी पर सुन्दर स्वरूप, धर्मात्मा चतुर, पराक्रमतेजस्वी, एवं राजा होता है ॥४४॥ कपासकेदान से यमदूतों से भय नहीं रहता। लवण दान से यम भय नहीं रहता ।४५। लोहा, लवण कपास, तिल एवं स्वर्ण दान से चित्र गुप्त आदि यमपुर निवासी सभी सन्तुष्ट हो जाते हैं ॥४६॥ सप्तधान्य के दान से धर्म

।४४।कार्पासस्यतुदानेनदूतेभ्योनभवेत् भयम्। लवणंदीयतेयच्चतेननैवभयंयमात्।४५।अयोलवणकार्पासतिलकांचनदानतः। चित्रगुप्तादयस्तुष्टायमस्यपुरवासिनः।४६। सप्तधान्यप्रदानेनप्रीतोधर्मध्वजोभवेत्॥ तुष्टाभवंतियेन्येपित्रिपुद्वारेष्वधिष्ठिताः।४७। व्रीहयोयवगोधूमा मुद्गमाषाप्रियंगवः चणकाः सप्तमाज्ञेयाः सप्तधान्यमुदाहृतम्।४८। गोचर्ममात्रं वसुधादत्तापात्रेविधानतः। पुनातिब्रह्महत्यायादृष्टमेत-मुनीश्वरः।४९। नव्रतेभ्योनतीर्थेभ्योनान्यद्दानाद्विनश्यति॥ राज्ञाकृतंमहापातं भूमदानादविली

राज एवं यमपुर के पूर्व पश्चिम उत्तरी तीनों द्वारके अधिष्टाता गण सभी प्रसन्न होते हैं ॥४७॥ चावल, जौ गेहूं मूंग उड़द, प्रियंगु, चना ये सप्त धान्य हैं ॥४८॥ भूमि दान की महिमा जितने भूमि खण्ड पर सवृषभ सौ गौएँ आराम सेवैठ सकें उतनी भूमिसविधि श्रोत्रिय ब्राह्मण को दान दीजायतो ब्रह्म इत्यादि निवृत होजाते हैं ॥४९॥ राजाओं के महापाप तो केवल भूमिदान से निवृत होते हैं। व्रत तीर्थ एवं अन्य दोनों से निवृत नहीं होते ॥५०॥ जो पुरुष सुपात्र ब्राह्मण को फल

फल धान्य आदि से हरी भरी पृथ्वी दान करता है वह देव असुरों से पूजित इन्द्रलोक में जाता है ॥५१॥ हे गरुड़ और जितने

फूल धान्य आदि से हरी भरी पृथ्वी दान करता है वह देव असुरों से पूजित इन्द्रलोक में जाता है ॥५१॥ हे गरुड़ और जितने भी दान हैं वे पृथ्वी दान के आगे कमहैं क्योंकि पृथ्वी का दान दिन प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त होता है ॥५२॥ जो राजा हो कर भी पृथ्वी दान नहीं करता वह अन्य जन्म में पत्तों की कुटिया जितनी भी पृथ्वी नहीं पाता दरिद्री रहता है ॥५३॥

यते ।५०। पृथिवींसस्यसंपूर्णां योददातिद्विजन्मने ॥ सप्रयातीद्रभुवनेपूज्यमानः सुरासुरैः ।५१। अत्यल्पफलदानिस्युरन्यदानानिकाश्यप । पृथवीदानपुण्यमहन्यहनिवर्धते ।५२। योभूत्वा भूमिपो-भूमिंनोददातिद्विजातये । सनाप्नोतिकुटीग्रामेदारिद्रीस्याद्भवेभवे ।५३। अदानाद्भूमिदानस्यभूपतित्वाभिमानतः । निवसेन्नरकेयावच्छेषोधारयतेधराम् ।५४। तस्माद्भुमीश्वरोभूमिदानमेवप्रदापयेत् ॥ अन्येषांभूमिदानार्थं गोदानं कथितंमया ।५५। ततोतेधेनुर्दातव्यारुद्रधेनुं प्रदापयेत ऋणांधेनुं ततो दत्वा मोक्षधेनुं प्रदापयेत ।५६। दद्यातरणीधेनुं विशेषविधिनाखग ॥ तारयंतिनरंगावस्त्रिविधाच्चैवपात

अभिमान में आकर जो पृथ्वी दान नहीं करता, वह जब तक पृथ्वी रहती है जब तक नरक में पड़ा रहता है ॥५४॥ श्री भगवान कहते हैं कि राजा लोगों को पृथ्वीदान करना आवश्यक है। और दूसरे मनुष्यों के लिए गौदान है ॥ ५५ ॥ अन्त समय में अष्ट महादानों में गौदान करना, दूसरा मृत्यु जन्य दुःख की निवृत्ति के लिए रुद्र धेनुदान, तीसरा ज्ञान अज्ञात ऋण की निवृत्ति के लिए ऋण धेनु दान, चौथा मोक्ष प्राप्ति के लिए मोक्षधेनु दान करना ॥ ५६ ॥ पांचवां वैतरणी नदी को

पार करने के लिए गौ दान करे ये पांचों प्रकार से दान की हुई गौयें मनुष्य को शरीर वाणी मनद्वारा किये गये पापों से पार करा देती है ॥५७॥ हे गरुड़ और भी अनेकों पाप जो कि बाल कुमार, जवानी बुढ़ापे में एवं जो जन्मान्तर में भी किये गये ॥५८॥ और जो रात्रि में प्रातःकालमें मध्यान्ह एवं अपराहन में दोनों संध्या में मनवाणी शरीर द्वारा किये गये पाप ।५९।

क त । ५७ । बालत्वेयच्चकौमारेयत्पापंयौवननेकृतम् । वयः परिणतौयच्चयच्यजन्मांतरेष्वपि ॥५८॥ यन्निशायां तथाप्रातर्यन्मध्यान्हापराह्णयोः । संध्ययोर्यत्कृतंपापंकायेनमनसागिरा ।५९। दत्वाधेनुंसकृद्वापिकपिलांक्षीरसंयुताम् ॥ सोपस्करांसवत्सांचतपोव्रत समन्विते ।६०। ब्राह्मणेवेद् वदुषिसर्वपापैः प्रमुच्यते । उद्धरेदंतकालंसादातारंपापसंचयात् ॥६१॥ एकागौः स्वस्थचित्तस्यह्यातुरस्यचगोशतम्

दूध देने वाली वत्सके साथ एवं दक्षिणा आदि अन्य खाद्य पदार्थों के सहित कपिला गौ यदि एकही बार तपस्या सन्ध्यादिव्रत के नियम पालने वाले ।६०। वेद शास्त्र वेत्ता कुटुम्बी ब्राह्मण को दान देता है तो उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं । वही गौ अन्तकाल में पापों के ढेर से दाता का उद्धार कर देती है ।६१। यदि स्वस्थ्य चित्त होकर एक गौदान करे, बीमारी की हालत में सो गौ दान करे और मृत्युशय्या पर यदि एक हजार गौदान करे तो ये तीनों समान हैं किन्तु इनमें स्वस्थता पूर्वक

एक गाय का दान श्रेष्ठ है ॥६२॥ स्वस्थता पूर्वक एक तथा मृत्यु के पश्चात लक्ष गाय के दान में समानता है किन्तु

हालत में सो गौ दान करे और मृत्युशय्या पर यदि एक हजार गौदान करे तो ये तीनों समान हैं किन्तु इनमें स्वस्थता पूर्वक

एक गाय का दान श्रेष्ठ है ॥६२॥ स्वस्थता पूर्वक एक तथा मृत्यु के पश्चात लक्ष गाय के दान में समानता है किन्तु जीवितावस्था में स्वस्थता में एक ही गाय विद्वान कुटम्बी ब्राह्मण को दान दी जाय तो वह लाख गाय के समान है ॥६३॥ सुपात्र ब्राह्मण को दिया दान लाखों गुना होजाता है। दाता को अनन्त फल देता है, और ब्राह्मण को प्रति ग्रह का कोई भी

सहस्रं म्रियमाणस्यदत्तं चित्तंविवर्जितम् । ६२ । मृतस्यौपुनर्लक्षं विधिपूतं चतत्फलम् । तीर्थपात्रसमोपेतंदानमेकंचलक्षधा ॥६३॥ पात्रेदत्तंचयद्दानं तल्लक्षगुणितंभवेत् । दातुःफलमनं तंस्यान्नपात्रस्यप्रतिग्रहे ॥६४॥ स्वाध्यायहोमसंयुक्तः परपाकविर्जितः ॥ रत्नपूर्णामपिमहींप्रतिगृह्यनलिप्यते ॥६५॥विषशीतापहौमंत्रवह्नीकिंदोषभागिनौ ॥ अपात्रेसा चगौर्दत्तादातारनरकंनयेत् ।६६। कुलैकशतसंयुक्तं ग्रहीतारंतुपातयेत् । नापात्रेविदुषादेया आत्मनः श्रेयइच्छता । ६७ । एकायकस्यदातव्याबहूनांनकदाचनः

दोष नहीं होता ॥६४॥ वेदों का वक्ता यज्ञ आदि कर्ता सुपात्र ब्राह्मण यदि रत्नपूर्ण सारी पृथ्वी भी दान लेले तो वह कभी भी प्रतिग्रह दोषमें लिप्त नहीं होता ।६५। सुपात्र ब्राह्मण दाता को सब पापोंसे छुड़ा देता है स्वयं दोषी नहीं होता जैसे सर्प आदि विषैले जन्तुओं के विष को मंत्र एवं जाड़े को अग्नि हटाती है। अपात्र को दिया दान नरक में ले जाता है।६६। अपने कल्याण की इच्छा से कभी अपात्र को दान न दे। दाता के साथ गृहीत भी सौ कुलों के साथ नरक में गिरता है।६७। एक गाय एक ही सुपात्र ब्राह्मण को दान दे। साझीदार बहुत से ब्राह्मणों को नहीं एक गौ यदि बहुत

ब्राह्मणों में विभाग हो जाय अथवा बेची जाय तो वह गौ दाता के सात कुलों को भस्म कर देती है ॥ ६८ ॥ श्री भगवान कहते हैं कि वैतरणी नदी को पार करने के लिए गोदान आवश्यक है अब यही कहता हूं ॥६६॥ कृष्ण अथवा कपिला गाय को आभूषणों से सोने के सींग रूप के खुरों से सजाकर कांसे के पात्र की दोहिनी के साथ ॥७०॥ कृष्ण वस्त्रद्वयी

स।विक्रीता।विभक्ता।वा।दहत्यासप्तमंकुलम् ॥६८॥ कथिताय।मया।पूर्वंतववैतरणीनदी ॥ तस्याउद्धरणोपायंगोदानंकथयामिते ॥६६॥ कृष्णांवाकपिलां।वा।पिधेनुं कुर्यादलंकृताम्॥स्वर्णशृंगीरौप्यखुरींकांस्यपात्रोपदोहिनीम् ॥७०॥ कृष्ण वस्त्रयुगच्छान्नांकंठेघंटासमन्विताम् ॥ कार्पासोपरिसंस्थाप्यताम्रपात्रंसचैलकम् ।७१। यमंहैमंन्यसेत्तत्रलोहदण्डसमन्वितम् कांस्यपात्रेघृत्वासर्वंतस्योपरिन्यसेत् ॥७२॥ न वमिच्छुमयींकृत्वापट्टसूत्रेणवेष्टयेत् ॥ गर्तंविधायजलंकृत्वातस्मिन्प्रक्षिपेत्तरिम् ॥७३॥ तस्योपरिस्थितांकृत्वासूर्यदेह

से आच्छादित करके गले में घन्टा बांध तथा कपास की ढेरी पर एक कपड़ा बिछा उसपर एक तांबे की थाली रक्खे ॥ ७१ ॥ उसमें यमराज की स्वर्ण मूर्ति बनाकर स्थापन करे और साथ में लोह दण्ड रखे एवं कांसे का पात्र घृत से भरकर रखे ॥७२॥ फिर उस गौ के पास एक गड्ढा खोदे, उसे जल से भर दे इसी प्रकार वैतरणी नदी बना कर ईख के गट्ठे को रेशमी वस्त्र लपेट कर उसे नाव बनाकर नदी में तरावे ॥७३॥ कपास पर स्थापित स्वर्ण की मूर्ती को थारी के साथ ही उठाकर उस

नाव पर स्थापित कर देवे । इसी प्रकार यमराज के सामने ही विधि से गाय का संकल्प करे ॥७३॥

नाव पर स्थापित कर देवे । इसी प्रकार यमराज के सामने ही बिधि से गाय का संकल्प करे ॥७३॥ गन्धपुष्प वस्त्र अलङ्कार आदि से ब्राह्मण एवं गौ की पूजा करके संकल्प द्वारा वह गाय ब्राह्मण को दे दे ।७४॥ फिर उस गौ की पूँछ को पकड़कर और अपना पांव उस नाव पर रखकर ब्राह्मण को बुलाकर इन मन्त्रोंको पढ़े ॥७६॥ श्लोक मन्त्र सख्या ७७ से लेकर ८२पर्यन्त

समुद्भवाम् ॥ धेनुं संकल्पयेत्तत्र यथा शास्त्र विधानतः ।७४। सालंकाराणि वस्त्राणि ब्राह्मणाय प्रकल्पयेत् । पूजाँ कुर्याद्विधानेनगंधपुष्पाक्षतादिभिः ।७५। पुच्छंसंगृह्य धेनोस्तुनावमाश्रित्यपादत ॥ पुरस्कृत्ययतोविप्रमिमंत्र मुदीरयेत् ॥७६॥ भवसागरमग्नानां शोकतापोर्मिदुःखिनाम् ॥ त्र तात्वंहि-जगन्नाथशरणागतवत्सल ॥७७॥ विष्णुरूपद्विजश्रेष्ठमामुद्धरमहीसुर । सद्क्षिणामयादत्ता तुभ्यं वैतरणीनमः ॥ ७८ ॥ ममम गैंमहाघोरेतांनदींशतोयोजनाम् ॥ ततुकामोददाम्मेनांतुभ्यंतूरणोनमः

हैं, इन्हें उच्चारण करे । अर्थ यह है—हे जगन्नाथ ! संसार रूप समुद्र में डूबते हुए शोक सन्ताप रूप लहरों से दुःखी होते हुए पुरुषों की आप सदा रक्षाकरते हैं । आपकी शरणमें आयाहूँ ॥७७॥ हे पृथ्वीके देवता ! मेरा उद्धार कीजिये मैं दक्षिणा के सहितयह वैतरणीतारकगौ आपको दानकरताहूँ आपकोनमस्कारहै ७८।आपकोमैं इसीलिए दानकरताहूं कि यममार्गमें सौ योजन

विस्तार वाली वैतरणी नदी पारकरजाऊँ ।७६। अब हे गौमातः ? यमद्वारके महामार्ग में वैतरणी नदी पड़ती है वहां मेरीप्रतिज्ञा करना तू ही उस नदी सेपार कराती है आपको नमस्कार है ।८०। प्रार्थना है कि गौएमेरे आगे तथा पीछे हो । गोएमेरेहृदयमेंहोमें सर्वदा गौओंमें निवास करूं ८१। जो सबप्राणियों की लक्ष्मी तथा देवताओं से प्रतिष्ठित है, वह मेरे सम्मुख धेनु विराजमानहैकृपा

॥७६॥ धेनुकेमांप्रतीक्षस्वयमद्वारेमहापथे । उत्तारणार्थंदेवेशिवैतरण्यैनमोस्तुते ॥८०॥ गावोमेअग्रतः संतुगावोमेसंतुपृष्ठतः । गावोमेहृदयेसंतु गवांमध्येवसाम्यहम् ॥८१॥ यालक्ष्मीः सर्वभूतानांयाचदेवेप्रतिष्ठिता । धेनुरूपेणसादेवी ममपापंव्यपोहतु ॥८२॥ इतिमन्त्रश्चसंप्रार्थ्य सांजलिर्धेनुकांयम । सर्वं प्रदक्षिणी कृत्यब्राह्मणायनिवेदयेत् ।८३। दद्याद्विधानेनयोगांवैतरणींखग ॥ सयातिधर्म मार्गेणधर्मराज सभांतरे ॥ ८४ ॥ स्वस्थशरीरेतुवैतरण्याव्रतंचरेत् ॥ देयाचविदुषाधेनुस्तांनदींततुमिच्छता

करके मेरे पापों का नाश करो ।८२। यही मन्त्र हैं । तब हाथ जोड़कर गाय ब्राह्मण एवं यम के सम्मुख उन्हीं मन्त्रों से प्रार्थनाकरके परिक्रमा करके, ब्राह्मण को देदेवे ।८३। इसी विधान से जो पुरुष गौदान करता है । वह धर्ममार्ग द्वारा धर्मराज की सभा में प्रवेश करता है ॥८४॥ ज्ञानी पुरुष को चाहिये कि वह नीरोग अवस्था में ही वैतरणी व्रत आचरण करे गौदान करे

।८५। हे पक्षिराज ! दाता के महामार्ग में वह नदी नहीं आती

।८५। हे पक्षिराज ! दाता के महामार्ग में तब नदी नहीं आती अतः पुण्य समय में अवश्य ही गौदान करे ।८६ गङ्गा यमुना आदि तीर्थों पर ब्राह्मण के घर, सूर्य चन्द्रग्रहण के शुद्धहो जाने पर संक्रांति या अमावस्या के दिन ।८७। मेष, तुला कर्क मकर की संक्रांति, रात दिन की समानता के विषुवकाल में व्यतीपात के दिन युग की आदि अक्षय तृतीया आदि तिथि

।८५। सानायातिमहामार्गे गोदानेनदीखग । तस्मादवश्यंदातव्यं पुण्यकालेषुसर्वदा ॥ ८६ ॥ गङ्गादिसर्वतीर्थेषुब्राह्मणावसथेषुच । चन्द्रसूर्योपरागेषु सङ्क्रांतौदर्शवासरे ॥८७॥ अयनेविषुवेचैवव्यतीपातेयुगादिषु ॥ अन्येषुपुण्यकालेषुदद्याद्गोदानमुत्तमम् ८८। यदैवचायतेश्रद्धापात्रंसंप्राप्यतेयदासएवं पुण्यकालः स्याद्यतःसंपत्तिरस्थिरा ।८९। अस्थिराणिशरीराणिविभवोनैवशाश्वतः ॥ नित्यंसन्निहितो मृत्युः कर्तव्योधर्मसंग्रहः ॥ ९० ॥ आत्मवित्तानुसारेणतत्रादानमनंतकम ॥ देयंविप्रायविदुषेस्वात्मनः

इसीप्रकार औरभी कोई अच्छादिन होयतो यह सब पुण्यकाल कहे जाते हैं इनमेंसे किसीदिन कहीं गौदान करना उत्तम है ।८८। दान देने की श्रद्धा का दिन अथवा सुपात्र विद्वान ब्राह्मण दान लेने वाला जिस दिन मिल जाय यह भी पुण्य काल है। धन दौलत कोई स्थिर नहीं पुण्य समय में अपना पुण्यसंचय करले ८९। शरीर धन स्थिर नहीं। मृत्यु निकट है अतएव पुण्य धर्म संचय करना परम आवश्यक है ।९०। आत्मा के कल्याण के लिये थोड़ाभी किसीवेदविज्ञ ब्राह्मण कोदान देना अनन्त

एवं अक्षय फल देता है ॥६१॥ आत्मा के कल्याण के लिए निरोग अवस्था में थोड़े धन के द्वारा अपने हाथ से किया हुआ दान अक्षय होता है और पूरा साथ रहता है ॥६२॥ यह दान पर लोक मार्गके लिये पाथेय होताहै। इसीके द्वारा वह महायात्री सुख पूर्वक महामार्ग तैं कर लेता है। नहीं तो पाथेय रहित होकर मार्ग में महान क्लेश उटाता है।६३। और जो २ दान

श्रेयमिच्छता ।६१। अल्पेनापिहि वित्तेन स्वहस्तेनात्मनेकृतम् ॥ तदक्षय्यंभवेद्दानं तत्कालंयोगतिष्ठति ।६२। गृहीतदानपाथेयः सुखंयातिमहाध्वनि । अन्यथाक्लिश्यतेजंतुः पाथेयरहितः पथि ॥६३॥ यानि यानि च दानादि दत्तानि भुविमानवैः । यमलोकपथेतानिह्यु पतिष्ठंतिचाग्रतः ॥६४॥ महा-पुण्यप्रभावेण मानुषं जन्मलभ्यते । यस्तत्प्राप्यचरेद्धर्मसयातिपरमांगतिम् ।६५। अविज्ञायनरोधर्मं दुःखमायातियातिच ॥ मनुष्यजन्मसाफल्यंकेवलंधर्मं सेवनम् ।६६। धनपुत्रकलत्रादिशरीरमपिबांधवा ॥

मनुष्यों ने दिये होते हैं वे सब महा मार्गमें आकर प्राप्त होजाते हैं ।६४। बड़े ही पुण्यों के प्रभाव से मनुष्य जन्म मिलता हे इसमें धर्म आचरण करने से परमगति प्राप्त होतीहै ।६५। मनुष्य जन्म पाकर जिसको धर्मका ज्ञान नहीं। वह संसार में दुःख ही दुःख पाता है। धर्म करने में ही सफलता है ।६६। धन, पुत्र, कलत्र, शरीर, बन्धु भाई सब नाशवान हैं। इसी कारण एक अनश्वर धर्मका आचरण करो ।६७। पिता आदि तबतक सगेहैं जबतक जीता है मृत्युहो जाने पर एकक्षण में सबका स्नेह

चला जाता है ॥९८॥ आत्मा ही आत्मा का बन्धु है, यह बारम्बार समझते रहना चाहिए। जीतेजी स्वार्थ के विना कोई भी नहीं पूछता मर जाने पर कौन किस को देता है॥९९॥ यह सब कुछ जानते हुए जो कुछ भी बन सके अपने हाथसे देना उत्तमहै जीवन अनित्य है मृत्यु पीछे कौन देगा ॥१००॥ बान्धव तो मृतककोजला भस्मकर छोड़कर चले जाते हैं अथवा लोष्ट काष्ठ की

अनित्यंसर्वमेवेदंतस्माद्धर्ममाचरेत् ।९७। तावद्बंधुः पितातावद्यावज्जीवति मानवः मृतानामंतरंज्ञात्वा-क्षणेस्नेहोनिवर्तते ।९७। आत्मैवह्यात्मनोबंधुरितिविद्यान्मुहुर्मुहुः ॥ जीवन्नपीतिसंचिन्त्यमृतानांकः प्रदास्यति ।९९। एवंजानन्निदंसर्वं स्वहस्तेनैवदीयताम् ॥ अनित्यंजीवितंयस्मात्पश्चात्कोपि नदास्यति ॥१००॥ मृतंशरीरमुत्सृज्यकाष्ठ लोष्ठसमंक्षितौ । विमुखाबांधवायांतिधर्मस्तमनुगच्छति ।१०१। गृहादर्थानिवर्तंतेश्मशानात्सर्वबांधवाः । शुभाशुभंकृतंकर्मगच्छंतमनुगच्छति ॥१०२।शरीरंवह्निना-दग्धंकृतंकर्म सहस्थितम्। पुण्यंवापापंभुङ्क्ते सर्वत्रमानवः । १०३ । नकोपिकस्यचिद्बंधुः ससारे

भांति पृथ्वी पर छोड़कर चले जाते हैं उस तरफ मुँह भी नहीं करते। केवल धर्म ही साथ जाता है ॥१०१॥ देखिये मृतक पुरुष को धन घरसे ही त्याग देता है, बान्धव शमशान तक पहुँचाते हैं अपने द्वारा ही किये शुभ अशुभ कर्म साथ जाते हैं ।१०२। शरीरतो अग्नि में भस्म होजाता है कर्म साथ रहते हैं। पुण्य पापों के फल को मनुष्य सर्वत्र भोगता है॥ १०३ ॥

दुःखमय इस संसार में कोई भी बन्धु नहीं केवल कर्मों के सम्बन्ध से जीव उनमें आकर मिलता है, फिर कर्मों की क्षीणता होने पर बिछुड़ जाता है ॥१०४॥ माता, पिता, प्रेमी, भाईबन्धु स्त्री आदि सम्बन्धियों का मिलना बिछुड़ना प्याऊ किंवा कुओं पर इकट्ठे हुए २ मनुष्यों की भांति हैं अथवा नदी में तैर कर आने जाने वाले काष्ट समूह की भांति है फिर ॥१०५॥ संसार

दुःखसागरे । आयातिकर्मसंबंधाद्यातिकर्मक्षयेपुनः ।१०४। मातृपितृसुहृद्भ्रातृबंधुदारादिसंगमः । प्रपायामिवजंतूनांनद्यांकाष्ठौघवच्चलः ।१०५। कस्यपुत्राश्चपौत्राःकस्यभार्याधनंचवा ॥ संसारेनास्तिकः कस्यस्वयंतस्मात्प्रदीयताम् ॥१०६॥ अस्मायत्तंधनंयावत्तावद्विप्रेसमर्पयेत् । पराधीनेधनेजाते—नकिंचिद्विक्रमुत्सहेत् ॥ १०७ ॥ पूर्वजन्मकृताद्दानादत्रलब्धंधनंबहु । तस्मादेवपरिज्ञाय धर्मार्थंदीयतांधनम् ॥१०८॥ धर्मात्संजायतेऽर्थोधर्मात्कामोभिजायते ॥ धर्मएवापवर्गायतस्माद्धर्मंसमाचरेत्

में न किसी का कोई पुत्र है, न पौत्र है, न धन है न स्त्री है अतः जितना भी हो अपने हाथ से दान करे ॥१०६॥ जब तक धन आधीन है ब्राह्मणों को दान करे। जब धन पुत्र सम्बन्धियोंके आधीन हो जाता है। फिर बस की बात नहीं ॥१०७॥ पहिले जन्म में दान करने से इस जन्म में धन मिला है। इसी को समझकर धन दान करना चाहिए ॥१०८॥ धर्म से धन मिलता

है। धर्म से मनोरथ होतेहैं। धर्म से मोक्ष मिलता है। अतएव धर्म करो ।१०९। यह धर्म श्रद्धा से धारण किया जाता है। यदि श्रद्धा न हो तो धन के द्वारा धर्म सिद्ध नहीं होता। सर्वथा धन रहितमुनिजन श्रद्धावान होकर ही बैकुण्ठ जाते हैं ।११०। गीता में भगवान कहतेहैं–कि जो भी पुरुष पत्र, पुष्प, फल जल मेरे अर्पण करता है उन्हें हैं स्वयं अङ्गीकार करता हूँ

॥१०९॥ श्रद्धयाधार्यतेधर्मोबहुभिर्नार्थराशिभिः। निष्किंचनाहिमुनयः श्रद्धावंतोदिवंगताः। ११०। पत्रं पुष्पंफलतोयंयोमेभक्त्याप्रयच्छति ॥ तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्रयतात्मनः ।१११।तस्मादवश्यंदातव्यंदानं विधानतः ॥ अल्पंवाबहुवेतीगणनानैवकारयेत् ॥ ११२ ॥ धर्मात्माचसपुत्रोवैदेवतैरपिपूज्यते ॥ दापयेद्यस्तुदानानि पितरंह्यातुरंभुवि । ११३ । पित्रोर्निमित्तं यद्दत्तंपुत्रैः पात्रेसमर्पितम् ॥ आत्मापि पावितस्तेनपुत्रःपौत्रकः । ११४। पितुःशतगुणंपुण्यंसहस्रं मातुरेवच ॥ भगिनीदशसाहस्रं

।१११। इसी कारण थोड़ा बहुत दान अवश्य करना चाहिए। उसमें थोड़े बहुत की गणना नहीं ।११२। देवपूज्य धर्मात्मा वही पुत्रहैं जो चो मृत्यु होने वाले पितासे अन्नदान करावे ।११३। जो अपने माता पिताके लिए सुपात्र ब्राह्मण कोदान देताहै वही उत्तमपुत्र है। उसने सबको पवित्र किया है पुत्र पौत्र प्रपौत्रवान् होकर वृद्धि पाता है ।२२४। जो पिता के निमित्त दान देता है। उसे सौगुणा माता के निमित्त हजार गुणा, भगिनी के निमित्त दश हजार गुणा अपने भ्राता के निमित्त अक्षय फल

मलताहै ।११५। दाता को कोई उपद्रव नहीं होता । न वह यम यातना भोगता है मृत्यु समय उसे यमदूतों से भय नहीं होता ।११६। यदि कोई लोभी होकर दान नहीं करता तो मर कर वह पापी मनुष्य बहुत शोक करता है ।११७। यदि अन्त में पुत्र पौत्र, भाई बन्धु सगोत्री पुरुषभी कुछ दाननहीं करातेतो वेब्रह्महत्या जितना पाप पाते हैं । इति श्रीगरुड़पुराणे सारोद्धारे

सोदरेदत्तमक्षयम् ।११५। नचैवोपद्रवोदातुर्नवानरकयातनाः मृत्युकालेचनभयंयमदूतसमुद्भवम् ।११६। यदिलोभान्नयच्छति कालेह्यातुरसंज्ञके । मृताः शोचंतितेसर्वे कदर्याः पापिनः खग ॥११७॥ पुत्राः पौत्राः सहभ्रातासगोत्राःसुहृदस्तुये । ददतिनातुरेदानंयत्ब्रह्मघ्नास्तेनसंशयः ।११८। इति श्री गरुड़ पुराणेसारोद्धारेआतुरदाननिरूपणोनामाष्टमोऽध्यायः ।८। गरुड़ उवाच ॥ कथितंभवतासम्यग्दानमातुरकालिकम् म्रियमाणस्ययत्कृत्यं तदिदानींवदमेप्रभो ।१। श्रीभगवानुवाच । शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्यामि देहत्यागस्यतद्विधम् ॥ मृतायेनविधानेनसद्गतिंयांतिमानवाः ।२। कर्मयोगाद्यदादेहीमुंचत्यत्रनिजंवपुः

शास्त्रि हरिश्चन्द्रकृतायां सरला टीकायांआतुरदान निरूपण नामाष्टमोऽध्यायः ।८। गरुड़ जी बोले-कि हे प्रभो आपने अन्त समय के दान को सुना दिया । अब कृपा करके मरने वाले पुरुष का कृत्य कहिए ।२। श्री भगवान बोलेकि हे गरुड़ ! शरीर त्याग की विधि को मैं सुनाता हूँ जिससे मृत्यु पुरुष सद्गति पाते हैं ॥३॥ शरीरी जब शरीर छोड़ने लगे उसके लिये पहिले

पहिले तुलसी वृक्ष के समीप पृथ्वी को गोबर से लीपे ।।३।। उसी पृथ्वी पर तिल कुशा बिखेरे तब वहां छोटा सा शुभ्र आसन बिछाकर श्री शालिग्राम स्थापित करे ।।४।। जिस स्थान पर पाप भय नासिका शालिग्राम की मूर्ति स्थापित हो वहां मृत्यु होने वाले की निश्चय मुक्ति होती है । साथ में तुलसी वृक्ष की छाया हो वहां मृत्यु होने से सर्वदा दान दुर्लभ मुक्ति होती है ।।६।।

तुलसीसन्निधौकुर्यान्मंडलंगोमयेनतु ।।३।। तिलाश्चैवविकीर्याथदर्भाश्चैवविनिक्षिपेत ।। स्थापयेदासनेशुभ्रे शालिग्रामशिलांतदा ।।४।। शालिग्रामशिलायत्र पापदोषभयापहा ।। तत्सन्निधानमरणान्मुक्तिर्जंतोः सुनिश्चिता ।।५।। तुलसीविटपच्छायावैयत्रास्तिभवतापहा ।। तत्रैवमरणान्मुँक्तिः सर्वदादानदुर्लभा ।।६।। तुलसीविटपस्थानं गृहेयस्यावतिष्ठते ।। तद्गृहंतीर्थरूपंहिनायांतियम किंकराः ।।७।। तुलसी मंजरीयुक्तोयस्तुप्राणान्विमुँचति ।। यमस्तंनेक्षितुंशक्तोयुक्तंपापशतैरपि ।।८। तस्यादलंमुखेकृत्वातिलदर्भासनेमृतः ।। नरोविष्णुपुरंयातिपुत्रहीनोप्यसंशयः ।६। तिलाः पवित्रास्त्रिविधादर्भाश्चतुलसीरपि ।। नरं

जिस घर में तुलसी का स्थान हो। वहां यमदूत कभी नहीं जाते ।।७।। जो पुरुष तुलसी मंजरी से युक्त प्राण छोड़ता है वह सैकड़ों पापों से युक्त होकर भी यमलोक नहीं जाता ।।८।। तुलसी का पत्ता मुख में रख तिल एवं कुशाओं के आसन पर जो प्राण छोड़ता है वह यदि निपुत्र भी हो विष्णु लोक में जाता है ।।६।। तीनों प्रकार के तिल कुशा तुलसीये पवित्र

हैं नरक में जाने वाले की रक्षा करते हैं इन्हींके कारण मृत पुरुषों को सद्गति मिलती है ॥१०॥ हे गरुड़ यह तिल पसीने से उत्पन्न हुए हैं । अतः पवित्र हैं । इन्हें देख असुर दानव दैत्य भाग जाते ॥ ११ ॥ और कुशा मेरे रोमों से उत्पन्न हुए मेरी विभूति है । इनके स्पर्श से मनुष्य स्वर्ग में जाते हैं ॥१२॥ कुशा के मूल में ब्रह्मा हैं । मध्य में जनार्दन हैं एवं अग्रभाग

निवारयंत्येतेदुर्गतिंयांतमातुरम् ॥१०॥ ममस्वेदसमुद्भूतायतस्तेपावना स्तिलाः ॥ असुरादानवादैत्यावि-द्रवंतितिलैस्ततः ॥११॥ दर्भाविभूतमें तार्क्ष्यममरोमसमुद्भवाः ॥ अतस्तत्स्पर्शनादेवस्वर्गंगच्छन्तिमा-नवाः । १२ । कुशमूलेस्थितोब्रह्माकुशमध्येजनार्दनः ॥ कुशाग्रेशंकरोदेवस्त्रयोदेवाः कुशेस्थिताः ।१३। अतःकुशावह्निमंत्रास्तुलसीविप्रधेनवः ॥ नैतेनिर्माल्यतांयांति क्रियमाणाः पुनः पुनः ॥ १४ ॥ दर्भाः पिंडेषुनिर्माल्याब्राह्मणाःप्रेतभोजने ॥ मन्त्रागौस्तुलसीनीचेचितायांचहुताशनः ॥१५॥ गोमयेनो

में शंकार हैं । इसी प्रकार तीनों देव कुशा में स्थित हैं ॥१३॥ इसी कारण कुशा, अग्नि, मन्त्र, तुलसी, ब्राह्मण, एवं गौ, ये बार २ काम लाये जाते हैं, अतः ये अपवित्र नहीं होते ।।१४।। कुशा यदि मृतपिंडों पर चढ़ाये गये हों और ब्राह्मण मृतक सम्बिन्धियों के घर शुद्ध होनेसे पूर्वही प्रेत भोजन करें मन्त्र गौ, तुलसी नीचके पास हो, अग्नि चिता की हो तब ये अपवित्र हैं ।।१५।। अब गोबर से लिपी पृथ्वी पर दर्भ तिल बिछाकर उस पर मृत्यु सय्या करनी चाहिए । यह शय्या छत के नीचे

हो खुले आकाश के नीचे नहीं ॥१६॥ गोबर से लिपे मन्डल में ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अग्नि एवं सब देवताओं का निवास है अतः मण्डल अवश्य हो ॥१७॥ जिस पृथ्वी पर गोमय लेपन कभी नहीं हुआ वह पृथ्वी शुद्ध है। किंतु जहां एक बार भी लेपन होगया तो वह लेपन करने से ही शुद्ध होती है ॥१८॥ राक्षस भूत प्रेत पिशाच यमदूतादि लेपन न की हुई अशुद्ध

पलिप्तेतुदर्भास्तरणासंस्कृते। भूतलेह्यातुरंकुर्यादंयच्चिंविवर्जयेत् ॥ १६ ॥ ब्रह्माविष्णुश्चसर्वेदेवाहुताशनः ॥ मंडलोपरितिष्ठतितस्मात्कुर्वीतमंडलम् ॥१७॥ सर्वत्रवसुधापूतालेपोयत्रनविद्यते ॥ यत्रालेपः कृतस्तत्रपुनर्लेपेनशुद्धयति॥१८॥राक्षसाश्चपिशाचाश्चभूताः प्रेतायमानुगाः अलिप्तदेशेखट्वायामंतरिक्षेविशंतिच ।१६। अतोग्निहोत्रं श्राद्धंचब्रह्मभोज्यंसुरार्चनम्। मंडलेनविनाभूम्यामातुरंनैवकारयेत् ।२०। लिप्तभूम्यामतः कृत्वास्वर्णरत्नंमुखेक्षिपेत। विष्णो पादोदकंदद्याच्छालिग्राम स्वरूपणिः

पृथ्वी, खाट, एवं खुले आकाश वाले प्रदेशमें प्रवेश करते हैं। अतः इन स्थानों में मृत्यु न होने दे ॥१९। इसी कारण अग्नि होत्र, श्राद्ध, ब्रह्मभोज्य, देवपूजन, मृत्यु शय्या आदि गोमयोप लिप्त मडलके बिना कभी नहीं करना चाहिए ॥ २० ॥ मरण शील पुरुषों के लिये पृथ्वी पर लेपन लगाकर तिलदर्भादि बिछाकर उसी मण्डल में सुला दें। फिर उसके मुख में स्वर्ण

तथा पंचरत्ना डाले श्री शालिग्राम का चरणामृत भी पिलावें ॥२१॥ श्री शालिग्राम का धोवन जल बिंदु मात्र भी यदि मरण शील को मिल जाय तो उसके पाप निवृत्त हो जाते हैं। और वह वैकुण्ठ में चला जाता है ॥२२॥ अनन्तर महा पाप नाशक गंगाजल पिलावें अन्त का गंगाजल सब तीर्थों के स्नान पाप पुण्यों का फल देने वाला है ॥२३॥ शरीर शुद्धि के लिए

॥२१॥ शालिग्रामशिलातोयं यः पिबेद्बिंदुमात्रकम् ॥ ससर्वपापविनिर्मुक्तोवैकुण्ठभुवनंव्रजेत् ॥२२॥ ततोगङ्गाजलं दद्यान्महापातकनाशनम् ॥ सर्वत्तीर्थकृतस्नानदानपुण्यफलप्रदम् ॥२३॥ चांद्रायणंचरेद्य स्तुसहस्रंकायशोधनम् ॥ पिबेद्यश्चैवगंगाभं समौस्यातामुभावपि ॥ २४ ॥ अग्निंप्राप्ययथातार्क्ष्यतूल- राशिर्विनश्यति ॥ तथागङ्गांबुपानेन पापकंभस्मसाद्भवेत् ॥ २५ ॥ यस्तुसूर्यांशुसंतप्तं गांगेयंसलिलं- पिबेत् ॥ ससर्वयोनिर्विनिर्मुक्तः प्रयातिसदनंहरेः ॥ २६ ॥ नद्योजलावगाहेनपावयन्तीतरांजनान् ॥ दर्शनात्स्पर्शनात्पानात्तथागंगेतिकीर्तनात् ॥२७॥ पुनात्यपुण्यान्पुरुषान्शतशोथसहस्रशः ॥ गंगातस्मा-

हजार चन्द्रायण व्रत के पुण्यों के समान ही जलपान कहा गया है ॥२४॥ हे गरुड़ ! अग्नि पाकर जिस प्रकार कपास राशि जलजाती है, उसी प्रकार गंगाजल से सर्व पाप भस्म हो जाते हैं ॥२५॥ और जो पुरुष सूर्य किरणों से सन्तप्त गंगाजल पीता है वह भोग्य योनियों से मुक्तहो विष्णु लोक में जाता है ॥२६॥ दूसरा नदियां तो स्नान करने से पापी को पवित्र करती हैं किन्तु श्रीगंगाजी का दर्शन, स्पर्श तथा केवल नाम लेना भी ॥२७॥ सैकड़ों हजारों पापियों को पवित्र करता है इसलिए

संसार तारक गंगाजल पान अवश्य करे ॥२८॥ जब गले तक प्राण आजांय तब मुखसे यदि गङ्गा २ ऐसा शब्द बोले तो वह अवश्य विष्णु लोक में जाता है फिर जन्म नहीं लेता ॥२६॥ प्राणों के निकलते समय जो पुरुष श्रद्धा पूर्वक श्रीगङ्गा जी का चिन्तन करताहै वह भी सदगति पाता है॥३०॥इसी कारण हे गरुड़! मरणासन्न प्राणी श्रीगङ्गाजी का ध्यान नमस्कार स्मरण, जल

त्पिवेत्तस्याजलंसंसार तारकम् ।२८। गंगागङ्गेतियोब्रूयात्प्राणैः कंठगतैरपि । मृत्तौविष्णुपुरेयातिनपुनर्जायतेभुवि।२६।उत्क्रामद्भिश्चतः प्राणैः पुरुषः श्रद्धायान्वितः । तिंयेन्मनसागङ्गां सोपियातिपरांगतिम् ॥३०॥ अतोध्यायेन्नमेद्गंगांसंस्मरेत्तज्जलंपिवेत् । ततोभागवतंकिंचिच्छणुयान्मोक्षदायकम् ॥३१। श्लोकंश्लोकार्धपादंवायोन्तेभागवतं पठेत् ॥ नतस्यपुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्कदाचन । ३२ । वेदोपनिषदाँ पाठाच्छिवविष्णुश्तवादपि॥ब्राह्मणक्षत्रियविशांमरणंमुक्तिदायकम् । ३३ । प्राणप्रयाणसमयेकुर्यादनश

पान अवश्य करे । उसके अनन्तर मोक्ष दाता श्रीमद्भागवत सुने ॥३१॥ यदि अन्त समय श्रीमद्भागवत का एक श्लोक अथवा वेदमन्त्र भी पाठ करे अथवा सुनले, तो वह ब्रह्म लोकसे कभी नहीं लौटता ॥३२॥ अनन्तर वेद, उपनिषद, विष्णु एवं शिव के स्तोत्र आदि के पाठ करते २ ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य की मृत्यु हो तो मुक्ति होती है ॥३३॥ प्राण निकलते समय

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन्हें पूर्ण वैराग्य हो खाना पीना छोड़कर उपवास करें फिर आतुर सन्यास ग्रहण करें ॥३४॥ प्राणों के कण्ठ तक पहुँचने पर पुरुष ऐसा कहे कि मैंने सन्यास ले लिया मैं ब्रह्म हूं, वह विष्णु लोकमें जाता है फिर पृथ्वी पर नहीं आता ॥३५॥ हे पक्षीन्द्र ! मृत्यु समय जिसकी इस प्रकार की विधि होती है उसके प्राण सुख पूर्वक ऊर्ध्व द्वार से निकलते

नं खग ॥ दद्यादातुरसंन्यासंविरक्तस्यद्विजन्मनः । ३४ । संन्यस्तमितियोब्रूयात्प्राणैः कंठगतैरपि मृतोविष्णुपुरंयातिनपुनर्जायतेभुवि । ३५ । एवंजातविधानस्य धार्मिकस्यतदाखग ॥ ऊर्ध्वछिद्रेण-गच्छन्तिप्राणास्तस्यसुखेनहि ॥३६॥ मुखंचचक्षुषीनासेकर्णौद्वाराणिसप्तच एभ्यः सुकृतिनोयांतियोगिन-स्तालुरंध्रतः । ३७ । अपानान्मिलितप्राणोयदाहिभवतः पृथक ॥ सूक्ष्मीभूत्वतदावायुर्विनिष्क्रामति पुत्तलात् ॥३८॥ शरीरंपततिपश्चाद्धतेमरुतीश्वरे ॥ कालाहतं पतत्येवं निराधारोयथाद्रुमः ॥३९॥

हैं ॥३६॥ मुख, नेत्र, नासिका, कर्ण इन द्वारों को ऊर्ध्व द्वार कहतेहैं पुन्यआत्माओंके प्राण इन्हीं से निकलते हैं । योगियों के प्राण दशम द्वार से निकलते हैं ॥३७॥ जीवात्मा शरीर को कैसे त्यागता है ! कहतेहैं कि प्राण अपान ये दोनों मिलकर नाभि स्थान में रहता है । उस स्थान से जब ये भिन्न २ होते हैं तब सूक्ष्म होकर वायु शरीर रूप पुतले से निकल जाता है ॥३८॥ वायु मय जीवनके निकलनेके पीछे आधार रहित वृक्षकी भांति कालसे ताड़ित वह शरीर गिर पड़ता है ॥३९॥ जब शरीर से

प्राण निकल जाते हैं तब यह निश्चेष्ट हो जाता है घृणास्पद निन्दित एवं दुर्गन्ध युक्त होकर तब तो यह स्पर्श के योग्य भी नहीं रहता ॥४०॥ तब मृतक शरीर में या तो कीट हो जाते हैं । अथवा किसी जीव के खोलने पर विष्टा हो जाती है अथवा जलाने पर भस्म हो जाता है । त्रिविधा अवस्थको प्राप्त होने वाले क्षणभंगुर शरीरको पाकर मनुष्य जीते जी कितना अभिमान

निर्विचेष्टं शरीरंतुप्राणैर्मुक्तं जुगुप्सितम् । अस्पृश्यंजायतेसद्योदुर्गंधसर्वनिंदितम् ॥ ४०॥ त्रिधावस्था-शरीरस्य कृमिविड्भस्मरूपतः किंगर्वःक्रियतेदेहेक्षणविध्वंसिभिर्नरः ।४१। पृथिव्यांलीयतेपृथ्वीआपश्चैव तथाप्सुच ॥ तेजस्तेजसिलीयेतसमीरस्तुसमीरणे ।४२। आकाशश्चतथाकाशेसर्वव्यापीचशंकरः नित्यमुक्तोजगत्साक्षीअस्मादेहेष्वजोऽमरः। ४३॥ सर्वेन्द्रिययुतोजीवःशब्दादिविषयैर्वृतः। कामरागादिभि-र्युक्तः कर्मकोशसमन्वितः । ४४॥ पुण्यवासनयायुक्तोनिर्मिताः स्वेनकर्मणा । सप्रविश्यनवेदेहेगृहदग्धेय

करता है ॥४१॥ महा भूतों से बने शरीर में से वह पांचों तत्व निकल कर अपने तत्व में मिल जाते हैं ॥४२॥ आकाश पृथ्वी, जल,तेज पवन ये मूल तत्वोंमें मिल जाते हैं शरीरस्थआत्मा तो सुखरूप नित्यमुक्त, साक्षी अजर अमर हैं ॥४३॥ यही जीवात्मा कर्मात्मकदशइन्द्रियसंयुक्तहै । एवं शब्दादिविषयों से धृत काम रागादि संयुक्तहै । अन्न, प्राण, मन, विज्ञान, एवं आनन्दमय इन पांचकर्म कोषों से युक्तहै ॥४४॥ घरमें आग लग जाने पर मनुष्य उसे छोड़कर दूसरे में जैसे प्रवेश करता है उसी

प्रकार यहजीवात्मा पुण्यवासना युक्त अपने कर्मोंसे नये शरीर में प्रवेश करता है ॥४५॥ जब पुण्यात्मा जीव नये शरीरमें प्रवेश करता है तब देवदूत बजती हुई स्वर्णकी किंकणियों व छात्र चमरसे शोभायमान ऐसा विमान लेकर आजाता है ॥४६॥ वे देवदूत अन्त कालीन धार्मिक कृत्य से कृतार्थ इस प्रकार के धर्मी पुरुष को उस विमान में बिठाकर ले जाते हैं ॥४७॥ उस

थाग्रहं । ४५। तदाविमानमादायकिंकिणीजालमालियत । आयांतिदेवदूताश्चलसच्चामरशोभिताः ।४६। धर्मतत्वविदः प्राज्ञाः सदाधार्मिकवल्लभाः तदैनंकृतकृत्यंस्वविमानेननयंतिते ॥ ४७ ॥ सुदिव्यदेहोविरजो बरस्त्रक्सुवर्णरत्नाभरणैरुपेतः । दानप्रभावात्समहानुभावः प्राप्नोतिनाकंसु पूज्यमानः ।४८। इति श्री गरुड़पुराणे ॥ सारोद्धारे म्रियमाणकृत्यनिरूपणो नाम नवमोऽध्यायः ।९।

का शरीर दिव्यहोता है निर्मल स्वच्छ वस्त्र, रत्न जटित आभूषण पुष्प मालाओं से शोभायमान वह अपने दानके प्रभाव से स्वर्ग में पहुँच देवताओंसे पूजितहोता है । ऐसे स्वर्ग पहुँचनेमें पुरुषों को कुछ देर नहीं लगती है । यह सब अन्त समय में धार्मिक कृत्य करने का फल है ।४८। इति गरुड़पुराणे सारोद्धारे शास्त्रि हरिश्चन्द्र कृतायां सरल टीकायां म्रियमाण कृत्य निरूपणो नाम नवमोऽध्यायः ॥९॥

श्री गरुड़जी बोले ! अब पुण्यआत्मा के शरीरका संस्कारका प्रकार और उनकी पत्नियों को साथमें सती होने की महिमा तथा फल की प्राप्ति यह सब कृपा करके कहिये ॥१॥ श्रीभगवान बोले ! सुनिये मैं उनकी देह सम्बन्धी क्रियाएँ कहता हूं जिनके द्वारा पत्र पौत्रादि पैतृक ऋणसे छूट जाते हैं ॥२॥ मातापिता का अन्त्येष्टि संस्कार सुप्रकार करना चाहिए अन्त्येष्टि

गरुड़ उवाच । देहदाहविधानंचवसुकृतिनांविभो । सतीयदिभवेपत्नी तस्याश्चमहिमांवद ।१। श्रीभगवानुवाच । शृणुताक्ष्र्यप्रवक्ष्यामिसर्वमेवौर्ध्वदेहिकम् । यत्कृत्वापुत्रपौत्राश्चमुच्यंतेपैतृकादृणात् ।२। किंदत्तैबहुभिर्दानैः पित्रोरंत्येष्टिमाचरेत् । तेनाग्निष्टोमसंदृशंपुत्रःफलमवाप्नुयात । ३ । तदाशोकंपरि-त्यज्यकारयेन्मुडनंसुतः। समस्त बांधवैर्युक्तः सर्वपापनुत्तये ।४। मातापितरौमृतौयेनकारितंमुडनंनहिः ॥ आत्मजः सकथंज्ञेयः संसारार्णवतारकः ॥ ५ ॥ अनोमुंडनमावश्यनखकुक्षिविवर्जितम् ॥ ततः सबाँधवः स्नात्वाधौतवस्त्राणिधारस्यत ॥६॥ सद्योजलंसमानीयततस्तंस्नापयेच्छवम् ॥ मंडयेच्चंदनैः

कर्म करने वाला पुत्र अग्निष्टोम यज्ञकाफल प्राप्त करता है ॥३॥ अब विधि कहते हैं—जब माता या पिता की मृत्यु हो तो पुत्र उसका शोक छोड़कर मुँडन करावे ॥४॥ माता पिता के मरने पर जिस पुत्र ने मुँडन नहीं कराया, वह संसार कूप समुद्र से तराने वाला नहीं ॥५॥ नाखून तथा छाती के बाल न कटवावे मुँडन अवश्य करावे। तब बान्धवों के साथ स्नान कर धुले हुए शुद्ध वस्त्र धारण करे ॥६॥ कूआं नदी आदि से ताजा जल लाकर फिर मृतक को स्नान करावे। तब उसे चन्दन लगा

कर पुष्पों की माला पहनादे और गङ्गा मृतिका भी मस्तक पर लगावे ॥७॥ फिर नये वस्त्रों से आच्छादित करे तब अपना जनेऊ अपसव्य करके कुशा पवित्री धारण करके नाम एवं गोत्र के उच्चारण के साथ सकल्प द्वारा मृतक को दक्षिणा के साथ पिंड दान देवे।८ मृत्यु स्थान में उसका नाम प्रेत होता है अमुक प्रेत नाम से ही पिंड देवे। इस पिंड दान से भूमि

स्रग्भिगंगामृत्तिकयाथवा । ७ । नवीनवस्त्रैः संच्छाद्यतदापिंडसदक्षिणम् ॥ नामगोत्रंसमुच्चार्यसंकल्पेनापसव्यतः । ८ । मृत्युस्थानेशवोनामतस्यनाम्नाप्रदापयेत् ॥ तेनभूमर्भवेत्तुष्टातदाधिष्ठातृदेवताः ॥९॥ द्वारदेशेभवेत्पांथस्तस्यनाम्नाप्रदापयेत् ॥ तेन नैवोपघातास्युर्भूतकोटिषुदुर्गताः ।१०। ततः प्रदक्षिणां कृत्वापूजनीयः स्नुषादिभिः स्कंधः पुत्रेणदातव्यस्त दानयैर्बांधवैःसह ॥११॥ धृत्वास्कंधेस्व पतरंयः श्मशानायगच्छति ॥ सोश्वमेधफलंपुत्रोलभते च पदेपदे ।१२। नीत्वास्कंधेस्वपृष्ठे स्वैसदातातेनलालि

एवं भूमि देवता प्रसन्न होता है ॥९॥ तब द्वार देश पर लाया हुआ मृतक पान्थ होता है पांथ नाम से ही पिंड दान करे। इससे अपगति से मरे हुए भूत प्रेतादि दुर्गति जीव उसके मार्ग को नहीं रोकते। न कोई सद्गतिमें विघ्नडालता ॥१०॥द्वारदेश पिंडदान के बाद पुत्र स्त्रियां आकर शवकी परिक्रमा करें नारियल से पूजन करे। फिर पहले पुत्र शव की अर्थी को कंधा देकर उठाकर ले चले। जो पुत्र अपने पिता की अर्थी को कंधा देकर श्मशान ले जाता वह एक एक कदम में अश्वमेध यज्ञ का फल पाता है ॥१२॥ क्योंकि जिस पिता ने पुत्र की अपनी पीठ आदि पर चढ़ाया, अब उसी ऋण की

निवृत्ति के लिये उचित है ॥ १३ ॥ तब श्मशान के आधे में पृथ्वी को ... का पिंड ... विश्राम का ...

निवृत्ति के लिये उचित है ॥ १३ ॥ तब श्मशान के आधे में पृथ्वी को झाड़ कर फिर जल छिड़क कर उसी पर शव को रखे, फिर स्नान कर भूत सज्ञा नाम से विश्राम पिंड देवे ॥ २४ ॥ इस पिण्ड के दे देने से पिचास राक्षस, यक्ष और भी दिशाओं में रहने वाले भूत प्रेत आदि कोई भी विघ्न नहीं डाल सकते और न उसका मांस भक्षण कर सकते हैं ।२५।

तः ॥ तदैवतद्दणान्मुच्येन्मृतंस्वपितरंवहेत् ।१३। ततोर्धमार्गेविश्रामं संमार्ज्याभ्युक्ष्यकारयेत् । संस्नाप्यभूत संज्ञायतस्मैतेनप्रदापयेत् ।१४। पिशाचाराक्षसायक्षायेचान्येदिक्षुसंस्थिताःतस्यहोतव्यदेहस्यनैवायोग्यत्वकारकाः ॥१५। ततोनीत्वाश्मशानेषुस्थापयेदुत्तरामुखम् ॥ तत्रदेहस्यदाहार्थंस्थलंसंशोधयेद्यथा ।१६। संमार्ज्यभूमिंसंलिप्योल्लिख्योद्धृत्यचवेदिकाम् । अभ्युक्ष्योपसमाधायवह्निंयत्रविधानतः ॥१७॥ पुष्पाक्षतैरथाभ्यर्च्यदेवंक्रव्यादसंज्ञकम् ॥ लोमभ्यस्त्वनुवाकेनहोमंकुर्याद्यथाविधिम् । १८ । त्वंभूतभृज्ज-

तब मृतकको उठा श्मशान में ले जाकर उत्तर की तरफ मुख करके रखदें, फिर उसके शरीर के दाह के लिये पृथ्वीको शुद्ध करे ॥ २६ ॥ प्रथम भूमि झाड़ कर जल छिड़क कर उसे गोवर से लीपकर फिर कुशाओं से रेखा करे । रेखा मध्य से अनामिका एवं अंगुष्ठ से मृतिका उठाकर ईशान कोण में फैकना फिर जल छिड़क कर वेदका सिद्ध करना फिर उस पर विधि पूर्वक अग्नि स्थापित करनी ।२७। क्रव्याद संज्ञक उस अग्नि की पुष्प अक्षत आदि से पूजा करने "लोमभ्यः" इत्यादि वेद मन्त्रों द्वारा विधि पूर्वक हवन करे ।२८। इस श्लोकद्वारा अग्नि की प्रार्थना करे हे क्रव्याद अग्ने ! आप पंचभूतात्मक शरीरों को धारण

करते हो जगत के कारण हो तथा पालक भी हो यह मनुष्य मृत्यु हुआ है आप इसे स्वर्ग में पहुँचाइये ॥१९॥ इसी प्रकार अग्नि की प्रार्थना करके उसी स्थान पर चन्दन, तुलसी, पलास एवं पीपल के काष्ठों द्वारा चिता बनावे ।२०। चिता पर प्रेत को रखकर १ पिण्ड चिता पर रखे और दूसरा पिन्ड मृतक के हाथ पर रखे । यह दोनों पिंड प्रेत नाम से दिये जाते

सद्योनिस्त्वंभूतपरिपालकः सांसारिकस्तस्मादेनं त्वंस्वर्गंतिंनय ।१९। इतिसंप्रार्थयित्वाग्निंचितांतत्रैवकारयेत। श्रीखंडतुलसीकाष्ठे पलाशाश्वत्थदारुभिः ।२०। चितामारोप्यतंप्रेतंपिंडौद्वौतत्रदापयेत्॥चितायांशवहस्तेचप्रेतनाम्नाखगेश्वर।चितामोक्षप्रभृतिकंप्रेतत्वमुपजायते ।२१। केपितासाधकप्राहुःप्रेतकल्पविदोजनाः चितायां तेननाम्नावाप्रेतनाम्नाथवाकरे।२२।इत्येवंपंचभिःपिंडैःशवस्याहुतियोग्यता। अन्यथाचापघाताय पूर्वोक्तास्तेभवंतिहि ॥२३॥ प्रेतेदत्वापंचपिंडन्हुतमादायतंतृणैः ॥ अग्निपुस्तदादद्यान्नभवेत्पंचकंयदि

हैं सपिण्ड श्राद्ध से पहिले के कृत्यों में उसको प्रेत संज्ञा रहती है ।२१। प्रेत शास्त्र वेत्ताओं का अन्य २ मत है कई एक फिर उसको साधक नाम से पिण्ड दान देना कहते हैं एवं चिता पर शव नाम से पिण्ड देवे, और शवके हाथ में प्रेत नाम से पिण्ड देवे । यदि तीन पिंड पूर्वोक्त पिंडों से और देने चाहिए ।२२। इस प्रकार पाँच पिंडों द्वारा उस शव की आहुति होनेकी योग्यता प्राप्त हो जाती हैं । यदि पिंड दान न किये गये तो राक्षस आदि विघ्न डालते हैं ।२३। इसप्रकार प्रेत को पाँच पिंड

देकर उसी हवन वाली अग्नि में तृण आदि प्रज्वलित कर इसी से चिता को प्रदीप्त करे। उसमें पंचक का विचार आवश्यक है

देकर उसी हवन वाली अग्नि में तृण आदि प्रज्वलित कर इसी से चिता को प्रदीप्त करे। उसमें पंचक का विचार आवश्यक है २४॥ पञ्चक में मृत्यु होजाने वाले पुरुष की सद्गति नहीं होती। यदि पंचक हो तो दाह क्रिया न करे। नहीं तो घर में किसी अन्य की मृत्यू होजाती है॥ २५ अर्ध धनिष्ट नक्षत्र से लेकर रेवती नक्षत्र तक इन पांच नक्षत्रों में दाह क्रिया करना अशुभ है॥ २६ ॥ इन पांच नक्षत्रों में यदि मृत्यु हो जाय तो घर में हानि पुत्रों में एवं गोत्रियों में भी विघ्न उपद्रव

॥२४॥ पंचकेषुमृतोयस्तु नगतिंलभतेनरः॥ दाहस्तत्रनकर्तव्यः कृतेऽन्यमरणं भवेत् ॥२५॥ आदौकृत्वा धनिष्ठार्धमेतन्नक्षत्रपंचकम्॥ रेवत्यंतं नदाहार्हंदाहेचनशुभंभवेत् ।२६। गृहेहानिर्भवेत्तस्यऋक्षेष्वेषुमृतोहियः पुत्राणांगोत्रिणांचापिकश्चिद्विघ्नः प्रजायते ॥ २७ ॥ अथवाऋक्षमध्येहिदाहःस्याद्विधिपूर्वकः॥ तदविधिन्तेप्रवक्ष्यामिसर्वदोषप्रशांतये। २८। शवस्यनिकटेतार्क्ष्यनिक्षिपेत्पुत्तलांस्तथा। दर्भमयांश्चतुरऋक्षमंत्राभिमंत्रितान्। २९। ततोदाहेमकर्तव्यं वह्नौतिऋक्षनामभिः। प्रेताजयतमंत्रेणपुनर्होमस्तुसंपुटैः॥ ३०।

आदि होते हैं॥ २७॥ यदि इन पांच नक्षत्रों में दाह क्रिया करनी भी हो तो विधि पूर्वक करे। हे गरुड़! पचक के समस्त दोषों की शान्ति के लिए उसकी विधि कहता हूं। २८। दाह क्रिया करने से पहिले दर्भों के चार पुतले बनाकर मृतक के पास रखे। उन्हें नक्षत्र मन्त्रों से अभिमन्त्रित करे। २९। फिर स्वर्ण का दान देकर नक्षत्र नामसे हवन करे पीछे प्रेतो जयत इस मन्त्र से हवन करे फिर नक्षत्र नाम से हवन करे इसप्रकार सम्पट करके। ३०। उन्हीं पुतलोंके साथ फिर मृतक की दाह

क्रिया करे। सपिण्डन के दिन पुत्र फिर पञ्चक शान्ति का विधान करे ॥३१॥ सपिण्डन के दिन पंचक शान्ति के विधान में तिल पात्र, स्वर्ण, चांदी तथा, घृत से भरा हुआ कांस्य पात्रये पांच दान दोष शान्तिके लिये अवश्यकरे ॥३२॥ इसी प्रकारशांति विधान करके जो दाह क्रिया करता है उसे किसी प्रकार का विघ्न नहीं होता और प्रेत भी परमगति पाता है ॥१३॥ अब यदि

ततोदाहः प्रकर्तव्यस्तैश्चपुत्तलकैः सह । सपिंडनदिनेकुर्यात्तस्यशांतिविधिंसुतः ।३१। तिलपात्रंहिरण्यंच रूप्यं रत्नं यथाक्रमम्। घृतपूर्णंकांस्यपात्रंदद्याद्दोषप्रशांतये ।३२। एवंशांतिविधानं तुकृत्वादाहंकरोतियः नतस्य विघ्नो जायेतप्रेतोयातिपरांगतिम् ॥३३॥ एवं पंचकदाहःस्यात्त द्विनाकेवलंदहेत् ॥ सतीयदिभवे त्पत्नी तयासहविनिर्दहेत् । ३४ । पतिव्रतायदानारीभर्तुः प्रियहितेरता। इच्छेत्सहैवगमनं तदास्नानं समाचरेत् । ३५ । कुंकुमांजनसद्वस्त्रभूषणैर्भूषितांतनुम् । दानं दद्यात् द्विजातिभ्योबंधुवर्गेभ्यएवच ।३६।

मृतक की पत्नी सती नहीं होना चाहती है तो केवल उसे जलादे यदि सती होनाचाहती है तो उसके साथ दाह क्रिया करे ।३४ अपने भर्ता की हित चिन्ता क पति व्रता नारी यदि पति के साथ जाना चाहे तो उसे घरमें पहले स्नान करना चाहिए ॥३५॥ सुन्दर वस्त्र एवं आभूषण धारण करके मस्तकपर कुँकुमका विंदु लगावे, फिर आंखों में काजल आंजकर शरीर को शोभायमान करे ब्राह्मण वर्ग को दान देवे अपने बन्धु वर्गों को भी यथोचित देवे ॥३६॥ फिर अपने गुरु को नमस्कार करके घरके बाहिर

निकले भगवान विष्णु के मन्दिर में जाकर प्रणाम करे ॥३७। इस समय सती को किसी प्रकार की लज्जा मोह नहीं होना

निकले भगवान विष्णु के मंदिर में जाकर प्रणाम करे ॥३७॥ इस समय सती को किसी प्रकार की लज्जा मोह नहीं होना चाहिए उसी मन्दिर में अपने सब आभूषण उतार कर भगवान को भेट कर देवे। फिर वहां से श्री फल [नारियल] लेके खुले मुँहसे श्मशान की ओर चल पड़े ॥३८॥ वहां पहुँचकर पहिले सूर्य नारायण को नमस्कार करे। फिर चिताकी परिक्रमा करके

गुरुंनमस्कृत्यतदानिर्गच्छेन्मंदिराद्बहिः । ततोदेवालयंगत्वा भक्त्यातंप्रणमेद्धरिम् ।३७। समर्प्याभरणं-तत्रश्रीफलंपरिगृह्यच ॥ लज्जां मोहं परित्यज्य श्मशान भवनं व्रजेत् ।३८। तत्रसूर्यनमस्कृत्यपरिक्राम्य चितांतदा । पुष्पशय्यांतदारोहेन्निजांकेस्वापयेत्पतिम् ।३९। सखिभ्यः श्रीफलंदद्याद्दाहमाज्ञापयेत्ततः गङ्गास्नानसमंज्ञात्वाशरीरंपरिदाहयेत् ॥४०॥ नदाहेद्गर्भिणीनारी शरीरंपतिनासह ॥ जनयित्वाप्रसूतिं च बालं पोष्यसतीभवेत् ।४१। नारीभर्तारमासाद्यशरीरंदहतेयदि अग्निर्दहतिगात्राणिनैवात्मानं प्रपीडयेत्

उस चिता को पुष्प शय्या समझ कर बैठ जाय और अपने मृतक पतिके सिरको गोदी में रखे ॥३९॥ अपने हाथ में रखे हुए नारियल को अपनी सखियों को दे देवे फिर चिता को अग्नि लगाने की आज्ञा देवे। गङ्गा स्नान की भांति इसी प्रकार अपने शरीर को जला देवे ॥४०॥ किन्तु यदि स्त्री गर्भवती होतो पति के साथ शरीर को न जलावे। उसका सतीत्व इसमें है कि वह बालक को पैदा करके उसका पालन पोषण करे ॥४१॥ जो पतिव्रता अपने मतक पति के साथ अपना शरीर जलाती है

अग्नि तो उसके केवल अंगों को जलाती है और उसकी आत्मा को किसी प्रकार की पीड़ा नहीं पहुँचाती । ४२ । जैसे स्वर्ण आदि के जलाने पर अग्नि तो उनके मल को जलाती है, इस प्रकार अमृत के समान अग्नि के मध्य में बैठी हुई पतिव्रता स्त्री अपने शरीर के पापों को जला देती है ।४३। जिस प्रकार विवाह आदि में एवं अन्य कार्यों में शपथ लेते समय जो पुरुष कभी

॥ ४२ ॥ दह्यतेध्मायमानानांधातूनांचयथामलः ॥ तथानारींदहेत्पापंहुताशेह्यमृतोपमे । ४३ । दिव्या दौसत्ययुक्तश्चशुद्धोधर्मयुतोनरः । यथानदह्यतेतप्तलोहपिण्डेनकर्हिचित् । ४४ । तथासापतिसंयुक्तोदह्यते नकदाचन । अंतरात्मात्मनाभर्त्तामृतेनैकत्वमागता । ४५ । यावच्चाग्नौमृतेपत्यौस्त्रीनात्मानंप्रदाहयेत् तावन्नमुच्यतेसाहिस्त्रीशरीरात्कथंचन । ४६ । तस्मात्सर्वप्रयत्नेनस्वपतिसेवयेत्सदा । कर्मणामनसावाचा।

असत्यनहीं कहता आमरणान्त, अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहता है, ऐसे धर्मात्मा शुद्ध पुरुष से हाथ में यदि अग्नि के समान जलता हुआ लोहे का गोला भी रख दिया जाय तो वह उसे कभी नहीं जला सकता ॥४४। इसी प्रकार पति संयुक्त पतिव्रता स्त्री भी कभी नहीं जलती वह तो अपने स्थूल शरीर को जलाकर अपनी अन्तरात्मा से पति के साथ एक रूपता पाती है स्त्री शरीर तो उसे मिलता नहीं ।।४५। और जब तक स्त्री अपने पति के साथ अपने स्थूल शरीर को नहीं जलाती, तब तक वह स्त्री शरीर से कभी छूटती ही नहीं ।४६। इसी कारण जहां तक होसके मन वचन एवं शरीर द्वारा पति के जीते जी प्रयत्न पूर्वक पति की

से कभी छूटती ही नहीं ।४६। इसी कारण जहां तक होसके मन वचन एवं शरीर द्वारा पति के जीते जी प्रयत्न पूर्वक पति की

सेवा करे, पति के मर जाने पर उसके साथ सती हो ।४७। जो सती पति के मर जाने पर उसके साथ चिता की अग्निमें प्रवेश करती है वह अरुन्धती के समान स्वर्गलोक में माननीय होती है ।।४८।। स्वर्गलोक में जाकर वह अप्सरा सेवित पतिव्रता चौदह इन्द्रों के राज्य समय तक पति के साथ रमण करती है ।।४६।। जो पतिव्रता अपने पतिके साथ सती होती है वह अपने

मृतेजीवतितद्गता ॥४७॥ मृतेभर्तरियानारीसमारोहेद्धुताशनम् ॥ साऽरुंधतीसमाभूत्व स्वर्गलोकेमहीयते ॥ ४८ ॥ तत्रसाभर्तृपरमास्तूयमानाप्सरोगणैः ॥ रमतेपतिनासार्धंयावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ ४६ ॥ मातृकंपैतृकंचैवयत्रसाचप्रदीयते ॥ कुलत्रयंपुनात्यत्रभर्तारंयानुगच्छति ॥ ५० ॥ तिस्रः कोट्योर्द्धकोटीचयानिरोमाणिमानुषे ॥ तावत्कालंवसेत्स्वर्गेपतिनासहमोदते । ५१ । विमानेसूर्यसंकाशेक्रीडतेरमणेनसायावदादित्यचंद्रौच भर्तृलोकेचिसेवत् । ५२ । पुनश्चिरायुः साभूत्वाजायतेविमलेकुले । पतिव्रतातुयाना

माता पिता का कुल एवं अपने पति का कुल इन सबको पवित्र कर देती है ।५०। मनुष्यों के शरीर में साढे तीन करोड़ रोम होते हैं उतने हीकाल पर्यन्त वह पतिव्रता पतिके साथ स्वर्ग में आनन्द पाती है ।५१। जितने समय तक सूर्य चन्द्रमा रहते हैं उतने समय तक स्वर्ग में सूर्य के समान प्रकाशमान बिमान में बैठकर पति के साथ बिहार करती है ।५२। फिरअपनी इच्छासे

ही वह उत्तम एवं धनाड्य कुलमें बड़ी आयु के साथ जन्म पाकर उसी पति को प्राप्त करती है ॥५३॥ और जो क्षण एक जलते रहने के दुःख से डरकर सती नहीहोती वह मूर्ख स्त्री अपने पतिके वियोग की अग्नि द्वारा आयु पर्यन्त जलती रहती है ॥५४॥ इसी प्रकार अपने पति को कल्याण रूप समझकर पत्नी सती हो तो तब मृतक को इस प्रकार दाह करे ॥५५॥ जब मृतक

रीतमेवलभतेपतिम् ।५३। यात्क्षणंदाहदुःखेनसुखमेतादृशंत्यजेत् ॥ सामूढाजन्मपर्यन्तंदह्यतेवि हाग्निना ॥५४॥ तस्मात्पतिंशिवंज्ञात्वासहतेनदहेत्तनुम् ॥ यदिनस्यात्सतीतादृर्यतमेवंप्रदहेत्तदा ॥५५॥ अर्धे दग्धेयथापूर्णेस्फोटयेतस्यमस्तकम् ॥ गृहस्थानान्तुक ष्ठेनयतीनांश्रीफलेन च॥५६॥ प्र सये पितृलोकानांभि त्वातद्ब्रह्मरंध्रकम् । आज्याहुतिंततोदद्यान्मंत्रेणानेनतत्वतः ।५७। अस्मात्वमधिजातोसित्वदयंजा यतांपुनः असौस्वर्गायलोकायस्वाहाज्वलतुपावकः ।५८। एवमाज्याहुतिंदत्वातिलापिश्रांसमंत्रकाम् ॥

का आधा शरीर जल जाये तब गृहस्थियों की काष्ठ द्वारा सती हो तो श्रीफल कपाल क्रिया करे ॥ ५६ ॥ पितृ लोक में प्राप्ति के लिये उस मृतक का ब्रह्मरन्ध्र भेदन करके इस मन्त्र से तिल मिश्रित घृत की आहुति देवे ॥५७॥ मंत्र यह है अर्थ हे अग्ने ! आप वसुदेव से उत्पन्न हो इस कारण यह आपके द्वारा हो स्वर्ग लोकको प्राप्तहो इसका स्थूल शरीर आपमें स्वाहाहो ॥५८॥ इस मंत्र से तिल मिश्रित घृत को आहुति देकर उच्च स्वर से रोदन करे, इससे उस प्रेत को सुख मिलता है

॥५८॥ इस मंत्र से तिल मिश्रित घृत की आहुति देकर उच्च स्वर से रोदन करे, इससे उस प्रेत को सुख मिलता है

॥५९॥ दाह के अनन्तर पहिले स्त्रियां स्नान करें। तब नाम गोत्र का उच्चारण करके तिलों से जलाञ्जलि देवें ॥६०॥ उसके अनन्तर नीम के पत्ते चबावे फिर मृतक के गुण दूसरों को सुनावें तब सबसे पहिले स्त्रियां पीछे पुरुष घर को जावें ॥६१॥ घर में पहुँच कर स्नान करें फिर गौ को ग्रास देवे पहिले दिन घर का भोजन न करें किन्तु दूसरे के घर का भोजन

रोदितव्यं ततो गाढ़ं तेन तस्य सुखं भवेत् ॥५९॥ दाहादनंतरं कार्यं स्त्रीभिः स्नानं ततः सुतैः। तिलोदकं ततो दद्यान्नामगोत्रोपकल्पितम् ।६०। प्राशयेन्निंबपत्राणि मृतकस्य गुणान्वदेत् ॥ स्त्रीजनोऽग्रे गृहं गच्छेत्पृष्ठतो नरसंचयः ॥६१॥ गृहे स्नानं पुनः कृत्वा गोग्रासं च प्रदापयेत्। पत्रावल्यां च भुंजीयाद्गृहान्नं नैव भक्षयेत ॥६२॥ मृतकस्थानमालिप्य दक्षिणाभिमुखं ततः ॥ दिनद्वादशपर्यन्तं दीपं कुर्याद् अहर्निशम् ॥ ६३ ॥ सूर्येऽस्तमागते ताद्यः श्मशाने वा चतुष्पथे ॥ दुग्धं च मृन्मये पात्रे तोयं दद्याद्दिनत्रयम् ।६४। अपक्वं मृन्मयं पात्रं क्षीरनीरप्रपूरितम् ॥ काष्ठत्रयं गुणैर्बद्धं धृत्वा मंत्रं पठेदिमम् ।६५। श्मशानानलदग्धोऽसि परित्यक्तो-

भी पत्तलों में करें फलाहार करें तो उत्तम है ॥६२॥ जिस स्थान पर मृत्यु हुई थी उस स्थान को लीप कर १२ दिनों के लिए दक्षिण की ओर मुख करके घृत का दीपक रखना वह दीपक १२ दिन दिनरात जलता रहे ॥६३॥ सूर्यास्त समय में हे गरुड़ श्मशान अथवा चौराहे पर मिट्टी के पात्र में दूध और जल तीन दिन तक देता रहै ॥६४॥ तीन लकड़ियों की डोरी से बांध कर उसी पर कच्चे मिट्टी के दूध और जल से भरकर रख देवे फिर मन्त्र पढ़े ॥ ६५ ॥ हे प्रेत! तुम्हें बन्धु बांधवों

ने त्याग दिया है तुम श्मशान की अग्नि से जले हो, यह जल है यह दूध है। इसने स्नान करो और यह दुग्ध पान करो ॥ ६६ ॥ फिर चतुर्थ दिन अस्थि श्राद्ध करे। दाहक्रिया वाले पुरुषों को इसदिन अस्थि संचय करना चाहिए। उस दिन यदि पञ्चक हों अथवा रविवार भौमवार हो तो दूसरे तीसरे दिन अस्थि सचय करे ॥ ६७ अस्थि श्राद्ध के विधान में श्मशान

सिवांधवैः । इदंनीरमिदंक्षीरमत्रास्नाहिइदंपिव । ६६ । चतुर्थेसंचयः कार्यः साग्निकैश्चनिग्नकैः ॥ तृतीयेह्निद्वितीयेवाकर्त्तव्यश्चाविरोधतः । ६७ । गत्वाश्मशानभूमिंचस्नानंकृत्वाशुचिर्भवेत् । ऊर्णासूत्रंवेष्टयित्वापरिधायपवित्रिकाम् ॥ ६८ ॥ दद्यात्श्मशानवासिभ्यस्ततोमाषबलिंसुतः यमायत्त्वेतिमंत्रेण तस्त्रः कुर्यात्परिक्रमाः । ६९ । ततोदुग्धेनवाभ्युदयचितास्थानं खगेश्वर । जलेनसेचयेत्पश्चादुद्धरेदस्थिबृन्दकम् । ७० । कृत्वापलाशपत्रेषुक्षालयेद्दुग्धवारिभि । संस्थाप्यमृण्मयेपात्रेश्राद्धं कुर्याद्यथाविधिः । ७१ ।

भूमि से आकर फिर स्नान करे तब शुद्धि होती है यह समझ कर उस दिन श्मशान भूमि में जावे ऊन सूत या ऊनी वस्त्र पहिनकर हाथ में पवित्रा धारण करे ६८। इस प्रकार करने पर पुत्र श्मशान निवासियों को उड़द की बलिदेवे। "ययायात्व" इस मन्त्र से वामावर्त होकर तीन परिक्रमा करे। ६९। तब चिता स्थानको दुग्ध से सिंचित करे जलद्वारा सिंचितनकरे चिताकी अग्नि के शीतल होने पर अस्थि संचय करे। ७०। अस्थियों को पलास पत्र पर रखता जावे। फिर दूध एवं जल से धो धो

कर मिट्टी के पात्र में रखे फिर विधि पूर्वक श्राद्ध करे ।७१। पहिले उस स्थान पर त्रिकोण स्थंडिल करके उसे गोबर से लीप उस पर दक्षिण भिमुख बैठकर तीन दिशाओं में तीन पिण्ड देवे ।७२। चिता को भस्म को इकट्ठा करे उस पर काष्ठ की त्रिपादुका धरे, फिर उसे खुला मुँह करके जलपूर्ण घट स्थापन करे ।७३। पक्के हुए भात पर घृत दधिडाल कर जल एवं

त्रिकोणं स्थंडिलंकृत्वागोमयेनोपलेपितम् । दक्षिणाभिमुखोदिक्षु दद्यात्पिंडत्रयंत्रिषु ।७२। पुंजीकृत्य-
चिताभस्मतत्रधृत्वात्रिपादुकाम् ।। स्थापयेत्त्रसजलमनाच्छाद्यमुखंघटम् ।७३। ततस्तंडुलपाकेनदधिघृत
समन्वितम् । बलिंप्रेतायसजलंदद्यान्मिष्टंयथाविधि । ७४ । पद निदशपंचैवचोत्तरस्यांदिशिव्रजेत् ।।
गर्तंविधायतत्रास्थिपात्रंसंस्थापयेत्खग ।७५। तस्योपरिततोदद्यात्पिंडंदाहार्तिनाशनम् । गर्तादुद्धृत्य-
तत्पात्रंनीत्वागच्छेज्जलाशयम् ।७६। तत्रप्रक्षालयेदुग्धजलेनास्थिपुनः पुनः । चर्चयेच्चंदनेनाथकुंकुमेन

मिष्ठान के साथ विधि पूर्वक प्रेत को बलि देवे ।७४। उसके अनन्तर वहां से उत्तर दिशा १५ कदम चलकर गड्ढा खोद कर उसमें अस्थिपात्र रखदे ।।७५।। प्रेतदाह की निवृत्ति के लिये एक पिण्ड देवे । फिर उस गढे से अस्थि पात्र लेकर जल स्थान नदी या तालाब पर आवे ।।७६।। वहां दूध एवं जल से अस्थियों को बार २ धोवे । चन्दन तथा कुंकुम से उन्हें चर्चित

करे ॥७७॥ फिर उन्हें सम्पुट में संभाल कर रखे । अपने हृदय एवं मस्तक से लगा कर अस्थि सम्पुट की परिक्रमा करे फिर श्री गङ्गाजी आकर उनका विधि पूर्वक निक्षेप करे ॥७८॥ जिन पुरुषों की अस्थियां दश दिन के भीतर श्रीगङ्गाजी में आजाती हैं । वे मनुष्य ब्रह्मलोक से फिर कभी नहीं लौटते ॥७९॥ जब तक मनुष्य की अस्थियां श्रीगंगाजीमें रहती हैं उतने ही हजार

विशेषतः ।७७। धृत्वासंपुटकेतानिकृत्वा च हृदिमस्तके । परिक्रम्यनमस्कृत्य गंगामध्येविनिक्षिपेत्।७८। अंतर्दशाहंयस्यास्थिगंगातोयेनिमज्जति ॥ नतस्यपुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्कदाचन ।७९। यावदस्थिमनुष्यस्यगंगातोयेषुतिष्ठति॥ तावद्वर्षसहस्राणिस्वर्गलोकेमहीयते।८०। गङ्गाजलोर्मिसंस्पृश्यमृतकपवनोयदा ॥ स्पृशतेपातकंतस्यसद्यएवविनश्यति ।८१। आराध्यतपसोग्रेणगङ्गादेवोभगीरथः॥उद्धारार्थंपूर्वजानामान यद्ब्रह्मलोकतः ।८२। त्रिषुलोकेषुविख्यातंगंगायाःपावनंयशः । यान्पुत्रान्सगरस्यैतान्भस्माख्यानानय

वर्षों तक वह स्वर्ग में निवास करता है ॥८०॥ श्रीगङ्गाजी की लहरों को स्पर्श करने वाला पवन जबकि किसी मृतक का स्पर्श करता है तो उसके पाप नष्ट हो जाते हैं ॥८१॥ पहिले राजा भागीरथ तपस्या द्वारा आराधना कर अपने पूर्वजों के उद्धार के लिये ब्रह्मलोक से श्रीगंगाजी को लाये हैं ॥८२॥ तीनों लोकों में ही इसका यश विख्यात है । श्रीगंगा जी ने ही

श्री कपिल जी की दृष्टि से भस्म हुए सगर राजा के साठ हजार पुत्रों को स्वर्ग लोक में पहुँचाया ॥८३॥ और जो मनुष्य पहली अवस्था में पाप करके मर गये हों उनकी अस्थियां श्रीगंगाजी में पड़जाने से वे स्वर्गलोक पहुँचते हैं ॥८४॥ श्रीगंगाजी महात्म्यमें एक इतिहास कहते हैं कि हे गरुड़ ! बहुतसे प्राणियोंके मारक किसी व्याध को सिंहने मारडालातब पापों के कारण

दिवम् ।८३। पूर्वेवयसिपापानियेकृत्वामानवामृताः गङ्गायामस्थिपतनात्स्वर्गलोकंप्रयांतिते । ८४ । कश्चिद्व्याधोमहारण्येसर्वप्राणिविहिंसकः । सिंहेननिहतोयावत्प्रयातिनरकायवै ।८५। तावत्काकेनतस्यास्थिगङ्गायांपातितंतदा । दिव्यंविमानमारुह्यसगतोदेवमंदिरम् ।८६। अतःस्वयमेवसत्पुत्रोगङ्गायामस्थिपातयेत् । अस्थिसंचयनादूर्ध्वंदशगात्रंसमाचरेत ॥८७॥ अथकश्चिद्विदेशेवावनेचौरभयेमृतः ॥ नलब्धस्तस्यदेहश्चेच्छ्रणुयाद्यद्दिनेतदा ॥८८॥ दर्भपुत्तलकंकृत्वापूर्ववत्केवलंदहेत् ॥ तस्यभस्मसमादायगङ्गातो

उसकी जीवात्मा नरककी ओर जारही थी ॥८५॥ उसके शरीर की हड्डी लेकर उड़ते हुए कौआके मुँह से वह श्रीगंगा जी में गिरी उसके समस्त पाप नष्ट होगये । तब वह दिव्य विमान में बैठकर स्वर्ग लोक में पहुँचा ॥८६॥ इसी कारण श्रेष्ठ पुत्र अस्थियों का संचय करके उन्हें श्रीगंगाजी में अवश्य पहुँचावे । इसके अनन्तर दशगात्र कर्म करे ॥८७॥ अब यदि किसी का विदेश में वनमें चोर भयादि से मरजाने के कारण मृतशरीर मिल सके तो जिस दिन उसकी मृत्यु सुने उसी दिन ही ॥८८॥

करे ॥७७॥ फिर उन्हें सम्पुट में संभाल कर रखे । अपने हृदय एवं मस्तक से लगा कर अस्थि सम्पुट की परिक्रमा करे फिर श्री गङ्गाजी आकर उनका विधि पूर्वक निक्षेप करे ॥७८॥ जिन पुरुषों की अस्थियां दस दिन के भीतर श्रीगङ्गाजी में आजाती हैं । वे मनुष्य ब्रह्मलोक से फिर कभी नहीं लौटते ॥७९॥ जब तक मनुष्य की अस्थियां श्रीगंगाजीमें रहती हैं उतने ही हजार

विशेषतः ।७७। धृत्वासंपुटकेतानिकृत्वा च हृदिमस्तके । परिक्रम्यनमस्कृत्य गंगामध्येविनिक्षिपेत्।७८। अंतर्दशाहंयस्यास्थिगंगातोयेनिमज्जति ॥ नतस्यपुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्कदाचन ।७९। यावदस्थिमनुष्यस्यगंगातोयेषुतिष्ठति॥ तावद्वर्षसहस्राणिस्वर्गलोकेमहीयते।८०। गङ्गाजलोर्मिसंस्पृश्यमृतकंपवनोयदा ॥ स्पृशतेपातकंतस्यसद्यएवविनश्यति ।८१। आराध्यतपसोग्रेणगङ्गादेवोभगीरथः॥उद्धारार्थंपूर्वजानामान यद्ब्रह्मलोकतः ।८२। त्रिषुलोकेषुविख्यातंगंगायाःपावनंयशः । यान्पुत्रान्सगरस्यैतान्भस्माख्यानानय

वर्षों तक वह स्वर्ग में निवास करता है ॥८०॥ श्रीगङ्गाजी की लहरों को स्पर्श करने वाला पवन जबकि किसी मृतक का स्पर्श करता है तो उसके पाप नष्ट हो जाते हैं ॥८१॥ पहिले राजा भागीरथ तपस्या द्वारा आराधना कर अपने पूर्वजों के उद्धार के लिये ब्रह्मलोक से श्रीगंगाजी को लाये हैं ॥८२॥ तीनों लोकों में ही इसका यश विख्यात है । श्रीगंगा जी ने ही

श्री कपिल जी की दृष्टि से भस्म हुए सगर राजा के साठ हजार पुत्रों को स्वर्ग लोक में पहुँचाया ॥८३॥ और जो मनुष्य पहली अवस्था में पाप करके मर गये हों उनकी अस्थियां श्रीगंगाजी में पड़जाने से वे स्वर्गलोक पहुँचते हैं ॥८४॥ श्रीगंगाजी महात्म्यमें एक इतिहास कहते हैं कि हे गरुड़ ! बहुतसे प्राणियोंके मारक किसी व्याध को सिंहने मारडालातब पापों के कारण

दिवम् ।८३। पूर्ववयसिपापानियेकृत्वामनवामृताः गङ्गायामस्थिपतनात्स्वर्गलोकंप्रयांतिते । ८४ । कश्चिद्व्याधोमहारण्येसर्वप्राणिविहिंसकः । सिंहेननिहतोयावत्प्रयातिनरकाजये ।८५। तावत्काकेनतस्यास्थिगङ्गायोपातितंतदा । दिव्यंविमानमारुह्यसगतोदेवमंदिरम् ।८५। अतःस्वमेवसत्पुत्रोगङ्गायामस्थिपातयेत् । अस्थिसंचयनाध्वंदशगात्रंसमाचरेत ॥८७॥ अथकश्चिद्विदेशेवावनेचौरभयेमृतः ॥ नलब्धस्तस्यदेहश्चेच्छृणुयाद्यादिनेतदा ॥८८॥ दर्भपुत्तलकंकृत्वापूर्ववत्केवलं दहेत् ॥ तस्यभस्मसमादायगङ्गातो

उसकी जीवात्मा नरककी ओर जारही थी ॥८५॥ उसके शरीर की हड्डी लेकर उड़ते हुए कौआके मुँह से वह श्रीगंगा जी में गिरी उसके समस्त पाप नष्ट होगये। तब वह दिव्य विमान में बैठकर स्वर्ग लोक में पहुँचा ॥८६॥ इसी कारण श्रेष्ठ पुत्र अस्थियों का संचय करके उन्हें श्रीगंगाजी में अवश्य पहुँचावे। इसके अनन्तर दशगात्र कर्म करे ॥८७॥ अब यदि किसी का विदेश में वनमें चोर भयादि से मरजाने के कारण मतशरीर मिल सके तो जिस दिन उसकी मृत्यु सुने उसी दिन ही ॥८८॥

एक हाथ लम्बा कुशका पुतला बनावे। उसके अंगादि मनुष्यों जैसे बनाकर उसकी नाभिमें एक प्रज्वलित दीपकरखे उसकी प्राण प्रतिष्ठा करे। दीपक जलते रहने तक आतुर दान गीता आदि का पाठ करे। दीपक बुझजाने पर उस पुतले की दाह क्रिया करे। फिर उसकी भस्म लेकर श्रीगङ्गा जी में डाले ॥ ८९ ।। उसकी दाह क्रिया के दिन से ही दशगात्र आदि कर्म करे श्राद्ध

येविनिक्षिपेत ॥८९॥ दशगात्रादिकंकर्मतद्दिनादेवकारयेत् ॥ सएवदिवसोग्राह्यः श्राद्धेसांवत्सरादिके ॥ ९० ॥ पूर्णेगर्भेमृतानारीविदार्यजठरंतदा ॥ बालंनिष्कास्यनिक्षिप्यभूमौतामेवदाहयेत् ॥ ९१ ॥ गङ्गातीरेमृतंबालंगङ्गायामेवपातयेत् ॥ अन्यदेशोक्षिपेद्भूमौसप्तविंशतिमासजम् ॥९२॥ अतःपरंदहेत्तस्य गङ्गायामस्थिनिक्षिपेत् जलकुंभंचदातव्यंबालानामेवभोजनम् ॥ ९३ ॥ गर्भेनष्टेक्रियानास्तिदुग्धंदेयंमृते

एवं सांवत्सरिक कर्मों में वही दिन ग्रहण करे। ९० । गर्भिणी स्त्री के मास पूरे होजाने पर यदि उसकी मृत्यु होजाय तो उसका पेट फाड़ कर बच्चे को निकाल कर पृथ्वी पर रखे फिर स्त्री का दाह कर्म करे। ९१ । अब बालकों की मृत्यु के विषय में कहते हैं कि यदि किसी बालक की गंगा के किनारे मृत्यु हो तो उसे गंगा जी में ही डालदे यदि किसी दूसरे देशमें सत्ताइस महिनों तक के बालक की मृत्यू होतो उसे पृथ्वी में गाढे ॥ ९२ ॥ इसके अनन्तर उसे जलाना उचित है और उसकी अस्थियें श्रीगंगा जी में डाले जल पूर्ण घटका दान करे और बालकों को भोजन करावे ।९३।

गर्भ में मरे हुए की कोई क्रिया नहीं पैदा होकर शिशु मरजायतो उसके लिए शुद्ध होकर दुग्ध दान करना (दांतों की उत्पत्ति तक शिशुसंज्ञा है उसके अनन्तर तीन वर्ष तक बालक संज्ञा है) यदि बालक की मृत्यु हो जाय तो शुद्ध होकर जल दान एवं खीर बनाकर भोजन दान करे ॥६४॥ पांच वर्ष तक कुमार संज्ञा, दशवर्ष तक पौगण्ड अवस्था यदि कुमार की मृत्यु हो जाय

शिशौ ॥ घटंचपायसंभोज्यंदद्याद्बालविपत्तिषु । ६४ । कुमारेचमृतेबालान्कुमारानेवभोजयेत ॥ सबालाम्भोजयेद्विप्रान्पौगंडेसव्रतेमृतो ।६५। मृतश्चपंचमादूर्ध्वमव्रतःसव्रतोपिवा ॥ पायसेनगुडेनापिपिंडान्दद्याद्दशक्रमात् ॥६६॥ एकादशंद्वादशंचवृषोत्सर्गविधिंविना ॥ महादानविहीनं च पौगंडे कृत्यमाचरेत् ।६७। जीवमानेच पितरिनपौगंडेसपिंडनम् ॥ अतस्तस्यद्वादशाहन्येकोदिष्टंसमाचरेत् ॥ ६८ ॥

तो बालकों और कुमारों को बुलाकर भोजन करावे, इसी प्रकार यदि पौगंडावस्था में यज्ञोपवीत आदि हो जाने पर किसी की मृत्यु हो तो उसके निमित्त बालकों के साथ ब्राह्मणों को भोजन करावे ॥६५॥ यदि अव्रत हो अथवा सव्रत हो पांच वर्ष के ऊपर किसी की मृत्यु हो जाय तो क्रम से गुड़के साथ बने हुए खीरके दश पिंड प्रदान करे ॥६६॥ इसी प्रकारपौगण्डावस्था मेंहोने पर वृषोत्सर्गके एवं शय्यादानआदि महादानोंके बिना उनका एकादशाह तथा द्वादशाहअवश्य करे ॥६७॥ यदिपिताकी जीवितावस्थामें बालक की पौगण्डावस्थामें मृत्यु हो तो उसके निमित्त सपिण्डदान आदि नहीं करने, केवल द्वादशाह में एकोदिष्ट श्राद्ध करना॥६८॥स्त्री एवं शूद्रोंके लिए यज्ञोपवीत आदि संस्कार तो नहीं, केवल विवाह ही उनका संस्कार है अत

एवं विवाहके पूर्व इनकी मृत्युहोने परअन्य वर्णोंके समान इनकी क्रियाकरे, एवं छोटे की छोटेके समान बड़े की बड़े के समान क्रिया करनी ॥९९॥ शरीरों के छोटा होने पर कर्म तथा विषय वासना आदि सब थोड़े होते हैं इसी कारण छोटी अवस्था तथा शरीर के छोटा होने पर मृत्यु होजाने में क्रिया भी स्वल्प होनी चाहिए ॥१००॥ १५॥ वर्ष तक किशोर अवस्था बाद में

स्त्रीशूद्राणांविवाहस्तुव्रतस्थानेप्रकीर्तितः ॥ व्रतात्प्राक्सर्ववर्णानांवयस्तुल्याक्रियाभवेत् ।९९। स्वल्पात्कर्मप्रसङ्गाच्चस्वल्पाद्विषयबंधनात॥स्वल्पेवयसिदेहेचक्रियांस्वल्पामपीच्छति॥१००॥किशोरेतरुणेकुर्याच्छय्यावृषमखादिकम् ॥ पददानमहादानं गोदानमपिदापयेत् । १०१। यतीनांचैवसर्वेषांनदाहोनोदकक्रिया ॥ दशगात्रादिकंतेषांनकर्तव्यंसुतादिभिः । १०२ । दंडग्रहणमात्रेणनरोनारायणोभवेत् ॥ त्रिदंडग्रहणात्तेषांप्रेतत्वंनैवजायते ॥१०३॥ज्ञानिनस्तुसदामुक्ताःस्वरूपभेवेनहि॥ अतस्तेतुप्रदत्तानांपिंडानांनैवकांक्षिणः

युवावस्था यदि इन अवस्थाओं में मृत्यु हो तो उसके निमित्त वृषोत्सर्ग, पद, शय्या, स्वर्ण एवं गोदान आदि कराने ॥१०१॥ यती सन्यासियों की मृत्यु होतो दाह कर्म, जल तर्पण आदि क्रिया, दशगात्र आदि कोई भी कर्म न करें ।१०२। सन्यास के दंड मात्र ग्रहण करते ही नर का नारायण हो जाता है। त्रिदंड ग्रहण करने से उन्हें प्रेत सज्ञा भी नहीं होती ॥१०३॥ ज्ञानी पुरुष "अहं ब्रह्मास्मि" इस प्रकार के स्वरूपानुभव द्वारा सदा मुक्त हैं। उन्हें पुत्रादि द्वारा दिये गये पिंडों की आकांक्षा

नहीं हैं ॥१०४॥ अतएव संन्यासी विरक्तों की शास्त्रमत से पिंड उदकादि क्रिया नहीं। यदि पुत्र अपनी पितृ भक्ति से गया

नहीं हैं ॥१०४॥ अतएव संन्यासी विरक्तों की शास्त्रमत से पिंड उदकादि क्रिया नहीं। यदि पुत्र अपनी पितृ भक्ति से गया आदि तीर्थों पर तीर्थ श्राद्ध करे तो वह उसकी प्रसन्नता है ॥ १०५ ॥ हंस, परमहंस, कुटीचक, बहूदक इन चार प्रकार के सन्यासियोंकी मृत्यु होनेपर इनके शरीरों को पृथ्वी में गाड़ देवे, अग्नि दाहन करे ॥१०६॥ यदि गङ्गाआदि महा नदियां निकट

।१०४। तस्मात्पिंडादिकंतेषांनतुनोदकमाचरेत् ॥ तीर्थश्राद्धंगयाश्राद्धंपितृभक्त्यासमाचरेत् ॥१०५॥ हंसंपरमहंसचकुटीचकबहूदकौ । एतान्सन्यासिनस्तार्क्ष्यपृथिव्यापयेन्मृतान् ॥ १०६ ॥ गंगादीनामभावेहिपृथिव्यांस्थापनं स्मृतम् ॥ यत्रसंतिमहानद्यस्तेस्वेवनिक्षिपेत् ॥ १०७ ॥ इति श्री गरुड़ पुराणे सारोद्धारे दाहास्थिसंचयकर्मनिरूपणोनामदशमोऽध्यायः । १० । गरुड़ उवाच ॥ दशगात्रविधिब्रूहि-कृतेकिंसुकृतंभवेत् ! पुत्राभावेतुकः कुर्यादितिमेवदकेशव ।१। श्रीभगवानुवाच । शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्यामिद

हों तो इनका शरीर उन्हीं में प्रवाहित करे, नहीं तो पृथ्वी में गाड़े, किंवा पर्वत आदि एकान्त स्थान निर्जन बन में जाकर रखे ॥१०७॥ इति श्रीगरुड़पुराणे सारोद्धारेशास्त्रिहरिश्चन्द्र कृतायांसरलाटीदाहास्थि संचयनिरूपणे नामदशमोऽध्यायः ।१०।

गरुड़ बोले हे भगवन् ! अब दश गात्र विधि कृपा करके कहिये इससे किस पुण्य की प्राप्ति होती है ! और जिसका पुत्र नहीं तो कौन करे ॥१॥ भगवान बोले—मैं दशगात्र विधि कहता हूँ जिसको करने से सत्पुत्रपैत्रिक ऋण से छूट जाता है

॥२॥ शोकको त्यागकर सात्विक धैर्य धारण करके पिता के निमित्त पुत्र पिण्डादिक कर्म करें। इस कर्म में अश्रुपात न करे ॥३॥ रोने वाले बन्धुओंके आंखोंका अश्रुजल नाकका मलएवं श्लेष्म आदि इनघृणित चीजोंको वह प्रेत विवश होकर भोगता है इसी कारण रोना अच्छा नहीं ॥४॥ यदि हजार वर्ष पर्यन्त भी मृतक के लिए दिन रात शोक करता रहे फिरभी वह दिखाई

शगात्रविधिंतव ॥ यद्विधायचसत्पुत्रोमुच्यतेपैत्रकादृण त् ।२। पुत्रः शोकं परित्यज्यधृतिमास्थायसात्विकीम् । पितुःपिंडादिकंकुर्यादश्रुपातंनकारयेत् ।३। श्लेष्माश्रु बांधवैमुक्तं प्रेतोभुंक्तेयनोऽवशः ॥ अतोनरोदितव्यंहितदाशोकान्निरर्थकात् ।४। यदिवर्षसहस्राणिशोचतेऽनिशंनरः ॥ तथापिनैवनिधनं गतोदृश्येतुकर्हिचित् ॥ ५॥ जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्नमृतस्यच । तस्मादपरिहार्येर्थेनशोकंकारयेद्बुधः । ६ । नहिकश्चिदुपायोस्तिदैवोवामानुषोपिवा । योहिमृत्युवशंप्राप्तोजंतुः पुनरिहाव्रजेत् ॥७॥ अवश्यंभाविभावानांप्रतीकारोभवेद्यदि॥ तदादुःखैर्न युज्येरन्नलरामयुधिष्ठिराः ।८। नायमत्यंतसंवासः

नहीं देता ॥५॥ जो पैदा हुआ है उसको मरना है एवं जो मरा है उसको पैदा होना है इस प्रकार के न मिटने वाले अर्थ में बुद्धिमान शोक न करे ॥६॥ जो भी प्राणी मर चुका है उसे लौटने के लिये न देवता कोई उपाय जानते हैं न मनुष्य ॥७॥ यह तो अवश्यंभावी है, इसका कोई उपाय होता तो राजा नल, श्रीराम, युधिष्ठिर आदि कभी दुखी नहोते ॥८। कोई भी किसी

के साथ नहीं रहता। अपना शरीरभी साथ नहीं देतातो दूसरे मनुष्य का क्या कहा जाय ॥९॥ जैसे कोई मुसाफिर कहीं छाया

के साथ नहीं रहता । अपना शरीरभी साथ नहीं देतातो दूसरे मनुष्य का क्या कहा जाय ॥९॥ जैसे कोई मुसाफिर कहीं छाया देखकर विश्राम करके चल पड़ता है उसी प्रकार प्राणियों का समागम है ॥१०॥ प्रातःकाल बना या भोजन सायंकाल में जैसे नष्ट हो जाता है उसी अन्नरस द्वारा यह पुष्ट हुआ शरीर किस प्रकार नित्य रह सकता है ॥११॥ ऐसा विचार इस दुःख का

कस्यचित्केनचित्सह।अपिस्वेनशरीरेणकिमुतान्यैःपृथग्जनैः।९।यथाहिपथिकःकश्चिच्छायामाश्रित्यविश्रमेत् विश्रम्यचपुनर्गच्छेत्तद्वद्भूतसमागमः।१०। यत्प्रातःसंस्कृतंभोज्यंसायंतच्चविनश्यति तदन्नरसपुष्टेकायेका नामनित्यता॥११। भेषज्यमेतद्दुःखस्यविचारंपरिचिंत्यच। अज्ञानप्रभवंशोकंत्यक्त्वाकुर्यात्क्रियांसुतः।१२॥ पुत्राभवेवधूः कुर्याद्भार्याभावेच सोदरः । शिष्योवाब्राह्मणस्यैवसपिंडोवासमाचरेत्।१३। ज्येष्ठस्यवाकनिष्ठस्यभ्रातुःपुत्रैश्चपौत्रकैः । दशगात्रादिकंकार्यं पुत्रहीनेनरेखग ।१४। भ्रातृणामेकजातानामेकश्चेत्पुत्रवान्भवेत्।सर्वेतेतेनपुत्रेणपुत्रिणोमनुरब्रवीत्।१५। पत्न्यश्चनान्हयएकस्यचैकापुत्रवतीभवेत्। सर्वास्ताः

औषध है । अतः अज्ञान जन्य शोक का परित्याग करके पुत्र पिंडदान आदि कर्म करे ॥१२॥ और पुत्र हीन की स्त्री, यदि स्त्री न हो तो छोटा भाई पिंड देवे । यदि किसी ब्राह्मण काभाई नहीं तो उसका शिष्य अथवा कोई गोत्री पुरुष पिंडदान करे ॥१३॥ बड़े अथवा छोटे भाई के पुत्र किंवा पौत्र भी पुत्रहीन पुरुष के दशगात्रादिकर्म कर सकते हैं ॥ १४ ॥ बहुत से सगे भाइयों में एक भी यदि पुत्रवान है तो उसके पुत्र से सब भाई पुत्रवान हैं ऐसा मनुजी का कथन है ॥ १५ ॥ और बहुत सी

पत्नियों में से एक भी पुत्रवती पत्नी है तो उसके पुत्र से सब पत्नियां पुत्रवती हैं। यह भी मनु वचन है ॥१६॥ यदि सब के सब पुत्र हीन हों तो मित्र, यदि मित्र भी न हो तो पुरोहित पिण्ड दान करे किन्तु क्रिया का लोप न करे ॥१७॥ जिनका कोई भी न हो ऐसा अनाथ मित्र की स्त्री अथवा पुरुष कोई भी क्रिया करे तो उसे करोड़ यज्ञ का फल मिलताहै ॥१८॥पिताके

पुत्रवत्यः स्युतेनैकेनसुतेनहि ॥१६॥ सर्वेषांपुत्रहीनानां मित्रः पिंडंप्रदापयेत् । क्रिय लोपोनकर्तव्यः सर्वा भावेपुरोहितः ॥ १७ ॥ स्त्रीवाथपुरुषः कश्चिदिष्टस्यकुरुतेक्रियाम् अनाथप्रेतसंस्कारात्कोटियज्ञफलं लभेत ।१८। पितुःपुत्रेणकर्तव्यंदशगात्रादिकंखग ॥ मृतेज्येष्ठेप्यतिस्नेहान्नकुर्वीतपितासुते ।०६। बहवोपियदापुत्राविधिमेकः समाचरेत् । दशगात्रंसपिंडत्वंश्राद्धान्यन्यानिषोडश । २० । एकेनैवतुकार्याणि-सविभक्तधनेष्वपि ॥ विभक्तैस्तुपृथक्कार्यंश्राद्धंसांवत्सरादिकम् । २१ । तस्मज्ज्येष्ठः सुतोभक्त्या

दशगात्रादि कर्म पुत्र होने पर पुत्र ही करे यदि पिता की जीवितावस्था में ज्येष्ठ पुत्र की मृत्यु हो जाय तो पिता स्नेह से भी पुत्र के कर्म न करे किसी अन्य से करावे ॥१६॥ यदि पिता के बहु पुत्र हों तो प्रेत क्रिया बड़ा पुत्र करे। दश गात्र, सपिण्डी षोड़शी अन्य आदि श्राद्धभी बड़ा पुत्र करे ॥२०॥ धनके बटवारा होजाने पर पिताके प्रेतक्रियादि कर्म बड़ा पुत्र करे इसी प्रकार १२ महीनोंके कर्म कर लेने पर फिर वार्षिक श्राद्धादिकर्म भिन्न भिन्न सब पुत्र करे॥ २१ ॥ अतएव ज्येष्ठ पुत्र भक्ति पूर्वक

दशगात्र कर्म करने के लिये प्रस्तुत हो । वह एक समय भोजन भूमि शयन करे ब्रह्म परायण होकरसर्वदापवित्र रहे ॥२२॥ सात बार पृथ्वी की परिक्रमा जितना फल माता पिता की क्रिया करने से पुत्र प्राप्त करता है ॥२३॥ प्रेत क्रिया दशगात्र से लेकर बारह महीनों के श्राद्धादि कर्म करने से पुत्र गया श्राद्ध के फल को पाता है ॥२४॥ दशगात्र कर्म में—कूआ, तालाब, बाग,

दशगात्रंसमाचरेत् । एकभोजीभूमिशायीभूत्वाब्रह्मपरःशुचिः ।२२। सप्तवारंपरिक्रम्यधरणीपत्फलंलभेत् ॥ क्रियांकृत्वापितुर्मातुस्तत्फलंलभतेसुतः ॥ २३ ॥ आरभ्यदशागात्रंचयावद्वैवार्षिकं भवेत् ॥ तावत्पुत्रः क्रियांकुर्वन्गयाश्राद्धफलंलभेत् ॥ २४ ॥ कूपेतड़ागेवारामेतीर्थेदेवालयेपिवा । गत्वामध्यमय मेतुस्नानं कुर्यादमन्त्रकम् । २५ । शुचिर्भूत्वावृक्षमूलेदक्षिणाभिमुखःस्थितः ॥ कुर्याच्चवेदिकातत्रगोमयेनोपलिप्यताम् ॥२६॥ तस्यांपर्णेदर्भमयंस्थापयेत्कौशिकंद्विजं । तंपाद्यादिभिरभ्यर्च्यप्रणमेदतसीतिच ॥२७॥ ततग्रेचततोदत्वापिंडार्थकोशमासनम् । तस्योपरिततः पिंडनामगोत्रोपकल्पितम् ।२८। दद्यात्तंडुल-

तीर्थ अथवा देवालय में मध्यान्हके समय जाकर अमंत्रक स्नान करे ॥ २५ ॥ पवित्र होकर किसी पेड़ के नीचे दक्षिण भिमुख होकर बैठे गोबर से लीपकर वहां एकवेदी बनावे ॥२६॥ उसपर पत्तेबिछाकर कुशासनबिछावे उस आसन पर कौशिक ब्राह्मण को बिठाकर पाद्यादि से पूजनकर "अतसा" इस मन्त्र द्वारा प्रणाम करे ॥ २७ ॥ उसके आगे पिंड रखने के लिए एक रेशमी वस्त्र बिछावे । उसी पर नाम एवं गोत्र का उच्चारण कर पिंड रखे ॥ यह पिंड रांधे हुए चावल अथवा जौ के

आटे के हों उन पर चन्दन एवं कनेर के पुष्प चढ़ाकर, धूप, दीप, नैवेद्य, मुख वास एवं दक्षिणा रखे ॥२६॥ काकान्न रखकर फिर दूध मिले पानी की अंजली हाथमें लेकर यह कहे कि अमुक नाम के प्रेतको मुझसे दिया हुआ यह प्राप्त हो ॥३०॥ फिर अन्न, जल, वस्त्र, हव्य और भी जो कुछ देना चाहे वह सब प्रेत नाम से देवे। यह सब मृतक के लिए अनन्त फलदायक है

पाकेनयवपिष्टे नवासुतः । उशीरंचदनं मृंगराजपुष्पनिवेदयेत् । धूपं दीपंचनैवेद्यं मुखवासंचदक्षिणाम् ।२६। काकान्नं पयसोः पात्रेवर्धमानजलांजलीन् । प्रेतायामुकनाम्नेत्वमद्दत्तमुपतीष्ठितु ॥३०। अन्नं वस्त्रं जलंहव्यमन्यद्वादीयतेचयत् । प्रेतशब्देनयद्दत्तंमृतस्यानंतदायकम् । ३१ । तस्मादादि देमादूर्ध्व प्रा क्सपिंडीविधानतः । योषितः पुरुषस्यापिप्रेतशब्दंसमुच्चारेत् ।३२। प्रथमेहनियत्पिंडोदीयतेविधि पूर्वकम् । तेनैवविधिनान्नेननवपिंड न्प्रदापयेत् । ३३ । नवमेदिवसेचैवसपिण्डैः सकलैर्जनैः तैला भ्यंगः प्रकर्तव्यो मृतकस्वर्गकाम्यया ॥३४॥ बहिःस्नात्वागृहीत्वाचदूर्वालाजसमन्विताः अग्रतःप्रमदा

॥३१॥ इसी कारण प्रथम दिन से लेकर सपिंडी विधान तक मृतक स्त्री हो अथवा पुरुष उसे प्रेत शब्द से उच्चारण करे।३२। प्रथम दिन जिस विधि से पिंडदान हुआ हो उसी विधि से अन्न के नौपिंड देवे ॥ ३३ ॥ फिर नवम् दिन सगोत्री स्त्री पुरुष सबके सब मृतककी स्वर्ग की कामना से तैलाभ्यंग करे ।३४। तैलाभ्यँगद्वारा बाहरके बाहर स्नान करके हाथ में दूर्वा

लाजा लेकरसबसे आगे स्त्रियोंको करकेमतकके घर आवें ॥३५॥ दूर्वा तथा लाजाको उसके घरमें रखतेहुएयह कहें कि इन दूर्वाओं

लाजा लेकर सबसे आगे स्त्रियोंको करके मृतकके घर आवे ॥३५॥ दूर्वा तथा लाजाको उसके घरमें रखते हुए यह कहे कि इन दुर्वाओं की भांति तुम्हारा कुल बढ़े और लाजाओंकी भांति सुशोभित हो ।३६। फिर दशमदिन मांसका पिंड देवे कलियुग में मांस पिंड देने के निषेध वाक्य से उसके स्थान पर उड़द का पिंड देवे । दशमदिन में सब बान्धवों का एवं क्रिया करने वाले पुत्र का मुंडन

कृत्वासमागच्छेन्मृतालयम् ॥३५॥ दूर्वावत्कुलवृद्धिस्तेलाजाइवविकासिता ॥ एवमुक्त्वात्यजेद्गेहेल जान्दूर्वासमन्वित न् । ३६ । दशमेहनिमांसेनपिंडंदद्य त्खगेश्वर । माषेणतन्निषेधाद्धाकलौनपलपैतृकम् ॥ ३७ ॥ दशमेदिनसेत्क्षौरंबांवानसमुडनम् ॥ क्रियाकर्तुःसुतस्यापिपुनमुंण्डनाचरेत् ॥ ३८ ॥ मिष्टान्नैर्भोजयेदेकंदिनेषुदशसुद्विजम् । प्रार्थयेत्प्रेतमुक्तिंचहरिंध्यात्वाकृतांजलिः । ३९। अलसीपुष्पसंकाशंपीतवासससमच्युतम् ॥ येनमस्यंतिगोविंदं नतेषांविद्यतेभयम् ।४०। अनादिनिधनोदेवः शंखचक्रगदाधरः ॥ अक्षय्यः पुंडरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदोभव । ४१ । इतिसंप्रार्थनामंत्रेश्राद्धांतेप्रत्यहंपठेत् । स्ना-

क्षौर होना चाहिए ॥३७॥ दशदिन पर्यन्त कौशिक ब्राह्मण को मिष्ठान्नसे भोजनकरावे प्रेत की मुक्ति के लिए हरिका ध्यान करके हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ॥३६॥ अलसी पुष्प के समान शोभायमान, पीतवस्त्र धारी, एक रस रूप, गोविन्द भगवान को जो नमस्कार करते हैं उन्हें भय नहीं रहता ॥४०॥ जन्म मृत्यु से रहित, अनादि, अनन्त शंख चक्र गदा पद्मधारी कभी क्षीण होने वाले, हे कमल नयन आप ही इस प्रेतको मोक्ष दें ॥४१॥ इस प्रकार की प्रार्थना के मन्त्र श्राद्ध के अन्त में

प्रति दिन पढ़ता रहे। फिर स्नान करके घर जाकर गौग्रास देकर फिर भोजन करे ॥४२॥ इति श्री गरुणपुराणे सारोद्धारेशास्त्रि हरिश्चन्द्र कृतयां सरला टीकायां दशगात्र विधि निरूपणे नामैकादशोऽध्यायः ॥११॥

गरुड़ बोले—हे जगदीश्वर! प्रेत के ग्यारहवें दिन कर्म एवं वृषोत्सर्ग का विधान कहें ॥१॥ श्रीभगवान बोले—ग्यारहवें

वागत्वागृहेदत्वागोग्रासंभोजनंचरेत् ।४२। इति श्रीगरुड़पुराणे सारोद्धारेदशगात्रविधिनिरूपणोनामै-कादशोऽध्यायः ।११। गरुड़ उवाच। एकादशदिनस्यापिविधिंब्रूहिसुरेश्वर। वृषोत्सर्गविधानंचवद मेजगदीश्वर।१। श्रीभगवानुवाच। एकादशेऽन्हिगंतव्यंप्रातरेवजलाशये। और्ध्वदेहक्रियासर्वाकर-णीयप्रयत्नतः।२। निमंत्रयेतब्राह्मणांश्चवेदशास्त्रपरायणान् प्रार्थयेत्प्रेतमुक्तिंचनमस्कृत्यकृतांजलिः ।३। स्नानसंध्यादिकंकृत्वाह्याचार्योऽपशुचिर्भवेत्। विधानंविधिवत्कुर्यादेकादशदिनोचितम् ।४। अमं-त्रंकारयेच्छ्राद्धंदशाहंनामगोत्रतः। एकादशेन्हिप्रेतस्यदद्यात्पिंडंसमंत्रकम् ॥ ५ ॥सौवर्णंकारयेद्विष्णु

दिन प्रातःकाल ही जलाशय आदि पर जावे, वहां बड़े यत्न से सारी और्ध्व दैहिक क्रियाकरे ॥२॥ वेद शास्त्रके ज्ञाता ब्राह्मण स्नान सन्ध्या आदिकरके शुद्धहोकर ग्यारहवें दिनका विधिपूर्वक कर्मकरावे ॥४॥दशदिन पर्यन्ततो नाम एव गोत्र का उच्चारण करके मन्त्रोंके विना ही प्रेत श्राद्ध करे ग्यारहवें दिन प्रेतको मन्त्र के साथ पिण्डदान करे ॥५॥ श्री विष्णु की स्वर्ण की मूर्ति

ब्रह्मा की चादी की रुद्र की तान्बे की यमकी लोहे की मूर्ति बनवावे ॥६॥ पच्छिम दिशा में गङ्गाजल से भर कर विष्णु कलश स्थापित करे उसके ऊपर पीत वस्त्र से सुशोभित कर विष्णु मूर्ति स्थापितकरे ।७। पूर्वदिशामें दूध एवं जल से भर कर ब्रह्म कलश स्थापित करे उसपर श्वेत वस्त्र सुशोभितकर ब्रह्मा की मूर्तिस्थापित करे ८ उत्तर दिशामें मधुघृत से भरारुद्र कलश

ब्रह्माणंगौप्यकंतथा ॥ रुद्रस्ताम्रमयः कार्योयमोलोहमयःखग ।६। पश्चिमेविष्णुकलशंगंदकसमन्वितम ॥ तस्योपरिन्यसेद्विष्णुं पीतवस्त्रेणवेष्टितम ॥ ७ ॥ पूर्वेतुब्रह्मकलशंक्षीरोदकसमन्वितम । ब्रह्माणंस्थापयेत्तत्रश्वेतवस्त्रेणवेष्टितम ।८। उत्तरस्यांरुद्रकुंभंपूरितंमधुसर्पिषा ॥ श्रीरुद्रंस्थापयेत्तत्र रक्तवस्त्रेवेष्टितम ॥६॥ दक्षिणस्यांयमघटमिद्रोदकसमन्वितम । कृष्णवस्त्रेणसंवेष्टय तस्योपरियमंन्यसेत । १० । मध्येतुमडलकृत्वास्थापयेतकौशिकसुतः । दक्षिणाभिमुखोभूत्वाऽपसव्येनतर्पयेत ।११। विष्णुविधिशिवंधर्मवेदमन्त्रैश्चतर्पयेत । होमकृत्वाचरेत्पश्चच्छ्राद्धंदशघटादिकम ॥ १२ ॥ गोदानंचततोदद्यात्पि-

स्थापित करे, उसपर लालवस्त्र सुशोभितकर श्री रुद्रमूर्ति स्थापित कर ।९। दक्षिण दिशामें तीर्थजल से परिपूर्णयमघटस्थापित कर, उस पर लाल वस्त्र सुशोभित कर यममूर्ति स्थापित करे ।१०। इन सब कलशोंके मध्य में कुशा का एक पतला बनाकर स्थापित करे कार्यकर्त्ताका पुत्रआप दक्षिणाभिमुख होकरअपशव्य होकरके तर्पण करे ॥११॥ वेद मन्त्रों द्वाराविष्णु, ब्रह्मा, शिव धर्मराज इनका तर्पणकरे विधि पूर्वक होमकरके पश्चात दशघटादिक श्राद्ध करे । १२॥ तब पितरों के उद्धारके लिए गौदान करे

और यह वचन बोले हे माधव ! मैं आपकी प्रसन्नता के लिए यह गोदान करताहूं आप प्रसन्न हो ॥१३॥ जीवितावस्था में उस पुरुषको वस्त्र, आभूषण, वाहन आदि जोकुछभी प्रियहो उनका यथा शक्ति दान करे, घृत पूर्ण कांस्यपात्र तथा सप्त धान्य भी दान करे ॥१४॥ यदि अन्त समयमें तिल आदि अष्टमहादान न किये गये हों तो उन्हें शय्या के पास रखदे फिर शय्या दान

तृणांतारणायवै ॥ गौरेषाहिमयादत्ताप्रीतयेतेऽस्तुमाधव ।१३। उपभुक्तंचतस्यासीद्वस्त्रभूषणवाहनम् ॥ घृतपूर्णंकांस्यपात्रंसप्तधान्यंतदीप्सितम् । १४ । तिलाद्यष्टमहादानमंतकालेनचेत्कृतम् ॥ शय्यासमीपेधृतं-वैतद्दानंतस्याः प्रदापयेत् । १५ । प्रक्षाल्यविप्रचरणौपूजयेद्वस्त्रादिभिः सिद्धान्नंतस्यदातव्यंमोदकाऽपूपकाःपयः ॥ १६ ॥ स्थापयेत्पुरुषं हैमंशय्योपरितदासुतः पूजयित्वाप्रदातव्यामृतशय्यायथोदिता ।१७। प्रेतस्यप्रतिमायुक्तासर्वोपस्करणैर्वृता ॥ प्रेतशय्यामयाह्येषातुभ्यंविप्रनिवेदिता ॥ १८ ॥ इत्युच्चार्यप्रदात-

के साथ सबका दान करे ॥१५॥ प्रथम ब्राह्मण के चरण धोवे फिर उसकी वस्त्राभूषणों से पूजा करे। लड्डू मालपुवे खीर आदि सीधादान करे ॥१६॥ तब कार्य कर्त्ता बिस्तर आदि उपकरणों के साथ सजी शय्या पर स्वर्ण की विष्णु मूर्ति स्थापित कर पूजाकर फिर सविधि दान करे ॥१७॥ और साथ में सारे वस्त्र आभूषणोंसे सजा कर प्रेतकी मूर्ति रखकर यह कहे कि हे विप्र ! यह प्रेत शय्या मैं तुम्हें अर्पण करताहूं ॥१८॥ यहकर किसी कुटुम्ब परिवारवाले ब्राह्मण को दे देवे फिर प्रदक्षिणा कर

प्रणाम कर विसर्जन करे ॥१९॥ इसी प्रकार शय्या दान, नव दिन का श्राद्ध, और वृषोत्सर्ग विधान, इनके करने से प्रेत परम गति पाता है ॥२०॥ ग्यारहवें दिन वृषोत्सर्ग करे उसमें वृष अंगहीन, रोगी तथा छोटा बच्चा न हो पूरेलक्षणों वाला हो॥२१॥ ब्राह्मण के वृषोत्सर्ग में रक्त नेत्र, पिंगल वर्ण श्रृंग, कंठ, खुरोंमें रक्त पेटमें श्वेत पृष्टदेश में कृष्ण वर्ण का वृषभ होना चाहिए

व्याब्राह्मणायकुटुम्बिने । ततः प्रदक्षिणीकृत्यप्रणिपत्यविसर्जयेत् ॥१९॥ एवंशय्याप्रदानेनश्राद्धेननवका-दिना । बृषोत्सर्गविधानेप्रेतोयातिपरांगतिम् ।२०। एकादशेन्हिविधिनाबृषोत्सर्गंसमाचरेत् ॥ हीनांगंरो-गिणंबालंत्यक्त्वाकुर्यात्सलक्षणम् ॥२१॥ रक्ताक्षःपिंगलोयस्तु रक्तःशृङ्गेगलेखुरे । श्वेतोदरःकृष्णपृष्ठो-ब्राह्मणस्यविधीयते । २२ । सुस्निग्धवर्णोयोरक्तः क्षत्रियस्य विधीयते ॥ पीतवर्णश्चवैश्यस्यकृष्णः शूद्रस्यशस्यते । २३ । यस्तुसर्वांगिपिंगः स्यात्श्वेतः पुच्छेपदेषुच । सपिंगोबृष इत्याहुः पितृणांप्रीति-वर्धनः ।२४। चरणास्तुमुखंपुच्छंयस्यश्वेतानिगोपतेः । लाक्षारस सवर्णोयः सनीलइति कीर्तितः

॥२२॥ क्षत्रियोंके लिए सुन्दर एवं स्निग्ध लाल वृषभहो, वैश्यके लिये पीत शूद्र के लिये कृष्णवर्ण वृषभ होना चाहिए ॥२३॥ औरजो वृषभसारे अंगोंमें पीतवर्णहो पूँछतथा पाओंमें श्वेतहो उसे पिंगवृष कहते हैं पित्रीश्वरों को प्रसन्नता करता है। ॥२४॥

जिसके पांव मुख अच्छे श्वेत हों और लाख के रङ्ग की भांति, लाल हों ऐसा वृषभ नील वृष कहा जाता है ॥२५॥ जो सारे अङ्गों में लाल वर्ण हो, मुख, पुच्छ श्वेत हों, सींग एवं खुर पीत वर्ण हो वह रक्त नील वर्ण कहा जाताहै ।२६। और जो सारे अङ्गों में एक वर्ण हो, पुच्छ एवं खुरों में पीत हो ऐसा वृषभ पूर्वजों के उद्धार करने वाला नील पिंग वृष कहलाता है ॥२८॥

॥ २५ । लोहितोयस्तुवर्णेनमुखेपुच्छेचपांडुरः ॥ पिंगः खुरविषाणाभ्यांरक्तनीलोनिगद्यते ॥२६॥ सर्वांगेष्वेकवर्णोयः पिग पुच्छेखुरेषुय । तंनीलपिंगमित्याहुःपूर्वजोध्दारकारकम् ॥२७॥ पारावतवर्णस्तु-ललाटे तिलकान्वितः । तंवभ्रु नीलमित्याहुः पूर्णसर्वांगशोभने ॥२८॥ नीलःसर्वशरीरेषु क्तश्चनयनद्वये । तमप्याहुर्महानीलनीलः पंचविधःस्मृतः ॥ २९ ॥ अवश्यमेवमोक्तव्योनसधार्योगृहेभवेत् ॥ तदर्थमेषांचरितलोकेगाथापुरातनी ॥३०॥एष्टव्याबहवःपुत्रायद्येकोपिगयांव्रजेत् ॥ गौरीविवाहयेत्कन्यां

सारे शरीर में नील वर्ण तथा दोनों नेत्रों से लाल हो ऐसा वृषभ महानील कहाता है । नील वृषभपांच प्रकार के होते हैं ।२९। इस प्रकार का घर में नील वृषभ यदि पैदा हो तो उसे घरमें न रखकर दाग देकर छोड़ देना । इसके लिए एक पुरातनी कथा भी है ॥३०॥ संसार में बहुत से पत्र होने की इच्छा रखनी चाहिये उनमें से कोई तो गया पहुँचायेगा । आठ वर्ष की होने पर

गौरी कन्या का विवाह एवं नील वृषभ का त्याग करे ॥३१॥ जो पिता के निमित्त वृषोत्सर्ग करता है, एवं गया श्राद्ध करता है वही पुत्र है, इन दोनों कार्यों को न करने वाले पुत्र विष्ठा समान हैं ॥ ३२ ॥ रौरव आदि नरकों में जिसके पूर्वज पड़े हों उन सबका २१ पीढ़ियों तक वृषोत्सर्ग द्वाराउद्धार हो जाताहै ॥३३॥स्वर्गमें गयेहुए पितर भी अपने कुल में वृषोत्सर्ग कर्म की

नीलंवावृषमुत्सृजेत् ।३१। सएवपुत्रोमंतव्योवृषोत्सर्गंतुयश्चरेत् ॥ गयायांश्राध्ददाताचयोऽन्योविष्ठासमः किल ॥ ३२ ॥ रौरवादिषुकेचित्पच्यंतेयस्यपूर्वजाः ॥ वृषोत्सर्गेणतान्सर्वांस्तारयेदेकविंशतिम् ।३३। वृषोत्सर्गंकिलेच्छंति पितरःस्वर्गताअपि ॥ अस्मद्वंशेसुतः को पिवृषोत्सर्गंकरिष्यति ॥३४॥ तदुत्सर्गाद्वयंसर्वेयास्यामः परमांगतिम् ॥ सर्वेयज्ञेषुचास्माकंवृषयज्ञोहितक्रिदः।३५।तस्मात्पितृविमुक्त्यर्थंवृषयज्ञंसमाचरेत । यथोक्तेनविधानेनकुर्यात्सर्वप्रयत्नतः । ३६ । ग्रहाणांस्थापनंकृत्वातत्तन्मत्रैश्चपूजनम् ।

इच्छा रखतेहैं॥३४॥इसीवृषोत्सर्ग द्वाराही वे सबकहते हैं कि हम सदगति पांयगे । सब यज्ञोंमें केवल वृषयज्ञ ही मुक्ति प्रदाय कहै ॥३५॥पितरोंके उद्धारके लिए प्रयत्न पूर्वक विधानके साथ वृषयज्ञ अवश्य करे यदि वहां वृषभ न मिले तो दूसरे देश से मंगावे ॥३६॥ इसयज्ञ से पहिले सब ग्रहों की स्थापना करके मन्त्रों द्वारा पूजन करे फिर होम शास्त्र विधि से सवत्सा गौ का पूजन

कर।।३७।। तदनुसार एक बत्स तथा एक बत्सी को लाकर उन दोनों को कंकण बांधे वैवाहिक विधि के साथ उस समय एक स्तम्भ रोपित करे ।।३८।। उस बत्स बत्सी को रुद्र कलश के जल से स्नान करावे । गन्ध अक्षतादि से पूजन करके उनकी प्रदक्षिणा करे ।। ३९ ।। वृषभ के दक्षिण में त्रिशूल का चिन्ह करे वाम पार्श्व में चक्र का चिन्ह करे । फिर छोड़ कर एवं

होमंकुर्याद्यथाशास्त्रं पूजयेद्वत्समातरः ।३७। वत्संवत्सींसमानाय्यबध्नीयात्कंकणंतयोः । वैवाह्येनविधानेनस्तंभमारोपमेत्तदा । ३८ । स्नापयेच्चवृषंवत्सींरुद्रकुंभोदकेनच ।। गंधमाल्यैश्चसंपूज्यकारयेच्चप्रदक्षिण त् । ३९ । त्रिशूलंदक्षिणेपार्श्वेवामेचक्रंप्रदापयेत् । तंविमुच्यांजलिवद्धावापठेन्मंत्रमिमसुतः ।४०। धर्मस्त्वंवृषरूपेणब्रह्मणानिर्मितः पुरा । तवोत्सर्गप्रदानेनतारयस्वभवार्णवात् ।।४१।। इति मन्त्रान्नमस्कृत्यवत्संवत्सींसमुत्सृजेत् । वरदोहंसदातस्यप्रेतमोक्षंददामिच ४२। तस्मादेषप्रकर्तव्यस्तत्फलंजीवतोभवेत् अपुत्रस्तुस्वयंकृत्वासुखंयातिपरांगतिम् ।४३।। कार्तिकादौशुभेमासेचोचोत्तरायणगेरवौ । शुक्लपक्षेऽथवा-

हाथ जोड़कर इस मन्त्र को पढ़े ।।४०।। हे वृषभ ! आप धर्म हो आपको वृषभ रूप से पहिले ब्रह्मा ने रचना की । आपके ही उत्सर्ग प्रदान से मुझे संसार समुद्र से पार करो ।।४१।। इस मन्त्र द्वारा नमस्कार करके बत्स बत्सी को छोड़ दे । इस प्रकार करने वाले को भगवान ने कहा मैं सर्वदा वर देता हूं मोक्ष देता हूं ।।४२।। जिसके पुत्र न हो तो वह अपने जीते जी इस कर्म को अपने हाथों करले । पुत्र हो तो वह करे दोनों को परम फल प्राप्त होताहै ।।४३।। जीते जी अपने हाथ से करना हो तो

कार्तिक आदि मास उत्तरायण शुक्लपक्ष में, अथवा कृष्णपक्ष द्वादशी आदि तिथि हों ॥४४॥ सूर्य चन्द्र के ग्रहण का पर्व पुन्य तीर्थ स्थान पुण्य तिथि, दोनों अयन, मकर, कर्क, मेष, तुला राशि की संक्रांति का पर्व श्रेष्ठ है ॥ ४५ ॥ उपरोक्त पर्वों में से किसी दिन शुभ मुहूर्त शुभ लग्न में पवित्र देशमें एकाग्रचित्त विधिज्ञ शुभ लक्षण ब्राह्मणको बुलाकर कर्म करावे ॥४६॥

कृष्णेद्वादश्यादितिथौतथा।४४।ग्रहणद्वितयेचैवपुण्यतीर्थेऽयनद्वये । विषुवद्दिनयेच पिवृषोत्सर्गसमाचरेत् । ४५ । शुभलग्नेमुहूर्तेचशुचौदेशेसमाहतः । ब्राह्मणंतुसमाहूयविधिज्ञंशुभलक्षणम् ॥ ४६ ॥ जपैर्होमैस्तथा दानैः प्रकुर्याद्देहशोधनम् । पूर्ववत्सकलंकृत्यंकुर्याद्धोमादिलक्षणम् ॥ ४७ ॥ शालिग्रामचसंस्थाप्यवैष्णवं श्राद्धमाचरेत् । आत्मश्राद्धंततः कुर्याद्दद्याद्दानं द्विजन्मने ॥४७। एवंयःकुरुतेपक्षिन्नपुत्रश्चापिपुत्रवान् ॥ सर्वकामफलंतस्यवृषोत्सर्गात्प्रजायते ।४९। अग्निहोत्रादिभिर्यज्ञैर्दानैश्चविधैरपि ॥ नतांगतिमवाप्नोति वृषोत्सर्गेणयांलभेत् । ५० । बाल्यकौमारपौगंडेयौवनेवार्द्धकेकृतम् ॥

जप हवन दान आदि द्वारा देह को शुद्धि करावे फिर पहिले की हुई रीतिके अनुसार हवन आदि सबकर्म काण्ड करावे ॥४७॥ श्रीसालिगराम की मूर्ति स्थापन करके विष्णु यज्ञ एवं श्राद्ध करे, फिर अपना श्राद्ध करे इसीप्रकार ब्राह्मणों को दान देवे ॥४८॥ इसी प्रकार हे गरुड़ ! इसके करने से अपुत्र भी पुत्रवान होता है । इसी वृषोत्सर्ग से सब मनोरथ पूर्ण होते हैं ॥४९॥ अग्निहोत्रादि यज्ञ एवं अनेकों दान करनेसे भी वह गति नहीं पाता जिसे वृषोत्सर्ग करने से पाता है ।५०। बाल, कौमार, यौवन

वृद्धावस्था में किये हुये सब पाप इसी वृषोत्सर्ग के करने से नष्ट हो जाते हैं ॥५१॥ मित्र द्रोह कृतघ्नता, मद्यपान, गुरु पत्नी गामी ब्रह्महत्या, स्वर्ण की चोरी आदि महा पाप, इसी वृषोत्सर्ग द्वारा नष्ट हो जाते हैं ॥५२॥ हे गरुड़! तीनों लोकों में वृषोत्सर्ग के समान और कोई पुण्य नहीं इस यज्ञ को अतः सबसे विशेष प्रयत्न के साथ करे ॥५३॥ पति एवं पुत्रों

यत्पापंतद्विनश्येतवृषोत्सर्गान्नसंशयः ॥५१॥ मित्रद्रोहाकृतघ्नश्चसुरापोगुरुतल्पगः ॥ ब्रह्महाहेमहारीच-वृषोत्सर्गात्प्रमुच्यते ॥ ५२ ॥ तस्तात्सर्वप्रयत्नेनवृषयज्ञंसमाचरेत्। वृषोत्सर्गसमंपुण्यं नास्तितादृर्यं जगत्रये । ५३ । पतिपुत्रवतीनारीद्धयोरग्रेमृतायदिवृषोत्सर्गंनवैकुर्याद्द्याद्गांचपयिस्वनीम् ॥ ५४ ॥ वृषमंताहये-घस्तुस्कंधेपृष्ठेचखेचर । सपतेन्नरकेघोरेयावदाभूतसंप्लवम् ।५५। वृषभंताडपेद्यस्तुनिर्दयोमुष्ठियष्टिभिः ॥ सनरः कल्पर्यन्तंमुंजतेयमयातनाम् ।५६। एवंकृत्वावृषोत्सर्गंकुर्यांच्छ्राद्धानिषोडश ॥ सपिण्डीकरणा

के जीते जी सौभाग्यवती स्त्री की मृत्यु हो तो उसके लिये वृषोत्सर्ग न करे। दूध देने वाली गौ दान करे ॥५४॥ जो पुरुष वृषभके कन्धों तथा पीठ पर भारलाद कर चलता है वह प्रलय होनेतक घोर नरक में पड़ता है ॥५५॥ और जो पुरुष वृषभ को निर्दय होकर मुक्का अथवा डण्डेसे पीटताहै वह मनुष्य कल्पपर्यन्त यमयातना भोगता है ।५६। इसी प्रकार वृषभ के महात्म्य

को समझकर हे गरुड़ वृषोत्सर्ग करे फिर सपिंडीश्राद्ध से पूर्व षोडशश्राद्धकरे अब ॥५७॥ ये षोडश श्राद्ध तीन प्रकार के होते हैं पहिला पिंड मृत्यु स्थान पर दूसरा द्वार देश में तीसरा अर्ध मार्ग में, चौथा चिता में उसके अनन्तर दशान्ह के दश पिंड इस प्रकार १६ पिंड हुए ॥५८॥ ये पहिले प्रकार के १६ मलिन पिंड कहलाते हैं। और दूसरे १५ पिंड मध्य के हैं।

दर्वाक्रदहंकथयामिते ।५७। स्थानेद्वारेर्धमार्गे चचितायाशवहस्तके। अस्थिसंचयनेषष्ठोदशपिंडादशाह्निकाः ॥५८॥ मलिनंषोडशंचैतत्प्रथमंपरिकीर्तितम् ॥ अन्यच्चषोडशंमध्येद्वितीयंकथयामिते ॥ ५९ ॥ प्रथमं विष्णवेदद्यात्द्वितीयं श्रीशिवायच। याम्यायपरिवारायतृतीयंपिंडमुत्सृजेत् । चतुर्थंसोमराजायहव्यवाहाय पंचमम ॥ कव्यवाहायषष्ठंच दद्यात्कालायसप्तमम ।६१। रुद्रायचाष्टमंदद्यान्नवमंपुरुषायचा ॥ प्रेतायदशमंचैवैकादशंविष्णवेनमः ॥ ६२ ॥ द्वादशंब्रह्मणेदद्याद्विष्णवेचत्रयोदशम ॥ चतुर्दशं शवायैवयमायदश

उनका विधान तुझे कहता हूं ॥५९॥ उनमें पहिला पिण्डविष्णु के लिए, दूसरा शिवके लिये, तीसरापिण्डयमके परिवार केलिये देवे ॥६०॥ चौथा चन्द्रमाको, पांचवां अग्निको, छटा कव्य वाहकी सातवां कालको पिंड देवे ॥६१॥ आठवां रुद्र को नववां पुरुष परमेश्वरको दशमा प्रेतको, ग्यारहवां विष्णु को पिण्ड देवे ॥६२॥ बारहवां ब्रह्मा को तेरहवां विष्णु को, चौहदवां शिव को

पन्द्रहवा यम को देवे ॥६३॥ सोलहवां पिंड उस पुरुष को देवे । ये सोलह पिंडदान तत्त्व वेत्ताओं ने मध्यम कहे हैं ॥ ६४ ॥ अब तीसरे प्रकार के उत्तम हैं वे बारह महीनों के बारह पिंडदान, एक पन्द्रह दिन का पाक्षिक, और एक डेढ़ महीने का त्रिपाक्षिक साढ़े पांच महीने का एक न्यून षाण्मासिक, और साढ़े ग्यारह महीने का एक न्यूनाब्दिक पिंड दान ॥ ६५ ॥

पंचकम् ॥ ६३ ॥ दद्यात्तत्पुरुषायेवपिंडंषोडशकंखग । मध्येषोडशकंप्राहुरेतत्तत्त्वविदोजनाः ॥ ६४ ॥ द्वादशंप्रतिमासेषुपाक्षिकंच त्रिपाक्षिकम । न्यूनषाण्मासिकंपिंडंदद्यान्न्यूनाब्दिकंतथा ॥६५॥ उत्तमंषोडशंचैतन्मयातेपरिकीर्तितम् अपपित्वाचरुंतार्क्ष्यकु देकादशेहनि । ६६ । चत्वारिंशत्तथैवाष्टौश्राद्धंप्रेतत्वनाशनम । यस्यजातंविधानेनसभवेत्पितृपंक्तिभाक् । ६७ । पितृपंक्तिप्रवेशार्थं कारयेत्षोडत्रयम् ॥ दतच्छ्राध्दविहीनश्चेत्प्रेतोभवतिसुस्थिरम् ॥६८॥ यावन्नदीयतेश्राध्दंषोडशत्रयसंज्ञकम ॥ स्वदत्तंपरदत्तं-

ये १६ पिंडदान उत्तम षोड़शी कहलाते हैं । ग्यारहवें दिन चावल चरु रांध कर पिंडदान करे ।६६। इस प्रकार के ४८ श्राद्ध मृतक के प्रेत पन को नाश करते हैं । इन्हें विधि पूर्वककरने से मृतकपितरों की पक्तिमें पहुंचता है ।६७। मृतक की पितृ पंक्ति में प्रविष्ट होने के लिए ये तीनों प्रकार की षोड़शी करे, इनके न होने पर मृतक प्रेत ही रह जाता है ॥६८॥ जब तक

ये ४८ श्राद्ध न किये जांय जब तक पुत्र आदि से किये अन्य किसी प्रकार के श्राद्ध उसे प्राप्त नहीं होते ॥६९॥ इसी कारण पुत्रको पिता के निमित्त ये ४८ श्राद्ध अवश्य करने चाहिए। पुत्र के न होने पर स्त्री अपने पति के निमित्त करे तो उसे अनन्त फल की प्राप्ति होती है ॥७०॥ श्रीभगवान कहते हैं-किजो स्त्रीअपने मृतकपतिकी और्ध्व दैहिक क्रिया एवं चयाहतथा पाक्षिक

चतावन्नं वोपतिष्ठते । ६९ । तस्मात्पुत्रेणकर्तव्यंविधिनाषोडत्रयम् ॥ भर्तुर्वाकुरुतेपत्नीतस्यश्रेयोह्यनं-तकम् । ७० । संपरेतस्ययापत्युः कुरुतेचौर्ध्वदेहिकम । चयाहंपाक्षिकश्राद्धं सासतीह्युच्यतेमया । ७१ । उपकारायसाभर्तुर्जीवत्येषापतिव्रता ॥ जीवितंसफलंतस्यायामृतंस्वामिनंभजेत । ७२ । अथकश्चित्प्रम-देनम्रियतेवह्निवारिभिः । संस्कारप्रमुखंकर्मसर्वंकुर्याद्यथाविधि । ७३ । प्रमादादिच्छया वापि न गद्धाम्रियते यदि ॥ पक्षयोरुभयोर्नागंयंचमीषुप्रपूजयेत । ७४ । कुर्यात्पिष्टमयींलेख्यांनागभोगाकृतिंभुवि । अर्चयेत्तां-

श्राद्ध स्वयं करती है, वह सती कहाती है॥७१॥ वही सती स्त्री यदि पति के इस उपकार के लिये जीवित है तो उसका जीना सफल है। वह इस कार्यके करनेसे मृतक पतिकी सेवा कर रहीहै ॥७२॥यदि कोई प्रमाद वश अग्नि जल आदि द्वारा अकाल मृत्यु हुआ हो तो उसके भी दाह आदि सभी प्रमुख कर्म करने ।७३। यदि कोई प्रमाद वश अपनी इच्छा से किंवा सर्प आदि के काटने से मर जाय तो उसके निमित्त शुक्ल कृष्ण दोनों पक्षोंकी पंचमी को नाग पूजन करे ॥७३॥ नाग पूजन में गेहूं के

आटे की पृथ्वी पर नाग की मूर्ति बनाकर उसकी सुगन्धयुक्त श्वेत पुष्प एवं च दन से पूजा करे ॥७५॥ धूपदीप दिखावे, तिल अक्षत चढ़ावे पिसे आटे का नैवेद्य बनाकर रखे कच्चा दूध भी रखे ॥७६॥ शक्ति हो तो स्वर्ण की नाग मूर्ति बनवा कर पूजा करके गौ के साथ ब्राह्मण को दान दे फिर हाथ जोड़े नागराज की प्रसन्नता माने ॥७७॥ इसके अनन्तर उस अकाल मृत्यु से

सितैः पुष्पैः सुगंधैश्चंदनेनच । ७५ । प्रदद्याद्धूपदीपौचतण्डुलांश्चतिलांक्षिपेत् आमपिष्टंचनैवेद्य क्षीरंचविनिवेदयेत् । ७६ । सौवर्णशक्तितोनागंगांचदद्यात् द्विजन्मने ॥ कृतांजलिस्तोत्रूयात्प्रीयतांनागराडिति । ७७ । पुनस्तेषांप्रकुर्वीतनारायणबलिक्रियाम् ॥ तयालभंतेस्वर्वासंमुच्यतेसर्वपातकैः ॥७८॥ एवं सर्वक्रियांकृत्वाघटंसान्नं जलान्वितम् । दद्यादाब्दं यथासंख्यापिंडान्वासजलान्क्रमात् ।७९। एवमेकादशेकृत्वाकुर्यात्सपिंडनंततः । शय्यापदानांदानं चकारयेत्सूतकेगते ।८०। इतिश्रीगरुडपुराणेसारोद्धारे एकादशदिनविधि निरूपणोनाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥ गरुड़उवाचसनपिंडन विधिंब्रूहिसूतकस्य ॥

मृत पुरुष के उद्धार के लिये नारायण बलि करे। इससे पापों से छूट कर वह स्वर्ग पाता है ॥७८॥ इस क्रिया के अनन्तर वर्ष पर्यन्त अन्न तथा जलके साथ एक घट प्रति दिन दान करे। अथवा ३६० जल की अंजलि देवे ॥७९॥ इसी प्रकार ग्यारहवें दिन पिंडएवं अञ्जलि देकर १२वें दिनसपिण्डी करे जबसूतक निकल जावेतो शय्यादान,पददान आदि से धर्म शांति करे ॥८०॥ इति श्रीगरुड़पुराणे शास्त्रि हरिश्चन्द्र कृतयां सरला टीकायां एकादशाह विधि निरूपणोनामद्वादशोध्यायः ।१२।

गरुड़जी कहते हैं कि सपिंडन विधि, सूतक निर्णय शय्या पद दान आदि की सामिग्री यह सब कहिये ।१। श्रीभगवान बोले जिस सपिण्डन आदि क्रिया करने में मृतक प्रेत नाम छोड़कर पितृगण में प्रविष्ट हो जाता है वह मैं सुनाता हूं ॥२॥ जिन्हें पिता पितामह के नाम से अथवा वसुरुद्र आदित्य के नाम से सपिण्डन पिण्ड नहीं मिले, उन्हें पुत्रों द्वारा किये गये

च निर्णयम् । शय्यापदानं सामग्री तेषाचमहती प्रभो । १ । श्री भगवानुवाच । शृणुतार्क्ष्य प्रवक्ष्याभि सापिंड्यादखिलांक्रियाम । प्रेतनामपरित्यज्ययया पितृगणेविशेत् ॥२॥ नपिंडोमिलितोयेषांपितामहशिवादिषु । नोपतिष्ठंतिदानापुत्रैर्दत्तान्यनेकधा । ३ । अशुध्दःस्यात्सदापुत्रोनशुध्द्यतिकदाचन॥ सूतकंननिवर्त्तेतसपिंडीकरणंविना॥४॥ तस्मात्पुत्रेणाकर्तव्यंसूतकांतेसपिंडनम् सूतकंतेप्रवक्ष्यामिसर्वेषांचयथोचितम् ।५। ब्राह्मणस्तुदशाहेनक्षत्रियोद्वादशेहनि ॥ वैश्यः पंचदशाहेनशूद्रोमासेनशुध्द्यति ॥ ६ ॥

अन्यदान प्राप्त ही नहीं होते हैं ।।३।। सपिंडन न करने से उसका पुत्र कभी शुद्ध नहीं होता सपिंडी के बिना सूतक नहीं हटता ॥४॥ अतएव सूतकाल में सपिंडन करना आवश्यक है। सब वर्णों में जितनी सूतक होनी चाहिए वह कहता हूं ॥ ५ ॥ ब्राह्मण दशदिन से, क्षत्रिय बारह दिन से, वैश्य पन्द्रह दिन से शूद्र एक मास से शुद्ध होता है ॥६। प्रेतसूतकमें ४ पीढ़ी तक

के गोत्री दश दिन से सात पीड़ी तक के गोत्री तीन रात्रि से एवं दश पीड़ी तक के गोत्री स्नान मात्र से शुद्ध हैं ॥७॥ फिर विस्तारसे कहतेहैं किपिता पितामहवृद्ध प्रपितामहवृद्धप्रपितामहआदि ४ पीड़ी तक को १० रात्रि तक का इससे पांचवी पीड़ी को ६ रात्रि का छटी पीड़ी तक को ४ रात्रि का सातवीं पीढ़ी तकको ३ दिनका सूतक लगता है ॥८॥ आठवीं पीढ़ी को १ दिन

दशाहेनपिंडास्तुशुद्ध्यन्तिप्रेतसूतके । त्रिरात्रेणसंकुल्यास्तुस्नात्वाशुद्ध्यन्तिगोत्रजः ।७ चतुर्थेदशरात्रंस्यात्सपिण्डाःपुंसिपंचमे ॥ षष्ठेचतुरहःप्रोक्तंसप्तमेचदिनत्रयम् ।।८। अष्टमेदिनमेकंतुनवमेप्रहरद्वयम् । दशमेस्नानमात्रंहिमृतकंजन्मसूतकम् ।९। देशांतरगतः कश्चिच्छृणुयाद्योह्यहर्निशम् । यच्छेषंदशरात्रस्यतावदेवाशुचिर्भवेत् । १०॥ अतिक्रांतेदशाहेतुत्रिरात्रमशुचिर्भवेत् संवत्सरेव्यतीतेतुस्नानमात्राद्विशुद्ध्यति ।११। आद्यभागद्वयंयावन्मृतकस्यचसूतके ॥ द्वितीयेहतितेचाद्यात्सूतकाच्छुद्धिरिष्यते

का नवमी पीढ़ी को २ प्रहर का दशमी पीढ़ीको स्नान मात्र का सूतक लगता है। यह क्रम मृतक एवं जन्म के सूतक का एक जैसा है ॥९॥ विदेश गये हुए व्यक्ति को जिस दिन सूतक सुने उस दिन से बाकी की दश रात्रि तक का सूतक होता है ॥१०॥ दश दिन निकल जाने पर सुनने में आवे तो ३ दिन का सूतक है। वर्षके व्यतीत होनेपर सुनाईदेता स्नान मात्र से शुद्धि है ॥११॥ अब तक सूतक पर दूसरी सूतककी व्यवस्था कहते हैं। एक के मर जाने पर ६ दिनके मध्यमें होकिसी दूसरे की मृत्यु

हो तो पहिले की सपिण्डी के साथ दूसरे की सपिंडी होजाती है। यदि पहिली मृत्युके ६ दिन पीछे किसी की मृत्यु हो तो दूसरे

हो तो पहिले की सपिण्डी के साथ दूसरे की दिन पीछे किसी की मृत्यु हो तो दूसरे की सपिंडी के साथ पहिले की सपिंडी शुद्धि होती है ॥१२॥ बालकों की मृत्यु के विषय में जिन बच्चों के अभो दांत नहीं निकले उनकी मृत्यु होने पर स्नान मात्र से शुद्धि होती है । चौल कर्म तक एक रात्रि से शुद्धि है ।

आदन्तजननात्सद्यआचौलान्नैशिकीस्मृता । त्रिरात्रमाव्रतादेशाद्दशरात्रमत्रमतः परम ।१३। आजन्मन-स्तुचौलांतंयत्रकन्याविपद्यते । सद्यः शौचंभवेत्तत्रसर्ववर्णेषुनित्यशः ।१४। ततोवाग्दानपर्यंतंयावदेकाह मेवहि । अतः परंप्रवृद्धानांत्रिरात्रमितिनिश्चयः ।१५। वाग्प्रदानेकृतेत्वत्रज्ञेयंचोभयतस्त्र्यहम ॥ पितुर्व रस्यचततोदत्तानांभर्तुरेवहि ।१६। षण्मासाभ्यन्तरेयवद्गर्भस्रावोभवेद्यदि । तदामाससमैस्ता

यज्ञोपवीत से प्रथम मृत्यु होने पर ३ रात्रि तक का सूतक है । यज्ञोपवीत के अनन्तर १० रात्रि तक का सूतक है । ॥ १३ ॥ कन्या के विषय में जन्म से लेकर चौल कर्म तक २७ महीनों तक कन्या की मृत्यु में सब वर्णों में केवल स्नान मात्र से शुद्धि है ॥४१॥ जन्म से वाग्दान पर्यन्त कन्या की मृत्यु में एक दिन का सूतक है । वाग्दान के अनन्तर बड़ों को कन्या के पिता एवं पति गृह में ३ दिन का सूतक लगता है ॥१५॥ कन्या के वाग्दान होने पर तो पिता एवं भर्ता दोनों पक्षों में तीन दिन का सूतक होता है विवाह हो जाने पर केवल पति के पक्ष में सूतक लगता है ॥१६॥ यदि किसी स्त्री का

छः महीनों के मध्य में गर्भ स्राव हो जाय तो जितने महीनों का गर्भ हो उतने दिन का उस स्त्री को सूतक रहता है ॥१७॥ अपनी जाति में कहा हुआ अशौच स्त्रियों में होता है किन्तु पिता को छः महीनों के अनन्तर गर्भ पात होने पर गोपियों को स्नान का सूतक होता है ॥१८॥ कलियुग में शास्त्रों का यही निश्चय है कि चारों ही वर्णोंको जन्मतथा मृत्युका सूतक दश

सांदिवसैः शुद्धिरिष्यते ॥१७॥ अनउर्ध्वं स्वजात्युक्तमाशौचंतासुविद्यते । सद्यःशौचंसपिंडानांगर्भस्यपत नेसति । १८ । सर्वेषामेववर्णानांसूतकेमृतकेपिवा । दशाहाच्छुद्धिरित्येषकलौशास्त्रस्यनिश्चयः ॥ १९ ॥ आशीर्वाददेवपूजांप्रत्युत्थानाभिवादनम् । पर्यंकेशयनंस्पर्शनंकुर्यान्मृतसूतके ॥ २० ॥ संध्यादानंजपंहो मंस्वाध्यायंपितृतर्पणम् ।ब्रह्मभोज्यंव्रतंनैवकर्तव्यंमृतसूके ।२१। नित्यंनैमित्तिकंकाम्येसूतकेयः समाचरेत् ॥ तस्यपूर्वंकृतंनित्यंकृतंकर्माविनश्यति ॥ २२ ॥ व्रतिनोमंत्रपूतस्यसाग्निकस्यद्विजस्यच ॥ ब्रह्मनिष्ठस्यच

दिनों का है ॥१९॥ सूतक लगने पर किसी को आशीर्वाद नहीं देना चाहिए न देवपूजन करे न किसी के आगे उठे, किसी को नमस्कार, खाट पर सोना किसी के साथ स्पर्श मृत सूतक में न करे ॥२०॥ सन्ध्या, दान, जप, होम, स्वाध्याय, तर्पण ब्रह्मभोज्य, व्रत आदि मृत सूतक में वर्जित है ॥२१॥ जो नित्य नैमित्तिकादि कर्म मृतकमें करते हैं उनके सब कर्म नष्ट हो जाते हैं ।।२२॥ और जो ब्रह्मचारी चन्द्रायणादि व्रतनिठ, महामन्त्र से पवित्र गायत्रादि पुरश्चरण कर्ता अग्नि होत्री ब्राह्मण,

ब्रह्मनिष्ठ सन्यासी तथा राजा इन्हें सूतक नहीं लगता ॥२३॥ विवाह, उत्सव यज्ञ आदि के आरम्भ होने पर मृत्यु हो जाय

जाते हैं ।२३। और जो ब्रह्मचारी चन्द्रायणादि व्रतनिष्ठ, महामन्त्र से पवित्र

ब्रह्मनिष्ठ सन्यासी तथा राजा इन्हें सूतक नहीं लगता ।२३। विवाह, उत्सव यज्ञ आदि के आरम्भ होने पर मृत्यु हो जाय तो उससे पहिले का तैयार हुआ भोजन अशुद्ध नहीं किन्तु पीछे का अशुद्ध ऐसा मनुवाक्य है।।२४।। किसीको सूतक पड़ गयी हो यदि बेखबरी से उससे ब्राह्मण ने अन्नादिक ले लिया हो तो ब्रह्मण दोषी नहीं । देने वाला ही दोषी है ।।२५।। जो पुरुष

यतेर्नहिराज्ञांचसूतकम् । २३ । विवाहोत्सवयज्ञेषुजातेचमृतसूतके ॥ तस्यपूर्वंकृतंचान्नंभोज्यंतन्मनुरब्रवीत ।।२४।। सूतकेश्स्तुगृह्णातितदज्ञानानान्नदोषभाक् । दातादोषमवाप्नोतियाचकायददन्नपि ।।२५।। प्रछाद्यसूतकंयस्तुददात्यन्नंद्विजामचज्ञात्वा गृह्णंतियेविप्रादोषभजास्तएवहि ।।२६।। तस्मात्सूतकशुद्ध्यर्थंपितुः कुर्यात्सपिंडनम् । ततःपितृगणैसार्द्धंपितृलोकंसगच्छति । २७ । द्वादशाहेत्रिपक्षेवाषण्मासेवत्सरेपिवा ॥ सपिंडकरणंप्रोक्तंमुनिभिस्तत्वदर्शिभिः ॥ २८ ॥ मायातुप्रोच्यतेतादृयशास्त्रधर्मानुसारतः ।

अपना सूतक छुपा कर ब्राह्मण को अन्न दे है और ब्राह्मण भी जान बूझकर लेता है तो दोनोंही प्रायश्चित के भागीहैं ।२६। इसी कारण सूतक शुद्धि के लिए पिताकी सपिंडी करना आवश्यकहै सपिंडीके द्वारा पितृगणों के साथ उसका पितापितृ लोकमें जाता है ।।२७। सपिण्डी करने का समय तो तत्व वेत्ता मुनियों ने मृत्यु से बारहवें दिन त्रिपक्ष होने के दिन, छमासी के दिन अथवा सांवत्सरिक के दिन कहे हैं ।। श्रीभगवान बोले कि हे गरुड़ ! मैं तो धर्म शास्त्रों के अनुसार कहता हूं कि चारों वर्णों

को सपिंडन श्राद्ध बारहवेंदिना करना चाहिए ।२९। कलियुग के धर्म अनित्य हैं, मन फिरते देर नहीं लगती, पुरुषों की आयु भी कम है, शरीर अनित्य हैं, इसी कारण बारहवें दिन ही सपिंडी करना उत्तम है ॥३०॥ घर में गृह स्वामी की अथवा किसी वृद्ध की मृत्यु हो तो यज्ञोपवीतादि संस्कार एकादशी कार्तिकादि व्रत यज्ञ,होलिकादि उत्सव तथा विवाह आदि घर में न

चतुर्णामेववर्णानांद्वादशाहेसपिंडनम् । २९ । अनित्यात्कलिधर्माणांपुंसांचैवायुषःक्षयात् । अस्थिरत्वाच्छरीरस्यद्वादशाहेप्रशस्यते । ३० । व्रतबंधोत्सवादीनिव्रतस्योद्यापनानिच ॥ विवाहादिर्भवेन्नैवमृतेच गृहमेधिनि । ३१ । भिक्षुर्भिक्षांनगृह्णातिहंतकारो न गृह्यते ॥ नित्यंनैमित्तिकंलुप्येद्यावत्पिंडंनमेलितम् । ३२॥ कर्मलोपात्प्रत्यवायीभवेत्तस्मात्सपिंडनम् निरग्निकःसाग्निकोवाद्वादशाहेसमाचरेत् । ३३ । यत्फलंसर्वतीर्थेषुपर्वयज्ञेषुयत्फलम् ॥ तत्फलंसमवाप्नोतिद्वादशाहेसपिंडनात् ।३४। अतःस्नात्वामृतस्थाने

करे ॥३१॥ जब तक सपिण्डन होकर पिण्ड परस्पर न मिला लिये जांय तब तक उस घर से भिखारी भिक्षा नहींलेता हंतकार भी नहीं लिया जाता ॥३२॥ कर्म लोप हो जाने के कारण पाप लगता है इसी कारण निराग्निक साग्निक दोनों बारहवें दिन सपिण्डन करें ॥३३॥ सब तीर्थों में स्नान से पर्वों में दान से यज्ञादिक से जिस फल की प्राप्तिहोती है वह फल १२ वें दिन सपिण्डन करनेसे प्राप्त होता है ॥३४॥ अब सपिंडन विधि कहते हैं बारहवें दिन स्नान करके मृत स्थान को गोबर से लीप

सपिण्डन करनेसे प्राप्त होता है ।।३४।। अब सपिंडन विधि कहते हैं बारहवें दिन स्नान करके मृत स्थान को गोबर से लीप

उस पर सपिण्डी श्राद्ध करे ।३५। पाद्य अर्घ्य आचमनी आदिसे विश्वेदेवों का पूजन करे । फिर विकर पिण्ड देकर हाथ धोवे एवं आचमन करे ।३६। फिर पितामह प्रपितामह वृद्ध प्रपितामह, इनके वसु, रुद्र अर्क इस क्रम से ३ पिण्ड रखे फिर चौथा पिण्ड मृतक के नाम का रखे ।३७। उन पिण्डों का चन्दन तुलसी, पत्र धूपदीप, सुभोजन नैवेद्य, मुखवास सुन्दर वस्त्र

गोमयेनोपलेपिते ।। शास्त्रकेनविधानेनसपिंडीकारयेत्सुतः ।। ३५ ।। पाद्यार्घ्याचमनीयाद्यैर्विश्वेदेवांश्च पूजयेत् । कुपित्रेविकिरंदत्वापुनरापउपस्पृशेत ।। ३६ ।। दद्यात्पितामहादीनांत्रीपिंडांश्चयथाक्रमम् ।। वसुरुद्रार्करूपाणांचतुर्थंमृतकस्यच ।।३७।। चंदनैस्तुलसीपत्रैर्धूपैदीपैः सुभोजनैः । मुखावासैः सुवस्त्रैश्च दक्षिणाभिश्चपूजयेत् । ३८ । प्रेतपिंडंत्रिधाकृत्वासुवर्णस्यशलाकया । पितामहादिपिंडेषु मेलयेत्तंपृथक् पृथक् ।। ३९ ।। पितामह्यासमंमातुः । पितामहसमंपितुः । सपिंडीकरणंकुर्यादितिताक्ष्यमतंमम

दक्षिणादि से पूजन करे ।।३७।। तब सोने की शलाका द्वारा मृतक पिण्ड के ३ भाग करे पीछे उनको पितामह आदिकेतीनपिंड पिंडोंमें मिला दे । यही सपिंड करणहै ।।३८।। माता की मृत्यु में पितामहादि के पिंडों की जगह पितामही प्रपितामही, वृद्धि प्रपितामही के नाम के ही पिंड रखावे उसी प्रकार मृतक माता के पिण्ड के तीन भाग करके उनमें मिलावे ।४०। यदि पितामह

कोजीवितावस्थामें पिताकी मृत्यु हो तो प्रपितामहसे तीनपिण्डरखे, उनमेंही पिताके तीन भाग मिलावे ।४१। इसी प्रकार पितामह की जीवितावस्था में माता का सपिंडी श्राद्ध भी पिता की भांति करे ॥४२॥ अथवा पितामह के स्थान विष्णु पिंड एवं पितामही के स्थान महालक्ष्मी पिंड रखवाकर उनमें पिता माता का पिंड मिलावे ॥४३॥ अपुत्रा स्त्री के सपिंडन आदि कर्म पति करे

मृतेपितरियस्याथविद्यतेचपितामहः । तेनदेयास्त्रयः पिंडाः प्रापितामहपूर्वकाः ।४१। तेभ्यश्चैतृकंपिंडमेलयेत्त्रिधाकृतम् ॥ मातर्यग्रे प्रशांतायांविद्यते च पितामही ॥ ४२ ॥ तदामातृकश्राद्धे पिकुर्यात्पैतृकवद्विधिः। यद्वामयिमहालक्ष्म्यांतयोः पिण्डंचमेलयेत् । ४३ । अपुत्रायाः स्त्रियःकुर्यात्पतिः सापिण्डनादिकम् श्वश्र्वादिभिःसहैवास्याःसपिण्डीकरणंभवेत्।४४।भर्त्रादिभिस्त्रिभिकार्यंसपिण्डीकरणंस्त्रियः।नैतन्ममभतंतार्क्ष्य पत्यासापिण्ड्यमर्हति । ४५ । एकांचितांसमारूढौदंपतीयदिकाश्यप ॥ तृणमंतरतः कृत्वाश्वशुरादेस्तदा

उसके सपिंडी करण में सास आदि के पिंडों में पिंड मिलावे ॥४४॥ पति के पितामह के साथ स्त्री का सपिंडो करण करने का हे गरुड़ ! मेरा मत नहीं है । मेरा मत तो स्त्रियों का स्त्रियों के साथ पुरुषों का पुरुषों के साथ होना चाहिए ॥४५॥ गरुड़ यदि एक ही चिता पर पति पत्नी का दाह कर्म हुआ हो तो सपिंड के समय बीच में तृण रखकर पुरुष का पिता आदिकेसाथ

स्त्री का सास आदि के साथ सपिण्डन करे ॥४६॥ दो चार पुत्रों के होने पर माता पिता का पिण्ड दानादि बड़ा ही पुत्र करे। प्रथम पिता का पिण्ड दान करके स्नान करे फिर माता का पिण्ड दान करे ॥४७॥ यदि कोई स्त्री विदेश में पति की मृत्यु सुन कर दश दिनों के भीतर सती हो तो उसका सपिंडन पति के सपिण्डन दिन करे। यदि

चरेत् ॥ ४६ ॥ एकएवसुतःकुर्यादादोपिंडादिकंपितुः । तदूर्ध्वंचप्रकुर्वीतसत्याःस्नानंपुनश्चरेत् ॥ ४७ ॥ हुताशंयासमारूढादशाहाभ्यंतरेसती ॥ तस्याभर्तुर्दिनेकार्यंशय्यादानंसपिंडनम् ॥४८॥ कृत्वासपिंडनंतादर्थ्यंप्रकुर्यात्पितृतर्पणम् । उद्धाहरेत्स्वधाकारंवेदमंत्रैःसमन्वितम् ॥ ४९ ॥ अतिथिंभोजयेत्पश्चाद्धंतकारंच सर्वदा । तेनतृप्यंतिपितरोमुनयोदेवदानवाः । ५० । ग्रासमात्रं भवेद्भिक्षाचतुर्ग्रासंतुपुष्कलम ॥ पुष्कलानि चचत्वारिहंतकाराभिधीयते ॥ ५१ ॥ सपिंड्यांविप्रचरणौपूजयेच्चंदनाक्षतैः ॥ दानंतस्मै प्रदातव्यमक्षय्यं

पीछे हो तो उस दिन से १२ वें दिन सपिण्डन शय्यादान करे ॥४८॥ हे गरुड़ ! सपिन्डन करके पितृ तर्पणकरे, वेद मन्त्रों के साथ स्वधाकार शब्द भी उच्चारण करे ॥४९॥ पीछे अतिथि भोजन करावे, हंतकार तो सर्वदा करे, इससे पितर, मुनि, देव दानवादि तृप्त होते हैं ॥५०॥ हन्तकार के लक्षण में—अन्न का एक ग्रास जितना भिक्षा, चार ग्रासों जितना पुष्काल १६ ग्रास जितना अन्न हंतकार कहा है॥५१॥ सपिण्डी श्राद्धके दिन अक्षत चंदन से ब्राह्मणके चरणपूजकर, अक्षय तृप्ति के लिये उसे

बान देवे ।५२। फिर वार्षिक श्राद्ध कराने वाले आचार्य ब्राह्मण को वर्ष भर जितना आहारार्थ अन्न, घृत सुवर्ण गौ, घोड़ा हाथी पृथ्वी आभूषण, दान करे ।५३। तब स्वस्तिवाचन पूर्वक गणेश देवी, नवाहादि का कुँकुम अक्षत नैवेद्य द्वारा पूजन करे ।५४। आचार्य फिर समंत्रक अभिषेक करे । हाथ में कनक सूत्र बान्ध कर मन्त्र पवित्र अक्षत देवे।५५। तब नाना प्रकार

तृप्तिहेतवे । ५२ । वर्षवृत्तिंघृतंचान्नं सुवर्णंरजतंसुगाम् । अश्वंगजंरथंभूमिमाचार्यायप्रदापयेत् । ५३ ।
ततश्चपूजयेन्मंत्रैःस्वस्तिवाचनपूर्वकम् । कुंकुमाक्षतनैवेद्यैर्ग्रहान्देवींविनायकम । ५४ । आचार्यस्तुततः
कुर्यादभिषेकंसमंत्रकम् । बध्वासूत्रंकरेदद्यान्मंत्रपूतांस्तथाक्षतान् । ५५ । ततश्चभोजयेद्विप्रान्मिष्टान्न-
र्विविधैःशुभः दद्यात्सदक्षिणांस्तेभ्यःसजलान्नान्द्विषटघटान् ॥ ५६ ॥ वार्यायुधप्रतोजास्तुदंडस्तुद्विजभोज
नात् । स्पृष्ट्वानंतरवर्णैःशुद्धयेरस्तेतत क्रमात् । ५७ । एवंसपिंडनं कृत्वा क्रियावस्त्राणिसंत्यजेत्

के सुस्वादु सुन्दर मिष्ठान्नादि पदार्थों से बारह ब्राह्मणों को भोजन कराके मोदक एवं दक्षिणा सहित जल पूर्ण १२ घट दान देवे ५६। ब्राह्मण भोजन करा कर चारों वर्णोंमें यजमान यदि ब्राह्मणहो तो जलका स्पर्श करे क्षत्रिय शास्त्र का वैश्य चाबुक का शूद्र डंड का स्पर्श करे तब शुद्ध होते हैं ।५७। इस प्रकार सपिण्डन करके क्रिया के वस्त्र त्याग करे शुद्ध श्वेत

वस्त्र पहिन कर शय्यादान करे ।।५७।। इन्द्रादि सभी देवता शय्यादान की प्रशंसा करते हैं, इसी कारण अपने जीतेजी वा मृत्यु के अनन्तर शय्यादान करे ।।५८।। वह शय्या काष्ठ की बनवा कर उसे चित्रित करावे दृढ़ होवे रेशमी डोरी से उसे बुने स्वर्ण पत्रों से उसे सुशोभित करे ।।६०।। रूईदार तूलिका, सिराहना चद्दर, दरी रजाई आदि उस शय्या के लिए तैयार हों, पुष्प

शुक्लांबरधरोभूत्वाशय्यादानंप्रदापयेत् ॥ ५८ ॥ शय्यादानंप्रशंसंतिसर्वदेवाःसवासवाः । तस्माच्छय्याप्रदातव्यामरणेजीवितेपिवा । ५९ । सारदारुमयींरम्यांसुचित्रैश्चितांदृढाम् ॥ पट्टसूत्रैर्वितनीतांहैमपत्रैरलंकृताम् । ६० । हंसतूलिप्रतिच्छन्नांशुभशीर्षोपधानिकम् ॥ प्रच्छादनपटीयुक्तांपुष्पगंधैःसुवासिताम् ।६१। दृढबंधैःसुबद्धांचसुविशालांसुखप्रदाम । शय्यामेवंविधांकृत्वाह्यास्तृतीयांन्यसेद्भुवि ।.६२।। छत्रंदीपालयंरौप्यंचामरासनभाजनम् ॥ भृङ्गारंकरकादर्शंपंचवर्णवितानकम । ६३। शयनस्थभवेत्कि

अतर आदि से उन्हें सुगन्धित करे ।।६१।। फिर रेशमी डोरियोंसे कसी हुई परमसुखदायक, विशाल शय्या को भूमि पर बिछा कर उस पर बिस्तर लगावे ।।६२।। मच्छरदानी की भांति उसपर छत्र करे चांदी की दीवट चमर आसन, भोजन पात्र भृङ्गार धातु की झारी कलश एवं दर्पणादि ये सब पास में रखकर उस पर पचरङ्गा चन्दोआ बांधे ।।६३।। और भी कुछ उपकारक

वस्तुएँ हो तो उन सबको शय्या के चारों ओर अपने २ स्थान पर रखे ॥६४॥ अब उस शय्या पर विष्णु लक्ष्मी की सोने की दो मूर्तियों को वस्त्राभूषण आयुध आदिसे अलंकृत कर स्थापित करे ॥ ६५ ॥ स्त्रियों की शय्या पर तो काजलसिंदूरबिंदी वस्त्राभूषणआदि स्त्री उपयोगी रखकर सबका दान करे ।६६। तब पत्नी के साथ विद्वान ब्राह्मण को गंधपुष्प स्वर्ण के

चिद्यच्चान्यदुपकारकम् ॥ तत्सर्वंपरितस्तस्याःस्वेस्वेस्थानेनियोजयेत् ।६४।तस्यांसंस्थापयेद्धैमंहरिंलक्ष्म्या समन्वितम् सर्वाभरणसंयुक्तमायुधांबरसंयुतम ॥६५॥ स्त्रीणांवशयनेधृत्वाकज्जलंरक्तकुकुमम् । वस्त्र भूषणादिकंयच्चसर्वमेवप्रदापयेत । ६६ । ततोविप्रसपत्नीकंगंधपुष्पैरलंकृतम । कर्णांगुलीयाभरणैः कंठसूत्रैश्चकांचनैः । ६७। उष्णीषमुत्तरीयंचचोलकंपरिधायच ॥ स्थापयेत्सुखशय्यायांलक्ष्मीनारायणाग्र तः ॥ ६८ ॥ कुंकुमैः पुष्पमालाभिर्हरिंलक्ष्मीसमर्चयेत ॥ पूजयेल्लोकपालांश्चग्रहान्देवींविनायकम।६९।

कर्णाभरण अंगूठी कंठ सूत्र आदि से सुशोभित करे । ६७ । और उन्हें पगड़ी दुपट्टा, कुरता अंगिया, दुकलआदिपहिनाकर उस सुख शय्या पर श्री लक्ष्मी नारायण के आगे बिठावे । ६८ । कुंकुम पुष्प मालाओं से श्री लक्ष्मी नारायण का पूजनकरे फिर दशोंदिक्पाल, नवग्रह देवी, गणेश आदि ग्रहों की पूजा करे ॥ ६९ ॥ उत्तर की ओर हाथों में पुष्पों की अञ्जलि लेकर

ब्राह्मण के सम्मुख स्थित होकर इस मन्त्र का उच्चारण करे ।७०। हे श्री कृष्ण ! जिस प्रकार क्षीर समुद्रमें आपकी शय्या सदा है उसी प्रकार यह शय्या भी मेरे किंवा मेरे पिता के लिए जन्म २ में सुसज्जित रहे ।७१। इसी प्रकार मंत्र द्वारा प्रार्थना करके पुष्पाञ्जलि ब्राह्मण एवं प्रतिमा पर प्रक्षेप करके सब सामिग्री के साथ शय्या दान का संकल्प करे ।७२। वह शय्या

उत्तराभिमुखोभूत्वागृहीत्वाकुसुमांजलिम ॥ उच्चारयेदिमंमंत्रंविप्रस्यपुरतः स्थितः ॥७०॥ यथाकृष्णत्व दीयास्तिशय्याक्षीरोदसागरे ॥ तथाभूयादशून्येयं मम जन्मनि जन्मनि ॥७१॥ एवँपुष्पांजलिं विप्रे प्रतिमायांहरेक्षिपेत् । ततः सोपस्कर शय्यादानं संकल्पपूर्वकम ।७२। दद्याद्धितोपदेष्ट्रे चगुरवेब्रह्मवादिने ॥ गृहाणब्राह्मणैनांत्वंकोवदातीतिकीर्तयन् ।७३। आंदोलयेतद्विजलक्ष्मीहरिंचायनेस्थितम ॥ ततः प्रदक्षिणीकृत्यप्रणिपत्यविसर्जयेत् ।७४। सर्वोपस्करणैर्युक्तं प्रदद्यादतिसुन्दरम । शय्यायांसुखसुप्त्यर्थं गृहंचविभवेसति ।७५। जीवमानःस्वहस्तेनयदिशय्यांददातियः । तज्जीवताबृषोत्सर्गपर्वणीषुसमाचरेत्

हितोपदेश करने वाले वेद वेत्ता ब्राह्मण को गुरु बनाकर संकल्प करे । देते समय निरभिमान रह नम्रता पूर्वक ब्राह्मण को लेने की प्रार्थना करे ॥७३॥ तब उस ब्राह्मण को उस शय्या पर बिठाकर विष्णु एवं लक्ष्मी की प्रतिमा के साथ आन्दोलन करके प्रदक्षिणा एवं प्रणाम करके बिसर्जन करे ॥७४॥ इस प्रकार सुखदायक सुन्दर सामिग्री के साथ शय्यादान करके यदि शक्ति हो तो उस शय्या पर सोने के लिये एक घर भी निर्माण कराकर दानमें देये।७५। यदि जीतेजी अपने हाथसे ही शय्यादान एवं

वृषोत्सर्ग करने की इच्छा हो तो किसी पत्र में यह कार्य करे ॥७६॥ किन्तु इस प्रकार की शय्या गौ आदि का दान एक ही ब्राह्मण को करे बहुतों को नहीं। यदि गौ बहुतों में बांट दी अथवा बेची गई तो वह सात पीढ़ियों तक दाता को नरक में गिराती है ॥७७॥ गौ तथा शय्या का दान सुपात्र ब्राह्मण को दिया गया तो वह दान सफल होता है।

। ७६ । इयमेकस्यदातव्याबहूनांनकदाचन ॥ सांविभक्ताच विक्रीतापातयत्यधः ॥ ७७ ॥ पात्रेप्रदायशायनंवांछितंफलमाप्नुयात् । पिताचदातातनयः परत्रेहचमोदते । ७८ । पुरंदरगृहेदिव्येसूर्यपुत्रालयेपिच ॥ उपतिष्ठेन्नसंदेहः शय्यादानप्रभावतः । ७९ । विमानवरमारूढ़ः सेव्यमानोप्सरोगणैः ॥ आभूतसंप्लवंयावत्तिष्ठत्यातंकवर्जितः ॥८०॥ सर्वतीर्थेषुयत्पुण्यंसर्वदिनेषुच ॥ तेभ्यश्चाप्यधिकंपुण्यं शय्यादानोद्भवंभवेत् । ८१ । देवंदत्वासुतः शय्यांपददानंप्रदापयेत् ॥ तच्छृणुष्वमयाख्यातं यथा

दाता एव उसका पिता दोनों लोकों में आनन्द पाते हैं ॥७८॥ इसी प्रकार शय्या दान के प्रभावसे दाता स्वर्ग लोक में जाता है यमलोक में नहीं ॥७९॥ स्वर्ग में जाकर अप्सराओंसे सेवित विमानोंमें भ्रमण करता प्रलय तक वहां निवास करता है ॥८०॥ सब पर्व महा पर्वों में सब तीर्थों पर स्नान करनेसे जोपुण्य प्राप्ति होती है उससे भी अधिक शय्या दानके प्रभाव से होती है ॥८१॥ शय्यादान के अनन्तर पिता के लिये पद दान भी करे ॥८२॥ पददान में यह वस्तु हो—१ छाता २ पादुक, ३ वस्त्र

४ अंगूठी ५ कमण्डलु ६ आसन ७ पञ्चपात्र ॥८३॥ ८ डंड ९ ताम्र पात्र १० कच्चा अन्न गेहूँ आदि ११ पक्का अन्न मोदक आदि १२ अर्घ्य १३ यज्ञोपवीत ॥८४॥ इस प्रकार यह १३ वस्तु यथा शक्ति उत्तम बनवा कर तेरह ब्राह्मणों को एक एक करके दान करे ॥८५॥ पद दान द्वारा सद्गति मिलती है यम मार्ग में जाने वालों को सुख मिलता है ॥८६॥ यम मार्ग में

वत्कथयामिते ॥८२॥ छत्रोपानहवस्त्राणिमुद्रिकाचकमण्डलुः ॥ आसनपंचपात्राणि दंडं चत्रिविधंस्मृतम् ॥८३॥ दंडेनताम्रपात्रेणह्यामान्नेभोजनैरपि ॥ अर्घंयज्ञोपवीतैश्चपदंसम्पूर्णतांव्रजेत् ॥८४॥ त्रयोदश पदानीत्थंयथाशक्त्याविधायच ॥ त्रयोदशेभ्योविप्रेभ्यःप्रदद्यात्द्वादशेहनि ॥८५॥ अनेनपददानेनधार्मि-कायोंतिसद्गतिम् ॥ यममार्गगतानांचपददानंसुखप्रदम् ॥८६॥ आतपस्तत्रवैरौद्रोदह्यतेयेनमानवः ॥ छत्रदानेनसुच्छायाजाययतेतस्यमूर्द्धनि ॥ ८७ ॥ अतिकंटकसंकीर्णो यमलोस्यवर्त्मनि ॥ अश्वारूढाश्चतेयांतिददतेयह्युपानहौ ॥८८॥ शीतोष्णवातदुःखानितत्रघोराणिखेचर । वस्त्रदानप्रभावेण

बड़ी भयानक धूप रहती है छाता रहने से उसके मस्तक पर सुन्दर छाया हो जाती है ॥८७॥ यममार्ग कांटों से भरा होता है पादुका दान से अश्व पर चढ़ कर सुखेन चला जाता है ॥८८॥ यम मार्ग में सरदी तथा गरमी का दुख होता है । वस्त्रदानसेवह

प्राणीसुख पूर्वक उस मार्ग को पार करताहै ॥ ८९ ॥ यम मार्गमें यमदूत काले पीले वर्णके डरावने दिखाईदेते हैं स्वर्ण मुद्रिका के दानकरने से वे दुःख नहीं देते ॥९० ॥ यम मार्ग में बड़ी घाम होती है वायु नहीं चलाती जल नहीं मिलता जलपात्रके दानसे प्राणी को जल मिलता रहता है ॥९१॥ जो पुरुष मृतक मनुष्य के निमित्ति जल पूर्ण ताम्र पात्र दान करता है उसे हजार प्याऊ

सुखंनिस्तरतेपथि ॥८९ ॥ यमदूतामहारौद्राः करालाः कृष्णपिंगलाः नपीडयंति तंमार्गेमुद्रिकांयाः प्रदानतः ॥ ९० ॥ बहुधर्मसमाकीर्णोनिर्वातेतोयवर्जिते ॥ कमंडलुप्रदानेनतृषितःपिबतेजलम् ॥ ॥ ९१ ॥ मृतोद्देशेनयोदद्यादुद पात्रंचताम्रजम् ॥ प्रप दानसहस्त्रस्यतत्फलसाश्रुतध्रु वम् ।९२। आसने भोजनेचैवद त्तेसम्यग्द्विजातये। सुखेनभुक्तंपाथेयंपथिगच्छन्शनैः शनैः।९३। एवंसपिंडनादिनेदत्वादानं विधानतः। बहून्संभोजयेद्विप्रान्यःश्वपाकादिकानपि ।९४। ततः सपिंडनायर्वाध्वंदूर्क्संवत्सरादिह॥प्रति

लगवाने जितना फल मिलता है ॥९२॥ आसन और भोजन यदि ब्राह्मण को दान किया हो तो वह प्राणी पांथेय पाकर खातापीता शनैःशनैः रास्ता तय करलेता है ॥९४॥ इसी प्रकार सपिंडन के दिन विधि पूर्वक दान और ब्राह्मण भोजन कराया जाय चांडाल आदि प्राणियों को भी भोजन कराया जाय ॥९४ उस सपिंडन श्राद्धके अनन्तर प्रथम वर्ष तक महीने के महीने

जल परिपूर्ण घट का दान करता रहै ॥९५ ॥ जलकुम्भ के दान का पहिले भी विधानआया है किन्तु प्रेत कार्यके लिए प्रेत के निमित्त उसकी अक्षय तृप्तिके लिए फिर २ कुम्भका दान अनन्त तृप्ति कारक है ॥९६॥अबमासिक एवंवार्षिक विधि है गरुड़मैं तुम्हें कहता हूं उसमें पूर्णमासी आदि तिथियों में मृतकी विशेष करके पाक्षिक विधि सुन ।९७। जिसकी पूर्णमा के दिन

मासंप्रदातव्योजलकुंभःसपिंडक।९५।कृतस्यकरणंनास्तिप्रेतकार्यादितेखग॥प्रेतार्थंतुपुनःकुर्यादक्षय्यतृप्ति हेतवे॥९६।अतोविशेषंवक्ष्यामिमासिकस्याब्दिकस्यच ॥ पाक्षिकस्यविशेषंचविशेषंतिथिषुमृते।९७।पौर्णमास्यांमृतोयस्तुचतुर्थीतस्यऊनिका । चतुर्थ्यांतुमृतोयस्तुनवमीतस्यऊनिका ।९८। नवम्यांतुमृतोयस्तु रिक्तातस्यचतुर्दशी ॥ इत्येवपाक्षिकंश्राद्धंकुर्याद्विंशतिमेदिने ।९९। एकएवयदामासः संक्रांतिद्वयसंयुतः । मासद्वयतश्राद्धंमलमासेहिशस्यते ।१००। एकस्मिन्मासिमासौद्वौयदिस्यातांतयोर्द्वयो ॥ ताव

मृत्यु हो उसका अवस्था के अनन्तर चतुर्थी के दिन पाक्षिक श्राद्ध होता है और चतुर्थी के दिन मरे हुए का दूसरी चतुर्थी आने के अनन्तर नवमी को पाक्षिक श्राद्ध करना चाहिए ।९८। नवमी के मृतकका दूसरी नवमी के पीछे चतुर्दशीको श्राद्धहोता है इसी प्रकार बीसवें दिन पाक्षिक श्राद्ध करना चाहिए ॥९९। मासिक श्राद्ध के विधान में जिस महीने की दो संक्रान्ति हों तो उसे क्षय मास कहा जाता है जसे कार्तिक या मार्गशीर्ष महीने में श्राद्ध अथवा व्रतादि हों यदि उस मास का क्षय होतो पौष में करना चाहिए ।१००। एक महीने में यदि पुरषोत्तम मास हो तो उसके दो मास नहीं किन्तु एक मास तथा दो ही पक्ष गिने

और तिथियें भी उसी प्रकार तीस ही जानें ॥ १०१ ॥ यदि अधिक मास में मृत्यु हुई हो तो उसका वार्षिक तथा मासिक श्राद्ध तिथि के पूर्वार्धभाग में मृत्यु हुये का कृष्णपक्ष में एवंतिथि के उत्तरार्ध भागमें मृत्युहुए का शुक्लपक्षमें होताहै मृत्यु तिथि ग्रहण करे ॥१०२॥ अधिक मास में मृतक की सपिण्डी द्वादशाह में करे उसका प्रथम मासिक श्राद्ध अठारहवें दिन का उसी

वपक्षौताएवतिथयस्त्रिंशदेवहि ।१०१। तिथ्यर्धेप्रथमेपूर्वेद्वितीयेऽर्धेतदुत्तरे । मासाविति बुधैश्चित्यौमलमासस्यमध्यगौ । १०२ । असंक्रांतेचकर्तव्यंसपिंडीकरणंखग । तथैवमासिकंश्राद्धं वार्षिकंप्रथमंतथा । १०३ । संवत्सरस्यमध्येतुयदिस्यादधिमासकः । तदात्रयदशोमासिक्रियाप्रेतस्यवार्षिकी । १०४ । पिंडवर्जमसंक्रांतेसंक्रांतेपिंडसंयुतम् । प्रतिसंवत्सरंश्राद्धमेवंमासद्वयेपि च । १०५ । एवंसंवत्सरपूर्णेवार्षिकंश्राद्धमाचरेत् ॥ तस्मिन्नपिविशेषेणभोजनीयाद्विजातयः । १०६ । कुर्यात्संवत्सरादूर्ध्वंश्राद्धेपिंडत्रयंः सदा । एकोद्दिष्टं

महीने में अथवा १५वें दिनकिंवा अठारहवें दिनकरे देशकालका विचार करे उसमें मलमासके दोष का विचार नहीं ।१०३।वर्षके मध्य में यदि अधिक मास आजाय तो उसमास की उसीतिथि में वार्षिक की क्रिया करके केवल ब्राह्मणभोजन कराके एकोदिष्ट करना ॥१०४। मलमासमें पिंडन करके केवल ब्राह्मण भोजन करा उसके शुद्ध मास में पिंडके साथ ब्राह्मण भोजन करना इसी प्रकार मास द्वयमें प्रति संवत्सर श्राद्धकरे ॥१०५ । संवत्सर के पूर्णहोने पर वार्षिक श्राद्धकरे उसमें विशेष करके ब्राह्मण भोजन करावे ।१०६। वार्षिक श्राद्ध के अनन्तर जब भी श्राद्ध करे तब तीन पिण्ड रखके किन्तु एकोदिष्ट श्राद्धन करे इसके करने

से पितृघात का प्रायश्चित लगता है । १०७।। मरने के अनन्तर १२ मास के मध्य में तीर्थ श्राद्ध गया श्राद्ध गजच्छाया न करे ।। १०८ ।। हे गरुड़ ! पुत्र यदि पितृ भक्ति से गया श्राद्ध करना चाहे तो मृत्यु हो जाने के एक वर्ष के अनन्तर करे ।१०६। गया श्राद्ध से पितर भवसागर से मुक्त होकर गदाधर भगवान की कृपा से परमगति को प्राप्त होते हैं ।।११०।। गया तीर्थ पर

नकर्तव्यंतेनस्यात्पितृघातकः ।१०७। तीर्थश्राद्धंगयाश्राद्धंगजच्छायंचपैतृकम् । अब्दमध्येनकुर्वीतग्रहणेनयुगापि ।१०८। यदापुत्रेणवैकार्यंगयाश्राद्धंखगेश्वर । तदासंवत्सरादूर्ध्वंकर्तव्यंपितृभक्तितः ।१०६। गयाश्राद्धात्प्रमुच्यतेपितरोभवसागरात् । गदाधरानुग्रहेणतेयांतिपरमांगतिम् ।११०। तुलसीमंजरीभिश्चपूजयेद्विष्णुपादुकाम् तस्यालवादितीर्थेषुपिंडान्दद्याद्यथाक्रमम् ।१११ उद्धरेत्सप्तगोत्राणि कुलमेकोत्तरंशतम् । शमीपत्रप्रमाणेनपिंडंदद्यादगयाशिरे ।११२। गयामुपेत्ययः श्राद्धं करोतिकुलनंदनः

जाकर भगवान विष्णु की पादुकाओं की तुलसी मंजरी के साथ पूजा करे । उसके अनन्तर लवादिक तीर्थों में यथाक्रमपिण्ड दान करे । १११ । गयातीर्थ के शिर पर यदि किसी ने शमी पत्र जितना भी पिंडदान किया तो उसके सात गोत्र एवं एक सौ एक कुल का उद्धार हो जाता है ।११२। कुलनन्दन पुत्र का गया तीर्थ पर किया हुआ श्राद्ध सफल होता है एवं उसके पितर

उसके जन्म से अत्यन्त प्रसन्न होते हैं ।११३। हे गरुड़! कलापनामक उपवन में पितर देवताओं ने मनुके पुत्र इक्ष्वाकुराजा के प्रति एक कथाकही है ॥११४॥ पितरों ने कहा है कि–हे राजन्! तुम्हारे कुलमें उत्तम संतान होगी, वो ही हमें गया पर जाकर पिण्डदान करेगी ॥११५॥ इसी प्रकार जो पुत्र पितरों की परलोक सम्बन्धिनी क्रिया करता है वह भरद्वाजके पुत्रों की

सफलंतस्यतज्जन्मजायतेपितृतुष्टिदम् । ११३ । श्रूयतेचापिपितृभिर्गीतागाथाखगेश्वर॥इक्ष्वाकोर्मनुपुत्रस्यकलापोपवनेसुरैः ।११४। अपिनस्तेभविष्यंतिकुलेसन्मार्गशीलिनः ॥ गयामुपेत्ययेपिण्डान्दास्यंत्यस्माकमादरात् ।११५। एवमामुष्मिकींतार्क्ष्यंयःकरोतिक्रियांसुतः । तस्मात्सुखीभवेन्मुक्तः कौशिकस्यात्मजायथा ।११६। भरद्वाजात्मजाः सप्तभुक्त्वाजन्मपरम्पराम् । कृत्वापिगोवधंतार्क्ष्यमुक्ताःपितृप्रसादतः ॥११७॥ सप्तव्याधादशार्णेषुमृगाः कालांजिरेगिरौ ॥ चक्रवाकाः शरद्वीपेहंसाः सरसिमानसे ।११८।

भांति इसलोक में सुख भोग कर अन्तमें जन्म मरण से मुक्त होजाता है ॥११६॥ भरद्वाज के पुत्रों की कथा हरवंश पुराण में है यहांसंक्षेप में कहते हैं! कि भारद्वाजके सात पुत्रोंने गौहत्याकी इसी से उन्हों ने अनेक जन्म पाये अन्त में पितरों कीभक्तिसेजन्ममरणके बन्धन से मुक्तहुये ।११७। जन्म परम्परामें सातपुत्र दशार्णदेशों में पहिले व्याधहुये कालंजर पर्वतपर मृगहुए, शरद्वीप में उन्हें चक्रवाक पक्षीका जन्ममिला फिर मानसरोवरपर हंसहुए ॥११८॥ फिर कुरुक्षेत्रमें ब्राह्मणकुलमें उत्पन्नहुएतब वेदपारङ्गत होकर

पितरों के पूर्ण भक्त हुये उसी पितृ भक्ति से वे सातों भरद्वाज के पुत्र भक्त हुये ॥११९॥ इसी कारण मनुष्य सर्वथा पितृ भक्त हो। इस लोक में परलोक में पितृ भक्ति से ही मनुष्य सुखी होता है ॥१२०॥ भगवान कहते हैं कि हे गरुड़! यह और्ध्व दैहिक आख्यान है। यह अख्यान एवं कर्तव्य पितरों को मुक्ति और पुत्र की मनःकामना देने वाला है ॥१२१॥ निर्धन पुरुष

तेपिजाताःकुरुक्षेत्रेब्राह्मणावेपारसगाः। पितृभक्त्याचतेसर्वेगतामुक्तिंद्विजात्मजाः ।११९॥ तस्मात्सर्व प्रयत्नेनपितृभक्तोभवेन्नर। इहलोकेपरेवापिपितृभक्त्यासुखीभवेत् ।१२०॥ एतात्तदूर्ध्वमयाख्यातंसर्वमेवौर्ध्वदेपिकम्॥ पुत्रवांछाप्रदंपुण्यंपितृमुक्तिप्रदायकम्।१२१।निर्धनोपिनरःकश्चिद्यःशृणोतिकथामिमाम्। सोपिपापविनिर्मुक्तोदानस्यफलमाप्नुयात्। १२२। विर्धनोपिनरःकश्चिद्यःशृणोत्तिकथामिमाम्॥ शृणुयाद्गरुड़ंचापिशृणुतस्यापिपथत्फलम्। .१२३। पितादद‌ातिसत्पुत्रान्गोधनानिपितामहः।

भी यदि इस कथाको सुने तो वह सब पापोंसे मुक्तहोकर दान का फल पाता है ॥१२२॥ और मुझसे कहे हुए श्राद्ध एवं दान जो विधि पूर्वक करताहै और गरुड़पुराण को जो सुनता है उसे परम फल प्राप्त होता है सो सुन ॥१२३॥ पुत्र के श्राद्ध आदि करनेसे पिताउसे श्रेष्ठ देन देता है और पितामह उसे गौधन देतां है एवं प्रपितामह उसे धन देकर दूध पुत्र एवं धन द्वारा उसे

सुखी करता है। १२४। बृद्ध प्रपितामह प्रसन्न होकर अन्न आदिका भण्डार देता है। इसी प्रकार सारेपितर तृप्त होकर पुत्र की मनः कामनाएँ पूर्ण करते हैं ॥१२५॥ और उसके पितरे धर्ममार्ग द्वारा धर्मराज के मन्दिर में पहुँचते हैं वहां धर्म सभा में परम आदर पाकर ठहरते हैं ॥१२६॥ श्री सूतजी बोले—इसी प्रकार भगवान् विष्णु ने गरुड़के प्रति परलोक सम्बन्धी दान

धनदाताभवेत्सोपियस्तस्यप्रपितामहः ॥१२४ दद्याद्विपुलमन्नाद्यं बृद्धस्तुप्रपितामहः । तृप्ताःश्राद्धेनतेस वेंदत्वापुत्रस्यवांछितम । १२५ । गच्छंतिधर्ममार्गेणधर्मराजस्यमंदिरम ॥ तत्रधर्मसभयांचातिष्ठंतिपरमा दरात ॥१२६॥ सूतउवाच । एवं श्री विष्णुनाप्रोक्तमौर्ध्वदानसमुद्भयम ॥ श्रुत्वामाहात्मयमतुलंगरुड़ोहर्ष मागतः ॥१२७॥ इति श्रीगरुड़पुराणेसारोद्धारेस पिंडनादिसर्वकर्मनिरूपणेनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

श्राद्ध आदि की विधि एवं महात्म्य कहा ॥१२७॥ इति श्री गरुड़पुराणे शास्त्रि हरिश्चन्द्र कृतायां टीकायां सपिंड नादि कर्म निरूपणो नाम त्रयोदशोध्यायः ॥१३॥

—(❀)—

गरुड़ बोले—हे प्रभो ! वह यमलोक कितनी यात्रा का है किसने उसे रचा है और उसकी सभा कैसी है । अपनी सभा में धर्म राज किनके साथ बैठते हैं ॥ १ ॥ हे दयानिधे ! जो धर्मात्मा पुरुष जिन धर्म मार्ग द्वारा धर्म मंदिर में जाते हैं वे धर्म मार्ग भी कृपया मुझे सुनाइये ॥२॥ श्रीभगवान बोले—हे गरुड़ ! वह धर्मराज का नगर कोई साधारण नहीं वहां तो नारद

गरुड़ उवाच ॥ यमलोकः कियन्मात्रः कीदृशः केननिर्मितः । सभाचकीदृशीतस्यधर्मोयत्रास्तेचकैः सह । १ । येधर्ममार्गैर्गच्छंतिधार्मिकाधर्ममंदिरम् । तान्धर्मानपिमार्गाद्मम्माख्याहिदयानिधे । २ । श्रीभगवानुवाच । शृणुताक्ष्र्य प्रवक्ष्यामियदगम्यंनारदादिभिः तद्धर्मनगरंदिव्यनहापुण्यैरवाप्यते ॥ ३ ॥ याम्यैऋ तयोर्मध्येपुरंवैवस्वतस्ययत् । सर्ववज्रमयंदिव्यमभेद्यं तत्सुरासुरैः ॥ ४ ॥ चतुरस्रं चतुर्द्वारमुच्च-प्राकारवेष्टितम् । योजनानांसहस्रंहिप्रमाणेनतदुच्यते । ५ । तस्मिन्पुरेऽस्तिसुभगंचित्रगुप्तस्यमंदिरम् ॥

आदि ऋषि पहुंचते हैं वह दिव्य नगर है परम पुण्यों के द्वारा वहां पहुँचा जा सकता है ॥३॥ वह नगर दक्षिण दिशा एवं नैऋत कोण के मध्य में बसा हुआ है परम दिव्य है वज्रमय है सुर असुर कोई भी उसका भेदन नहीं कर सकता ॥४॥ वह नगर चतुष्कोण है चार उसके द्वार हैं बड़े ऊँचे पर कोटेसे घिरा हुआ है । हजार योजन के प्रमाण में वह विस्तार वाला है ॥५॥

उस पुरके मध्यमें ही बड़ा सुन्दर चित्रगुप्त का मन्दिर है वह पच्चीस योजनके विस्तार में लम्बा चौड़ा है ॥६॥ वह महा दिव्य मन्दिर लोह के परकोटों से वेष्टित हुआ और सैकड़ों प्रतोलियों के संचार बालाध्वजा पताकाओं से शोभायमान दोसौपचास योजन तक वह ऊँचा चला गया है ॥ ७ ॥ जिसका निर्माण देवताओं के शिल्पियो ने किया है चित्र बनाने में बहुत

पंचविंशतिसंख्याकैर्योजनैर्विस्तृतायतम् ॥ ६ । दशोच्छ्रितंमहादिव्यंलोहप्राकारवेष्टितम् ॥ प्रयोलीशतसंचारंपताकाध्वजभूषितम् । ७ । विमानगणसंकीर्णंगीतवादित्रनादितम् ॥ चित्रितंचित्रकुशलैर्निर्मितंदेवशिल्पिभिः ॥ ८ ॥ उद्यानोपवनैरम्यंनाविहंगकूजितम । गंधर्वैरप्सरोभिश्चसमंतात्परिवृतम् ॥ ९ । तत्सभायांचित्रगुप्तः स्वासनेपरमाद्भुते । संस्थितोगणयेदायुर्मानुषाणांयथातथम् ॥१०। नमुह्यतिकथंचि

निपुण कारीगरों ने जिसमें नाना प्रकार के चित्र खींचे हैं विमानों के समूहों के समूह जिसके ऊपर उड़ते हुए दिखाई देते हैं गीत वादित्र जिसमें सर्वदा सुनाई देते हैं ।८। उसमें सुप्रकारसे लगाये गये उद्यानआदिबगीचों में नाना प्रकार के पक्षी सर्वदा कूजन कर रहे हैं । उस मन्दिर के सर्वतः गन्धर्व एवं अप्सरा गण गान तत्पर हैं ।९। वहीं चित्रगुप्त धर्म सभा में जाकर अपने परम अद्भुत आसन पर विराजमान होकर मनुष्यों के आयु की यथार्थ गणना करते हैं ॥१०॥ चित्रगुप्तजी मनुष्यों के पुन्य पापों की गणना में कभी नहीं भूलते जिसने शुभ अशुभ जो भी कर्म किया है उसे सही २

जानतेहैं ॥११॥ यमलोकमें चित्रगुप्तजी का शासनहै अपने कर्मोंके अनुसार इन्हींके शासन से सब को फल भोगना पड़ता है उस मन्दिरके पास २ सारे रोगोंके मकान भी बने हुए हैं। उनमें चित्र गुप्त के मन्दिर की पूर्व की ओर ज्वर का स्थान है ॥१३॥ एवं दक्षिणकी ओर शूल लूता विस्फोटक आदि रोगों के निवास स्थल हैं। पश्चिम की ओर काल पशु, अजीर्णता एवं

त्ससुकृतेदुष्कृतेपिवा ॥ यद्येनोपार्जितंकर्मशुभंवायदिवाशुभम् ।११। तत्सर्वंभुजंतेयत्रगुप्तस्यशासनात् ॥ चित्रगुप्तालयात्प्राच्यांज्वरस्यास्तिमहागृहम् ॥१२॥दक्षिणस्यांचशूलस्यलूताविस्फोटकास्तथा। पश्चिमेकालपाशः स्यादजीर्णस्तथा ॥१३॥उदीच्यांराजरोगोस्तिपांडुरोगस्तथैवच ॥ ऐशान्यांतुशिरोर्तिस्यादाग्नेय्यामस्तिमूर्च्छना ॥१४॥ अतिसारोनैरृतेतुवायव्यांशीतदाहकौ ॥ एवमादिभिरन्यैश्चव्याधिभिः परिवारितः ॥१५॥ लिखतेचित्रगुप्तस्तुमानुषाणांशुभाशुभम् ॥ चित्रगुप्तालयादग्रे योजनानांचवि

अरुचि रोग हैं॥१३॥उत्तर की ओरराज रोग पाण्डु रोग का निवासहै ईशान कोणमें शिर रोग, अग्नि कोण में मूर्छना रोग हैं ॥१४॥ नैऋत कोण में अतिसार एवं वायव्य कोण में शीत ज्वर दाह ज्वर हैं इसी प्रकार और भी रोग व्याधियों के वहां मकानहैं ॥१५॥ इस प्रकार चित्र गुप्त सभामें बैठकर मनुष्योंके शुभ अशुभ लिखते रहतेहैं चित्र गुप्तजी के मन्दिर से बीस

योजन के आगे ॥१६॥ धर्मराज का मन्दिर है वह रत्न आदि मणियों से जड़ित बिजली की चमक दमक लिये अत्यन्त दिव्य है ॥१७॥ वह मन्दिर दो सौ योजन के विस्तार में है और पचास योजन ऊँचा है ॥१८॥ एक हजार खम्भों से शोभायमान एवं वैदूर्य मणियों से जड़ित है। उसमें स्वर्ण से अलंकृत नाना प्रकार के महल प्रसाद शोभित हैं ॥१९॥ उन महलों की

शतिः । १६ । तुरतध्येमहादिव्यंधर्मराजस्यमंदिरम् । अस्तिरत्नमयंदिव्यंविद्युज्ज्वालार्कवर्चसम् ।१७।
द्विशतंयोजनानांचविस्तारमालतःस्फुट । पंचाशच्चप्रमाणेनयोजनानांसमुच्छ्रितं ।१८। धृतस्तंभसहस्त्रैः
श्चवैदूर्यमणिमंडितं । कांचनालंकृतंन न हर्म्य प्रासादसंकुलम् ।१९। शारद भ्रनिभरुक्मकलशैःसुमनो
हरम् । छत्रस्फटिकसोपानवज्रकुटटशोभितम् । २० । मुक्त जालगवाक्षंच पताकाध्वजभूषितम् ।
घंट नकनिनादाढ्यंहेमतोरणमंडितम् ।२१। नानाश्चर्यमयंस्वर्णकपाटशत संकुलम् । ज न।द्रुमलत गु

चोटियों पर शरदकालीन अभ्रोंकी कांतिवाले मनोहर कलश स्थापित हैं चित्रविचित्र स्फटिक मणिकी उन महलों में सीढ़ियां चमक रही हैं और हीरों से जड़ी दीवार हैं ॥२०॥ मोतियों के झालर दार उनमें रोशनदान हैं पताका ध्वजाओं से शोभाय मान हैं। घण्टा एव नगाड़े जिन में सदा बजते रहते हैं स्वर्ण तोरणों से वे मण्डित हैं ॥ २१ ॥ सोने के बने हुए आश्चर्य में डाल देने वाले जिसमें सैकड़ों कपाट लगे हुए हैं। जिनमें बेल बूटे अनेकों द्रुम गुच्छ आदि का मनोहर काम हो रहा है

॥२२॥ इसी प्रकार और भी आभूषणोंसे सदा वह भूषितहै जिसे अपने योगके प्रभावसे विश्वकर्मा ने निर्मित किया है ॥२३॥ उसमें सौ योजन के विस्तार वाली सूर्य के समान प्रकाश मयी अत्यन्त दिव्य आनन्दप्रद सभा है ॥२४॥ न वह सभा स्थल बहुत शीतल है न अधिक गर्म, शोक जरा क्षुधा पिपासा आदिसे रहित एवं अत्यन्तप्रिय वह सभास्थल मनको अत्यन्त हर्ष

लम्बैर्निकंटैःसुविराजितम् ॥ २२ ॥ एवमादिभिरन्यैश्चभूषणैर्भूषितंसदा ॥ आत्मयोगप्रभावैश्चनिर्मितं विश्वकर्मणा ॥ २३॥ तस्मिन्नस्तिसभादिव्याशतयोजनमायता ॥ अर्कप्रकाशभ्राजिष्णुःसर्वतःकामरूपिणी ।२४। नातिशीतानचात्युष्णामनसोत्यंतहर्षिणी । नशोकोनजरातस्यांक्षुत्पिपासेनचाप्रियम् ॥२५॥ सर्वेकामाःस्थितायांयेदिव्यायेचमानुषा । रसवच्चप्रभूतंचभक्ष्यंभोज्यंचसर्वशः ॥ २६ ॥ रसवंतिचतोयानिशीतान्युष्णानिचैवहि । पुण्याः शब्दादयस्तस्यांनित्यंकामफलद्रुमाः ॥२७। असंबाधाचसातादर्यर

दायक है ॥२५॥ जिस सभा में देवता तथा मनुष्यों की सर्व प्रकार की कामनाओं को पूर्ण करने वाले सर्व पदार्थ सर्वदा उपस्थित हैं और रसीले भक्ष्य भोज्यादि पदार्थों की वहां किसी प्रकार की कमी नहीं ॥२६॥ शीतल अथवा उष्ण जिस प्रकार का भी जल चाहिए परमस्वादिष्टमधुर जल सदा वहां मौजूद है बड़े मधुर शब्दों द्वारा जहां स्वागत होता है मनःइच्छित उत्तम फल देने वाले वहां वृक्ष हैं॥२७॥ हे गरुड़ ! वह सभा किसी प्रकार की पीड़ा बाधा नहीं पहुंचाती बड़ी मनोहर है कामना

पूर्ण करने वाली हैं जिसे विश्वकर्मा ने दीर्घ काल तक तप करके निर्मित किया है ॥२८॥ उस सभा में उग्र तपस्वी, सदाचारी सत्यवादी, शान्त, सन्यासी पवित्र कर्म कर्ता, सिद्ध एवं पवित्रात्मा प्रवेश करते हैं ॥२९॥ परम निर्मल वस्त्र धारी प्रकाश मय शरीर वाले अलंकृत भूषित पुरुष ही उस सभामें अपने पुण्य मय कर्मों के द्वारा ही वहां निवास करते हैं ॥३०॥ उस सभा में

म्याकामगमासभा । दीर्घकालंतपप्त्वानिर्मिताविश्वकर्मणा । २८ । तामुग्रतपसोयांतिसुताःसत्यवादिनः ॥ शांताःसंन्यासिनःसिद्धापूताः पूतेनकर्मण । २९ । सर्वेभास्वरदेहास्तेऽलंकृताविरजांबराः ॥ स्वकृतैःकर्मभिः पुण्यैस्तत्रतिष्ठंतिभूषिताः । ३० । तस्यांसधर्मोभगवानासनेऽनुपमेशुभे ॥ दशयोजनविस्तीर्णेसर्वत्नैःसुमंडिते ॥३१॥ उपविष्टःसतांश्रेष्ठश्छत्रशोभितमस्तकः । कुंडलालंकृतःश्रीमान्महामुकुटमंडितः ॥३२॥ सर्वालंकारसंयुक्तोनीलमेघसमप्रभः ॥ बालव्यजनहस्ताभिरप्सरोभिश्चवीजितः ।३३।

दशयोजन तक विस्तार वाले रत्नों से जटित शुभ एवं अद्भुत सिंहासन पर भगवान धर्मराज विराजमान है ॥३१॥ श्रेष्ठों में श्रेष्ठधर्मराजके मस्तकपर छत्र शोभितहै कानोंमें कुण्डलझलक रहे हैं, श्रीमान हैं, मस्तक पर महामुकुट मण्डित है ॥३२॥ सर्व प्रकार के अलंकार जिन्होंने धारण किये हुये हैं और नीले मेघ के समान जिनकी कांति है और जिन्हें अप्सरायें छोटे २ पखे एवं चँवर हाथों में लेकर वायु कर रही हैं ॥२३॥ गन्धर्वगण अप्सराएँ मिलकर गीत वाद्य एवं नृत्य आदि से जिनकी सर्वतः

सेवा कर रही हैं ॥३३॥ हाथ में पास धारण किये हुए मृत्यु बलवान काल चित्र चित्रगुप्त एवं कृतान्तद्वारा जो सेवितहैं ।३४।

एवं चँवर हाथों में लेकर वायु कर रही हैं ॥२३॥ गन्धर्वगण अप्सराएँ मिलकर गीत वाद्य एवं नृत्य आदि से जिनकी सतत:

सेवा कर रही हैं ॥३३॥ हाथ में पास धारण किये हुए मृत्यु बलवान काल चित्र चित्रगुप्त एवं कृतान्तद्वारा जो सेवितहैं ।३४। इस प्रकार और भी दूत आज्ञावशवर्ती आत्मतुल्य बलवान पाश एवं दण्ड उठाते हुए नाना सुभटों से जो सेवित हैं ।३५। और अग्निवात, सोमया, उष्मया स्वधावन्त, बर्हिषद् नाम के पितरगण हे गरुड़! मूर्त एवं अमूर्त सभी ॥३६॥ अर्यमा आदि

गंधर्वाणांसमूहाश्चसंचयश्चाप्सरोगणः ॥ गीतदिवात्रनत्याद्यैः परितसेवयंतितम् ।३४। मृत्युनापाशहस्ते-नकालेनचवलीयसा । चित्रगुप्तेनचित्रेणकृतांतेननिषेवितः । ३५ । पाशदण्डधरैरुग्रैर्निर्देशवशवर्तिभि ॥ आत्मतुल्यवलैर्नानासुभटैपरिवारितः । ३६ । अग्निष्वात्ताश्चपितरःसोमपाश्चोष्मपाश्चयेस्वधावंतोव र्हिषदोमूर्ताश्चयेखग ॥ ३७ ॥ अर्यमाद्य पितृगणामूर्तिमंतस्तथापरे । सर्वेतेमुनिभिः सार्धधर्मराज मुपासते।३८।अत्रिर्वसिष्ठःपुलहोदक्षःक्रतुरथांगिराः । जामदग्न्योभृगुश्चैवपुलस्त्यागस्त्यनारदाः॥३९ ॥ एतेचान्येचबहवः पितृराज सभासदः ॥ नशक्याः परिसंख्यातुंनामभिः कर्मभिस्तथा ॥४०॥ व्याख्याभि

पितृगण और दूसरे मूर्तिमान पितर ये सब मुनियों के साथ मिलकर धर्मराज की उपासना करते हैं ॥३७॥ अत्रि, वशिष्ठ पुलह दक्ष, क्रतु, अङ्गिरा जामदग्नि, (परशुराम) भृगु पुलस्त्य, अगस्त नारद, ये ऋषिएवं औरभी बहुतसे धर्मराजकी सभाके सभासद हैं उनके नाम एवं कर्मों द्वारा संख्या ही नहीं हो सकती ॥३९॥ ४०॥ धर्मशास्त्रों की व्याख्या द्वारा अपना पूरा निर्णय

सुनाने वाले धर्मशास्त्री भी धर्मराज की सेवा करते हैं ॥४१॥ सूर्यवंशी चन्द्रवंशी आदि और भी धर्मात्मा राजा लोग धर्म राज के समीप बैठकर उपासना कर रहे हैं ॥४२॥ मनु, दिलीप, मांधाता, सगर, भागीरथ, अम्बरीश, अनरण्य, मुचुकुन्द ॥४३॥ निमि, पृथु, ययादि, नहुष, पुरु, दुष्यन्त, शिव, नल, भरत, शान्तनु, पाण्डु, एवं सहस्रार्जुन ॥४४॥ इत्यादि बड़े पुण्यात्मा

धर्मशास्त्राणांनिर्णेतारोयथ तथम् ॥ सेवंतेधर्मराजंतेशासनात्परमेष्ठिनः ॥ ४१ ॥ राजानःसूर्यवन्शोयाः सोमवंश्यास्तथापरे । सभायांधर्मराजंतेधर्मज्ञां पर्युपासते । ४२। मनुर्दिलीपोमांधातासगरश्चभागीरथः अंबरीषोऽनरण्यश्चमुचुकुन्दोनिमिःपृथुः । ४३ । ययातिर्नहुषःपुरुर्दुष्यंतश्चशिविर्नलः । भरतःशांतनुः पांडुःसहस्रार्जुनएवच ॥ ४४ । एतेराजर्षयः पुण्याःकीर्तिमंतोबहुश्रुताः । इष्ट्वाश्वमेधैर्बहुभिर्जाताधर्म समासदाः ॥ ४५ । सभायांधर्मराजस्यधर्मराजस्यधर्मएवप्रर्तते ॥ नतत्रपक्षपातोस्तिनानृतंनचमत्सरः।४६। सभ्याः सर्वेशास्त्रविदःसर्वेधर्मपरायणाः ॥ तस्यांसभायांसततंवैस्वतमुपासते ।४७। ईदृशीसासभातार्क्ष्य

कीर्तिमान, बहुश्रुत, राजऋषियोंने बहुतसे अश्वमेध यज्ञों के द्वारा भजन करके धर्मराज की सभामें सभासद होने की पदवी प्राप्त की है ॥४५॥ धर्मराजकी सभा में धर्मका साम्राज्य है किसी का भी वहां पक्षपात नहीं झूँठ बोलना एवं मत्सरता वहां नहीं है ॥४६॥ वहां के सभासद सबके सब धर्मात्मा एवं शास्त्र वेत्ता हैं सभा में बैठकर निरन्तर ही धर्मराज की सेवा करते हैं ॥४७॥ हे गरुड़ इस प्रकार की महात्मा धर्मराज की सभा है। जिसे दक्षिण मार्ग से आने वाले पापी लोग यमपुर

करते हैं ॥४७॥ हे गरुड़ इस प्रकार की महात्मा धर्मराज की सभा है । जिस दक्षिण मार्ग से आने वाले पापी लोग यमपुर

जाकर नहीं देख सकते ॥४८॥ धर्मराजके पुर में जाने को चार मार्ग हैं । पापियों के जाने के मार्ग के विषय में तो पहिले कहा जा चुका है ॥४९॥ शेष तीन मार्ग जो पूर्व आदि दिशाओं में हैं उनसे पुण्यात्मा पुरुष ही धर्म मंदिर में जाते हैं । हे गरुड़ ! उन्हें सुन ॥५०॥ उनमें पूर्व दिशा का मार्ग सर्वप्रकारके भोज्य पेय पदार्थों से परिपूर्ण है और कल्प वृक्षों की घनी

धर्मराजोमहात्मनः नतांपश्यंतितेपापादक्षिणेनपथागताः ॥ ४८ ॥ धर्मराजपुरेगंतुं मार्गाभवंतिच ॥ पापिनांगमनेपूर्वः सचतेपरिकीर्तितः । ४९ । पूर्वादिभिस्त्रिभिर्मार्गैर्ये गताधर्ममंदिरे । तेहिसुकृतिनः पुण्यैस्तस्यांगच्छंतेच्छृणु । ५० । पूर्व मार्गस्तुतत्रैकःसर्व भोगसमन्वितः ॥ पारिजाततरुच्छायाच्छादि तोरत्नमंडितः ॥ ५१ ॥ विमानगणसंकीर्णोहंसावलिविराजितः । विद्रुमारामसंकीर्णपीयूषद्रवसंयुतः ॥ ५२ ॥ तेनब्रह्मर्षयोयांतिपुण्याराजर्षयोमलाः ॥ अप्सरोगणगंधर्वविद्याधरमहोरगाः । ५३ ॥ देवता

शीतल छायासे आच्छादित है रत्नोंसे शोभायमान है ॥५१॥ अनेकों विमान वहां हर समय चलते दिखाई देते हैं । हंसों की पंक्तियों से सुशोभित है । विद्रुम मणि मण्डित वहां आराम है हर समय वहां अमृत की बूंदे बरसती रहती हैं ॥५२॥ इस प्रकार के मार्ग द्वारा पुण्यात्मा तथा निर्मल ब्रह्मर्षि, राजर्षि, अप्सराओंके गण, गन्धर्व, विद्याधर महोरग आदि जाते हैं ॥५३॥ और भी जोदेवताओं के आराधकहैं एवं शिवभक्तहैं और जो जेठ अषाढ़ महीनों में प्याऊ लगाने वाले माघ महीने में काष्ठ दान

करने वाले ॥५४॥ वर्षा काल में विरागी महात्माओं को दानमान पूर्वक जो विश्राम देते हैं, एवं दुखी पुरुषों को अमृतमय मीठा बोलकर आश्रय देते हैं ॥५५॥ और जो सत्यवादी माहात्मा हो एवं क्रोध लोभ से रहित हों पिता माता गुरु के भक्त एवं सेवा करने वाले हों ॥५६॥ और जो भूमि, घर, विद्या, गौ आदि दानकरने वाले पुराणोंमें की कथा कहने एवं सुनने वाले

राधकाश्चान्येशिवभक्तिपरायणा । ग्रीष्मेप्रपादानरतामाघेकाष्ठप्रदायिन ।५४। विश्रामयंतिवर्षासुविर-क्तान्मानतः ॥ दुखितस्यामृतंब्रूतेददतेआश्रमंतुये ॥ ५५॥ सत्यधर्मरतायेचक्रोधलोभविवर्जिता॥पितृमातृषुयेभक्तागुरुशुश्रूषणेरता । ५६ । भूमिदागृहदागोदाविद्यादानप्रदायका । पुराणवक्तृश्रोतारपारायणपरायणः ।५७। एतेसुकृतिनश्चान्येपूर्वद्वारेविशंतिच । यांतिधर्मसभायांतेसुशीला शुद्धबुद्धयः । ५८ । द्वितीयस्तूत्तमोमार्गोमहारथशतैर्वृतः । नरयानसमायुक्तोहरिचंदनमंडितः ॥५९॥ हंससारससंकीर्णश्चक्रवासोपशोभित । अमृतद्रवसंपूर्णस्तत्रभातिसरोवरः । ६० । अनेनवैदिकायांतितथाभ्यागतपूजकाः

सप्ताह आदि परायण करने वाले ।।५७।। इसप्रकार के पुण्यात्मा जन तथा और भी सुशील सुबुद्धि सज्जन धर्मराज की सभा में इसी पूर्व द्वार से प्रवेश करते हैं ॥५८॥ अब दूसरा उत्तर की ओर से मार्ग है। इस मार्ग में सजी सजाई बड़ी २ रथें एवं पालकियें सर्वदा उपस्थित रहती हैं और हरे २ चन्दन वृक्षों से शोभित हैं ॥५९॥ उस मार्ग में अमृत बिन्दुओंसे परिपूर्ण एक तालाब है वहां हंससारस चक्रवाक आदि पक्षी किलोलें कर रहे हैं॥६०॥ इस प्रकार के मार्ग द्वारा वेदपाठी एवं अतिथिअभ्या

गतोंके सत्कार करने वाले दुर्गा तथा सूर्यके भक्त पर्वों में तीर्थों का स्नान करने वाले ॥६१॥ और जो धर्म युद्ध में बीरगति पानेवाले, अनशन ब्रत द्वारा प्राण छोड़ने वाले काशी में मृत्यु होने वाले गौ को संकट से छुड़ाने के लिये प्राण देने वाले तीर्थ जल में प्राण छोड़ने वाले ॥६२॥ ब्राह्मणों के लिये, स्वामी के कार्य में तीर्थ क्षेत्र केअर्थ जिनकी मृत्यु होती है एवं

॥ दुर्गाभान्वोश्चयेभक्तास्तीर्थस्नाताश्चपर्वसु ।६१। येमृताधर्मसंग्रामेऽनशनेनमृताश्चये । वराणस्यांगोग्रहेचैवतीर्थतोयेमृताविधेः । ६२ । ब्राह्मणार्थेस्वामिकार्येतीर्थक्षेत्रेषुयेमृत : । येमृतादेवविध्वंसेयोगाभ्यासेनयेमृताः । ६३ । सत्पात्रपूजकानित्यंमहादानरताश्चये । प्रविशंत्युत्तरेद्वारेयांतिधर्मसभांचते । ६४ । तृतीयःपश्चिमोमार्गोरत्नमंदिरमंडितः सुधारससदापूर्णदीर्घिकाभिर्विराजितः । ६५ । ऐरावतकुलोद्भूतमत्तमातंगसंकुलः । उच्चैःश्रवः समुत्पन्नहयरत्नसमन्वितः ॥६६॥ एतेनात्मपरायांतिसच्छास्त्रपरिचिंतकाः ॥

देवमूर्तिकी रक्षा करने में तथा योगाभ्यास के द्वारा जिनकी मृत्यु होजातीहै ॥६३॥ और जो श्रेष्ठ पात्र की पूजा करते हैं और उनके प्रति नित्य ही दान करने में परायण रहते हैं ऐसे ही पुरुष उत्तर द्वार से धर्मराज को सभा में प्रवेश करते हैं ॥६४॥ तीसरामार्ग पश्चिमदिशामें है जोकि अनेकों रत्नों से जटित मन्दिरों से शोभित हो रहा है । और अनेकों अमृतसर से परिपूर्ण (बावड़ियों) से युक्त है॥६५॥इसप्रकार के मार्गपर ऐरावतके कुलमे उत्पन्न हुए मत्तहाथी एवं उच्चैः श्रवा अश्व से उत्पन्न हुये अश्वरत्न स्थित हैं ।६६॥आत्म चिन्तन करने वाले श्रेष्ठ शास्त्रों का विचार करने वाले अनन्य विष्णु भक्त, एवं गायत्री मन्त्र

के जपन करने वाले ही पुरुष इस मार्ग द्वारा हाथी घोड़ों पर. आरूढ़ होकर सभा में जाते हैं।६७। और जो पर हिंसापर द्रव्यलोभ, परनिन्दा से पराङ्गमुख रहते हैं अपने कलत्र में ही सन्तुष्टरहते हैं और जो यज्ञ हवन एवं वेदशास्त्रों को स्वाध्याय में निरत रहते हैं।६८। और जो ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करने वाले, वानप्रस्थी तपस्वी एवं पर द्रव्य हरण को धूल समझ

अनन्यविष्णुभक्ताश्चगायत्रीमन्त्रजापकः ॥ ६७ ॥ परहिंसापरद्रव्यपरवादपराङ्मुखाः स्वदारनिरताः संतःसाग्निकावेदपाठकाः ।६८। ब्रह्मचर्यव्रतधरावानप्रस्थास्तपस्विनः ॥ श्रीपादसंन्यासपराःसमलोष्टाश्मकांचनाः ॥ ६९ ॥ ज्ञानवैराग्यसपन्नाःसर्वभूतहितेरताः । शिवविष्णुव्रतकराःकर्मब्रह्मसमर्पकाः ।७०। ऋणैस्त्रिभिर्विनिमुक्ताःपंचयज्ञरताःसदा ॥ पितृणांश्राद्धदातारः कालेसंध्यामुपासकाः ॥ ७१ ॥ नीचसंगविनिमुक्ताः सत्संगतिपरायणाः एतेऽप्सरोगणैर्युक्ताविमानवरसंस्थिता ॥ ७२ ॥ सुधापानंप्रकुर्वन्तो

कर त्याग देने वाले सन्यासी ।६९। ज्ञान वैराग्य से सम्पन्नसर्वभूतोंके हितचाहने वाले, शिव विष्णु के व्रत करने वाले अपने कर्मों को ब्रह्म में समर्पण करने वाले ।७०। तीन प्रकारके ऋणों से मुक्त हुए पञ्च महायज्ञ करने वाले पितरों के श्राद्ध करने वाले समय पर सन्ध्या उपासना करने वाले ॥७१॥ नीच पुरुषों की सङ्गति में न पड़ने वाले श्रेष्ठ पुरुषों की सङ्गति करने वाले इस प्रकार के पुरुष अप्सरा गणों से युक्त होकर सुन्दर विमानों में बैठकर ॥७२॥ अमृतपान करते हुए धर्मराज की सभा

में पश्चिम द्वार से प्रवेश करते हैं ॥७३॥ इस प्रकार तीनों द्वार से आते हुये धर्मात्माओं को देखकर स्वयं धर्मराज उठके सामने आजाते हैं और बार२ स्वागत करते हैं॥७४॥ तब चतुर्भुज होकर, शंख चक्रगदा, तलवार धारण करके उन पुण्यात्माओं को बड़े प्रेम से मित्र की भांति धर्मराज मिलते हैं ॥७५॥ तब उन्हें सिंहासन देकर नमस्कार करता हुआ पाद्य अर्घ्यचंदन आदि

यांतितेधर्ममन्दिरम् । विशंतिपश्चिमेद्वारेयांतिधर्मसभांतरे । ७३ । यमस्तानागतान्दृष्ट्वास्वागतंवदते मुहुः । समुत्था नंचकुरुतेषांगच्छातिसम्मुखम् ।७४। तदाचतुर्भुजोभूत्वाशंखचक्रगदासिभृत् । पुण्यकर्म रतानांचस्नेहान्मित्रवदाचरेत् । ७५ । सिंहासनंचददतेनमस्कारंकरोतिच ॥ पाद्यार्घ्यंकुरुतेपश्चात्पूजते चंदनादिभिः॥ ७६ ॥ नमस्कुर्वन्तुभोःसभ्याज्ञानिनं परमादरात् एषमेमंडलं भित्वाब्रह्मलोकंप्रयास्यति ।७७। भो भो बुद्धिमतांश्रेष्ठानरकक्लेशभीरवः । भवद्भिः साधितं पुण्यैर्देवत्वं सुखदायकम् । ७८ । मानुषं-

द्रव्यों से उनकी पूजा करता है ॥७६॥ तब अपने सभासदों को कहताहै कि इन ज्ञानि पुरुषों को परम आदर से नमस्कार करो क्योंकि ये मेरे मंडलका भेदन करके ब्रह्मलोक में जाने वाले हैं ॥७७॥ फिर पुण्यात्माओं के प्रति कहता है कि हे बुद्धिमानों में परम श्रेष्ठ एवं नरकके क्लेशों को समझने वाले आप लोगों ने अपने पुण्यों द्वारा सुखदायक देवत्व सिद्ध किया है ।७८।

जो पुरुष दुर्लभ मनुष्य जन्मको पाकर उसे सिद्ध नहीं करता वह घोर नरकों में पड़ता है उससे बढ़कर मूर्ख कौन है ॥७९॥ इस नाशवान शरीर के द्वारा एवं नाशवान धनसे अनश्वर धर्मको सञ्चय करता है वही एक बुद्धिमान है ॥ ८० ॥ इसी कारण सर्वथा प्रयत्न करके धर्म का संचय करना ही उत्तम है अतः आप लोग सर्व भागों से संयुक्त पुण्यात्माओं के स्थान में जाएँ

दुर्लभंप्राप्यनित्यंयस्तुनसाधयेत् । सयातिनरकंघोरंकोऽन्यस्तस्मादचेतनः ॥७९॥ अस्थिरेणशरीरेणयोऽस्थिरैश्चधनादिभिः । संचिनोतिस्थिरंधर्मं सएकोबुद्धिमान्नरः ॥८० ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकर्तव्योधर्मसंचयः ॥ गच्छध्वंपुण्यवत्स्थानंसर्वभोगसमन्वितम् । ८१ । इतिधर्मवचःश्रुत्वातंप्रणम्यसभांचताम् ॥ अमरैःपूज्यमानास्तेस्तूयमानमुनीश्वरैः ॥ ८२ ॥ विमानगणसंकीर्णाःप्रयांतिपरमंपदम् । केचिद्धर्मसभायांहितिष्ठंतिपरमादरात् । ८३ । उषित्वातत्र कल्पांतंभुक्त्वाभोगानमानुषान् ।प्राप्नोतिपुण्यशेषेणमानुषंपुण्यदर्शनं । ८४ । महाधनीचसर्वज्ञः सर्वशास्त्रविशारदः । पुनःस्वकर्मविचारेणनतांयातिप

॥८१॥ इसी प्रकार धर्मराज के वचन सुनकर एवं उस सभा को भी प्रणाम करके देवता एवं मुनीश्वरों से पूजा प्राप्त करके ॥८२॥ विमानों में बैठकर परम पद को प्राप्त होते हैं। उन में से कई एक उस सभा में आदर पूर्वक रह जाते हैं ॥८३॥ वहां कल्प पर्यन्त रह कर देवताओं के भोग प्राप्त करके शेष पुण्यों से पुण्य दुर्लभ मनुष्य जन्म को फिर प्राप्त करते हैं ॥८४॥

वहां धनवान, सर्वज्ञ सर्वशास्त्र विशारद होकर फिर से आत्मतत्त्व चिन्तन में परायण होकर परमगति को प्राप्त करते हैं ।५८। भगवान कहते हैं कि--हे गरुड़ ! जो तुमने यमलोक के विषय में पूछा था सो सब मैंने सुना दिया । इसको जोकोईभक्तिएवं श्रद्धा से श्रवण करता है वह भी धर्मराज की सभा में प्राप्त होता है ।८६। इति श्री गरुड़ पुराण शास्त्रिहरिश्चद्र कृत सरला टीकायां धर्मराज नगर निरूपणे नाम चतुर्दशोऽध्यायः ।। १४ ।।

रांगतिम् ।। ८५ । एतत्ते कथितं सर्वंत्वयापृष्टंयमालयम् । इदंशृण्वन्नरोभक्त्याधर्मराजसभांव्रजेत् ।। ८६ ।। इतिश्रीगरुड़पुराणेसारोद्धारे धर्मराजनगर निरूपणोनाम चतुर्दशोऽध्यायः ।। १४ ।।

गरुड़ो उवाच । धर्मात्मास्वर्गतिंभुक्त्वा जायते विमलेकुले । अतस्तस्यसमुत्पत्तिंजननीजठरेवद ।। १ ।। यथा विचारंकुरुतेदेहेस्मिन्सुकृतीजनः तथ हंश्रोतुमिच्छामिवदमेकरुणानिधे ।२। श्रीभगवनु-

श्री भगवान् से यह सुनकर कि पुण्यात्मा पुरुषों का फिर मनुष्य जन्म होता है इस विषय में फिर गरुड़ प्रश्न करता है कि हे प्रभो ! धर्मात्मा मनुष्य स्वर्ग को भोगकर फिर निर्मल कुल में जाकर उत्पन्न होता है कृपा करके उसकी माता के गर्भ से उत्पत्ति का वर्णन करें ।।१।। और वह पुण्यात्मा जीव उस शरीर में जिस प्रकार का विचार करता है हे करुणानिधे ! वह भी सुनाइये ।।२।। श्री भगवान बोले हे गरुड़ ! तुमने सुन्दर प्रश्न किया है । इसका उत्तर परम गोप्य होने पर भी मैं तुझे

कहताहूं। जिसके ज्ञान मात्रसे सर्वज्ञता प्राप्त होतीहै।३। शरीरका स्वरूप परम अर्थको सिद्धकर ने वाले अनेक गुण सम्पन्न एवं योगियोंको धारण का स्थान है सो मैं तुझे कहता हूं।४। जिस शरीरमें योगिजन षट्चक्रों का चिंतन करते हैं, फिर दशमद्वार ब्रह्मरन्ध्र में चिदानन्द ब्रह्म का ध्यान करते हैं, वह मैं तुम्हें सुनाता हूं।५। जिस प्रकार परम पवित्र श्रीमानों के घर

वाच। साधुपृष्टंत्वयातातद्यत्परंवदामिते। यस्यविज्ञानमात्रेणसर्वज्ञत्वंप्रजायते॥ ३। वक्ष्यामिच शरीरस्यस्वरूपंपारमार्थिकम्। ब्रह्माण्डगुणसम्पन्नंयोगिनांधारणास्पदम् षट्चक्रचिंतनं यस्मिन्यथाकुर्वन्तियोगिनः ब्रह्मरंध्रेचिदानन्दरूपध्यानंतथाशृणु॥ ५ ॥ शुचीनांश्रीमतांगेहेजायतेसुकृतीयथा॥ तथा विधानांनियमंतत्पित्रोःकथयामिते। ६। ऋतुकालेतुनारीणांत्यजेद्दिनचतुष्टयम्। तावन्नालोकयेद्वक्त्रं पापंवपुषिसंभवेत् ७। स्नात्वासचैलंसानारीचतुर्थेहनिशुद्ध्यति। सप्ताहात्पितृदेवानां भवेद्योग्याव्रतार्चने।८।

जाकर पुन्यात्मा जन्म लेते हैं उनके माता पिता के नियम कहता हूं।६। श्रेष्ठ पिता ऋतु काल में चार दिन स्त्री का त्याग करे, क्योंकि इतने दिन इन्द्रसे दी हुई ब्रह्म हत्या स्त्री के शरीरमें रहतीहै, रजोरूपसे निकलती है, इतने दिन स्त्री का मुख न देखे पापहोताहै ॥७। चौथे दिन वस्त्रोंके साथ स्नान करे तब शुद्धहोती है, पीछे सातवें दिन से पितृ देवताओं के पूजन करनेके योग्य होतीहै ॥८। सप्ताह के मध्य हुआ गर्भाधान अच्छा नहीं क्योंकि उसमें मलिनाशय कुपुत्र की उत्पत्ति होती है

अष्ठाह के मध्य पुत्र तो प्रायः होते हैं किन्तु सुपुत्र नहीं होते ॥९॥ सम रात्रियों में गर्भाधान करने से पुत्र विषम रात्रियों में कन्या होती है। पुत्र की इच्छा से इसी कारण पाहिले दिन छोड़ कर युग्म तिथियों में गर्भाधान करे। अर्थात् ८।१०।१२।१४।१६। ये युग्म तिथि एवं ७ ९।११।१३।१५। यह विषम तिथि हैं ॥१०॥ सामान्य भाव से स्त्रियों की १६ ऋतु काल की

सप्ताहमध्येयोगर्भ सभवेन्मलिनाशयः ॥ प्रायशः संभवंत्यत्रपुत्रास्त्वष्टाहमध्यतः । ९ । युग्मसुपुत्राजायंतेस्त्रियोऽयुग्मासुरात्रिषु । पूर्वसप्तकमुत्सृज्यतस्माद्युग्मासुसंविशेत् । १० । षोडशर्तु निशाःस्त्रीणां-सामान्याःसमुदाहृताः ॥ यावैचतुर्दशीरात्रिर्गर्भतिष्ठतितत्रवै ॥ ११ ॥ गुणभाग्यनिधिः पुत्रस्तदाजायेत धार्मिकः ॥ सानिशाप्राकृतैर्जीवैर्नलभ्येतकदाचन ।१२। पंचमेऽहनिनारीणांकार्यं मधुर भोजनम् ॥ कटुक्षारंचतीक्ष्णंचत्याज्यमुष्णांचदूरतः । १३ । तत्क्षेत्रमोषधीपात्रंबीजंचाप्यमृतायतम् ॥

रात्रियेंहोती हैं। उनमें चौदवीं रात्रि में गर्भ रहजाता है॥११॥ चौदवीं रात्रिमें प्राकृत अभागे पुत्र कभी गर्भ में नहीं आ सकते यह रात्रि तो गुणवान भाग्यबान धार्मिक पुत्रोंके लिए है ॥१२॥ ऋतु कालानन्तर स्त्रियों के नियम यह होने चाहिये-चौथे दिन शुद्ध होकर पांचवे दिन स्त्री मधुर भोजन करे। कड़वी खारी तीक्ष्ण एवं गरम वस्तुओं का दूर से त्याग करे ॥१३॥ स्त्रियोंका उदर औषधि उत्पन्न करनेका क्षेत्र है, पुरुष वीर्य बीज है एवं अमृत बृष्टि है। किसान जिस प्रकार क्षेत्र को शुद्ध करके बीज बोता है, उससे उत्तम फल की प्राप्ति होती है इसी प्रकार स्त्रियों को मधुर भोजन देने से पुत्र रूप फल उत्पन्न

होने के योग्य स्त्रीयोंका उदररुप क्षेत्र शुद्ध हो जाता है ।१४। पुरुष भी रतिदान की रात्रि से प्रथम, ताम्बूल सेवन पुष्पों की माला को धारण चन्दन आदि सुगन्धि पदार्थों का लेपन स्वच्छ वस्त्र धारण करके प्रसन्नता के साथ २ मनमें धैर्यका स्मरण करके स्वच्छ शय्यापर स्त्री के पास जावे । १५ । रतिदान के समय पुरुष के जिस प्रकार के भी चित्तके बिचार होते हैं उन्हीं

तस्मिन्नुप्त्वानरः स्वामीसम्यक्फलमवाप्नुतात् ॥१४॥ तांबूलपुष्पश्रीखंडैःसंयुक्तः शुचिवस्त्रभृत् ॥ धर्ममा दायमनसिसुततेल्पंसंविशेत्पुमान् ॥१५॥निषेकसमयेयादृ ङ्नरचित्तविकल्पना ॥ तादृक्स्वभावसंभूतिर्ज तुर्विशतिकुक्षिगः ॥ १६ ॥ चैतन्यबीजभूतंहिनित्यंक्प्यस्थितम् ॥ कामश्चित्तंचशुक्रंचयदाह्येकत्र- माप्नुयात् ॥ १७ ॥ तदाद्रावमवप्नोतियो पिद्गर्भाशयेनरः । शुक्रशोणितसंयोगत्पिंडोत्पत्तिःप्रजायते ॥१८ ॥ परमानन्द दःपुत्रोभवेद्गर्भगतःकृती ॥ भवंतितस्यनिखिलाःक्रियाःपुंसवनादिका॥१९॥जन्म

विचारोंका स्वभाव पाकर ही जीव गर्भ में प्रवेश करता है ।१६।। बीजरुप चेतनता नित्य ही वीर्य में रहती है, इसी प्रकार जब कामदेव, चित्त एवं वीर्य इन तीनों का एकी भाव होता हैं ।१७। तब स्त्री के गर्भाशय में पुरुष का वीर्य पड़ता है । एवं पुरुष का वीर्य तथा स्त्री का रज इन दोनों के संयोग से गर्भ में पिण्ड उत्पन्न होता है ।। १८ ।। गर्भ में आया हुआ पुत्र परम आनन्द देता हैं, ऐसे ही पुण्यात्मा के पुंस बन आदि सारे संस्कार उत्तम होते हैं ।१६।। ऐसा पुण्यात्मा पुत्र सूर्यादिग्रहों के

उच्च होने पर ही जन्म लेता है इनके जन्म समय ब्राह्मण बहुतसा धन पाते हैं ।२०। ऐसा बालक पिता के घर विद्या विनय से सम्पन्न होकर ही बढ़ता है श्रेष्ठ पुरुषों की संगति से वेदशास्त्रों में निपुण हो जाता है ।२१। तरुणावस्था में दिव्य स्त्री को पाता है । धन को पाकर दान करने में तत्पर रहता है, पूर्व जन्म कृत तप जप तीर्थ आदि के पुण्ड फल उदय होने पर

प्राप्नोतिपुण्यात्माग्रहेषूच्चगतेषुच ।। तज्जन्मसमयेविप्राःप्राप्नुवंतिधनंबहु ।।२०।। विद्याविनयसंपन्नोवर्द्धते पितृवेश्मनि ।। सतांसंगेनसभवेत्सर्वागमविशारदः । २१ । दिव्यांगनादिभोक्तास्यात्तारुण्येदानवान्धना पूर्वकृततपस्तीर्थमहापुण्यफलोदयात् ।।२२।। ततश्चयततेनित्यमात्मानात्मविचारणे ।। अध्यारोपापवादा भ्यांकुरुतेब्रह्मचिंतनम् ।।२३।। आत्मासद्भावबोधायब्रह्मणोन्वयकारिणः ।। नित्याद्यनात्मवर्गस्यगुणांस्तेकथ

।२२। तब वह आत्म अनात्म के विचार में प्रयत्न करता है । वस्तु में जसे रज्जु में सर्प समझना ये अध्यारोप और अवस्तु जैसे अज्ञान रूप प्रपंच को सत्य समझना यह अपवाद इन दोनों के द्वारा (सर्वखल्विदं ब्रह्म नेहनानास्ति किंचन) इस श्रुति गम्य ब्रह्म का चिन्तन करना ।। २३ ।। आत्मा रूप ईश्वर एवं अनात्मा रूप देहादिक एवं पृथिव्यादि में ब्रह्म का सम्बन्ध है किन्तु कमल जलवत् असंग है इसी ज्ञान के लिये हे गरुड़ ! अनात्मा रूप पृथिवी आदि के गुण मैं तुम्हें कहता हूँ

।२४। पृथ्वी १, जल २, तेज ३, पवन ४, आकाश ५, पंच महाभूत ही शरीर के कारण हैं इन्हों से पांच भौतिक शरीर बनता है ।२५। इन पांच महाभूतों में पृथ्वी के गुण–त्वचा, अस्थि नाड़ियां रोम, इत्यादि यह पांच हे गरुड़ ! पृथ्वी के गुण कहे गयेहैं ।२६। लाला, मूत्र, वीर्य, मज्जा, रुधिर यह पांच जलके गुणहैं । अब तेज तत्व के गुण भी सुनो ।२७। भूख

याम्यहम् ॥२४॥ क्षितिर्वारिहविर्भोक्तावायुराकाशएवच ॥ स्थूलभूत इमेप्रोक्ताःपिंडोयेपांचभौतिकः।२५। त्वगस्थिनाड्योरोमाणिमांसंचैवखगेश्वर ॥ एतेपञ्चगुणाभूमेर्मयातेपरिकीर्तिताः ।२६। लालामूत्रं था शुक्रंमज्जारक्तंचपंचमम् ॥ अपांपंचगुणाःप्रोक्तास्तेजसोपिनशामय ॥ २७ ॥ क्षुधा तृषातथालस्यंनिद्रा कांतिस्तथैवच । तेजःपंचगुणंतार्क्ष्यप्रोक्तंसर्वत्रयोगिभिः ॥ २८ ॥ आकुंचनंधावनंच लंघनंचप्रसारणम् चेष्टितंचेतिपंचैवगुणावायोःप्रकीर्तिताः ।२९। घोषश्चिंताचशून्यत्वमोहश्चिंताचसंशयः । आकाशस्यगुणाः पंचज्ञातव्यास्तेप्रयत्नतः । ३० । मनोबुद्धिरहंकारश्चित्तंचेतिचतुष्टयम् ॥ अन्तःकरणमुद्दिष्टंपूर्वकर्माधि

प्यास, आलस्य, निद्रा एवं कांति यह पांच गुण योगियों ने तेज तत्व के कहे हैं ॥२८॥ संकोच करना, दौड़ना, उल्लंघन करना, विस्तार करना एवं चेष्टा करनी ये पांच वायु के गुण हैं ॥२९॥ शब्द, चिन्ता, शून्यता, मोह एवं संशय यह आकाश के गुण हैं ॥३० मन, बुद्धि अहंकार एवं अन्तःकरण यह पूर्व जन्म के शुभाशुभ कर्मों से संयक्त हो कर ही देह में

रहते हैं ॥३१॥ त्वचा नेत्र, रसना, नासिका यह पांच ज्ञानेन्द्रियें एवं वाणी पाद, कर, गुदा, गुह्येन्द्री यह पांच कर्मेन्द्रियें हैं ॥३२॥ दिशा, पवन सूर्य प्रचेता, अश्विनी कुमार अग्नि, इन्द्र, उपेन्द्र, एवं मित्र यह दश दश-इद्रियों के देवता हैं ॥३३॥ इड़ा, पिंगला सुषुम्णा, गान्धारी, गजजिव्हा, पूषा यशश्विनी ॥३४॥ अलंबुषा, कुहू शंखिनी यह शरीर में दश

वासितम् ।३१। श्रोत्रंत्वक्चक्षुषीजिव्हाघ्राणंज्ञानेन्द्रियाणिच। वाक्पाणिपादपायूपस्थानिकर्मेन्द्रियाणिच। ३२। दिग्वातार्कप्रचेतोश्विवह्नींद्रोपेंद्रमित्रकाः ॥ ज्ञानकर्मेन्द्रियाणांचदेवता परिकीर्तिताः ॥ ३३ ॥ इडाचपिंगलाचैवसुषुम्णाख्यातृतीयका । गांधारीगजजिव्हाचपूषाचैवयशस्विनी । ३४ । अलंबुषाकुहूश्चापिशंखिनीदशमीतथा । पिंडमध्येस्थिताह्येताः प्रधाना दशनाडिकाः ।३५।प्राणोपानसमानाख्यउदानोव्यानएवच ॥ नागः कूर्मश्चकृकलोदेवदत्तोधनंजयः ।३६। हृदिप्राणोगुदेऽपानःसमानोनाभिमण्डले ॥ उदानः कंठदेशेस्य द्व्यानः सर्वशरीरगः ॥३७॥ उद्गारेनागआख्यातः कूर्मउन्मीलनेस्मृतः । कृकलः

नाड़ियां मुख्य हैं ॥३५॥ प्राण, अपान, समान, उदान व्यान, नाग कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय दश प्राण हैं ।३६॥ हृदय में प्राण रहता है, गुदामें अपान, नाभिमें समान, कण्ठ में उदान, एवं सारे शरीरमें व्यापकहोकर व्यान वायु रहता है ॥३७॥ वमन नाग वायु द्वारा होताहै, कूर्म वायु से नेत्रोंका उन्मीलन होताहै, कृकल वायु से छिक्का (छींक) होती है देवदत्त वायु से

जृम्भण (उवासी) होता है ।३८। धनंजय वायु सर्व व्यापक है यह मृत्यु होने के अनन्तर भी कुछ काल शरीर में रहता है। अब अन्नादि के उदर में पचने का विधान यह है कि–ग्रास ग्रास के द्वारा खाया गया अन्न सारे शरीर में पुष्टि देता है ।३६। सारे शरीर में व्यापक व्यान वायु अन्नादि के सारांशको सब नाड़ियों में पहुँचा देता है। खाये गये अन्न के दो

क्षुत्करोऽन्न यादेवदत्तोविजृंभणे ॥ ३८ ॥ नजहाति मृतंवापिसर्वव्यापीधनंजयः । कवलैर्भुक्तमन्नंहिपुष्टिःदंसर्वदेहिनाम् ।३६। नयतेव्यानकोवायुः सारांशंसर्वनाडिषु ॥ आहारोभुक्तमात्रोहिवायुनाक्रियतेद्विधा । ४० । संप्रविश्यगुदेसम्यक्पृथकग्जलम् ॥ ऊर्ध्वमग्नेर्जलंकृत्वान्नंचजलोपरि ॥ ४१ ॥ अग्नेश्चाधःस्वयंप्राणः स्थित्वाग्निधमतेशनैः वायुनाध्मायमानोग्निः पृथक्किट्टं पृथग्रसम् ॥ ४२ ॥ कुरुतेव्यानको

विभाग वायु ही कर देता है ।२०। जब भोजन गुदा के समीप पहुँचता है तब अन्न एवं जल पृथक् २ हो जाते हैं। जठराग्नि के ऊपर जल आजाता है एवं जल के ऊपर अन्न आजाता है ।।४१।तत्र उस अग्नि के नीचे प्राण वायु स्वयं आकर शनै शनै उस अग्न को भडकाता है एवं वायु द्वारा उदीप्त की गई अग्नि के सारे रस अंश तथा मल अंशको भिन्न २ कर देती है ।४२। तब उस सार अंश को व्यान वायु सारे शरीर में ले जाता है। उस का भी मल अंश

पृथक करके बारह द्वारों से बाहिर निकाल देता है ।४३। कान नेत्र नासिका, जिव्हा, ...

पृथक करके बारह द्वारों से बाहिर निकाल देता है ।४३। कान नेत्र नासिका, जिव्हा, दंत, नाभि, नख गुदा गुह्येन्द्रिय मस्तक, शरीर, एवं रोम--यह मल निकालनेके लिये १२ द्वार हैं ।४४। जिस प्रकार सूर्य की सत्ता से सारे जीव अपने २ काम में लग जाते हैं उसी प्रकार यह सब दशवायु भी आत्माकी सत्तासे अपने २ काम में प्रवृत्त रहते हैं ॥४५। हे गरुड़ !

वायुर्विष्वक्सं प्रापयेद्रसम् । द्वारैर्द्वादशभिर्भिन्नं किट्टं देहाद्बहिः स्रवेत् ।४३। कर्णाक्षिनासिकाजिव्हादंता नाभिर्नखागुदम् । गुह्यं शिरावपुर्लोममलस्थानानिचक्षते ।४४। एवंसर्वेप्रवर्ततेस्वेस्वेकर्मणिवायवः ॥ उपलभ्यात्मनः ॥ सत्तांसूर्याल्लोकंयथ जनाः।४५।इदानीं नरदेहस्यशृणुरूपद्वयंखग । व्यावहारिकमेकंचद्वितीयंपारमार्थिकम् ।४६। तिस्रःकोट्योर्धकोटीचरोमाणीव्य वहारिके । सप्तलक्षाणिकेशाःस्युर्नखा-प्रोक्तास्तुविंशतिः । ४७। द्वात्रिंशद्दशनाःप्रोक्ताःसामान्यद्विनतासुत ॥ मांसपलंसहस्रंतुरक्तंपलशतं

मनुष्यों के शरीर के दो रूप हैं । एक व्यवहारिक, दूसरा पारमार्थिक है ॥ ४६ ॥ इस व्यवहारिक शरीर में साढ़े तीन करोड़ तो रोम और सात लाख केश एवं बीस नख हैं ॥ ४७ । हे विनतानन्दन ! सामान्य भावसे इस शरीर में बत्तीस दन्त हैं और त्वचा, चर्म, मांस रुधिर, मेद मज्जा, इन सात धातुओं में से मांसका प्रमाण एक हजार पल एवं रुधिर प्रमाण सौ

पल है ॥४८॥ दश पल प्रमाण मेद है सत्तर पल त्वचा है बारह पल मज्जा है। तीन पल महा रुधिर रहता है ॥४६॥ दश मायकूका एक कुड्य होता है तो दो कुड्य प्रमाण वीर्य रहता है एवं स्त्री शरीर में पुत्रोत्पत्ति कारक एक कुड्य रुधिर रहता है। मनुष्य शरीर में तीन सौ साठ अस्थियां रहती हैं॥ ५० ॥ सूक्ष्म स्थूल मिल कर एक करोड़ नाड़ियें होती हैं।

स्मृतम् ॥ ४८ ॥ पलानिदशमेदस्तुत्वक्पलानिचसप्ततिः । पलद्वादशकमज्जामहद्रक्तंपलत्रयम् ॥ ४६ ॥ शुक्रंद्विकुडवंज्ञेयंकुडवं शोणितस्मृतम् । षष्ट्युत्तरंचत्रिशतमस्थ्नांदेहेप्रकीर्तितम् ॥५०॥ नाड्यःस्थूलाश्च सूक्ष्माश्चकोटिशःपरिकीर्तिताः ॥ पित्तंपलानिपंचाशत्तदर्द्धं श्लेश्मणस्तथा ।५१। सततंजायमानंतुविण्मूत्रंचाप्रमाणतः ॥ एतद्गुणसमायुक्तंशरीरंव्यावहारिकम् ॥ ५२ । भुवनानि च सर्वाणि पर्वता द्वीप सागराः ॥ आदित्याद्याग्रहाः संतिशरीरेपारमार्थिके । ५३ । पारमार्थिकदेहेहिषटचक्राणि भवंतिच ॥ ब्रह्मांडेयेगुणाः प्रोक्तास्तेप्यस्मिन्नेवसंस्थिताः । ५४ । तानहंतेप्रवक्ष्यामियोगिनांधारणास्पदान् ॥ येषांभाव

पचास पल प्रमाण पित्त एवं पचास पल श्लेष्म रहता है ॥५१॥ निरन्तर उत्पन्न होने वाले मल मूत्र का तो कुछ ठिकाना नहीं वह कितने प्रमाणहैं। सो इसी प्रकारके व्यवहारिक शरीर के गुण हैं ॥५२॥ अब पारमार्थिक शरीर के लक्षण सुनिये चौदह लोकसप्त पर्वतसप्तद्वीपसप्त सागर एवं सूर्य आदि नौ ग्रह ये सब परमार्थिक शरीर में रहते हैं ॥५३॥ षट्चक्र तथा ब्रह्माण्ड मेंजो गुण हैवे सब इसी पारमार्थिक शरीर मं रहते हैं ॥५४॥ योगी जनों के धारण करने के योग्य उन ब्रह्माण्ड के गुणों को

में तुझे कहता हूं जिनकी भावना के द्वारा मनुष्य विराट रूप का भजन कर्ता हो जाता है ॥५५॥ पांवों के नीचे तल लोक पांवों के ऊपर वितल, जानु में सुतल, सक्थि (सथल) देश में महातल लोक का निवास है ॥ ५६ ॥ और सथल के मूल में तलातल, गुह्यदेश में रसातल कटि में पाताल—इसी प्रकार ये सात लोक हुए ॥५७॥ नाभि मध्य में भूर लोक उदर में भुवः

नयाजंतुर्भवेद्वैराजरूपभाक् । ५५ । पादाधस्तात्तलंज्ञेयंपादोर्ध्ववितलंतथा । जानुनोः सुतलंविद्धिसक्थिदेशेमहातलम्।५६।तलातलंसक्थिमूलेगुह्यदेशेरसातलम् ॥पातालं कटे संस्थंचसप्तलोकाःप्रकीर्तिताः । ५७ । भूर्लोकंनाभिमध्येतुभुवर्लोकंतदूर्ध्वके । स्वर्लोकंहृदयेविद्यात्कंठदेशेमहस्तथा । ५८ । जनलोकं वक्त्रदेशेतपोलोकं ललाटके ॥ सत्यलोकं ब्रह्मरंध्रेभुवनानिचतुर्दश ॥ ५९ ॥ त्रिकोणेसंस्थितोमेरुरधः कोणेचमंदरः ॥ दक्षकोणेचकैलासो वामकोणेहिमाचलः ॥ ६० ॥ निषधश्चोर्ध्वरेखायांदक्षायागंधमादनः । रमणोवामरेखायांसप्तैतेकुलपर्वताः ॥ ६१ ॥ अस्थिस्थाने भवेज्जंबुःशाकोमज्जासुसंस्थितः ॥ कुशद्वीप

लोक हृदय में स्वर्ग लोक कण्ठ में महलोक ।५८। मुख में जनलोक मस्तक में तपलोक ब्रह्मरन्ध्र में सत्यलोक इस प्रकार यह चौदह लोक पारमार्थिक शरीर में रहते हैं। ५९ । त्रिकोण हृदय कमल में मेरु पर्वत नीचे कोण में मन्दराचल दक्षिणकोण में कैलाश वामकोण में हिमालय पर्वत रहता है ।६०। ऊर्द्ध रेखामें निषध पर्वत एवं दक्षिण दिशामें गन्धमादन पर्वत है वामरेखामें रमण पर्वत है इस प्रकार यह सात कुल पर्वत हैं। ६१ । अस्थि स्थानमें जम्बुदीप एवं मज्जा में शाकद्वीप मांस में कुशद्वीप एवं

नाड़ी स्थान में क्रौंच द्वीप कहा गया है ।।६२। त्वचा में शाल्मली द्वीप, रोम समूह में प्लक्ष द्वीप, नख स्थात में पुष्कर द्वीप है, इस प्रकार अब समुद्रों की गणना करते हैं ।। ६३ ।। मूत्र स्थान में क्षार समुद्र शरीर के क्षीर स्थान में क्षीर समुद्रश्लेष्म में सुरोदधि,एवं मज्जा में घृत समुद्र है । ६४ । रस में रस समुद्र, शोणित में दधि समुद्र, कण्ठान्तर्गत लम्बिका स्थान में हे

स्थितोमांसे क्रौंचद्वीपः शिरासुच ॥ ३२ ॥ त्वचायांशाल्मलीद्वीपोगोमेदोरोमसंचये ॥ नखस्थंपुष्करं-विद्यात्सागरास्तदन्तरं ॥६३॥ क्षारोदोहिभवेन्मूत्रेक्षीरोदसागरः ॥ सुरोदधिःश्लेष्मसंस्थोमज्जायांघृतसागरः॥ ६४॥ रसोदधिंरसे विद्याच्छोणितेदधिसागरः ॥ स्वादूदोलंबिकास्थनेजानीयाद्गिनतासुत ॥६५॥ नादचक्रे स्थितः सूर्योबिंदुचक्रे चचन्द्रमाः॥ लोचनस्थःकुजोज्ञैयोहृदयेज्ञः प्रकीर्तितः ॥ ६६ ॥ विष्णुस्थानेगुरुं वेद्य च्छुक्रे शुक्रोव्यस्थितः ॥ नाभिस्थाने स्थितोमंदोमुखेराहुः प्रकीर्तितः ॥ ६७ ॥ वायुस्थाने स्थितः केतुः शरीरेगृहमण्डलम् ॥ एवंसर्वस्वरूपेणचिंतयेदात्मनस्तनुम् ॥६८॥ सदाप्रभातसम

गरुड़ स्वादक समुद्र है ॥ ३५ ॥ ब्रह्मरन्ध्र से एक अंगुलि नीचे नाद चक्र में सूर्य स्थित है इसके एक अंगुलि नीचे विन्दु चक्रमें चन्द्रमा एवं नेत्रों में मङ्गल तथा हृदय में बुध स्थित है ॥६६॥ नाभि के भीतर मणि पूरकचक्र में गुरु वीर्य में शुक्र नाभि गोलक में शनि मुख में राहु स्थित है ॥ ६७ ॥ हृदय में कण्ठ नक विष्णु स्थत में केतु स्थित है इस प्रकार शरीर में ग्रह मंडलकी रचना का प्रकार है । यही विराट अपने शरीर में धारणा द्वारा चिन्तन करें ॥६८॥ इस प्रकार प्रातः काल

सर्वदा पद्मासन करके अजपा जपके क्रम से षट चक्रों का चिंतन यथा कथन करता रहे।६९। अजपा गायत्री का नाम है। मुनिजनों को मोक्ष देने वाली है इसके संकल्प मात्र से सब पाप निवृत्त हो जाते हैं।७०। हे गरुड़? इस अजपा जपका उत्तम क्रम सुन। जिसे सर्वदा करके जीव जीवभाव को त्यागता है॥७१॥ षट चक्र का विस्तार यह है-मूलाधार १, स्वाधि

येबद्धपद्मासन स्थिते। षटचक्रंचिंतनंकुर्याद्यथोक्तमजपाक्रमम् ॥६९॥ अजपानामगायत्रीमुनीनांमोक्ष-दायिनी।अस्याःसंकल्पमात्रेणसर्वंपापैःप्रमुच्यते॥७०॥शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्येहमजपाक्रममुत्तमम्। यंकृत्वासर्वदा जीवोजीवभावंविमुंचति ॥ ७१ ॥ मूलाधारेः स्वाधिष्ठानं मणिपूरकमेवच। अनाहतंविशुद्धयाख्य-माज्ञाषटचक्रमुच्यते॥७२॥मूलाधारेलिंगदेशे नाभ्यांहृदिचकंठगे। भ्रवोर्मध्येब्रह्मरंध्रेः क्रमाच्चाक्राणिचिंतयेत् ॥७३॥ आधारंतुचतुर्दलानलसमंवासांतवर्णाश्रयंस्वाधिष्ठानमपिप्रभाकरसमंबालांतषट्पत्रकम् ॥ रक्ता-

ष्ठान २, मणि पूरक ३, अनाहृत चक्र ४, विशुद्धचक्र ५, आज्ञाचक्र ६,।७२। लिंग देश में मूलाधार चक्र है, सूलाधार में स्वाधिष्ठान चक्र है, नाभि में मणी पूरकचक्र है, हृदय में आनाहतचक्र है, कण्ठ में विशुद्ध चक्र है, भ्रुवदेश के मध्यमेंआज्ञाचक्र है, इस प्रकार इनका चिन्तन करे।७३॥ अब इसका स्वरूप कहते हैं—आधारचक्रका अग्नि के समान वर्ण है व, श, ष, स, ये चार वर्ण हैं। स्वाधिष्ठानचक्र सूर्य के समान व, भ, म, य, र, ल, इस प्रकार षट् दल हैं। मणिपूरक चक्र रक्तवर्णएवंदड,

ढ, ण, त, थ, द, ध, न, फ, इस प्रकार दशदल का है। अनाहत चक्र सुवर्ण मय, क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, इस प्रकार १२ दल का है। ॥७४॥ एवं विशुद्धि चक्र चन्द्रवत प्रकाशमान तथा सोलह स्वरों के सहित है, और आज्ञा चक्र भृकुटी में हैं एवं ह, स, इन दो दलों का रक्त वर्ण है कमल है। इस प्रकार के छः चक्रों के ऊपर परम प्रकाशमान सत्य

भंमणिपूरकंदशदलंडाद्यं फक रातकं पत्रैर्द्वादशभि नाहतपुरं हैमंकठं नावृतम् ।७४। पत्रैस्स्वरषोडशैः शशधरज्योतिर्विशुद्धांबुज हंसेत्यत्तरयुग्मकंद्वयदलं रक्ताभत त्रांबुजम् । तस्मादूर्ध्वगतंप्रभासि भिदंपद्मं सहस्रच्छदंसत्यानन्दमयंसदाशिवमयंज्योतिर्मयंशाश्वतम् ।७५। गणेशं चविधिंविष्णुं शिवं जीवंगुरुं ततः व्याप्तकचपरब्रह्मक्रमाच्चक्रेषुचिंतयेत् । ७७। एकविंशत्सहस्राणिषट्शतान्यधिकानिच ॥ अहोरात्रेण श्वासस्यगति सूक्ष्मास्मृताबुधैः । ७७ । हकारेणबहिर्यातिसकारेणविशेत्पुनः । हंसोहंसेति मंत्रेणजीवोजपति

आनन्द एवं सदा शिवस्वरूप एक हजार दल का आदि काल का कमल है उसका चिन्तन करे ॥७५॥ इन छः चक्रों में कर्मानुसार गणेश ब्रह्मा विष्णु शिव बृहस्पति गुरु इनका चिन्तन करता हुआ व्यापक पारब्रह्म का चिंतन करे ॥७६॥ दिन रात इक्कीस हजार और छः सौसे कुछ अधिक श्वासों का आना जाना विद्वान पुरुषों ने कहा है।७७।हकार अक्षर से श्वास बाहिर जाता है और सकार से प्रवेश करता है इस प्रकार हंस शब्द द्वारा जीव तत्व पूर्वक जप करता है ।७८। इनमें छः सौ श्वास

गणेशजी केलिये छः हजार ब्रह्मा के निमित्त छः हजार विष्णु तथा छः हजार शिवके निमित्त ॥७९॥ एक हजार श्वास

गणेशजी केलिये, छः हजार ब्रह्मा के निमित्त छः हजार विष्णु तथा छः हजार शिवके निमित्त ॥७३॥ एक हजार श्वास जीवात्माके निमित्त एकहजार गुरूके निमित्त, एकहजारश्वांसचिदात्माके निमित्त इसप्रकारश्वास उपश्वाससे जपकारे ।८०। सत्सम्प्रदायके जाननेवालेअरुणादिक अमरमुनिइनचक्रोंके अन्तर्गतब्रह्म किरणरूपगणेशादिक देवताओं काचिन्तनकरतेहैं।८१।

तत्वतः ॥७८॥ षट्शतंगणनाथायषट्सहस्रं तुवेधसे ॥ षट्सहस्रंचहरायेषट्सहस्रंरायच ।७६॥ जीवात्मनेसहस्रंचसहस्रंगुरवेतथा । चिदात्मनेसहस्रंचजपसंख्यांनिवेदयेत् ॥८०॥एतांश्चक्रगतान्ब्रह्ममयूखान्मुनयोमरान् । सत्संप्रदायवेत्तारश्चिंतयंत्यारुणादयः ॥८१॥ शुकादयोपिमुनयः शिष्यनुपदिशंतिच । अतः प्रवर्त्तिमहतांध्यायेत्सदाबुधः ॥ ८२ ॥ कृत्वाचमानसीपूजांसर्वचक्रेष्वनन्यधीः ॥ ततोगुरूपदेशेनागयत्रीमजपांजपेत् ॥८३॥ अधोमुखेततोरंध्रे सहस्रदलपंकजे ॥ हंसनंश्रीगुरुं ध्यायेद्वराभयेकरांबुजम ।८४॥

शुक आदि मुनिभी अपनेशिष्योंको उपदेश देतेहैं अतएव महान पुरुषोंकी प्रवृत्तिका ध्यान करके बुद्धिमान इन्हीं छः चक्रों कसदा चिंतन करे ॥८२॥ इस प्रकार अनन्त बुद्धिहोकर सब चक्रोंमें मानसी पूजाकरके तबगुरुके देव द्वाराअजपानामगायत्री को जपन करे ॥८३॥ मानसी पूजाका प्रकार यह है कि ब्रह्मारन्ध्र में हजार दल का कमल अधोमुख है उस में वर एव अभय देने दाले हंसस्थित गुरुका ध्यान करे ॥८४॥ सब अपने ध्यान द्वारा श्रीगुरुके चरण कमलों के अमृतमय जल द्वारा

अपने शरीर को स्नान कराने का चिंतन करके फिर श्री गुरुदेव की पंचोपचार पूजा करे स्तुति करे एवं प्रणाम करे ॥८५॥ तवसार्धतीन वलयोंमेंस्थित प्रकाशमानषट चक्रोंमें अमृत का संसार करने वाली ब्रह्म कला कुन्डलि की शक्तिका आरोह अवरोह से ध्यान करे ॥८६॥ तब ब्रह्मरन्ध्र से बाहिर निकलने वाली सुषुम्णाका ध्यान करे, इसी सुष्मणा के मार्ग द्वारा गये हुए विष्णु

त्तालितंचिंययेद्देहंतत्पादामृतधारया ॥ पंचोपचारैः संपूज्यप्रणमेत्तत्स्तवेनच ॥८५॥ ततःकुंडलिनींध्याये-दारोहादवरोहतः ॥ षट्चक्रकृतसंचारासार्धत्रिवलयांस्थिताम् ॥ ६८ ॥ ततोध्यायेत्सुषुम्णाख्यंब्रह्मरंध्राद्बहिर्गतम् ॥ तथातेनगयायांतितद्विष्णोः परमंपदम् ॥८७॥ ततोमच्चिंतितंरूपंस्वयंज्योतिः सनातनम् ॥ सदानंदंसंध्यायेन्मुहूर्तेब्राह्मसंज्ञके ॥ ८८ ॥ एवंगुरूपदेशेनमनोनिश्चलतांनयेत् । नतुस्वेनप्रयत्नेनतद्विनाजपनंभवेत् ॥ ८६ ॥ अंतर्यागंविधायैवंबसिर्यागंसमाचरेत् ॥ स्नानसंध्यादिकंकृत्वा कुर्याद्धरिहरार्चनम्

के परम पदको पाते हैं॥८७॥उसके अनन्तर ब्रह्म मुहूर्तमें उठकर सनातन ज्योतिस्वरूप सदानन्द परब्रह्म का ध्यान करे ॥८८॥ इसी प्रकार गुरुके उपदेश द्वारा ही मनको स्थिर करे तभी यह जपन होता है । अपने प्रयत्न द्वारा नहीं होता ८६। इस प्रकार

सेअन्तर्यज्ञरूप मानस पूजन करके बहिर्यज्ञ स्नान संध्या हरिहर आदि देव गुरु पूजन करे ॥९०॥ और जो देहाभिमानी जो पुरुष है जिन्होंसे अन्तर्यज्ञ नहीं हो सकता ऐसे पुरुषों के लिये मेरी भक्ति सुकर है एवं मोक्ष दायक है ॥९१॥ हे गरुड़ ! मोक्ष मार्ग यद्यपि तप योग आदि हैं तथापि संसारी जीवों के लिए भक्ति मार्ग उत्तम सुकर है ॥९२॥ ब्रह्मादिक सर्वज्ञ देवताओं ने वेद

॥९०॥ देहाभिमानिनामंतमुर्खीवृत्तिर्नजायते ॥ अतस्तेषांतुमद्भक्तिः सुकरामोक्षदायिनी ॥ ९१ ॥ तपोयोगादयोमोक्षमार्गाःसंतितथापिच । समीचीनन्तुमद्भक्तिमार्गःसंसाररतामि ॥९२॥ ब्रह्मादिभिश्च-सर्वज्ञैरयमेवविनिश्चितः ॥ त्रिवारवेदशास्त्राणिविचार्य च युनः पुनः ॥९३॥यज्ञादयोपिसद्धर्माश्चित्तशोधनकारकाः ॥ फलरूपाचमद्भक्तिस्तांलब्ध्वानावसीदति ॥९४॥ एवताचरणांताद्यंकरोतिसुकृती नरः ॥ संयोगेनचतद्भक्त्यामोक्षंयातिसनांतनम् ॥ ९५॥ इति श्रीमद्गरुणपुराणेसारोद्धारेसुकृत्तिजनजन्माचरण निरूपणेनाम पंचदशीऽध्यायः ॥१५॥

शास्त्रोंको वारत्रय फिर २ विचार कर यही निस्चय किया है कि यह भक्ति मार्ग ही सबसे अधिक है ॥९३॥ यह आदि श्रेष्ठ धर्म चित्त शुद्ध कर्ता है किन्तु भगवद्भक्ति फल रुप हैं उसे प्राप्त करलेने पर दुःख नहीं होता ॥९४॥ इस प्रकार से आचरण तो कोई पुन्यात्मा पुरुष करता है। वही हे गरुड़ ! मेरी भक्ति द्वारा मोक्ष पाता है ॥९५॥ इति श्री गरुड़ पुराणेशास्त्रिहरिश्चन्द्र कृतायां सरला टीकायां पञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥

भगवद्भक्ति द्वारामोक्ष प्राप्तिसुनकर गरुड़ बोले–हे दयासिंधो! भगवान! अज्ञान द्वारा जीवका जन्म मरण होना मैंने सुन लिया अबकृपा करके सनातन मोक्षका उपाय कहिये ॥ १ ॥ हे देवों के देव! शरणागत प्रतिपालक भगवानदुःख रूपमहाअंधकार मय भयानक इस संसार में ॥ २ ॥ अनेकों प्रकार के जीवों का जन्म मरण हुआ करता हैं जिसका अन्त नहीं ॥३॥ वे

गरुड़ उवाच ॥ श्रुतामयादयासिंधोह्यज्ञानांज्जीवसंसृतिः।अधुनाश्रोतुमिच्छामिमोक्षोपायंसनातनम् ।१। भगवन्देवेशशरणागतवत्सल । असारेघोरसंसारेसर्वदुःखमलीमसे । २ । नानाविधशरीरस्था अनन्ताजीवराशयः जायंतेचम्रियंतेचतेषामंतोनविद्यते । ३ । सदादुःखातुराएवनसुखीविद्यतेक्वचित् ॥ केनोपायेन मोक्षेशमुच्यंतेवदमेप्रभो । ४ । श्रीभगवानुवाच ॥ शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्यामियन्मांत्वंपरिपृच्छसि । यस्य श्रवण मात्रेण संसारान्मुच्यतेनरः ॥५॥ अस्तिदेवः परब्रह्मस्वरूपोनिष्कलःशिवः सर्वज्ञःसर्वकर्ता

जीव सर्वदा दुःखी रहते हैं सुखी तो कभी होते ही नहीं कृपा करके कोई उपाय बताइये जिनका मोक्ष हो ।४। उस प्रकार गरुड़ के प्रश्नों के उत्तर में श्री भगवान बोले हे गरुड़ सुन मैं तुझे उपाय कहता हूं जिसके श्रवण पात्र से मनुष्य संसार से मुक्त जाता हैं ॥५॥ इस जगत में परब्रह्म स्वरूपीनिष्फल शिव सर्वज्ञ जगत कर्ता सबका ईश्वर निर्मल एवं द्वैत भाव रहित

।६। स्वय प्रकाशमानआदि अन्त रहित निर्विकार, परे से भीपरे निर्गुण सच्चिदानन्द परब्रह्मभगवान हैं उसीका अंशहीजीवसंज्ञक है ॥७। वह भगवदंश जीव भगवान से अग्नि की चिनगारी के समान अभिन्न है किन्तु अनादिकाल से अविद्यासे उपहृत एवं कर्मों के सङ्ग से देहादि की उपाधि से संयुक्त है ८। सुख दुःख देने वाले पुण्य पापों के द्वारा बन्धन में पड़कर उस नीति

चसर्वेशोनिर्मलोद्वयः ।६। स्वयंज्योतिरनाद्यंतोनिर्विकारः परात्परः ॥ निर्गुणःसच्चिदानंदस्तदंशाज्जीवसंज्ञकः ।७। अनाद्यविद्योपहतायथाग्नौविस्फुलिंगकाः ।देहाद्युपाधिसंभिन्नास्तेकर्मभिरनादिभिः ॥८॥ सुखदुःखप्रदैःपुण्यैः पापरूपैर्नियंत्रिताः ॥ तत्तज्जातियुतंदेहमायुर्भोगंचकर्मजम् ॥६॥ प्रतिजन्मप्रपद्यंते-तेषामपिपरंपुनः। ससूक्ष्मलिंगशारीरमामोक्षादक्षरंखग । १० । स्थावराःकृमयश्चाब्जाः पक्षिणःपशवो नराः। धार्मिकास्त्रिदशास्तद्वन्मोक्षिणश्चयथाक्रमम् । ११ । चतुर्विधशरीराणिधृत्वामुक्त्वासहस्रशः ।

के अनुकूल कर्मोंके अनुसार शरीर, आयु एवं भोग, इन सबको ।६ । हे गरुड़! मोक्ष होने तक हर जन्म में सूक्ष्म लिंग शरीर के साथ ही वह पाता रहता है ।१०। स्थावर वृक्षादिजीवकृमि, बकरी आदि तथा पक्षी मनुष्य और देवता जैसे ये मोक्ष के अधिकारी हैं ।११। चारप्रकार के शरीर स्वेदज अण्डज औदभिज जरायुज हजारों जन्म को भोगते हुए मनुष्य होकर ज्ञानी

बनता है ॥१२॥ चौरासी लाख योनियों में शरीर धारियों को मनुष्य शरीर के बिना अन्य किसी शरीर में भी तत्वज्ञानकी प्राप्ति नहीं होती ।१३। इस जगत में अनन्त जन्मों को धारण करते २ कहीं पुण्यों के उदय से जीव मनुष्य जन्म पाता है । १४ । अत्यन्त दुर्लभ-मोक्षकी सीड़ी रुप मनुष्य जन्मों को पाकर यदि अपनी आत्माकाउद्धार नहीं करता उससे बढ़कर औरकौनपापी

सुकृतान्मानवोभूत्वा ज्ञानीचेन्मोक्षमाप्नुय त् ॥१२। चतुराशीतिलक्षेषुशरीरेषुशरीरिणाम् । नमानुषंविना त्रतत्वज्ञानंतुलभ्यते ॥ १३ ॥ अत्रजन्मसहस्त्राणांसहस्त्रैरपिकोटिभिः । कदाचिल्लभतेजंतुर्मानुषंपुण्य संचयात् ।१४। सोपानभूतंमोक्षस्यमानुष्यंप्राप्यदुर्लभम् । यस्तारयतिनात्मानंतस्मात्पापतरोऽत्रकः ॥१५। नरः प्राप्योत्तरंजन्मलब्ध्वाचेंद्रियसौष्ठवम् । नवेत्त्यात्महितंयस्तुतभवेद्ब्रह्मघातकः।१६।बिनादेहेनकस्या पि पुरुषार्थो नविद्यते तस्माद्देहंधनंरक्षेत्पुण्यकर्माणिसाधयेत् ।१७। रक्षयेत्सर्वदात्मानमात्मासर्वदास्य

है ॥१५॥ समस्त इन्द्रियों के सुखदायक उत्तम कुल में मनुष्य जन्म को पाकर जिसने अपनी आत्माका कल्याण नहीं किया वह ब्रह्म घातक है । १६ । शरीर के बिना कोई पुरुषार्थ नहीं सिद्ध होता, इसी कारण शरीर एवं धन की रक्षा करता हुआ पुण्यकर्मों का संचय करे ।।१७।। आत्मा की रक्षा आवश्यक है । यही आत्मा ही सबका पात्र है । इसी के द्वारा कार्य

होते हैं । जीवित रहने पर ही कल्याण पाता है ॥ १८ ॥

होते हैं । जीवित रहने पर ही कल्याण पाता है ।। १८ ।। गांव, पृथ्वी धन, धाम, शुभ-अशुभ कर्म सब फिर मिल जाते हैं किन्तु मनुष्य शरीर बार २ नहीं मिलता ।।१६। बुद्धिमान पुरुष शरीर रक्षा के उपाय करते हैं शरीर एक ऐसी वस्तु है कुष्टादि रोग युक्त पुरुष भी इसे नहीं छोड़ना चाहते ।।२०।। शरीर रक्षा द्वारा धर्म सिद्ध होता है धर्म से ज्ञान प्राप्ति होता

भाजनम् ।। रक्षणेयत्नमातिष्ठेज्जीवन्भद्राणिपश्यति ।। १८ ।। पुनर्ग्रामः पुनःक्षेत्रं पुनर्वित्तंपुनर्ग्रहम् ।। पुनः शुभाशुभकर्मनशरीरंपुनः ।। १६ ।। शरीररक्षणोपायाः क्रियंतेसर्वदाबुधैः ।। नेच्छंतिचपुनस्त्यागमपिकुंष्ठादिरोगिणः ।। २० ।। तद्गोपितंस्याद्धर्मार्थंनाज्ञार्थमेव च ।। ज्ञानंतुध्यानयोगार्थमचिरात्प्रविमुच्यते।।२१।।आत्मैवयदिनात्मानमहितेभ्योनिवारयेत्।।कोन्योहितकरस्तस्मादात्मानंतारयिष्यति। २२। इहैवनरकव्याधोश्चिकित्सांनकरोतियः ।। गत्वानिरौषधंदेशंव्याधिस्थः किंकरिष्यति।।२३।।व्याघ्रीवास्ते

है ज्ञान से ध्यान योग प्राप्त होताहै, इसीकेद्वारा मोक्ष प्राप्तहोता है ।।२१।।यदि अपनी आत्मा को स्वयं ही दुःखों से नहीं बचाते तोऔरकौन उसेइसदुःखमयसंसार समुद्रसे तरावेगा।२२।और जोइसीमनुष्य जन्ममें अपने नरकरूप रोग की औषधि नहीं कर लेता तोफिरजहांऔषधिही नहींमिलतीवहां रोगीहीकरजानेपर उसदेशमेंकिसप्रकार रोगमुक्तहो सकेगा ।२३। वृद्धावस्था तो सामने मुँह बाये सिंहनीकी भांतिखडीहै और आयु टूटे हुयेघड़े में से पानीकी बिन्दुओं केसमान निकली जारही है । और रोग शत्रु की भांति

नाश कर रहे हैं। इन्हीं कारणों से अपने कल्याण के प्रयत्न करना उत्तम है ॥ २४ ॥ जब तक इके शरीर में दुःख विपति रोग आदि तथा इन्द्रियों की विकलता नहीं आती तबतक आत्माका कल्याण कर लेना उत्तम है ॥२५॥ जब तक यह मनुष्य शरीर प्राप्त है तब तक तत्व परमार्थ तत्वका अभ्यास कर लेवे क्यों कि घर में आग लगजाने पर फिर कूप खोदने बैठना यह बुद्धिमत्त

जराचायुर्यातिभिन्नघटांबुवत् ॥ २२ ॥ निघ्नन्तिरिपुवद्रोगास्तस्माच्छ्रेयः समभ्यसेत् ।२५। यावत्तिष्ठतिदेहोयंतावत्तत्वंसमभ्यसेत् ॥ संदीप्तकोणभवनेकूपंखनतिदुर्मतिः । २६ । कालोनज्ञायतेनानाकार्यैः संसारसंभवैः ॥ सुखंदुःखंजनोहंतनवेत्तिहितमात्मनः । २७ । जातानार्तान्मृताना ऽ पद्ग्रस्तान्दृष्ट्वाचदुःखितान् ॥ लोको मोहसुराम्पीत्वान विभेतिकदाचन ॥ २८॥ संपदः स्वप्नसंकाशायौवनंकुसुमोपमम्।तडिच्चपलमायुष्यंकस्यस्याज्जानतोधृतिः ।२९। शतंजीवितमत्यल्पं निद्रालस्यै स्तदर्धकम्।बाल्यरोगजरादुःखै

नहीं। रोगादि लग जाने पर फिर तत्व विचार नहीं हो सकता।२६। संसार से उत्पन्न हुए नाना प्रकार के कार्यों में आसक्त होने के कारण समय जाता नहीं जाना जासकता। सुख दुःख एवं अपना कल्याण भी नहीं जाना सकता ॥२७॥जन्मलेते मरते एवं आपद्ग्रस्त रोगी दुःखी मनुष्यों को अपने सामने देखते हुए भी इस जीवने ऐसा मोह मदरा पानकर लिया है जिससे यह किसी प्रकार भी नहीं डरता।२८। धन सम्पत्ति स्वप्न की तरह है जवानी फूलो की भांति शीघ् कुम्हला जाने वाली है आयु बिजली के समान चंचल है। इस प्रकार के न होजाने पर फिर किसको धैर्य रहता है ॥ २९ ॥ सौ वर्ष की आयु यदि

आधी निद्रा एवं आलस्य में बीत जाय, और बीस वर्ष बाल्यवस्था में एवं बीस वर्ष वृद्धस्था में शेष मध्य की अवस्था गृहाशक्ति में निबट जाय तो इस प्रकार सौ वर्ष की आयु भी निष्फल है ।।३०।। मोक्ष प्राप्ति के लिये उद्यम न करना, परब्रह्म चिंतन में निद्रा करना भय के स्थान संसार में विश्वास किये रहना, इस प्रकार से रहने वाला कौनसा मनुष्य दुःख नहीं पाता

स्स्वल्पंतदपिनिष्फलम् ।।३०।। प्रारब्धे निरुद्योगोजागर्तव्येप्रसुप्तकः। विश्वस्तोयोभयस्थानेहानरः कोनह न्यते ।३१।। तोयफेनसमेदेहेजीवेनाक्रम्पसंस्थिते । अनित्यप्रियसंवासेकथातिष्ठतिनिर्भयः ।३२।अहि तेहितसंज्ञःस्यादध्रुवेध्रुवसंज्ञकः।अनर्थेचार्थविज्ञानःस्वमर्थयोनवेत्तिसः ।३३। पश्यन्नपिस्खलतिशृण्वन्न पिनबुद्धयतिापठन्नपि नजानातिदेवमायाविमोहितः।३४। तन्निमज्जंजगदिदंगंभीरेकालसागरे । मृत्यु

।।३१।। जलबुद्बुद के समान इस शरीर में वह जीव स्थित है जिसमें प्रियस्त्री पुत्रादिकों का मिलाप भी अनित्य है सो फिर वह किस प्रकार निर्भय रह सकता है ।३२।। अहितकारी दुःख दायक वस्तुओं को तो यह सुख दायक मान बैठा है अनित्य वस्तु को नित्य माने हुए है अनर्थ में बुद्धि रखता है इस प्रकार का अज्ञानी जीव अपने वास्तविक तत्व मोक्ष को जान ही नहीं सकता ।। देव माया से विमोहित हुआ वह जीव सामने दुःख सागर को देखते हुए भी मोक्ष साधन से फिसल पड़ता है शास्त्र सुनते हुए भी नहीं समझता। पढ़ते हुये भी ईश्वर तत्व को नहीं समझता ।।३४।। अत्यन्त गम्भीर कालरूप

समुद्र में डूबता हुआ यह जगत मृत्युरोग जरा आदि मगर मच्छों से पकड़ा हुआ कुछ भी नहीं जान सकता ॥३५॥ यह काल तो जलमें रक्खे हुए कच्चे घड़े की भांति क्षण २ में क्षीण होरहा है। इस प्रकार क्षीण होता हुआ किसी को दिखाई नहीं देता ॥३६॥ यदि किसी प्रकार वायुको रोकाजाय तो रुक जायगा; एवं आकाशका खडन भी हो सकेगा और तरङ्गों का ग्रन्थन

रोगजराग्राहैर्नकश्चिचदपिबुद्ध्यते॥३५॥ प्रतिक्षणमयंकालः क्षीयमाणोनलक्ष्यते ॥ आमकुंभइवांभःस्थो विशीर्णोनविभाव्यते ॥३६॥ युज्यतेवेष्टनंवायोराकाशस्यचखण्डनम् । ग्रंथनंचतरंगाणामास्थानायुषियुज्यते ॥३७॥ पृथिवीदह्यतेयेनमेरुश्चापिविशीर्यते ॥ शुष्यतेसागरजलंशरीरस्यचकाकथा ॥३८॥ अपत्यंमेकलत्रंमेधनंमेबांधवांश्चमे। जल्पंतीमितिमर्त्याजांहंतिकालवृकोबलात् ॥ ३९ ॥ इदंकृतमिदंकार्यमि

भी होजायगा किन्तु आयु की स्थिरता कभी नहीं होसकेगी ॥३७॥ जिस कालके द्वारा पृथ्वी भी जल जाती है मेरु पर्वत भी टुकड़े २ होजाताहै, समुद्र का जलभी सूख जाता है तो फिर शरीर की बात ही क्या है यह किस प्रकार स्थिर हो सकता है ॥३८॥ मेरी सन्तान है, मेरा कलत्र है मेरा धन है, एवं मेरे बान्धव हैं इस प्रकार मैं मैं के शब्द में कहती हुई मनुष्य रूप बकरी को कालरूप भेड़िया अचानक ही बल पूर्वक पकड़ ले ही जाता है ॥३९॥ काल एक ऐसा बली है—मनुष्य चाहे कहता रहे कि अमुक कार्य मैंने कर लिया है यह कार्य शेष है, इस प्रकार विचार करते हुए पुरुष को झट अपने वश में

करलेता है ॥४०॥ इसी कारण धर्म का कार्य यदि कल करना हो तो उसे आज ही कर डालें । दूसरे पहर का काम इसी पहर में करले । मृत्यु कृताकृत किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करती ॥४१॥ वृद्धावस्था ही जिसे रास्ता दिखाती है इस प्रकार मृत्यु रूप शत्रु भयानक रोग व्याधियों की सेनालेकर तुम्हारे सिरपर बाजता गाजता आरहा है तो फिर अपनी रक्षा करने वाले ईश्वर की

दमन्यत्कृताकृतम् ॥ एवमोहसमापुक्तं कृतांतःकुरुतेवशम् ॥ ४० ॥ श्वःकार्यमद्यकुर्वीतपूर्वाह्णे चापराह्णिकम् ॥ नहिमृत्युःप्रतीक्षेतकृतंवाप्यथवाकृतम् ॥ ४१ ॥ जरादर्शित पंथानं प्रचण्डव्याधिसैनिकम् । मृत्युशत्रुमधिष्ठोसित्रातारंकिंनपश्यसि । ४२। तृष्णासूचीविनिर्भिन्नंसिक्तं विषयसर्पिषा । रागद्वेषानलेपक्वं मृत्युरश्नातिमानवम्। ४३॥वालांश्चयौवनस्थांश्चवृद्धान्गर्भगतान पि ॥ सर्वांवाविशतेमृत्युरेवंभूतमिदंजगत् । ४४ ॥ स्वदेहमपि जीवोयंमुक्त्वायातियमालयम् ॥ स्त्रीमातृपितृपुत्रादिसंबंधः केनहेतुना ॥४५॥

ओर क्यों नहीं देखता ॥४२॥ यह मनुष्य का शरीर एक मांस पिण्ड है, तृष्णा रुप सूई से निर्भिन्न होकर उसी ही शलाका पर भूनने के लिये विंधागया है, विषय वासना-रूप घृत से संयुक्त किया गया है, रागद्वेष रूप अग्नि पर पक रहाहै पकजाने पर मृत्यु आकर इसे भक्षण करता है ।।४३॥ गर्भ में आये हुए बालक जवान, बूढ़े कोई भी हों मृत्यु तो सबको अपना ग्रास बना कर ही छोडता है । यह जगत् इसी प्रकार का है ॥४४॥ यह जीव तो अपने शरीरको भी छोड़कर यमलोक में चला जाता है तो फिर स्त्री पुत्र कलत्र माता पिताके साथ सम्बन्ध कैसा ॥४५॥ यह संसारतो दुःखका मूलहै, जोभीसंसार में आसक्त

है वह दुःखी है । जिसने इसका त्याग कर दिया है वह सुखी है और सुखी कोई भी नहीं ॥ ४६ ॥ सबदुखों के उत्पन्न करने वाले सब प्रकार की आपत्तियों के स्थान सब प्रकार के पापों के आश्रय रूप इस संसार को अवश्य ही त्याग करे ॥४७॥ लोहे लकड़ी आदिके मजबूत रस्सोंसे बँधा हुआ तो शीघ्र छूट सकता है किन्तु पुत्र स्त्री रूप रस्सों से जकड़ा हुआ कभी भी नहीं

दुःखमूलंहि संसारः सयस्यास्तिसदुःखितः ॥ तस्यत्यागःकृतोयेनससुखीनापरः क्वचित् ॥४६॥ प्रभवं सर्वदुःखानामालयंसकलापदाम् ॥ आश्रयंसर्वपापानांसंसारंवर्जयेत्क्षणात् ॥ ४७ ॥ लोहदारुमयैःपाशै पुमान्बद्धोविमुच्यते ॥ पुत्रदारमयैः पाशैर्मुच्यतेन कदाचन ॥ ४८ ॥ यावंतःकुरुतेजंतुः संबंधान्मनसःप्रियान् । तावंतोस्यनिखन्यंतेहृदयेशोकशंकवः ॥ ४९ ॥ वंचिताशेषवित्तैस्तैर्नित्यंलोकोविनाशितः ॥ हाहंत विषयाहारैर्देहस्थेंद्रियतस्करैः ॥ ५० ॥ मांसलुब्धोयथामत्स्यो लोहशंकुं न पश्यति सुख

छूट सकता है ॥४८॥ मनुष्य अपने मनको प्रिय लगने वाले जितने भी सम्बन्धी बनाता है उतनी ही शोक रूप कीलो अपने हृदय में ठोकता है अर्थात् पुत्रादि प्रिय सम्बन्धियों की मृत्यु होनेपर शोक कीलों द्वारा हृदय छलनी हो जाता है । ४९ । विषय का आहार करने वाले इसी शरीर में रहने वाले इन्द्रियरूप चोरोंने सारे जगत् के विचाररूप धनकोहरलिया है इससे सारेजगत का विनाशकिया हुआ है ॥५०॥ जिस प्रकार मांस पिंड का लोभी मत्स्य फांसने के लिये डाले गये लोहशंकु कोनहीं देखता

उसी प्रकार सुख में लोभी यह देह धारी भी यम पाशको नहीं देखता॥ ५१ ॥ हे गरुड़ ! जो अपनी भलाई बुराई को नहीं जानते

उसी प्रकार सुख में लोभी यह देह धारी भी [illegible] नहीं देखता। ५१। हे गरुड़ ! जो अपनी भलाई बुराई को नहीं जानते एवं खोटे मार्ग पर आरुढ़ होकर केवल पेट भरना ही जानते हैं ऐसे पुरुष नरकगामी होते हैं ।।५२।। सोना, जागना, मैथुन आहार आदि तो सब प्राणियों में एक जैसा हैकिन्तु मनुष्य में हित अहित जानने का ज्ञान विशेष है, जो मनुष्य इस ज्ञानसेहीन

लुब्धस्तथादेहीयमपाशं नपश्यति ।। १५ ।। हिताहितंन जानंती नित्यमुन्मार्गगामिनः ।। कुक्षिपूरण निष्ठायेतेनरानारकाखग ।।५२।। निद्रादिमैथुनाहाराः सर्वेषांप्राणिनांसमाः ।। ज्ञानवान्मानवः प्रोक्तो ज्ञानहीनः पशुस्मृतः ।।५३।। प्रभातेमलमूत्राभ्यां क्षुतृड्भ्यां मध्यगे वौ । रात्रौमदननिद्राभ्यां बाध्यंते मूढमानवाः ।।५४।। स्वदेहधनदारादिरताः सर्वजन्तवः सर्वजन्तवः जायंतेचम्रियंतेहाहंतज्ञामोहिताः।५५ तस्मात्संगःसदात्याज्यः सर्वस्त्यक्तुं नशक्यते ।। महद्भिःसहकर्त्तव्य संतः संगस्यभेषजम् ।।५६।सत्संगश्चवि

है वह पशुसमझा जाता है ।।५३।। अज्ञानी पुरुष अपनी आयुको व्यर्थ के कामों में गुजार देता है उसका प्रातःकाल तो मल मूत्रादि निवृत्त करने में लगता है, दोपहर के समय को भूख प्यास में लगा देता है और रात्रिको समय काम तृप्ति विषयवासना में तथा निद्रा में खो देता है ।५४। इस प्रकार के अज्ञानी पुरुष अपने देह धन स्त्री पुत्र कलत्रादि में मोहित होकर जन्म ते एवं मरते रहते हैं ।।५५। इसी कारण ऐसा सङ्ग सर्वथा त्यागकरे, यदिसब त्याग नहीं होसकता तो श्रेष्ठपुरुषों का सङ्गकरेक्योंकि श्रेष्ठ पुरुषों का सङ्ग दुःखों से छुड़ाने के लिये परम औषधि है ।।५६।।सत्सङ्ग् तथा विचार यह दोनों निर्मल नेत्रहैंजिनपुरुषों

के यह नेत्र नहीं अन्धे हैं फिर क्यों न कुमार्ग में जावे ॥५७॥ अपने २ वर्ण आश्रम आचार में लगे हुये सब मनुष्य परम धर्म को न जान कर दम्भ कपट में निरत होकर पूरे मोक्ष धर्म में नहीं लगते अतः व्यर्थ ही जन्म मरण पाते रहते हैं ॥५७॥ कई एक धर्मतत्व को न जानते हुए यज्ञ आदि कर्मोंमें आसक्त होकर परिश्रम करते हैं, एवं कई एक मोक्ष धर्म न जानते हुए

वेकश्चिनिर्मलंनयनद्वयम् ॥ यस्यनास्तिरःसोऽधः कथंनस्यादमार्गगः ॥४७॥ स्ववर्णाश्रमाचारनिरताः सर्वमानवाः । नजानंतिपरं धर्मं वृथानश्यंतिदांभिका । ।५८ । क्रियायामपराःकेचिद्व्रतचर्यादिसंयुताः । आज्ञानसवृतात्मानःसंचरन्तिप्रचारकाः । ५९ । नाममात्रेणसंतुष्टाःकर्मकाण्डरतानरा । मंत्रोच्चारण होमाद्यैर्भ्रामिताःक्रतुविस्तरैः ।।६०॥ एवंभुक्तोपवासाद्यौर्नियमैः कातशोषणैः । मूढाः परोक्षमिच्छंति

ब्रह्मचर्या आदि में संलग्न होकर क्षुधातृषा आदि सहन करतेहैं, किन्तु यज्ञ व्रत आदिके मूल कारण मोक्षधर्म का इनको लक्ष्य न समझ कर ही विचार युक्त न होकर प्रचारक बने बैठे हैं ॥ ५९ ॥ और कई एक कर्मकाण्ड में परायण होकर केवल मंत्रों का उच्चारण तथा होम आदि ही मुक्ति कारक हैं ऐसा समझ कर ही ज्ञान से रहित हो रहे हैं । उनकी भ्रांति बुद्धि यह नहीं समझ सकती कि ज्ञान के बिना मुक्ति मिलती ही नहीं ॥ ६० ॥ एवं कई एक शरीर को सुखाने वाले व्रत उपवास आदि कड़े २ नियमों से मोक्ष चाहते हैं। मेरी माया से विमोहित वे मूर्ख यह नहीं

समझते कि मोक्षका कारण तो ज्ञानही है ।६१। केवल शरीरको व्रतादि

शरीर को सुखाने वाले व्रत उपवास आदि कड़े २ नियमों से मोक्ष चाहते हैं। मेरी माया से विमोहित व मूर्ख यह नहीं

समझते कि मोक्षका कारण तो ज्ञानही है।६१। केवल शरीरकी व्रतादि उपवासों से कहीं अज्ञानी पुरुषों को मुक्ति मिलती है ? मुक्ति तो ज्ञान द्वारा मिलती है। सर्प की बांबी को ताड़ना करके महा सर्प नहीं मारा जाता।६२। जटाओं का बोझ सिर पर रखे हुए दम्भ कपट के वेश धारण किये हुए अज्ञानियों की भांति जगत में भ्रम रहे हैं औरों को भी भ्रम में

ममामायाविमोहिताः ॥६१॥ देहदण्डनमात्रेण कामुक्तिरविवेकिनाम् ॥ वल्मीकतडनादेवमृतः कुत्रमहोरगः ॥६२॥ जटाभारविनिर्मुक्तादांभिकावेषधारिणः भ्रमंतिज्ञानिवल्लोकेभ्रामयंति जनानपि ॥६४॥ संसारजसुखासक्तं ब्रह्मज्ञोस्मीतिवादिनम् कर्मब्रह्मोभयभ्रष्टं तंत्यजेदंत्यजंयथा ॥६४॥ गृहारण्यसमालोकेगतव्रीडादिगंबरा। चरंतिगर्दभाद्याश्चदिरक्तास्तेभवंतिकम् ॥६५॥ मृद्भस्मोद्धूलनादेवमुक्ताःस्युर्यदिमानवाः मृद्भस्मवासीनित्यंश्वासकिंमुक्तोभविष्यति ॥६६॥ तृणपर्णोदकाहाराः सततंवनवासिनः। जंबुका

डाल रहे हैं।।६३।। इस प्रकार के अज्ञानीजन सांसारिक सुखों में आसक्त होकर अपने आपको ब्रह्मज्ञानी कहते हुए ऐसे कर्म मार्ग एवं ज्ञान मार्ग दोनों से भ्रष्ट हैं उन्हें चांडाल की भांति त्याग कर देवे।६४। भला जिन्हें लज्जा नहीं नग्न होकर घरों में स्त्रियों के आगे विचरण करते हैं। वे तो पूरे गधे हैं। कभी इस प्रकार के अज्ञानी भी विरक्त हो सकते हैं।६५। मिट्टी एवं भस्म शरीर पर लगाने से यदि मनुष्यों को मुक्ति मिल जाती तो मिट्टी एवं भस्म लगाने वाले कुत्ते तथा गंधर्व आदि भी मुक्त हो जाते।।६६। तिनके पत्ते एवं जल आदि के आहार करने वाले निरन्तर बन में वास करने वाले जम्बुक, चूहे मृग आदि

कहीं तपस्वी हो सकते हैं ।।६७।। जन्म से मृत्युपर्यन्त गंगा आदि पवित्र नदियोंमें निवा सकरने वाले मेण्ढक मछलियांआदि कहीं प्रमुख योगी हो सकते हैं ।६८। यदिअशास्त्र विहित जल अन्न त्याग करने से यतीहो सकेतो शिलाहारी कबूतरएवं पृथ्वीपर जल न पीने वाले चातक पक्षी अभी व्रती हो सकते हैं ।।६६।। व्रत तप योग आदि यह सब कर्म तो हे गरुड़ लोक प्रसन्नता

खमृगाद्याश्चतापसास्तेभवंतिकिम्।।६७।।आजन्ममरणांतंचगंगादितटिनीस्थिताः।। मंडूकमत्स्यंताःप्रमुखा योगिनस्तेभवं तकिम् ।।६८।। पारावतः शिलाहाराः कदाचिदपिचातकाः ।। नपिबंतिमहीतोयंव्रति नस्तेभवंतिकिम् ।। ६६ ।। तस्मादित्यादिकंकर्मलोकरंजनकारम् मोक्षस्यकारणंसाक्षात्तत्वज्ञानंखगेश्वर ।।७०।। षड्दर्शनमहाकूपे पतिताःपशवखगः ।। परमार्थंनजानंति पशुपाशनियंत्रिता ।।७१।। वेदशास्त्रा र्णवेघोरेमुह्यमानाइतस्ततः ।। बहूर्मिनिग्रहग्रस्तास्तेइच्छंतिहिकुतार्किकाः।।७२।। वेदागमपुराणज्ञः परमार्थं

कारक हैं। मोक्ष का कारण तो साक्षात् तत्वज्ञान ही है ।। ७० ।। कईएक छः दर्शन रूप महा कूप में पड़कर अज्ञानी पशुओं जैसे कठिन अर्थोंके बिचार रूप पशु पाससे नियंत्रित होकर वास्तविक ब्रह्म तत्व को नहीं जान सकते ।। ७१ ।। और कई एक तो वेद शास्त्ररूप घोर समुद्र में अनेकों अन्य ग्रन्थों के पढ़ने से व्याकुल होकर बहूर्मि रोकने में व्यस्त होकर कुतनाओंसेअद्वैत वाद को कहते हुए भी जानते नहीं ।।७२।। वेद शास्त्र एवं पुराणों का ज्ञाता होकर भी जो परमार्थ को नहीं जानता वह

वाद को कहते हुए भी जानते नहीं ॥७२॥ वेद शास्त्र एवं पुराणों का ज्ञाता होकर भी जो परमार्थ को नहीं जानता वह

सारी विद्याओंका उपहासक है उसका वह सबकुछ पढ़ना काकभाषित अर्थात् व्यर्थ है ॥ ७३ ॥ यह ज्ञान है, यह ज्ञेय है इन चिंताओं में व्याकुल होकर जोपरमार्थ तत्त्व को न जानते हुये दिन रात हो शास्त्रपढ़ा करते हैं उसकावह सब पढ़ना व्यर्थ है ॥७४॥ कई एक तो वाक्य छन्द-निबन्ध-काव्य आदि में लगे हुए हैं, यह छन्द अच्छा नहीं यह काव्य अच्छा नहीं इत्यादिक

नवेत्तियः ॥ विडंबकस्यतस्यैवतत्सर्वंकाकभाषितम् । ७३ । इदंज्ञानमिदंज्ञेयमितिचिंतासमाकुलाः । पठंत्यहर्निशंशास्त्र परँतत्त्वपराङमुखाः । ७४ । वाक्यच्छंदोनिबंधेनकाव्यालंकारशोभिताः । चिंतयादुःखितामूढा स्तिष्ठंतिव्याकुलेन्द्रियाः । ७५ । अन्यथापरमंतत्त्वंजनाः क्लिश्यंतिचान्यथा ॥ अन्यथा शास्त्रसद्भावोव्याख्यांकुर्वन्तिचान्यथा ।७६। कथयंत्युन्मनोभावंस्वयंनानुभवंतिच ॥ अहंकाररताःकेचिदु पदेशादिवर्जिताः ॥७७॥ पठंतिवेदशास्त्राणि बोधयंतिपरस्परम् ॥ नजानंतिपरंतत्त्वंदर्वीपाकरसंयथा

चर्चा में पड़करवे मूढ़ व्याकुलेन्द्रिय रहते हैं ॥ ७५ ॥ परमतत्त्व तोऔर प्रकार काहोता है किन्तु मनुष्य तो दूसरीप्रकारसे से क्लेश उठाते हैं। इसी प्रकारशास्त्रों में महा वाक्यादिका विचार और प्रकार काहोता है किन्तुउनकी व्याख्या दूसरे प्रकार से करते हैं ॥ ७६ ॥ एवं कई एकतो उन्मना होकर ब्रह्मपरता हैं किन्तु स्वयं अनुभव नहीं करते। एवं कई एक अहंकार युक्त होकर गुरुओं के उपदेश ग्रहण नहीं करते ॥७७॥ कईवेदशास्त्रपढ़ कर दूसरों को उपदेश देते हैं किन्तु स्वयं ब्रह्म तत्व

कहीं तपस्वी हो सकते हैं ।।६७।। जन्म से मृत्युपर्यन्त गंगा आदि पवित्र नदियोंमें निवास करने वाले मेण्ढक मछलियांआदि कहीं प्रमुख योगी हो सकते हैं ।६८। यदिअशास्त्र विहित जल अन्न त्याग करने से यतीहो सकेतो शिलाहारी कबूतरएवं पृथ्वीपर जल न पीने वाले चातक पक्षी अभी व्रती हो सकते हैं ।।६९।। व्रत तप योग आदि यह सब कर्म तो हे गरुड़ लोक प्रसन्नता

खमृगाद्याश्चतापसास्तेभवंतिकिम्।।६७।।आजन्ममरणांतंचगंगादितटिनीस्थिताः।। मंडूकमत्स्यंताःप्रमुखा योगिनस्तेभवंतिकिम् ।।६८।। पारावतः शिलाहाराः कदाचिदपिचातकाः ।। नपिबंतिमहीतोयंव्रति नस्तेभवंतिकिम् ।। ६९ ।। तस्मादित्यादिकंकर्मलोकरंजनकारम् मोक्षस्यकारणंसाक्षात्तत्वज्ञानंखगेश्वर ।।७०।। षड्दर्शनमहाकूपे पतिताःपशवखगः ।। परमार्थंनजानंति पशुपाशनियंत्रिता ।।७१।। वेदशास्त्रा र्णवेघोरेमुह्यमानाइतस्ततः ।। बहूर्मिनिग्रहग्रस्तास्तेइच्छंतिहिकुतार्किकाः।।७२।। वेदांगमपुराणज्ञः परमार्थं

कारक हैं । मोक्ष का कारण तो साक्षात् तत्वज्ञान ही है ।। ७० ।। कईएक छः दर्शन रूप महा कूप में पड़कर अज्ञानी पशुओं जैसे कठिन अर्थोंके बिचार रूप पशु पाससे नियंत्रित होकर वास्तविक ब्रह्म तत्व को नहीं जान सकते ।। ७१ ।। और कई एक तो वेद शास्त्ररूप घोर समुद्र में अनेकों अन्य ग्रन्थों के पढ़ने से व्याकुल होकर बहूर्मि रोकने में व्यस्त होकर कुतर्कोंसेअद्वैत वाद को कहते हुए भी जानते नहीं ।।७२।। वेद शास्त्र एवं पुराणों का ज्ञाता होकर भी जो परमार्थ को नहीं जानता वह

वाद को कहते हुए भी जानते नहीं ॥७२॥ वेद शास्त्र एवं पुराणों का ज्ञाता होकर भी जो परमार्थ को नहीं जानता वह

सारी विद्याओंका उपहासक है उसका वह सबकुछ पढ़ना काकभाषित अर्थात् व्यर्थ है ॥ ७३ ॥ यह ज्ञान है, यह ज्ञेय है इन चिंताओं में व्याकुल होकर जोपरमार्थ तत्व को न जानते हुये दिन रात हो शास्त्रपढ़ा करते हैं उसकावह सब पढ़ना व्यर्थ है ॥७४॥ कई एक तो वाक्य छन्द-निबन्ध-काव्य आदि में लगे हुए हैं, यह छन्द अच्छा नहीं यह काव्य अच्छा नहीं इत्यादिक

नवेत्तियः ॥ विडंवकस्यतस्यैवतत्सर्वंकाकभाषितम् । ७३ । इदंज्ञानमिदंज्ञेयमितिचिंतासमाकुलाः । पठंत्यहर्निशंशास्त्र परँतत्त्वपराङ्मुखाः । ७४ । वाक्यच्छंदोनिबंधेनकाव्यालंकारशोभिताः । चिंतयादुःखितामूढा त्तिष्ठंतिव्याकुलेन्द्रियाः । ७५ । अन्यथापरमंतत्त्वंजनाः क्लिश्यांतिचान्यथा ॥ अन्यथा शास्त्रसद्भावोव्याख्यांकुर्वन्तिचान्यथा ।७६। कथयंत्युन्मनीभावंस्वयंनानुभवंतिच ॥ अहंकाररताःकेचिदु पदशादिवर्जिताः ॥७७॥ पठंतिवेदशास्त्राणि बोधयंतिपरस्परम् ॥ नजानंतिपरंतत्वंदर्वीपाकरसंयथा

चर्चा में पड़करवे मूढ़ व्याकुलेन्द्रिय रहते हैं ॥ ७५ ॥ परमतत्व तोऔर प्रकार काहोता है किन्तु मनुष्य तो दूसरीप्रकारसे से क्लेश उठाते हैं । इसी प्रकारशास्त्रों में महा वाक्यादिका विचार और प्रकार काहोता है किन्तुउनकी व्याख्या दूसरे प्रकार से करते हैं ॥ ७६ ॥ एवं कई एकतो उन्मना होकर ब्रह्मपरता हैं किन्तु स्वयं अनुभव नहीं करते । एवं कई एक अहंकार युक्त होकर गुरुओं के उपदेश ग्रहण नहीं करते ॥७७॥ कईवेदशास्त्रपढ़ कर दूसरों को उपदेश देते हैं किन्तु स्वयं ब्रह्म तत्व

नहीं जानते जैसे कलछी पाकरस में फिरती हुई भी पाक स्वाद को नहीं जानती ॥७८॥ पुष्पों का भारती मस्तक पर होता है किंतु उनकीसुगधितोनासिकाही जानतीहै । इसीप्रकारवेदशास्त्र सबपढ़तेहैं किंतु मोक्ष तत्व का विचार कोई बिरला करता है ।७६। मोक्ष तत्व तो आत्मा के विषय में स्थित है । उसे न जान कर ही मूर्ख शास्त्रों में भटकते हैं जिस प्रकार बकरी तो गोपके पास

॥७८॥ शिरोवहतिपुष्पाणि गंधंजानातिनासिका ॥ पठतिवेदशास्त्राणि दुर्लभोभावबोधकः ॥ ७६ ॥ तत्वमात्मस्थ मज्ञात्वामूढ़ः शास्त्रेषुमुह्यति ॥ गोपः कुक्षिगतेछागेकूपंपश्यतिदुर्मतिः ॥८०॥ संसारमोह-नाशायशब्दबोधेनहिक्षमः । नविवर्तेततिमिरंकदाचिद्दीपवार्तया ॥ ८१ ॥ प्रज्ञाहीनस्यपठनंयथांधस्य चदर्पणम । अतःप्रज्ञावतांशास्त्रं तत्वज्ञानस्यलक्षणम् ॥ ८२ ॥ इदंज्ञानमिदंज्ञेयंसर्वंतच्छ्रोतुमिच्छति ॥ दिव्यवर्षसहस्रायुः शास्त्रांतंनैवगच्छति ॥८३॥ अनेकानिचशास्त्राणिस्वल्पायुर्विघ्नकोटयः ॥ तस्मात्मा

होता है किन्तु उसे कूप में वह दुर्मति ढूँढ़ता है ।८०। केवल आत्मा तत्व की बातें करने से अज्ञान निवृत्ति नहीं होती जैसे दीपक की बातें करने से अन्धकार नहीं हटता ॥८१॥बुद्धि हीन का पढ़ना मानो अन्धे को दर्पण दिखाने जैसा है । इसी प्रकार बुद्धिमान पुरुषों को शास्त्र पढ़ने से तत्व ज्ञान होता है ॥८२॥ दिव्य सहस्र वर्षों की आयु भी मिलजावे फिर भी शास्त्रों का तो अन्त होता ही नहीं अतएव यहज्ञान है यह ज्ञेय है इस प्रकार से सार रूप समझना उत्तम है ॥८३॥ शास्त्र अनेकों हैं आयु

बहुत थोड़ी है उसमें भी करोड़ों बिघ्न हैं अतः शास्त्रोंका सार तत्व ही जानना उत्तम है जैसे कि जलमें से दूध ही हंस ग्रहण करलेता है ।८४। बुद्धिमान पुरुष वेदशास्त्रों को पढ़कर तत्वज्ञान को समझलें । जिस प्रकार धान्य चाहने वाला धान्य को पाकर छिलके त्याग करदेता है उसी प्रकार तत्व ज्ञान पाकर सबशास्त्र त्याग कर देवें ।८५। जैसे अमृत से तृप्त हुये पुरुष

रंविजानीयात्क्षीरंहंसमिवांभसि ॥८४॥ अभ्यस्यवेदशास्त्राणि तत्वंज्ञात्वार्थबुद्धिमान् ॥ पलालमिवधान्यार्थीसर्वशास्त्राणिसंत्यजेत् ॥८५॥ यथाऽमृतेनतृप्तस्यनाहारेणप्रयोजनम् । तत्वज्ञस्यतथा ताद्यंनशास्त्रेणप्रयोजनम्।८६। नवेदाध्ययनान्मुक्तिर्नशास्त्रपठनादपि ॥ ज्ञानादेवहिकैवल्यंनान्यथाविनतात्मज ॥८७॥ नाश्रमःकारणंमुक्तेर्दर्शनानिचकारणम् ॥ तथैवसर्वकर्माणिज्ञानमेवहिकारणम् ॥८८॥ मुक्तिदागुरुवागेकाविद्यासर्वाविडंबका ॥ काष्ठभारसहस्रेषुह्येकंसंजीवनंपरम् ॥८६।अद्वैतं हिशिवंप्रोक्तंक्रिया

को अन्य आहार से कुछ प्रयोजन नहीं वैसे तत्व ज्ञान होने पर शास्त्रों से कुछ प्रयोजन नहीं ।८६। वेद शास्त्रों के पठन मार्ग से मुक्ति तो हे गरुड ! केवल ज्ञान द्वारा मिलती है ॥७८ ॥ आश्रम चारों तथा छः हों दर्शन, एवं सर्वकर्म मुक्ति के कारण नहीं मुक्ति का कारण तो केवल ज्ञान ही है ॥८८॥ मुक्ति देने वाले तो गुरु की एक वाणी ही है ॥ शेष सब विद्या विडम्बना है ॥ जैसे सहस्रों काष्ठ भारों में एक संजीवन काष्ट उत्तम है ॥८६॥ एक अद्वैत ब्रह्मज्ञान कल्याण प्रद है

उसमें कर्म आदिका परिश्रम नहीं, ऐसाज्ञान गुरुके मुख द्वारा प्राप्त होता है, करोड़ों शास्त्र पढ़ने से नहीं मिलता ।९०॥ ज्ञान दो प्रकार का है एकशास्त्रोक्त दूसरा विचार उत्पन्न । आग मोक्तं ज्ञानशब्द ब्रह्म है, और विचार उत्पन्न ज्ञान परब्रह्म है।९१। कई अद्वैत कहते हैं कई द्वैत किन्तु द्वैत अद्वैत विवर्जित समतत्व कोई भी नहीं जानता ॥ ९२ । नहीं मेरा मेरा है,

यासविवर्जितम् । गुरुवक्त्रेणलभ्येतनाधीतागमकोटिभिः ।९०। आगमोक्तंविवेकोत्थद्विधाज्ञानंप्रचक्षते । शब्दब्रह्मागममयंपरब्रह्मविवेकजम् । ९१ । अद्वैतंकेचिदिच्छंतिद्वैतमिच्छंतिचापरे ॥ समंतत्वंनजानंति द्वैताद्वैतविवर्जितम् । ९२ । द्वेपदेबंधमोक्षायनममेतिच ॥ ममेतिबध्यतेजंतुर्नममेतिप्रमुच्यते ॥९३॥ तत्कर्मयन्नबंधायसाविद्यायाविमुक्तिदा । आयासायपरंकर्मविद्यान्याशिल्पनैपुणम् । ९४ । यावत्पर्माण्युदीर्यंतेयावत्संसारवासना ॥ यावदिंद्रियचापल्यंतावत्तत्त्वकथाकुतः ॥९५॥ यावद्देहाभिमान

इस प्रकार नमम, मम यह दो पदही मोक्ष तथा बन्धन के हैं । उनमें नमम मेरा नहीं ऐसा जानने वाले को मोक्ष है एव ममहमेरा जानने वाले को बन्धन है ।९३। जिनकर्मों के द्वारा बन्धन न हो वेहीकर्म हैं एव जिस विद्या के द्वारा मुक्त हो वही विद्या है । शेष कर्म केवल परिश्रम कराने वाले हैं एव अन्य विद्याएं केवल चतुरता मात्रा, हैं । ९५ । जब तक कर्मों का उदय है एवं जब तक संसार की वासनाएँ हैं तथा जबतक इन्द्रियों की चंचलता है तब तक ज्ञान की उत्पत्ति नहीं होती ॥९५। जबतक

ममता विद्यमान, एवं जब तक यतन करने की प्रेरणा है, जब तक संकल्प हैं ॥ ९६ ॥ जब तक मन की स्थिरता नही
शास्त्रों का बिचार नहीं एवं जबतक गुरुकी कृपानहीं होता ब्रह्म तत्व नहीं होता । ९७ । तप, व्रत, तीर्थ, जप, होम, पूजन,
वेद शास्त्राध्ययन आदि जबतक हैं तबतक तत्वज्ञान नहीं हुआ ।९७। इसी कारण हे गरुड़ ! सब प्रयत्नोंके द्वारा सारीअवस्था

श्रममतायावदेवहि ॥ यावत्प्रयत्नवेगोस्तियावत्संकल्पकल्पना ॥९६॥ यावन्नोमनसः स्थैर्यनयावच्छास्त्र
चिंतनम् ॥ यावन्नगुरुकारुण्यंतावत्तत्वकाकुतः ॥९७॥ तावत्तपोव्रतंतीर्थं जपहोमार्चनादिकम् वेदशास्त्रा
गमकथ यावत्तत्वंनविंदति ॥ ९८ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनसर्वावस्थासुसर्वदा ॥ तत्वनिष्ठोभवेक्ता दर्ययदीच्छे
न्मोक्षमात्मनः॥९९॥ धर्मज्ञानप्रसूनस्य स्वर्गमोक्षफलस्यच तापत्रयादिसतप्तश्छायांमोक्षतरोःश्रयेत् । १००॥
तस्माज्ज्ञानेनात्मतत्वंविज्ञेयंश्रीगुरोर्मुखात् ॥ सुखेनमुच्यतेजंतुर्घोरसंसारबंधनात् ॥१०१॥ तत्वज्ञस्य तां
संकृत्यंशृणुवक्ष्यामितेऽधुना ॥ येनमोक्षमवाप्नोतिब्रह्मनिर्वाणसंज्ञकम् ॥ १०२ ॥ अन्तकालेतुपुरुषआगते

ओं में सर्वदा मोक्षार्थी तत्व ज्ञान के समझने की चेष्टा करे ।९९॥ तीनप्रकारके तापों से तृप्त हुआ पुरुष तो धर्म ज्ञान रूप
पुष्पों वाले स्वर्ग तथा मोक्षरुपफल वाले मोक्षवृक्ष की छाया का आश्रय ले ॥१००। इसी कारण श्रीगुरु सुखसे ज्ञान के
द्वारा आत्मतत्वको जाने तब वह प्राणी घोर संसार के बन्धन से सुखपूर्वक मुक्त होता है ।१०१। हे गरुड़ ! अब मैं तुझे
तत्व ज्ञानी के अंतिम कृत्य को कहता हूं सो सुन जिससे वह ब्रह्म निर्माण मोक्षको प्राप्त होता है ।१०२। जिस समय उस

पुरुषका अन्तकाल समीप आवे तब वह मृत्यु से निर्भय होकर वैराग्य रूप शास्त्रसे शरीर की तथा शरीर के साथ सम्बन्ध रखनेवाले पुत्रादिकों की चाहना का त्याग करे ॥ १०३ ॥ घरसे निकल कर धैर्यके साथ पवित्र तीर्थ जल में स्नानकरे पवित्र होकर एकान्त स्थान में विधि पूर्वक आसन पर बैठे ॥ १०४ ॥ पीछे अकार मकार स्वरूप शब्द ॐ का मन द्वारा अभ्यासकरे

गतसाध्वसः । छिंद्यादसंगशस्त्रेणस्पृहांदेहेनुयेचताम् । १०३ । गृहात्प्रव्रजितोधीरःपुण्यतीर्थजलाप्लुतः ॥ शुचौविविक्तआसीनोविधिवत्कल्पितासने । १०४ । अभ्यसेन्मनसाशुद्धंत्रिवृद्ब्रह्माक्षरंपरम् ॥ मनो यच्छेज्जितश्वासोब्रह्मबीजमविस्मरन् । १०५ । नियच्छेद्विषयेभ्योक्षान्मनसाबुद्धिसारथिः । मनःकर्मभि राक्षिप्तंशुभार्थेधारयेद्धिया । १०६ । अहंब्रह्मपरंधामब्रह्माहंपरमंपदम् । एवंसमीक्ष्यचात्मानमात्मन्या धायनिष्कले ।१०७। ओमित्येकाक्षरंब्रह्मव्याहरन्मामनुस्मरन् । यःप्रयातित्यजन्देहंसयातिपरमांग

ब्रह्म बीज ॐ कास्मरण करता हुआ मनका निरोधकरके श्वासोंको ॥ १०५ ॥ बुद्धि को सारथी बनाकर मन द्वाराअपनी इन्द्रियों को विषयों से हटावे । शुभाशुभ कर्मों से मनको चलाकर भगवान के स्वरूप में लगावे ।१०६। पीछे ब्रह्ममें एका-न्तरूप धारण करे, अर्थातमैं ब्रह्महूँ परम धाम परमपद रूपब्रह्ममेंहूँ इसप्रकारविचार करकेशुद्ध आत्मामें अपने मनको लगा दे ।।१०७।। इसप्रकार भगवान कहते हैं कि मेरा स्मरण करता हुआ ॐ इस एकाक्षर का उच्चारण करता हुआ जो देह

त्याग करता है वह परम गति को प्राप्त होता है ।१०८। जिस परम गतिको दंभिक पुरुष तथा ज्ञान वैराग्य रहित पुरुष नहीं प्राप्त हो सकते उसे सुबुद्धि पुरुष प्राप्त करते हैं मैं तुझे कहता हूँ ।१०९। मानमोह से रहित सङ्गदोषकोजीते हुये अध्यात्म ज्ञानी कामनाओं से रहित सुख दुःखादि द्वन्द से विमुक्त हुए ऐसे ज्ञानी पुरुष ही उस अव्यय पद को पाते है ।११०। सत्यरूप

तिम् ॥१०८॥ नयत्रदांभिकायांतिज्ञानवैराग्यवर्जिताः ॥ सुधिस्तांगतिंयांतितानहंकथयामिते ॥१०९॥ निर्मानमोहाजितसंगदोषाअध्यात्मनित्याविनिवृत्तकामाः ॥ द्वंद्वैर्विमुक्ताःसुखदुःखसंज्ञैर्गच्छंत्यमूढाःपदम व्ययंतत् ॥११०॥ ज्ञानहृदेसत्यजलेरागद्वेषमलापहे ॥ यःस्नातिमानसेतीर्थेसवैमोक्षमवाप्नुयात् ॥१११॥ प्रौढवैराग्यमास्थायभजतेमामनन्यभाक् ॥ पूर्णदृष्टिः प्रसन्नात्मासवैमोक्षमवाप्नुयात् ।११२। त्यक्त्वा गृहंचयस्तीर्थेनिवसन्मरणोत्सुकः ॥ म्रियतेमुक्तिक्षेत्रेषुसवैमोक्षमवाप्नुयात् ॥११३॥ अयोध्यामथुरामाया

जलसे परिपूर्ण ज्ञानद्वेष रुप मलकोधोने वाले ज्ञानरुप मानसतीर्थमय पवित्रसरोवरमें जो स्नानकरताहै वहमोक्षको पाता है ।१११। तीव्र वैराग्यको प्राप्तकरके अनन्यता पूर्वक जोमेरा भजन करता है वही पूर्णवैराग्य द्वारा घरघाटको छोड़ करके मरणोत्सुक होकर तीर्थ पर निवास करता है इस प्रकार जो तीर्थ क्षेत्रों पर मृत्यु होती है वह मोक्ष को पाता है ॥ ११३ ॥ मुक्ति के लिये तीर्थ क्षेत्र यह है—अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, शिवकांची, उज्जयिनी,

द्वारिका, ये सातों पुरी मोक्ष दायनी हैं ।११४। भगवान कहते हैं कि हे गरुड़ ! इस प्रकार तुझे सनातन मोक्ष धर्म सुनाया है जो इसको ज्ञान वैराग्य के साथ सुनता है वह मोक्ष पाता है -।११५। तत्वज्ञानी मोक्ष, पाते है धर्मात्मा स्वर्ग में जाते हैं, पापी लोग दुर्गतिपाते हैं, पशु पक्षी कीटादि जन्मते मरते रहते हैं ।११६। भगवान कहते हैं कि हे गरुडं ! सारे शास्त्रों का सार

काशीकांचीअवन्तिका । पुरीद्वारावतीज्ञेयाः सप्तैतामोक्षदायिकाः ।११४। इतितेकथितंतार्क्ष्य मोक्षधर्मसनातनम् ॥ ज्ञानवैराग्यसहितंश्रुत्वामोक्षमवाप्नुयात् । ११५ । मोक्षंगच्छन्तितत्वज्ञाधार्मिकाः स्वर्गतिंनराः । पापिनोदुर्गतिंयांतिसंसारंतिखगादयः ।११६। इत्येवंसर्वशास्त्रांणीसारोद्धारेनिरूपितः । मयातेषोडशाध्यायैः किंभूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ ११७ ॥ सूत उवाच । एवंश्रुत्वावचोरजन्गरुड़भगवन्मुखात् । कृतांजलिरुवाचेदं संप्रणम्यमुहुर्मुहुः ।११८। भगवन्देवदेवेश । श्रावयित्वावचोमृतम् ॥ तारितोहंत्वयानथाभवसागरतः प्रभो ॥११९॥ स्थितोस्मिगतसंदेहः कृतार्थोस्मिनसंशयः ।. इत्युक्त्वा

निकालकर तुझे सोलह अध्यायों में सुनादिया है–अब क्या सुनने की इच्छा है ।११७। सूतजी बोले हे शौनक आदि ऋषि गण ? इस प्रकार भगवान के मुखसे वचन सुनकर गरुड देव बारम्बार प्रणाम करके हाथ जोड़े हुये यह बचन बोले ११८। गरुड बोले–हे देवदेवेश नाथ प्रभो भगवान ! आपने अमृतमयबचन सुनाकर इस संसार रूप सागर से मुझे पारदिया है ॥११९॥

मेरे सब संदेह जाते रहे मैं कृतार्थ हो गया इसमें संशय ही नहीं मैं

मेरे सब संदेह जाते रहे मैं कृतार्थ हो गया इसमें संशय ही नहीं मैं स्वरूपस्थित हो गया हूँ इस प्रकार कह कर मौन होकर भगवान के ध्यान में परायण हो गये ।।२०।। अब ग्रन्थकार कहता है-कि जो स्मरण करने से दुर्गति को हटाते हैं पूजन यज्ञ द्वारा जो सदगति देते हैं, अनन्य भक्ति के द्वारा मुक्ति देते हैं, ऐसे हरि भगवान जन्म मरण से मेरी रक्षा करें ।। २१ ।। इति श्री गरुड़पुराणे शास्त्रिहरिश्चन्द्र कृतायां सरला टीकायां मोक्ष धर्म निरूपणो नाम षोडशोऽध्यायः ।।१६।।

गरुड़स्तूष्णीं स्थित्वाध्यानपरोऽभवत् ।।२०।। स्मरणाद्दुर्गतिंहर्तापूजनयज्ञेनसद्गतेर्दाता ।। यःपरया निज भक्त्याददातिमुक्तिसमांहरिः पातु ।।२१।। इतिश्रीगरुड़पुराणेसारोद्धारे भगवद्गरुड़सम्वादे मोक्ष धर्मनिरूपणोनाम षोडशोऽध्यायः ।।१६।। श्रीकृष्णार्पणमस्तु ।। श्रीकृष्णायनमः ।। श्रीभगवानुवाच ।। इत्याख्यातंमयातार्क्ष्य सर्वमेवौर्ध्वदैहिकम् ।। दशाहाभ्यन्तरेश्रुत्वासर्वपापैःप्रमुच्यते ।१।।इदंचामुष्मिकंकर्म पितृमुक्तिप्रदायकम् ।। पुत्रवांछितदंचैव परत्रेहसुखप्रदम् ।।२।। इदंकर्मनकुर्वन्ति येनांस्तिकनराधमाः ।।

अथ गरुड़पुराण सुनने का माहात्म्य कहते हैं ।

श्री भगवान बोले-इस प्रकार करके हे गरुड़ मैंने और्ध्व दैहिक परलोक सम्बन्धी सारा कृत्यकह सुनायाहै । जो इसआख्यान को दश दिनों के भीतर सुनते हैं उनके सब पाप नष्ट होजाते हैं ।।१।। यह परलोक सम्बन्धी कृत्य पितरों को मुक्ति देता है एवं पुत्रों के मनोरथ पूर्ण करता है ऐहिक पारलौकिक दोनों लोकों, में सुख देता है ।।१।। जो नास्तिक नराधम पुरुष इस प्रेत

कर्म को नहीं करते उनके घर का जल भी पीने योग्य नहीं इसमें संशय नहीं वह जल भी मद्य तुल्य है ॥३॥ देवता, पितर उनके घर के सम्मुख कभीजाते ही नहीं उनके कोपकेकारण पुत्र पौत्र आदि दुर्गतिको प्राप्त होनेवाले नारकी जीव ही उनके घर पैदा होते हैं ॥४॥ प्रेत क्रिया न करने वाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र तथा इतर जन सब चाण्डाल तुल्य समझे जाते हैं

तेषांजलमपेयंस्यात्सुरातुल्यंनसंशयः ॥३॥ देवता पितरश्चैवनैवपश्यन्तितदगृहम् । भवन्तितेषांकोपेन पुत्राःपौत्रश्चदुर्गताः ॥४॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याः शूद्राश्चैवेतरेपिच । तेचांडालसमाज्ञेयाःसर्वप्रेतक्रियां विना ॥५॥ प्रेतकल्पमिदंपुण्यंश्रुणोतिश्रावयेच्चयः ॥ उभौतौपापनिर्मुक्तौदुर्गतिंनैवगच्छतः ॥ ६ ॥ मातापित्रोश्चमरणेसौवर्णांश्रुणुतेतुयः ॥ पितरौ मुक्तिमापन्नौसुतःसंततिमान्भवेत् ॥७॥ नश्रुतंगारुडंयेनगया श्राद्धं चनोकृतम् ॥ वृषोत्सर्गःकृतोनैवनचमासिकवार्षिके ॥८॥ सकथकथ्यतेपुत्रः कथंमुच्चेदृणत्रया

॥५॥ जो इस पवित्र प्रेत आख्यान को सुनते हैं तथा सुनाते हैं वे दोनों पाप से विमुक्त होकर दुर्गति को नहीं प्राप्त होते ॥६॥ और जो माता पिता की मृत्यु होने पर इसगरुड़पुराण को सुनताहै, उसके माता पिता को मुक्ति प्राप्त होती है और पुत्र बहुत सी शुभ संतान को प्राप्त करता है।।७।।जिसने गरुड़पुराण नहीं सुना एवं गया श्राद्धभी नहीं किया और न वृषोत्सर्ग किया हैतथा बारह मास सम्बन्धी एवं संवत्सर सम्बन्धीपिण्ड दानादि नहीं किये ॥८॥ वह किस प्रकार पुत्र कहलाने के योग्य

है किसप्रकार

है, किसप्रकार वहतीन प्रकारके ऋणोंसे मुक्त होसकता है एवंमाता पिता को कैसे तार सकताहै ।९। इस कारण सर्व प्रकार के प्रयत्नों द्वारा धर्मार्थ काम मोक्ष के देने वाले दुःखों के नाश करने वाले गरुड़ पुराण को अवश्य सुनो ॥१०॥ यह पुराण पुण्य दायक है, परम पवित्र है, पापों का नाश करने वाला है। सुनने वालों की कामना पूर्ण करता है अतः इसे सर्वदा

त ॥ मातरपितरचैवकथंतारयितुंक्षमः ॥९॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन श्रोतव्यंगारुडंकिल ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणांदायकंदुःखनाशनम् ॥१०॥ पुराणंगारुड़ंपुण्यं पवित्र पापनाशनम् ॥ शृण्वतांकामनापूर श्रोतव्यं सर्वदैवहि ॥११॥ ब्राह्मणोलभतेविद्यां क्षत्रियःपृथिवींलभेत् ॥ वैश्योधिनिकतामेति शूद्रःशुद्ध यति पातकात॥१२॥श्रुत्वादानानिदेयानि वाचकायाखिलानिच॥पूर्वोक्तशयनादीनिनान्यथासफलंभवेत।१३।

श्रवण करना चाहिए ॥११॥ इसके श्रवण से ब्राह्मण विद्या को पाता है, क्षत्रिय पृथ्वी को पाता है वैश्य धन प्राप्त करता है शूद्र पातकों से शुद्ध होता है ॥१२॥ इस प्रकार गरुड़ पुराण को सुनकर इसके बांचने वाले को पहिले कही गई शय्या आदि एवं और भी सब दान दे देवे अन्यथा उसका कुछ भी सफल नहीं होता ॥१३॥ सर्व प्रथम पुराण का पूजन करके दान देवे

उसके अनन्तर बांचने वाले को वस्त्र अलंकारों से पूजन करके गोदान एवं उसके साथ दक्षिणा का दान करे ॥१४॥ और भी स्वर्णदान, भूमि दान देकर के बहुत से फलकी प्राप्तिके लिये बांचने वाले का पूजन करे ।१५। श्रीभगवान कहते हैं कि हे गरुड़ इस प्रकार गरुड़ पुराणकी कथा सुनाने वालेके पूजनद्वारा मेराही पूजन है । इसमें कोई सन्देह न करे। इसमें वाचक के सन्तुष्ट

पुराणंपूजयेत्पूर्वं वाचकंतदनन्तरम् ॥ वस्त्रालंकारगोदान दक्षिणाभिश्चसादरम् ॥ १४ ॥ अन्यै श्चहेमदानैश्चभूमि दानैश्च भूरिभिः ॥ पूजयेद्वाचकंभक्त्या बहुपुण्यफलाप्तये॥१५॥वाचकस्यार्चनेनैवपूजि तोहंनसंशयः ॥ संतुष्टे तुतांयामिवाचकेनात्रसंशयः ॥१६॥ इति श्रीगरुड़पुराणे श्रवणफलम् ॥

होनेपरमैं ही संतुष्ट होता हूं इसमें कोई सशय नहीं ॥१६॥ इति श्रीगरुड़ पुराणे सारोद्धारे पन्चनद प्रान्तीय पं० श्रीहरिश्चन्द्र शास्त्री कृतयां सरला टीकायां पुराण श्रवण फल निरूपणो नाम गरुड़ पुराणमाहात्म्यं समाप्तम् ।

* समाप्तोऽयंग्रन्थः *

——:*:——

मुद्रक—पं० गजराजसिंह शर्मा श्री गोपाल प्रेस, हाथरस ।

आदर्श नारी धर्म शिक्षा

(लेखक—श्रीव्रजमोहनलालजी)

स्त्री शिक्षा की ऐसी अनुपम पुस्तक सम्भव है आज तक आपके देखने पढ़ने में न आई हो, लेखक ने इस छोटी पुस्तक में गागर में सागर वाली कहावत चरितार्थ कर दी है। यदि स्त्रियां सुशिक्षित सुशील विद्यावती और गुणवती होंगी तो ही वे गृहस्थाश्रम को स्वर्ग के समान सुखदायक बना देंगी इस छोटी सी पुस्तक में हर एक आश्रम के उद्देश्यों पर थोड़ा २ विचार प्रकट करते हुए गृहस्थ के मूल उद्देश्यों और शिक्षाओं पर विशेष रूप से लिखने का प्रयत्न किया गया है प्रत्येक गृहस्थी घर में इस पुस्तक का रहना आवश्यक है। पृष्ठ संख्या लगभग ४०० सजिल्द का मूल्य ६) रु०।

पाक चयनिका

पाकशाला की व्यवस्था कच्ची रसोई, पक्की रसोई, दूध की चीजें, मुरब्बा, अचार, चटनी आदि देशी एवं बङ्गाली मिठाई, पाव रोटी, टोन खताई, बिस्कुट, साग, तरकारियां तथा सब्जियां, भुरते, रायते, सलाद आदि और मांस मछली, अण्डा तथा प्रत्येक प्रकार की आधुनिक खाद्य सामिग्रियों के तैयार करने की विधियों सहित वर्णन है। प्रत्येक घर में इस पुस्तक का होना जरूरी है। पृष्ठ सं० लगभग ४५० मूल्य केवल ६ रु० डाक व्यय अलग।

पाक विज्ञान

पाक शास्त्र की अद्वितीय पुस्तक

यह पुस्तक स्वादिष्ट और मधुर भोजन बनाने के लिए बिल-कुल गुरु का काम देती है। इसमें साधारण चीजों से ही नाना प्रकार के भोजन बनाने की सरल विधि दी गई है। ऐसी पुस्तक प्रत्येक परिवार में रहनी चाहिये। मोटे और चिकने कागज पर छपी ३०० पेज की पुस्तक का दाम ४.५० न० पै०।

हर प्रकार की पुस्तकें वी०पी० द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान—हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा (उ०प्र०)

मुद्रक—बाबू सोहनलाल गुप्ता, हिन्दी पुस्तकालय प्रेस, मथुरा।